

श्री

पंचप्रतिक्रमणसूत्र

अर्थ सहित

तथा

नवस्मरण अर्थ सहित

तेनी साथे

वीजां पण केटलां एक स्तवना, सञ्चायो,

चैत्यवंदनो अने स्तुतियो विंगेरे.

तेने

शा. रवचंद जयचंदे स्थापन करेली विद्याशाला तरफयी

उपावी प्रसिद्ध करनार

शा. मगनलाल मनसुखराम,

मोडीवाडानी पोळ, अमदावाद.


अमदावाद:

युनियन प्रिन्टिंग प्रेसमा शा घेलाभाई नरसिंहदासे छाप्पु


संवत् १९५१

सने १९५५

किम्मत वे रुपिया.



प्रसिद्धकर्त्ताए आ ग्रंथने फरीथी ठापवा
ठपावाना सर्व हक्क स्वाधिन राख्या ठे.



अथ श्री विद्याशाला वर्णन काव्य.

(संग्रहचक्रम्.)

विद्याशाला विशाला प्रबलतरसुतैर्बुद्धि जामघापहारि,
विद्वद्भिर्मननीया जिनपदविज्रवैर्धर्म संपादनाय ॥

सद्धर्मोत्रप्रज्ञूणा प्रतिदिनमनिशं दर्शनं वंदनं ये,
कर्तव्यैः समाजं स्वविनवकुशला थोमिथः श्रावकेयाः ॥१॥

विद्याशालामांथी वेचातां मलतां पुस्तकोनी जाहेरखवर.

- | | |
|--|-----------|
| १ पंचप्रतिक्रमणसूत्र अर्थ सहित. (शास्त्री) | रु २-०-० |
| २ प्रकरणमाला अर्थ सहित. (शास्त्री) | रु १-०-० |
| ३ पर्यूषणमाहात्म्य वालावबोध. ज्ञानविमलसूरि कृत ढालो. (शास्त्री) | रु १-०-० |
| ४ पूजासंग्रह. पंक्ति श्री पद्मविजयजी तथा श्री रूपविजयजी कृत. (शास्त्री) | रु १-०-० |
| ५ पूजासंग्रह. पंक्ति श्री वीरविजयादि कृत. (शास्त्री) | रु १-०-० |
| ६ देववंदनमाला. (शास्त्री) | रु १-०-० |
| ७ जयानंद केवलीनो रास. (शास्त्री) | रु १-४-० |
| ८ सिंदूरप्रकर-सटीक. (शास्त्री) | रु ०-०-० |
| ९ देवसि राइ प्रतिक्रमणसूत्र मूल. (शास्त्री) | रु ०-४-० |
| १० प्रतिक्रमणसूत्रादि मूल. (गुजराती) | रु १-०-० |
| ११ स्नात्रपंचाशिका कथान सहित. (गुजराती) | रु १-०-० |
| १२ शत्रुंजयमाहात्म्य कथान सहित. (गुजराती) | रु ०-१२-० |

अनुक्रमणिका.

| विषयांक. | विषयानुं नाम. | पृष्ठांक. |
|----------|---------------------------------|-----------|
| १ | नवकार अर्थ सहित. | १ |
| २ | पंचिंदिअ अर्थ सहित. | २ |
| ३ | इच्छामि खमासमणो अर्थ सहित. | ४ |
| ४ | गुरुने शाता सुखपट्टा अर्थ सहित. | ५ |
| ५ | इरियावहि अर्थ सहित. | ५ |
| ६ | तस्सउत्तरी अर्थ सहित. | ६ |
| ७ | अन्नं उस्सिएणं अर्थ सहित. | १० |
| ८ | लोगस्स अर्थ सहित. | १४ |
| ९ | करेमिज्जंते अर्थ सहित. | २० |
| १० | सामाइय वयजुत्तो अर्थ सहित. | २२ |
| ११ | सवलोए अर्थ सहित. | २४ |
| १२ | जगचिंतामणि अर्थ सहित. | २४ |
| १३ | नमुत्तुणं अर्थ सहित. | २६ |
| १४ | जावंति चेइयाइं अर्थ सहित. | ३५ |
| १५ | जावंत केवि साहू अर्थ सहित. | ३६ |
| १६ | उवसग्गहरं अर्थ सहित. | ३७ |
| १७ | जयवीयराय अर्थ सहित. | ३९ |
| १८ | अरिहंत चेइयाणं अर्थ सहित. | ४२ |
| १९ | पुस्करवरदी अर्थ सहित. | ४५ |
| २० | सिद्धाणं वु अर्थ सहित. | ४८ |
| २१ | संसारदावानी त अर्थ सहित. | ५१ |
| २२ | स्नातस्यानी स्तु अर्थ सहित. | ५४ |

| | | |
|----|----------------------------------|-----|
| १३ | सुगुरुने वांदणां अर्थ सहित. | ५४ |
| १४ | सद्यस्सवि अर्थ सहित. | ६१ |
| १५ | अतिचारनी आठ गाथानु अर्थ सहित. | ६१ |
| १६ | देवसिअं आलोउं अर्थ सहित. | ६६ |
| १७ | वंदितासूत्र अर्थ सहित. | ६७ |
| १८ | अप्रुठिनुहं अर्थ सहित. | ७९ |
| १९ | आयरिअ उवझाए अर्थ सहित. | ९१ |
| २० | श्रुतदेवतानी स्तुति अर्थ सहित. | ९१ |
| २१ | क्षेत्रदेवतानी स्तुति अर्थ सहित. | ९२ |
| २२ | जुवनदेवतानी स्तुति अर्थ सहित. | ९२ |
| २३ | कमलदलनी स्तुति अर्थ सहित. | ९३ |
| २४ | नमोस्तु वर्द्धमानाय अर्थ सहित. | ९३ |
| २५ | वरकनक अर्थ सहित. | ९४ |
| २६ | अद्धाङ्गोसु अर्थ सहित. | ९५ |
| २७ | विज्ञाललोचन अर्थ सहित. | ९५ |
| २८ | चठक्कसाय अर्थ सहित. | ९६ |
| २९ | सामाज्य वयजुतो अर्थ सहित. | ९७ |
| ४० | सामाज्य पोसह संठियस्स अर्थ सहित. | ९७ |
| ४१ | पोसहनुं पच्चक्काण अर्थ सहित. | ९९ |
| ४२ | सागरचंदो कामो अर्थ सहित. | १०० |
| ४३ | मन्हजिणाणंणी सझाय अर्थ सहित. | १०० |
| ४४ | जरहेसरनी सझाय अर्थ सहित. | १०२ |
| ४५ | जघुशांति स्तवन अर्थ सहित. | १०६ |
| ४६ | सातलाख पृथिवीकाय अर्थ सहित. | ११४ |
| ४७ | अठार पापस्थानक ज्ञाषा. | ११६ |

| | | |
|----|--|-----|
| ४८ | इच्छकार सुहराइ सुहदेवसि. | ११६ |
| ४९ | कल्याणकंदनी स्तुति अर्थ सहित. | ११६ |
| ५० | संधारापोरशी अर्थ सहित | ११८ |
| ५१ | सकलार्हत अर्थ सहित. | ११४ |
| ५२ | नवकार. | १३४ |
| ५३ | उवसग्गहरं. | १३४ |
| ५४ | संतिकरं अर्थ सहित. | १३५ |
| ५५ | तिजयपहुत्त अर्थ सहित. | १४१ |
| ५६ | नमिज्जण अर्थ सहित. | १४६ |
| ५७ | अजितशांति अर्थ सहित. | १५४ |
| ५८ | नक्तामर अर्थ सहित. | १७४ |
| ५९ | कल्याणमंदिर अर्थ सहित. | १९५ |
| ६० | वृहच्छांति अर्थ सहित. | २२७ |
| ६१ | पाक्षिकादि अतिचार. | २४४ |
| ६२ | सीमंधरजिननुं चैत्यवंदन. | २५४ |
| ६३ | सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन. | २५५ |
| ६४ | पंचपरमेष्ठिनुं चैत्यवंदन. | २५५ |
| ६५ | वीशस्थानकनुं चैत्यवंदन. | २५६ |
| ६६ | वीशस्थानक तपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन. | २५६ |
| ६७ | परमात्मानुं चैत्यवंदन. | २५७ |
| ६८ | जिनपूजानुं चैत्यवंदन. | २५७ |
| ६९ | बीजनुं चैत्यवंदन. | २५७ |
| ७० | ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन. | २५८ |
| ७१ | अष्टमीनुं चैत्यवंदन. | २५९ |
| ७२ | एकादशीनुं चैत्यवंदन. | २५९ |

| | | |
|----|--|-----|
| ७३ | तीर्थंकरनी राशीनुं चैत्यवंदन. | २६० |
| ७४ | चौदशेवावन गणधरनुं चैत्यवंदन. | २६० |
| ७५ | रोहिणी तपनुं चैत्यवंदन. | २६१ |
| ७६ | गौतमस्वामीनुं चैत्यवंदन. | २६१ |
| ७७ | मौनएकादशीनुं चैत्यवंदन. | २६२ |
| ७८ | अंतरिक पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन. | २६३ |
| ७९ | संखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र. | २६४ |
| ८० | ग्रहशांति स्तोत्र. | २६५ |
| ८१ | परमेष्ठि स्तोत्र. | २६६ |
| ८२ | पंचषष्ठि स्तोत्र. | २६६ |
| ८३ | श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन. | २६७ |
| ८४ | गौतमाष्टक चैत्यवंदन. | २६८ |
| ८५ | संखेश्वर पार्श्वजिन ठंद. | २६९ |
| ८६ | पार्श्वजिन स्तोत्र. | २७० |
| ८७ | महावीरजिन ठंद. | २७१ |
| ८८ | गौतमाष्टक ठंद. | २७२ |
| ८९ | वीश विहरमाननुं चैत्यवंदन. | २७३ |
| ९० | चोवीश तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन. | २७४ |
| ९१ | एकादशीनी स्तुति. | २७४ |
| ९२ | सीमंधरजिननी स्तुति. श्रीसीमंधर जिनवर. | २७५ |
| ९३ | सीमंधरजिननी स्तुति. श्री सीमंधर देवसुहंकर. | २७५ |
| ९४ | आदिजिन स्तुति. | २७६ |
| ९५ | ज्ञानपंचमीनी स्तुति. | २७७ |
| ९६ | पंचतीर्थनी स्तुतियो. | २७७ |
| ९७ | दशत्रिकनी स्तुति. | २७८ |

| | | |
|-----|-----------------------------------|-----|
| १७३ | वीशस्थानक तपनी सञ्ज्ञाय. | ४१६ |
| १७४ | आंबेल तपनी सञ्ज्ञाय. | ४१७ |
| १७५ | सामायिकना वत्रीश दोषनी सञ्ज्ञाय. | ४१८ |
| १७६ | मुहपत्तिना ५० बोलनी सञ्ज्ञाय. | ४१९ |
| १७७ | रात्रिन्नोजनना दोषनी सञ्ज्ञाय. | ४२१ |
| १७८ | श्रावकनी करणीनी सञ्ज्ञाय. | ४२२ |
| १७९ | नेम राजीमतीना बार मासनी सञ्ज्ञाय. | ४२४ |
| १८० | माणातिगत विरमण व्रतनी सञ्ज्ञाय. | ४२७ |
| १८१ | मृषावाद विरमण व्रतनी सञ्ज्ञाय. | ४२७ |
| १८२ | अदत्तादान विरमण व्रतनी सञ्ज्ञाय. | ४२८ |
| १८३ | मैथुन विरमण व्रतनी सञ्ज्ञाय. | ४२८ |
| १८४ | परिग्रह विरमण व्रतनी सञ्ज्ञाय. | ४२९ |
| १८५ | रात्रिन्नोजन विरमणनी सञ्ज्ञाय. | ४३० |
| १८६ | हिंसा पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३१ |
| १८७ | मृषावाद पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३१ |
| १८८ | अदत्तादान पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३२ |
| १८९ | अब्रह्मचर्य पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३३ |
| १९० | परिग्रह पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय | ४३४ |
| १९१ | क्रोध पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३५ |
| १९२ | मान पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३५ |
| १९३ | माया पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३६ |
| १९४ | लोभ पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३७ |
| १९५ | राग पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३८ |
| १९६ | द्वेष पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४३९ |
| १९७ | कलह पापस्थानकनी सञ्ज्ञाय. | ४४० |

| | | |
|-----|--|-----|
| १४८ | रोहिणीतपनुं स्तवन ढालो ६. | ३६३ |
| १४९ | हुंडीनुं स्तवन ढालो ७. | ३६८ |
| १५० | रत्नाकर पंचवीशी. | ३८२ |
| १५१ | महावीरस्वामीनुं स्तवन ढालो १०. | ३८४ |
| १५२ | मौनएकादशीना गणणानुं स्तवन ढालो १२. | ३९२ |
| १५३ | सिद्धाचलनुं स्तवन. वापलडा रे पातिकडां. | ३९९ |
| १५४ | सिद्धाचलनुं स्तवन. आज आणंद थयो. | ४०० |
| १५५ | सिद्धाचलनुं स्तवन. आज तो वधाइ राजा. | ४०१ |
| १५६ | वीरना अगीआर गणधरनी सझाय. | ४०२ |
| १५७ | ढंढणरुषिनी सझाय. | ४०२ |
| १५८ | सीताजीनी सझाय. | ४०३ |
| १५९ | सोलसतीयोनी सझाय. सोलसतीनां लीजे नाम. | ४०४ |
| १६० | क्रोधनी सझाय. | ४०५ |
| १६१ | माननी सझाय. | ४०६ |
| १६२ | मायानी सझाय. | ४०६ |
| १६३ | लोचनी सझाय. | ४०७ |
| १६४ | वणजारानी सझाय. | ४०७ |
| १६५ | सोदागरनी सझाय. | ४०८ |
| १६६ | आपस्वप्नावनी सझाय. | ४०९ |
| १६७ | सज्जनशीख आत्मबोधनी सझाय. | ४०९ |
| १६८ | आत्मबोधनी सझाय. | ४१० |
| १६९ | आत्मशीखनी सझाय. | ४११ |
| १७० | सहजानंदीनी सझाय. | ४११ |
| १७१ | सार बोलनी सझाय. | ४१३ |
| १७२ | सोलसतीनुं सझाय. आदिनाथ आदि जिनवर | ४१५ |

| | | |
|-----|---------------------------------------|-----|
| २२३ | गुंहली, सुण साहेली जंगम तीरथ. | ४७७ |
| २२४ | गुंहली, राजगृहि वनखंम विचाल. | ४७८ |
| २२५ | सुगुरुनी गुंहली, चरण करणशुं शोन्नता. | ४७८ |
| २२६ | गुंहली, वहेनी अपापा नयरी उद्यानके. | ४७९ |
| २२७ | गुंहली, आगम वयण सुधारस पीजे. | ४८० |
| २२८ | गुंहली, सजनी मोरी गुणशील वनके. | ४८१ |
| २२९ | चरणशित्तरी करणशित्तरीनी गुंहली. | ४८१ |
| २३० | गुंहली, महावीरजी आवी समोसखा. | ४८२ |
| २३१ | जीवान्निगम सूत्रनी गुंहली. | ४८३ |
| २३२ | गुंहली, रत्नत्रयी आराधवा. | ४८४ |
| २३३ | गुंहली, जीरे मारे देशना द्यो गुरुराज. | ४८५ |
| २३४ | गुंहली, वेनी संचरतां रे संसारमां रे. | ४८५ |
| २३५ | गुंहली, गाम नगर पुर विचरंता. | ४८६ |
| २३६ | गुंहली, अरिहा आया रे चंपावनके मेदान. | ४८७ |
| २३७ | गुंहली, अहो मुनि संयममां रमता. | ४८८ |
| २३८ | गुंहली, आर्थदेश नरन्व लहो रे. | ४८९ |
| २३९ | गुंहली, जीरे सूरें वगमती गहुंअली. | ४८९ |
| २४० | गुंहली, मुनि पंचम गणधर वीरना रे. | ४९१ |
| २४१ | गुंहली, चंपानयरी उद्यानमां गणधर. | ४९१ |
| २४२ | गुंहली, वीरजी आया रे गुणशील वनके. | ४९२ |
| २४३ | जंबूगुरुनी गुंहली. | ४९३ |
| २४४ | गुंहली, ज्ञानदिवाकर शोन्नता. | ४९४ |
| २४५ | फूलडां, सखी रे में कौतुक दीवुं. | ४९४ |
| २४६ | चूनडी, हांजी समकित पालो कपासनो. | ४९५ |
| २४७ | नवपदनी गुंहली, आत्मराम मुनिराजीया. | ४९६ |

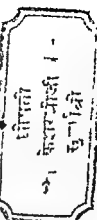
| | | |
|-----|--------------------------------------|-----|
| २४८ | गुंहली, अंबशाल उद्यानमां. | ४९७ |
| २४९ | पर्यूषणनी स्तुति. | ४९८ |
| २५० | कान्तस्सग्गना सोल आगार अर्थ सहित. | ४९९ |
| २५१ | कान्तस्सग्गना जुगणीश दोष अर्थ सहित, | ५०० |
| २५२ | नमुक्कारसहिनुं पच्चस्काण. | ५०१ |
| २५३ | नमुक्कारसहि मुठसहिनुं पच्चस्काण. | ५०१ |
| २५४ | पोरशी साह्वपोरसीनुं पच्चस्काण. | ५०२ |
| २५५ | पुरिमह अवहनुं पच्चस्काण. | ५०२ |
| २५६ | बेसणा एकासणानुं पच्चस्काण. | ५०२ |
| २५७ | एकलठाणानुं पच्चस्काण. | ५०३ |
| २५८ | आयंबिलनुं पच्चस्काण. | ५०३ |
| २५९ | तिविहार उपवासनुं पच्चस्काण | ५०३ |
| २६० | चौविहार उपवासनुं पच्चस्काण. | ५०४ |
| २६१ | पाणहार ठठ अठमादिकनुं पच्चस्काण. | ५०४ |
| २६२ | गंठसहिअं आदे अज्जिग्रहनुं पच्चस्काण. | ५०४ |
| २६३ | देसावगासिकनुं पच्चस्काण. | ५०४ |
| २६४ | निविगइनुं पच्चस्काण. | ५०५ |
| २६५ | पाणहार दिवस चरिमनुं पच्चस्काण. | ५०५ |
| २६६ | रात्रे चौविहारनुं पच्चस्काण. | ५०५ |
| २६७ | तिविहारनुं पच्चस्काण. | ५०५ |
| २६८ | छविहारनुं पच्चस्काण. | ५०५ |
| २६९ | पच्चस्काणना आगारनी गाथा. | ५०६ |
| २७० | चार आहारनां नाम तथा अर्थ. | |
| २७१ | ठ ठींडीना आगार अर्थ सहित. | |
| २७२ | पच्चस्काण करवाना जुगणपचाम. | |

| | | |
|-----|---------------------------------------|-----|
| २७३ | देवचंडजीकृत स्नात्रपूजा ढालो ८. | ५०९ |
| २७४ | देवचंडजीकृत अष्टप्रकारी पूजा. | ५१७ |
| २७५ | कुंवरविजयजीकृत अष्टप्रकारी पूजा. | ५२४ |
| २७६ | आरति, आरति कीजे पास कुमरकी. | ५२८ |
| २७७ | आरति जय जय आरति शांति तुमारी. | ५२९ |
| २७८ | आरति, अपठरा करती आरति जिन आगे. | ५२९ |
| २७९ | आरति, च्यारो मंगल चार. | ५३० |
| २८० | जिन नवअंग पूजाना दोहा. | ५३० |
| २८१ | विगय निवियाताना जेद. | ५३१ |
| २८२ | मुहपत्तिना पचास बोख. | ५३३ |
| २८३ | पोसहनांचोवीश मंगल. | ५३४ |
| २८४ | श्रावकनी अगीयार पडिमा अर्थ सहित. | ५३६ |
| २८५ | चौदनियम धारवानी विगत अर्थ सहित. | ५३७ |
| २८६ | वारव्रत उच्चरवानी विधि अर्थ सहित. | ५३९ |
| २८७ | जिनजुवननी चोराशी आशातना. | ५४३ |
| २८८ | गुरुनी तेत्रीश आशातना. | ५४५ |
| २८९ | सामायिकना वत्रीश दोष. | ५४६ |
| २९० | पोसहना अठार दोष. | ५४७ |
| २९१ | पंदर कर्मादान अर्थ सहित. | ५४८ |
| २९२ | एपणाना सुडतालीश दोष अर्थ सहित. | ५५० |
| २९३ | साधु ठ कारणो आहार ले ते. अर्थ सहित. | ५५२ |
| २९४ | साधु ठ कारणो आहार न ले ते. अर्थ सहित. | ५५२ |
| २९५ | चोवीश जिननां एकशो वीश कळ्याणक. | ५५३ |
| २९६ | देवसि प्रतिक्रमणनी विधि. | ५५६ |
| २९७ | राइ प्रतिक्रमणनी विधि. | ५५८ |

| | | |
|-----|---------------------------------|-----|
| ३९८ | परकी प्रतिक्रमणनी विधि. | ५६० |
| ३९९ | चनुमासी प्रतिक्रमणनी विधि. | ५६१ |
| ३०० | संवहरी प्रतिक्रमणनी विधि. | ५६१ |
| ३०१ | पडिलेहणनी विधि. | ५६३ |
| ३०२ | देव वांदवानी विधि. | ५६३ |
| ३०३ | पच्चरकाण पारवानी विधि. | ५६३ |
| ३०४ | उपवासादि पच्चरकाण पारवानी विधि. | ५६४ |
| ३०५ | पोसह लेवानी तथा पारवानी विधि. | ५६४ |
| ३०६ | रात पोसह लेवानी विधि. | ५६६ |
| ३०७ | सांजे नवो पोसह लेवानी विधि. | ५६६ |
| ३०८ | श्रावकना एकवीश गुण अर्थ सहित. | ५६८ |
| ३०९ | अजीव अरूपी रूपीना ५६० जेद. | ५६८ |
| ३१० | जीवना पांचशेने त्रेशठ जेद. | ५७१ |
| ३११ | दीवाली पर्व करवानो निर्णय. | ५७२ |
| ३१२ | आत्मारामजी महाराजनो पत्र. | ५७३ |
| ३१३ | शुद्धाशुद्धिपत्रम्. | ५७८ |

॥ श्रीशंखेस्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ प्रतीकमणादिसूत्रार्थः



१ अथ नवकार वा पंचमंगल ॥

नमस्कारहो अरिहंत प्रते राग ध्वेष च्यारघातीकर्म
वीषय कपायादि सत्रुजीत्या ११ गुणसहित इंडादिकत्पूजा
मुक्तियोग्य वा तेप्रते.

१ नमो अरिहंताणं ॥

नमस्कारहो सिद्धनगवान् प्रते घणाकालनां संचेलां
ज्ञानावर्णिआदी आतकर्मने शुक्लध्यानरुप अग्नीइं नस्मकरी
वाढीत स्थानकपांम्या ८ गुणसहित तेप्रते.

२ नमो सिद्धाणं ॥

नमस्कारहो आचार्य प्रते ज्ञानादी पंचाचार पालक
परुपक सूत्र अर्थ जांण अर्थना देनार ३६ वा ११६ गुणे
सहीत तेप्रते.

३ नमो आयरिआणं ॥

नमस्कारहो उपाध्याय प्रते पचीसगुणे सहीत सुत्रना
जणावनार प्रते ॥

४ नमो उवप्पायाणं ॥

नमस्कारहो मनुष्यलोकमां सम्यक् ज्ञानदर्शन चारीत्रा
दीके करी मोद्धसाधक समस्त साधु २७ गुणसहित प्रते.

५ नमो लोए सब साहूणं ॥

एज पंच परमेष्टी नमस्कार केहवोठे.

६ एसो पंच नमुकारो ॥

समस्त पाप असातारूप तेप्रतें नाशनोकरणहारहे.

७ सब पाव प्पणासणो ॥

समस्त मंगलीकमां एटले लोकिक लोकोत्तर सर्व मंगलीकमां.

८ मंगलाएंच सवेसिं ॥

प्रथम वा मुख्य होय मंगलीक ए चउद पूर्वनुं सारहे.

ए पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अक्षर गुरु लघु पद संपदा

६८ ७ ६१ ए ८

इति नवकार पदार्थ समाप्तः ॥१॥

९ अथ पंचिदिअ ॥

पांचइंझिनें कर्मआश्रवथी वस्यना करणहार ॥

पंचिदिअ संवरणो ॥

तीमज नव प्रकारें ब्रह्मचर्य गुप्ती धारक तेनव ब्रह्मगुप्तीनी गाथा । वसहि कह निंसिज्जिं ॥ दिअ कुट्टितर पुवकी लिय पाणीए अइमार्याहार भिूसणाय ॥ नवबंजचेरगुत्तीज ॥१॥ एगाथानो अर्थ ॥

१ वसहि—स्त्री पसु हीजमा दीकेसहीत जग्या तजे ॥

२ कह—स्त्रीआदीकनी कामक्रीमायोग्य कथा नकरे ॥

३ निंसिज्जिं—स्त्रीनें आसनें बेधमीसुधी नबेसवुं ॥

४ दिअ—स्त्रीनां अंगो पांग सरागें नजोवां ॥

५ कुट्टितर—नीतीप्रमुखनें अंतरे स्त्रीनांगीतादीक नसांचले.

- ६ पुव्वकीलिय-व्रतलीधापेहेलां करीजेकांमक्कीमातेनसंजारे
 ७ पणीए-प्रणीतजे बहु माद्यक आहार नवावरे ॥
 ८ अइमायाहार-घणु नोजन आकंठलगे नखावुं ॥
 ९ विजूसणाय-वृतधारी सरीरनी वीजूप्याजे सोजाते नकरें
 तह नवविह बंनचेर गुत्तिधरो ॥

च्यारप्रकारना कपाय जे क्रोध मान माया लोभ ॥
 अप्रसस्त तेमुक्याढे जेने कपते बंध आयते लाज तेहे
 जीहां ते कपाय ॥

चउ विह कसाय मुक्को ॥

ए अठार गुणेकरी सहीत ॥

इअ अधारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥

पांचप्रकारे महाव्रत तेणेकरी सहीत ते पांचमहाव्रत-
 नां नाम अर्थ ॥

- १ सव्वानं पाणाइवायानं वीरमणं-सर्वजे त्रस थावर प्रा-
 णीना प्राणना रक्क.
- २ सव्वानं मुसावायानं वीरमणं-सर्वथाप्रकारे मृषा वा
 जुठु वचन न बोले ॥
- ३ सव्वानं अदिणादाणानं वीरमणं-सर्वप्रकारे अणआप्यु
 कोइनु कांय कीवारे कीहांये नलीइ ॥
- ४ सव्वानं मेहुणानं वीरमणं-सर्वथा मैथुन वा स्त्रीनुसेववु
 तेहनं वीरमण वा तजवुं ॥
- ५ सव्वानं परीगहानं वीरमणं-सर्वथा परीग्रह वाज्य परी-
 ग्रह ए जेदे अभ्यंतर परीग्रह १४ जेदे तेहनी ममतानु
 तजवु ॥ एपांच महाव्रते सहीत.

पंच मह वय जुतो ॥

पांच जेदें आचार पालवाने समर्थ तेआचारनांनाम ॥
ज्ञानाचार दर्शनाचार चारीत्राचार तपाचार वीर्याचार ॥

पंच विहा यार पालण समजो ॥

पांच सुमतीं सुमता ॥ तेपांच सुमतीनांनाम ॥

- १ श्रया सुमती—चालवानी शुंछरीती.
- २ नाषा सुमती—सुध नाखवानी रीती.
- ३ अेषणा सुमती—आहारादीक सुधलेवानीरीती.
- ४ आदान नंम नीखेवणा सुमती—नंमजे पात्र प्रमुष
लेतां मूकतां नलीमती.
- ५ पारिष्ठापनका सुमती—मल मुत्रादीक प्रववामां नलीमती.
एपांचे सुमतीनेवीषे जीवरक्षा उपयोगे करे ॥
त्रण्य गुप्तीं गुप्ताढे तेगुप्ती ३ कहेढे ॥
- १ मनगुप्ती मन माठां चंतनथी गोपववु ॥
- २ वचनगुप्ती—वचन माठां बोलवार्थी गोपववु ॥
- ३ कायगुप्ती—सरीर माठां कृत्योथी गोपववु ॥

पंच समिज ति गुतो ॥

ए ढत्रीस गुणे सहीत गुरु माहाराहोय ॥१॥

ढत्तीस गुणो गुरु मज्ज ॥२॥

३ अथ इच्छामिखमासमणो ॥

इबुबुं हेकमाश्रमण क्कमादी गुणवंत गुरु तुमप्रतें ॥

इच्छामि खमासमणो ॥

वांदवानें यापनीकाजें शरीरनी शक्तींकरी ॥

वंदिनं जावणिज्जाए ॥

पापव्यापारनां सर्वकृत्य निपेधीनें ॥

निसीहिआए ॥

मस्तकेकरी ते उपलक्षणथी पंचांगे वांछुं ॥

मठएण वंदामि ॥

४ अथ गुरुने साता सुख प्रच्छा ॥

इबुं हेस्वामी सुखे रात्रीमां तथा सुखे द्विसमां ॥

इच्छकारि सुह राई सुह देवसी ॥

सुखे तप इच्चारोध समतानावे थयो ॥

सुख तप

तथा आपनें शरीरे वा देहे निरावाधा जे असमाधी वा पीमा वा असाता रहीतपणुं वर्तेवे ॥

शरीर निरावाध

सुखे संयमजे १४ नेदे तेहनी यात्राते तेहमां वरतोढो वा आदखुं ते नीर्वहोढो वा धारणकरोढो ॥

सुख संजम जात्रा निर्वहोढो ॥

हेस्वामीस्याता ज्ञातजे असनादिक सुधमांन ४२ दोषर हीत पाणीजे सुध उस्नोदकादिकनो लाज देज्यो ॥

हे स्वामी साता ज्ञात पांणीनो लाज देज्यो ॥

पढे त्रीजुखमासमणदेइ यथा सक्ती व्रत पच्चस्काण करे ॥

५ अथ इरियावही ॥

आपणी इठाइंकरी आदेश वा आज्ञा वा हुकम करो वा आपो ॥

इच्छाकारेण संदिसह

नगवन् एटले नगशब्दना १४ अर्थते तेहमांथी आदि
अंत्य बे वरजी झानादिक १२ गुणेंसहीत ॥

नगवन्

हालवा चालवादिकना पापथकी वा साधु श्रावकना
मारगमां जे वीराधना ॥

इरिया वहिअं

प्रतीक्रमु निवर्तुवा पाठो ओसरुं ॥ एम गुरुपासैं हुकम
माग्ये श्रीगुरुकहे पम्किमेह ॥

पम्किमामि ॥

इमज इबुं वा तहतीएटले गुरुवचन प्रमाणकरुं ॥

इच्छं ॥

अजिलखांमि इमज वांबुं ॥१॥ प्रतिक्रमवानें वा नीवर्त्त
वानें अर्थे ॥१॥ एबेपदनी प्रथम संपदा वा वीसामानीहय ॥१॥

१ इच्छामि पम्किमिजं ॥

इरणं इरिया एटले हालवुं गमनकरवुं मारगें ते मारग बे
प्रकारेठे ॥ एक राजपंथ बीजो साधु तथा श्रावकनो जेआचार
ते रूप मारग तेहमां चालतां जेकांड प्राणीआदेनें पोमा
थइ होय तेवी राधनाथकी ॥१॥ पाठो ओसरवा इबुं.

इति संबंध ॥ एबेपदनी बीजी संपदा थइ ॥१॥

२ इरिया वहियांएविराहंणाए ॥

गमनते स्वस्थानकथी बीजे स्थानके जवुंते ॥

आगमनते बीजे ठामथी स्वस्थानके आववुते ॥

ए एकपदनी त्रीजी संपदा थइ ॥३॥

३ गमणांगमणे ॥

प्राणिते वेरंझी तेरंझी चोरंझी एत्रण्य ने आक्रमे वा संघटे वा अमये ॥१॥ बीजते सर्वधानादीक आक्रमणते तेहने अमवे करी ॥२॥

४ पाण कंमणे।वीय कंमणे ॥

हरिते सेप सर्ववनस्पतीने अमवे करी ॥३॥

ओसते सर्व त्रेह तारप्रमुख सुक्ष्मपांणीने चांपवे उत्तिंगते गर्दनाकारजीव वा कीमीनगरांदीक चांपवे पणग ते पांचेवरणी फुलण वा उव वा थुल्य दगते मृतिका सचित भूमी चीखल वा दक जेजल माटि ते मिठादिक सर्वजातनी माटि मृकट ते करोलीया प्रमुखना संतानते जाल प्रमुखने अमवे करी ॥४॥

हरियकंमणे।उंसा उत्तिंग पणगद

ग मट्टी मकमा संताणा संकमणे ॥

पूर्वे कह्या तेहमांना जेकोइ में जीव जांणतां अजाणतां विराध्या डुःखे थाप्या वा डुःखपमाम्या ॥१॥

५ जे मे जीवा विरांहिया ॥

हवे ते जीवना जेदकहेठे ॥ एकइंझीठे फरसनारूपते वा प्रथवीकाय।अपकाय वा पांणी।तेउकाय वा अग्नि।वाऊकाय वा वायरो।वनस्पती वा वृक्षादि।कायपद समूह अर्थे ठे ॥ एपांचेने ऐंझीकहो वा थावरकहो ॥१॥ वेरंझीते फरसन रसन ए वे इंझी संख कोमा जलोआदि ते ॥२॥

६ एगिंदिया।वेइंदिया ॥

वीसह्नी करणें ॥

पावाणं० ॥ ते पापजे अस्याताकारक वा ज्वडः स्व हेतु
जेकर्म तेहने निर्धात वा डूर करवा वा उदेदवा अर्थे ॥५॥

पावाणं कम्माणं निग्घायणं ॥

गमि० । ते स्थापन करूतू काउस्सग्गप्रत्ये एटले आ
देहव्यापार थकी तजु वा बोसरावुंतुं प्रस्न० स्युंसर्वथा उ० आ
गारसहीत ॥६॥

गमि काउस्सग्गं ॥

इति इरियावहीया तसोत्तरी ॥

संपदा पदं गुरुवर्णं लघुवर्णं सर्ववर्णं ॥

८ ३५ ३४ १७५ १७७

हवेकाउस्सग्गमांजे आगार जे बुट वा माफीमागी ले
वी के आटलां थये वा कखे काउस्सग्ग भागे वा खंमाई नही ॥

॥ अथ अन्नं उससिएणं ॥

अन्नं ते अन्यत्र एम सयलेकहेवु के सुखनासिका
थकी उँचोश्वास लेतां ग्रहणकरतां माहरो काउस्सग्ग न जागे
एम अन्यत्र वा बीजेसयलेगामे कहेवुं ॥ त्रएयसंपदा अरिहं
तचेइआणं नीगणीठे

४ अन्नं उससिएणं १

निससिएणं । ते मुख नासिकाथकी नीचो स्वास मु-
कतां थकां न जागे ॥ खासिएणं । ते कास वा उदरस आवे
मुखे आमोहाथ देवे का० न जागे ॥

निससिएणं २ ॥ खासिएणं ३ ॥

गीएणं । ते ठीकि आवते आमोहाथदेतां का० न जागे ॥
॥ जंजा० ॥ ते जंजा वा वगासुं आवते आमो हाथ देतां
का० न जागे ॥

गीएणं ४॥ जंजाइएणं ५॥

उमुएणं । ते उद्गार वा ओमगार आवें आमो हाथ
देवें का० न जागे ॥ एसवें जीवरहाहेते आमोहाथदेवो ॥
वाय० ते अधोद्वारथी वायसंचार थवाथी का० न जागे ॥

उमुएणं ६॥ वाय निसग्गेणं ७॥

जमलिए । ते अकस्मात् देहत्रमणे पुजीने बेसतांका०
न जागें ॥ पित्त०॥ ते पीत चमें तथा मुर्छा आवे वा पीतमुर्छा
एवे आवे पुंजी बेसतां का० न जागे०

जमलिए ८॥ पित्त मुच्छाए ९॥

सुहुमे० । ते सुक्ष्म वा थोडुं वा लगार अंग रोमादिक
कंपवे हालवे का० । न जागे ॥

सुहुमेहिं अंग संचालेहिं १॥

सुहुमेहि । ते सुक्ष्म वा लगार खेल वा श्लेष्म संचालवे
वा हालवे का० । न जागें ॥

सुहुमेहि खेल संचालेहिं २॥

सुहुमेहि । ते सुक्ष्म वा थोमीपिण छष्टिहालवे वा मे
खोनमेख मेसवते का० । न जागे०

सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं ३॥

एव० । ते पुर्वे कहाजे आगार ते आदि सब्दथी बीजा
पिण जाणवाते कहेवे ॥ अग्निजय विद्युतवा विजली तथा

वाथराधि वस्य संजाववें हंसकजीव आमपासते तथा साप
चोरादि घरस्थानक पस्तुजांणी अधुरें काउस्सग्ग पारी बीजे
तांमे काणकरतां काण नजागे एअगार ॥

६ एव माइएहिं १। आगारेहिं २॥

अजग्गो ते नजागो माहरो काउस्सग्ग सर्वथा अखंमि
रहो पूर्वोक्त कारणोथी अपवादे ॥ अविण । ते माहरोकाण नवि
राधानं वा अवीनासितरहो देशथीपिण

अजग्गो ३। अविराहिण ४॥

हुळमेण । ते होज्यो वा थज्यो माहरो काउस्सग्ग कीहां
सुधिते हवे कहेवे ॥

उळुमे ५। काउस्सग्गो ६॥

जावण ते जीहांसुधी अरिहंत नगवंतने नमस्कार एटले
नमो अरिहंताणं पदकहीने

७ जाव अरिहंताणं १ नगवंताणं २॥

नमुक्कारेणं ३॥

नपारेमिण ते नपारू वाण नपारपासुं

नपारेमि ४

तावकायंण ते तेटलोकाल वा तीहांसुधी आ काया वा
देह वा सरीर ॥ ठाणेणं ते एकवामे राखु वा नहलावुं

८ तावकायं १। ठाणेणं २॥

मोणेणं ते वचन अणबोलवें वा मुन रहेवे ॥ जाणेणं
ते ध्यानजे जलुध्यानध्यावें माठुं ध्यांन तजवें मन एकाग्र करवे

मोणेणं ३। जाणेणं ४॥

अप्पाणं ते आत्माजे शरीर आत्मानें तजुनु कुव्या
पार वा माताकार्योथी नीवर्त्तवुं ॥

अपाणं ५ । वोसिरामि ६ ॥ इति ॥

हवे काउस्सगकरतां १ ए दोप टाली काणकरवो ते १ ए
नांम अर्थ साथे लखीइंठे ॥

गाथा नाप्पनी ॥ १ घोमग २ लय ३ खंनार्ड ॥ ४
मालु ५ व्ही ६ नियल ७ सवरी ८ खलीण ए बहु १० लंबुत्तर
११ थण १२ संजई १३ नमुहं गुली १४ वायस १५ कविठे
॥ १॥ १६ सिरकप १७ मुय १८ वासणि १९ पेहिती चइज दो
स वस्सगो ॥ लंबुत्तर थण संजई ॥ नदोस समणिण सबहु
सट्ठीणं ॥ २ ॥

संख्या सुत्रपद अर्थ

- १ घोमग-घोमानीपरें पग वांकाराखी करते०
- २ लय-जताते ब्रह्म वेलमीनीपरें हालेते०
- ३ खंनार्ड-थंजादिके जंठागु लेइ करते०
- ४ माल-मालें मागलें मेंढी पाटमे माथुलगावी करते०
- ५ व्ही-गाडानी उध्यपरे पग मीलावी करते०
- ६ नियल-नीगडजे वेडीवंतनीपरें पग पोहोला राखेते०
- ७ सवरी-नीलडीनीपरे हाथ गुज्यथानके राखेते०
- ८ खलिण-रजोहरणाजे ओभो वा चवलो वांको राखेते
- ९ बहु-बहुनीपरे माथु नीचु करी करते०
- १० लंबुत्तर-पहेरवानु वस्त्र हीचणथी नीचुराखेते०
- ११ थण-डांमप्रमुखथी सरीर ढांकी राखेते०
- १२ संजई-सीतादीकथी सरीर ढाकी राखेते०

१३ नमुहंगुली—नांपण वा आंगलीप्रमुखधी गणते०

१४ वायस—कागदानीपरे आंगव्यो फेरवेते०

१५ कविठो—वस्त्र संकोचीराखेते०

१६ सिरकंप—माथुं हलावे धुणावेते०

१७ मुय—मुगानी वा वोवदानीपरे हुंहुंकरेते०

१८ वारूणि—मदीरानीपरे बडबड सव्वद करते०

१९ पेहि—वांदरानीपरे होठ हलावेते०

ए जगणीस दोष साधु आवकने सर्वेतजवा साधवीने
१६ वर्जवा १०—११—१२ तेत्रण्य नही आवीकानें १५ वर्ज
वा ए—१०—११—१२ ते च्यार नही ॥ इति ॥

॥ अथ लोगगस्स वा चोवीसथो ॥

लोगस्स । ते धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकासा
स्तिकाय १ जीवास्तिकाय १ पुज्जलास्तिकाय १ ए पांच आस्ति
कायरूपलोक तं केवलज्ञान दिपके उद्योतकारक वा प्रकासक १

१ लोगस्स उज्जोअ गरे ॥ १

धम्मण्ठे श्रुत चारित्र वा साधु आवक संधसरूप धर्म
तथा साधु साधवी आवक आवीका ए चतुर्वीधधर्म तिर्थना
करनार । जिनते राग द्वेष रूप शत्रुं जीत्या तथि जिन ॥ २

२ धम्म तिठ्यरे जिणे २ ॥

अरिहंते ॥ ते अरिहंत वीशेषपदेकरी कीरतीस वा ते
मना गुणनी स्तवना करीस ॥ ३

३ अरिहंते कित्तइस्सं ३ ॥

चउडी ॥ ते चोवीसे जिनप्रत्ये तथा अपीसव्वधी वी-

जाक्षेत्र समंदी केवली जाव अरिहंत प्रत्ये ॥४॥

४ चनुवीसं पि केवली ४ ॥ १

उसजण ते त्रयगाथा इनाम पाठसिद्धजांणवा ॥

तेमनां नाम अर्थतो सामान्यवीषेपथीकहेठे ॥ प्रश्नसर्वजिन
संजमजार धारणकरवा वृषज तो वृषने स्यो विषेप ॥ उतर
वृषजनु लंठनठे तथामाताइं चनुइ स्वप्रदिठां तेहमां प्रथम
स्वप्ने वृषजदिठो माटे वृषजप्रथमप्रभु ॥१॥ मजि ॥ ते परीसह
उपसर्गादिकथा नजीताय तेथी अजित तथा प्रचुनीमात
प्रभुगर्भे आव्यापठे द्यूत चा सारीक्रीमाइं राजा नजीत्या माटे
अजितनाथ ॥२॥ तेमने वांडु ॥५॥

५ उसज मजिअंच वंदे ॥

संजवण ते संजवंती चोत्रीस अतीसयसुख तथाप्रभु
गर्भे आव्ये छर्निह गयो सुनिहृथयो अनाजादिकनो संजव
वा उत्पती थई माटे संभव ॥३॥ मजि ॥ ते वली प्रभुगर्भे
आव्यापठे इहादिक आनंदपामि वारंवार प्रचुनीस्तवनाकरी
माटे अनितंदन ॥४॥ ६ ॥

६ संजव मजिनंदणं च ॥

सुमइण ते जलीमतीठे जेहनी ते तथा प्रचुजी गर्जेआ
व्ये माताइं वे सोक्योनो न्यायकरयो तेथी सुमंती ॥५॥ व
ली पञ्चम ॥ ते पद्मकमलसम प्रभुनुदेहमाटे तथा प्रभुगर्भे आ
व्येमाताने कमलमी सज्यानो मोहीलो उपनो तेदेवताइंपुख्यो
माटे प्रश्न ६ प्रभु ॥ सुप्रार्सेण ते सौजतांठे प्रोसांजेमनां ते प्रचु
गर्भेआव्ये माताने बेपासेखर्ज हती ते मटी माटे ७ सुपार्श्व ॥८॥

७ सुमङ्गलं पञ्चमपुष्पं सुपासं ॥

जिणचण ते जिनजे सामान्य केवली प्रमुखमां चंडत
मान वा चंद्रतुल्य सोम वा प्रजाकांती ते तथा प्रभु गर्भेश्या
व्ये माताने चंडपीवानो मोहजोगरनो माटे चंडप्रभु ॥ ७ ॥
तेमने वांडुं ॥ ७ ॥

८ जिणच चंदपुष्पं वंदे ॥ ८

सुविहिंच० । ते जलो सोजन आचार ठे ते तथाप्रभुग
जैआव्यापठे माता सर्वविधिमां नीपुणथयां माटे ॥ ८ ॥ सुवि
धि ॥ तथावली वीजुं नाम पुष्पदंत ते फुलवत् ठे दंतपंक्ति मा
टे पुष्पदंत ॥ ८ ॥

९ सुविहिंच पुष्पदंतं ॥

सीअलण । ते समस्त संताप सम्या माटे तथा प्रभुना
पीत्याने पीत्तदाघज्वर थयेलोते घणाजपाई नसम्यो ते प्रभु
नीमातानो हाथफरसथयाथी मीढ्यो सीतलथयु माटे सीत
ल १० ॥ सिज्जंस० ते वीस्वने श्रेयनाकरनारमाटे श्रेयांस त
था प्रभुनापीताना घरमां कुलकर्मागत देवाधीष्टीत एक स
ज्याहतीतेउपर कोइथीवेसातुनही तेप्रभुगर्जे आव्यापठे मा
ताई तेसज्या फरसी तेथी दुष्टदेव गयो श्रेयश्रयु माटे श्रेयांस
॥ ११ ॥ वासुपुज्जंचण ते वली इंद्रेपुज्या वा इंद्रे पुजनीक
वा वसुपूज्यराजानापुत्र माटे वा वसुजे रत्नादीक तेहनीवृथी
थइ माटे वासुपूज्य १२ ॥ च समुचय अर्थे ॥

१० सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच ॥

विमल० । ते विमलज्ञानादिकगुण जेहनाते तथा प्रभु

गर्जे आव्यापठे मातानु देह मती नीरमलथइ माटे विमल
१३॥ मणंतं० ते अनंत ज्ञानादि गुणेशहीत माटे वा प्रज्जुग
र्जेआवे माताइ अनंतरत्वे सहीत माला स्वप्ने दिवीमाटे अ
नंत १४॥ रागादिक जित्यामाटे जिन ॥११॥

११ विमल मणंतंच जिणं ॥

धम्म० ते दुर्गतिमां पमत्ता प्रांणीयोने धरीराखेते तथा
प्रज्जुगर्जेआव्यापठे माता दांन शील तप ज्ञाव धर्मे अधीक त
त्पर थयां माटे धर्म १५॥ संतिच० ते वली कर्म समाव्याथी
वा प्रज्जु गर्जेआव्यापेहेलां मरगीनोरोगहतोते उपसम्यो माटे
शांति १६॥ तेमनेवांडुं ॥११॥

१२ धम्मं संतिच वंदामि ॥३॥

कुंथुं० ते प्रज्जुगर्जेआव्ये माताइ स्वप्नमां रत्तनी थुज्जदि
वी माटे कुंथुं १७॥ अरंच० ते प्रज्जुगर्जेआव्यापठे माताइ रत्त
मय आरोदिगे तेथी अर १८॥ वली मलिं० ते परिसहादि म
ल्ल जित्याथकी मल्लि वा प्रज्जुगर्जेआव्यापठे माताने एककृतु
मा ठएकृतुनां फुलनी मालानो वा सज्ज्यानो दोहलो उपनो
तेदेवताइ पुख्यो तेथी १९ मल्लि ॥१३॥

१३ कुंथुं अरंच मल्लि ॥

वंदे मुणिणते जाणे वा मुणे जगतने त्रीकाज तेमुनि
ज्ज्जां व्रत तेसुव्रत तथा प्रज्जुगर्भेआव्ये माता मुनिनीपरें ज्ज्जां
व्रत पालतां तेथी मुनिसुव्रत २० तेमने वांडुं ॥१४॥

१४ वंदे मुणिसुवयं ॥

नमिजिणंच० ते परीसहादिकथी न नम्या तेथी वा प्र

पुनर्भवेत्याव्या शत्रु राजा नम्या तेथी २१ नमि कर्मशत्रु जि
त्या माटे वली वांडवुं ॥१५॥

१५ नमि जिणंच वंदामि ॥

रिठनेमिण ते रिष्टजे डुरित तेहने चारवा चक्रवारास
मांन वा प्रपुनर्भवे आव्यापठे माताए स्यांमरत्तनो रेददिगे
माटे अरिठनेमि २२॥ पासं० ते सर्व नाव जाणेतें पार्श्व वा
प्रपुनर्भवे आव्ये माता सज्यामां सुतां घोर अंधारीरात्यमां पा
सामां साप दीगे तेथी पार्श्व २३॥ वद्धमाणंच ते तीमज न
पनाथकीमांसी ज्ञानादिकें वध्या माटे वा प्रपुनर्भवे आव्यापठे
सिद्धार्थराजा सर्व सारथी वध्या माटे वृधमान २४॥ च समु
चय ॥ १६॥

१६ रिठनेमि पासं तह वद्ध माणंच ॥ ४

एव ते अंम में पुर्वोक्तप्रकारे समस्त गुणस्तुतीकरी
नांमथकी ॥१७॥

१७ एवमए अजिथुआ ॥

विहुअ ते वलीएतीर्थकर केहवाठे वीसेपप्रकारें धुणा
वीठे वा डुरकरीठे कर्मरूप रजमेल वा पुर्वे बांधां कषायथी
जे कर्ममल तेकारणमाटे प्रह्मीण जरा वयहांणी मरणप्राण
त्यागरूप ए नथी करवां तेथी ॥१८॥

१८ विहुअ रय मला पहीण जर मरणा ॥

चणुण ते एहवा चोवीसे पिण जिनवराण ते श्रुतादि
जिनथकी अधीका माटे ॥१९॥

१९ चणुवीसंपि जिनवरा ॥

तिष्ठयराण ते एहवा तीर्थकरते मुजने प्रसाद करता हो । एटले माहरे तमारुं ध्यानथायो ॥१७॥

१७ तिष्ठयरा मे पसीअंतु ॥५॥

कितिअण ते किर्त्तिताते मनेकरी वचनेस्तव्या काय योग्ये वांद्या मनेकरीस्तुता वा चीत्या ॥ पुष्पादिके महीता वा पूजिता ॥१८॥

१८ कितिय वंदेअ महिआ ॥

जेएण ते एते वृषजादिक चोवीसैं लोकजेप्राणी वर्ग मांही कर्ममल अजावे उत्तम सिद्धते वंठीतार्थ सिध्याजेद ना ॥ १९ ॥

१९ जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥

आरुगण ते जावआरोग्य सिद्धि तेदनेअर्थेबोहि ते बो धि अरिहंत धर्मनीप्राप्ती तेज आरोग्यपणु मुजने लाज हो वा आपो ॥२०॥

२० आरुगं बोहिलाजं ॥

समाहिवरण ते समादि वर प्रधान जावसमाधि सर्व आत्मगुणानुं प्रगटपणुं तेमुजने आपो ॥२१॥ ॥

२१ समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥

चंदेसुण ते चंड्यकी नीरमल तर कर्म मल कलंक अजा वें पंचमि अर्थे सप्तमी वीजक्कीठे ॥२२॥

२२ चंदेसुनिम्मलयरा ॥

आइच्चेसुण ते आदीत्य वा सूर्य तेषकी अधीक तरप्र कासकारकठो एटले केवलज्ञाने सहीतलोकालोक प्रकासक

॥यतः॥ गाथा॥ चंदा इच्च गहणां॥ पन्ना पयासेइ मिअंखित्तं ॥
केवल्लिअ नाण लंनो ॥लोआलोअं पयासेइ ॥१॥ माटे॥२६॥

२६ आइच्चेसु अहिअंपयासयरा ॥

सागरवरण ते सागरजे समुइ तेहमां वरजे प्रधान ए
टले सयंजू रमण तेथकीपण गंजीर परीसहादिकथी अद्धो-
न एहवा० ॥२७॥

२७ सागरवरगंजीरा ॥

सिद्धाण ते सिद्धवा कीण कस्यांढे सेषकर्म सिद्धीजे पर
मपद मुजनें आपो ॥२८॥ पद संपदातुल्य

२८ सिद्धा सिद्धिममदिसंतु ॥७॥

गाथा ॥ अरुवीस पय पमाणा ॥ इह संपय वन्न डुसय
ढप्पन्ना॥नामजिण डय रूवो॥ चउवीसउन्न एस अहिगारो॥१

| | | | | |
|----|-------|----------|---------|----------|
| पद | संपदा | गुरुवर्ण | लघुवर्ण | सर्ववर्ण |
| २८ | ३८ | २८ | २२८ | २५६ |

इतिश्री लोगस्स वा चोवीसडो समाप्तः ॥

॥ अथ सामायकलेवानु पच्चखाणः ॥

॥ करेमिजंते ॥

करेमिजंतेण ते करुणुं हेजगवंत सुख कळयाण वंत वा
जयांत सातजय रहीत वा जवांतते च्यारगति त्रमण नीवा
रक सर्वकार्य गुरुआंणाइंमाटें

करेमि जंते ॥

सामाइअंण ते समजे समता ज्ञानादिगुणनो आयजे
लाज तेथाय जेहथी ते सामायक ॥

सामाश्च ॥

सावङ्गं ते सावद्य तज्जु वेप्रकारेणे ॥ एकतो सर्वथी
बीजुं देशथी एवेत्तेदमा श्रावकने सधले सांमान्य अनुमती
वे माटे सर्वपद नकहे ॥ पापसहीत मन वचन कायजे ज्यो
ग व्यापार तेपच्चस्काणेकरी वर्जुवु वा नीषेधुंवु ॥

सावङ्गं जोगं पच्चस्कामि ॥

जावनियमं ते जीहांसुधी नीम वा मर्यादा एटले जे
टलो काल व्रते रहुं ज्यन्यथी एकमुहुर्त्त वा वेधडी प्रमाण ॥
प्रयुपासना वा ग्रह्याव्रतनी सेवा वा पालवुं ॥

जाव नियमं पज्जुवासामि ॥

डुविहंण ते पच्चस्काणना च्यारत्तेदवे तेहमां डुविधन्नि
विध नेदेकरी करुंवुं ॥ तेक्हेठे ॥

डुविहं तिविहेणं ॥

मणेणं ते मनेकरी वचनेकरी कायाएकरी ॥

मणेणं वायाए काएणं ॥

नकरेमि ते नकरू आपे वा पोते ॥ नकारवेमि ते
वीजापासे नकरावुं ॥

नकरेमि नकारवेमि ॥

तस्स ते अतीतकाल वा गतकाल करेड्यु जे सावद्य
तेप्रते प्रतीक्रमु मनथी हेज्जगवंत मिट्ठाडुरु देवेकरी नीवरतु

तस्स जंते पन्निक्कमामि ॥

निंढामि ते आपणीसाख्ये ॥ गरिहामि ते गुरुसा
ख्ये एटले सर्वकार्य गुरुने कहेवा पुर्वक ॥

निंदामि । गरिहामि ॥

अप्पाणं ते आत्माने वा कायाने सावययोगथी व्यु
त्थजामी तजुवुं ॥

अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

॥ अथ सामायक पारवानुं ॥

॥ सामाइय वयजुत्तो ॥

सामाइयं ते सामायक व्रतसहीत वा युक्त पणे ॥

सामाइय वयजुत्तो ॥

जावण ते आदरुंतिहांथीमानी यावत होय नियम वा
मर्यादा नियम संयुक्त वा सहीत तीहां सुधीमां ॥

जाव मणे होई नियम संजुत्तो ॥

छिन्नईं ते बेदाय वा कपाय असुन्नजे माठां कर्म जीव
ने डखदाइ हेवां ॥

छिन्नईं असुहं कम्मं ॥

सामाइयं ते सामायक कखुं वा सामायक सहीत र
ह्यो तेटलीवार ॥

सामाइय जत्तिआवारा ॥१॥

सामाइयं ते सामायक कखे वा दीधें ॥

सामाइय मिउं कए ॥

समणोइवण ते श्रमण वा महात्मा वा साधुनीपेखे
श्रावक होय जेहनणी वा जेमाटे ॥

समणोइव सावजुं हवई जम्मा ॥

एएणं ते इणें कारणेकरीनें ॥

एएण कारणेणं ॥

बहुसो० ते घणीवार सामायक करवुं ॥

बहुसो सामाईयं कुळा ॥

सामाईक० ते सामायक विधिसहीत जेमेलीधुं जाव
त वीधीसहीत तेम पाखुं समाप्तकरवुं ॥ वीधीसहीत करतां
जेकोइं परमादादीकथी अविधि आसातना वा अवज्ञा थइ
होयते आसातना हुं मने वचने कायाइं करी मिष्ठामिडकमं
ते फोकटहो मुजने तेडकृत ॥ इति ॥

सामाईक विधि लीधुं विधिं
पारवुं विधिकरतां जेकांइ अ
विधि आसातना हूइ होइं ते स
विहुं मने वचने कायाइं करी
मिष्ठामि डकमं ॥ ॥ इति ॥

गाथा सामाईअ० ते सामायकनेवीरे पोसहनेवीरे जे
टलो कालरह्यो ॥ जेजीवनो काल जाइं ॥ ते आत्माने सफ
जथयो जांणवो ॥ तेवीना जेकाल संप रह्यो ते संसार फल
हेतु जांणवो ॥

सामाईअ पोसह संछिअस्स ॥

जीवस्स जाई जो कालो ॥

सो सफलो बोधवो ॥

सेसो संसार फलहेउ ॥ १ ॥

इति सामायक पोसह पाख्यापठे जावना गाथा ॥

॥ अथ सव्वलोए ॥

सर्वलोए० ते सर्व वा समस्त लोकमां अरिहंतनां चै
त्ये तेवंदवाने अर्थे करुणुं हु कायोत्सर्ग ॥ वोसीरामो सुधी
अर्थ पुर्वनीपरे ॥ सर्वलोकपदे त्रणे लोकना थापनाजिनली
धा तेकहेते ॥

१ अधोलोके संख्या० ७७५०००००० चमरादी जवने०

२ उर्ध्वलोके संख्या० ८४९७०५३ सौधर्मादी वैमाने०

३ तीर्णे लोके संख्या० व्यंतर जोतसिमां असंख्याता० ते

सर्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥

करेमि कानुस्सग्गं ॥ ॥ इति॥

॥ अथ जगचिंतामणि ॥

जगचिंतामणि० ते जगतनेवीषे चिंतामणि रत्नसमा
न मनोइठीत दायकठो ॥ त्रएय लोकना नाथ ठाकोरठो ॥

जग चिंतामणि जग नाह ॥

जगगुरु० ते जगतनागुरुठो मोक्षमार्ग देखाडवेकरीनें
जगतना प्राणीगणने ज्ञावदयाएकरी राखनारठो ॥

जग गुरु जग रक्षण ॥

जग बंधवते० जगतप्राणीगणने व्यसन कष्टथी राख
वा बंधवसमानठो ॥ जगतजंतु साथनें इठीत पुर पोहो
चारुवा सार्थवाहसमानठो ॥

जग बंधव जगसत्त्ववाह ॥

जगज्ञाव० ते जगतना ज्ञाव वा स्वरूप जाणवाने वी
चक्षण वा माहाठो ॥

जग ज्ञाव विश्रक्षण ॥

अथावयण्ते अष्टापद परवत् उपर स्थाप्यांठेरूप जेहनां ।

अथावय संवविय रूअ ॥

कम्मठण्ते झानावणिआदेँ आठजे कर्म तेहनोवीनास
कखोठे जेणो ॥ सुधध्यांनयोगेँ ॥

कम्मठ विणासण ॥

चौवीसंपिण्ते एहवाचौविस पीण जिनवर जयवंतावतोँ ॥

चउवीसंपि जिणवरजयंतु ॥

अप्पमिहयण्ते नथीहणातु कोइथी सासन वा आझा
जेहती एहवा ॥

अप्पमिहय सासण ॥१॥

कम्मजूमिण्ते कर्मजे असिआदी सखथी मसिजे लीप
वादिकथी कसिते खेति प्रमुखथी आजीवीका जेजुमीइंते
कर्मजुमीण्पांच जरत पांच ऐरवर्त ॥ एवइ अनीअत ने
पांचमहावीदेहते सदाकाल नीयत कर्मजुमीमां ॥

कम्म भूमिहिँ कम्म जूमिहि ॥

पढमण्ते प्रथम संघयण वज्ज ऋपज नाराचनांमे हाम
बंध रचनाना धणी ॥

पढम संघयणि ॥

उक्कोसयण्ते उत्कष्टेकाले १४०जिनवर वीचरता लाने
वा पांमीइं ॥ तेकीमण्पाचजरतमांपांच ऐरवर्तमां एमदस तथा
पांचमहावीदेहमां प्रतेके वत्रीस विजयो तेमाएँकसोसाठ सर्व
मली १४० श्रीअजितनाथवीजाप्रभुनेवारें ॥ जिनवर वीचर
ताहता वा पांमीए ॥

वंडुण्ते वांडुं पुर्वोक्त सर्वजिनप्रत्ये ॥

वंडु जिन सवेवि ॥३॥

सत्ताणवईण्ते हवे त्रएयलोकमां जिन भुवनसंख्याकहेहे
॥ सताणुं हजार ॥

सत्ताण वइण्ण सहस्सा ॥

लखाण्ते ठपन्न लाख ने आठ कोड ॥

लखा ठप्पन्न ५६ अठ्ठ कोमीठ ॥

वत्तीससयण्ते वत्तीसेने व्यासी ॥

वत्तीससय ३९ वासिआइण्ण ॥

तिअ लोएण्ते त्रएयेलोकनां चैत्य वा जिन भुवन वांडुं
॥ एटलें ८५७००३८३ थयां ॥

तिअ लोए चेइए वंदे ॥४॥

हवे तेप्रासादनी सर्व प्रतीमानी संख्या कहेहे ॥ पन्नरसण्ते
पनरसे कोम ॥

पन्नरस कोमि सयाइं ॥

कोमिण्ते बेहेतालीसकोम अठावनलाखण ॥

कोमि बायाल लख अमवन्ना ॥

ठत्तीसण्ते ठत्तीस हजार ने एसी ॥

ठत्तीस सहस्स असिआइं ॥

सासयण्ते १५४२५८३६०८० एटला सास्वता वा अक्र
त्रीम बींव वा प्रतीमा पणमुहु ॥

सासाय विंवाइं पणमामि ॥५॥

जंकिंचिण्ते जेकांइं नांमतीर्थे ॥

जं किञ्चि नाम तिष्ठं ॥

सग्गे०ते स्वर्ग वा उर्धलोके । पाताल वा अधोलोके । मनु
प्यलोके वा त्रीढेलोके । एम त्रएयेलोकें ॥

सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥

जाइंणते जेटली जिनप्रतीमा वा जिन विंवहोइं ॥

जाइं जिण विंवाइं ॥

ताइंणते तेटला समस्त वा सघला प्रणमुहुं ॥

ताइं सवाइं वंदामि ॥६॥

इति जगचिंतामणि चैत्यवन्दन ॥ समाप्तः ॥

॥ अथ नमुत्तुणं वा सक्रस्तव ॥

नमुत्तुणं०ते नमस्कार हो वाथाओ वा वाक्यालंकारें ॥
कोने तेकहेठे इहां त्रएय पाठे ॥ तेकहेठे । अरिण्ते ॥

१ अरिहंताणं—कर्म शत्रुं हएया तेमाटे ॥

२ अरहंताणं—इंझादिकने पूजवायोग माटे ॥

३ अरुहंताणं—कर्मबीज वाल्यु फरीवावबुनथी वा फरी संसा
रमां थावबुं नथी माटे ॥

तेमनें जगवंत प्रत्ये यथा ऐश्वर्यस्य । समग्रस्य रूपस्य ३
यशसः ३ श्रियः ४ धर्मस्यापि य प्रयत्नस्य ६ पाणा जगइती गता
॥१॥ एमसमग्र इश्वर्यादिलक्षण वर्ते ते जगवंत ते प्रते विवे-
कीने स्तववा ॥१॥

१ नमुत्तुणं । अरिहंताणं २ जगवंताणं ॥

आइगराणं०ते आपआपणा तीर्पने वीपे सघली नीती
हेतु श्रुतधर्मनीआदीकर प्रत्ये ॥

तिष्ठयराणं० ते तीर्थकर प्रत्ये तीर्थते चतुरवीधसंघ साधुः
साधवीश श्रावकश्च श्राविकाश्च रूप वा प्रथमगणधर रूप ते
तीर्थकर प्रत्येण॥ सयंसं० ते आपणीमेलेज परोपदेशवीना
स्वयमेव बोधतत्त्व तेप्रत्ये ॥१॥

५ १ आर्द्रगराणं॥ ५ तिष्ठयराणं॥ ३ सयंसंवृक्षाणं॥
पुरिसुत्तमाणं० ते पुरुषमां विशेष सत्त्ववंत वा स्वज्ञाव
थीज सर्वकाल असाधारण गंभीर्यादिक गुणयोग्य उत्तम ते
प्रत्येण॥ ३॥

३ पुरिसुत्तमाणं॥ १ ॥

पुरिस सीहाणं० ते कर्मशत्रु नीवारवा सूर्या सीहनीपरे
सिंह तेप्रत्ये वा मतवादी गज मद नंजने सिंहतुल्य ॥तेप्रत्ये०

पुरिस ५सीहाणं ॥

पुरिसवर० ते पुरुषरूप कमलमां पुंमरीक कमलनीपरे
प्रधान जेम कमल कर्दमथी उपनु जले वध्युं तेवेने तजी उ
पररहे तेम प्रभुपण कर्म पंकथी उपना नोगजलथी वध्या
तोपण तेवेमां लेपाता नथी तेप्रत्ये ॥

पुरिस वर ३पुंमरीआणं ॥

पुरिस० ते पुरुष्यमां जला गंधहस्ती समांन जेम सां
मान्यगज गंधहस्तीथी डुरजाय तीम प्रभुना महीमाथी सकल
इत उपज्ज्व डुरजाइ तेप्रत्ये ॥३॥

पुरिस वर ४गंधहस्तीणं ॥३॥

लोगुत्तमाणं० ते लोकजे नव्य लोक तेहमां चोत्रीस
अतीसय सहीत उत्तम ते प्रत्ये ॥

४ १लोगुत्तमाणं ॥

लोगण्ते लोकजे वीशेष नजीक सिद्धि गमन योग्य न
व्य प्राणीजने सम्यक्त बीज पमामनार रागादिक उपड्वथी
राखवाने योग हेमकारी नाथ तेप्रत्ये.

लोग २नाहाणं ॥

लोगहिआणंण्ते सर्व एकेंझीयादि प्राणीवर्गने हीतदा
यक वा पचास्तीकायजे धर्मास्तीकाया दीक परूपवाथी हीत
दायक प्रत्ये

लोग ३हिआणं ॥

लोग पईवाणंण्ते लोकजे वीशेष संझीरूप तेहने देशना
रूप कीरणेकरी मिथ्यात्व अज्ञान अंधकार डुरकरे ते प्रत्ये ॥

लोग ४पईवाणं ॥

लोगण्ते लोकजे गणधरादिक ने वीशेष तत्व प्रकाशक
माटे लोकप्रद्योत कारक तेप्रते ॥४॥

लोग पज्जोअ ५गराणं ॥४॥

अजयण्ते सातजेजय तेहथकीराखनार तेमाटे अजय
दय तेप्रत्येण्ते जयनां नाम

- १ इहलोक-मनुष्ये मनुष्यथीजयते वा आज्ञवनो,
- २ परलोक-मनुष्ये तीर्यचा दिकथीजयते वा परजवनो
- ३ आदान-आपनीवस्तु परले ते जयण
- ४ अकसमात्-धरमांवेठां रात्रादिके जयतेण
- ५ आजीवीका-डुर्नीहादिके केमजीवीसतेण
- ६-मरणजय-प्राणवीयोग रोगादिके मरण ते.

७ अपजसन्नय—एकांमकरतां महारो अपजसन्नयसेते ॥

एसातन्नयनु वीशेष स्वरूप प्रवचनसारथी जाणवुं ॥४॥

५ अन्नय १ दयाणं ॥

चरकुण्ते तत्त्वबोधरूप ज्ञान दृष्टि दायक तेप्रत्ये ॥

चरकु २ दयाणं ॥

मगण्ते संसारभ्रमण उन्मारगधी नीवारी मोहादिक
क्षयोपसमेन ज्ञानादिमोक्षमार्ग गुणवांणे वीसेप पमाप्ते
तेप्रत्येण ॥

मगग ३ दयाणं ॥

सरण्ते रागादिकधी नयन्नित सत्त्वनेत्राण वा रद्धक
तेसरण दायकप्रत्ये ॥

सरण ४ दयाणं ॥

बोहिण्ते जलु दर्शनजे सम्यग् दर्शन दायकतेप्रत्ये ॥
एपुवोक्त अन्नयादि पदतेसर्वे वीषेपगुणप्राप्तीअर्थे ॥५॥

बोहि ५ दयाणं ॥५॥

धम्मण्ते धर्मजे मुनि धर्म ग्रही वा श्रावक धर्मदायक
अधीकनीमीत हेतु तेप्रत्येण ॥

६ धम्म १ दयाणं ॥

धम्मण्ते समस्त वस्तुधर्म यथायोग्य अवसरउचीत
उपदेशक वा यथार्थ कथक तेप्रत्येण

धम्म २ देसयाणं ॥

धम्मण्ते धर्मवसीकरनार मोक्षफल उपनोगथकी वा
धर्मवृद्धी पमाप्नानार नायक तेप्रत्येण ॥

धम्म नायगाणं३ ॥

धम्म० ते धर्मरथ सम्यग् मार्गे चलावनार मार्गं अष्टने
मारग दायक तेप्रत्ये मेघकुमार वत् ॥

धम्म सारहीणं४ ॥

धम्म वर० ते धर्मतेज वर वा प्रधानं ज्यारगती नो अं
तकरवायकी धर्मवर चानुरंत चक्रवर्ती वा मिथ्यात्व अवर्त
कपायादिक भावशत्रु जीत्या तेप्रत्ये ॥६॥

धम्म वर चानुरंत ५ चक्रवर्तीणं ॥ ६

अप्पमि० ते नथी हणातु वा नथीखलातु कट जे वांस
नीभीत्य कुटजे जीत्यप्रमुख परवतादिकथी एहवु जलुं केव
लज्ञान सर्वत्र व्यापी वीशेष बोधरूप जेहनु तेप्रत्ये०

७ अप्पमिहय वर नाणं ॥ १

दंसण० ते बली वर प्रधान केवलदर्शन सामान्य बोध
रूप तेपण पुर्वोक्तथी अखलीतर्हे जेहनु तेप्रत्ये तथा विअट्ट
ते वित्युठे उद्वस्थपणु जेहनु एटले आत्मानाज्ञानादिगुण
ढंकाएला हता ते ज्ञानावर्णिआदे घातीकर्म जवाथी प्रगट
थया ते प्रत्ये० ॥७॥

दंसण धराणं विअट्ट उज्जमाणं २ ॥७॥

जिणाणं० ते रागादि शत्रु जीत्या तथा तेमने आलंब
ने रह्याजे नव्य प्राणी तेहने ज्ञानादिगुण देशाना देवे करी
जीतावे तेप्रत्ये ॥

८ जिणाणं जावयाणं १ ॥

तिन्नाणं० ते आपे नवसमुद् तरी पाख्य पांम्या बीजा

प्राणीउने संसारसमुद् तारक तेप्रत्ये ॥

तिन्नाणं तारयाणं १ ।

बुद्धाणं० ते बुद्धाजे ज्ञात तत्त्व स्वयमेवपणे तेप्रत्ये त
या बीजा योग्य जीवोने देशना देइ तत्त्वबोध करे तेप्रत्ये ॥

बुद्धाणं बोहयाणं ३ ॥

मुत्ताणं० ते भवहेतु कर्म पासथी मुकाणा ते प्रत्ये बी
जाने कर्मपासथी मुकावे तेप्रत्ये ॥७॥

मुत्ताणं मोअगाणं ४ ॥७॥

सवन्नूणं० ते सर्व वस्तु विशेषथि सर्व ज्ञाने जाणे
तेप्रत्ये । सवदरीसिणं० ते बीजे समये सर्व वस्तु समान्यपणे
देखे ते शीले सर्व दर्शि तेप्रत्ये०

ए सव नूणं १ । सवदरीसिणं १ ॥

हवे एकपदे सिद्धिगतीनां नामादि कहेठे ॥

१ सिव० ते उपड्वरहीत २ मयल० ते चालवानी की
रीयारहीत अचल ३ मरुअ० ते अरूज वा रोगरहीत ४ म
णंत० ते अनंतज्ञानयोगथी बेहरहीत अनंत ॥

सिव मयल मरुअ मणंत ।

५ मरुअ० ते कयहेतु अजावे अकय मवा वाह०६।
ते अव्याबाध वा पीमारहीत अमूर्तिमाटे ७ मपुणरावत्ति० ते
नथी फरी संसारमां आववुं ते अपुनरावर्ति ॥

मरुअ मवावाह मपुणरावत्ति ॥

सिद्धिगति० ते सिद्धिगतीनां पुर्वोक्तनाम ध्यावायोग्य
लोकाग्र लक्षणा स्थानक पांम्या तेप्रत्ये ॥

सिद्धिगद् नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं ॥

नमो० ते नमो जिनप्रत्ये जिअण ते जीत्यावे नय प्र
त्ये तेमने ।

नमोजिणाणं जिअनयाणं ॥

इहां स्तवनामाटे पुनरुक्तनही ॥यत॥गाथा ॥ सझाय
जाण तवो ॥ उसहेसु उवएस थुइ पयाणसू । संतगुण कि
नणसुअ ॥ नहुंतिपुणरूत्त दोसान ॥१॥ इडेकट्याणके कहुं
माटे सकस्तव कहीएवे ॥ हवे त्रिकालसमंदी अरिहंत वांद
वाअर्ये पुर्वाचार्यकृत गाथा तेहनो अर्थ जेअ अईआण ते जे
गतकाले सिढ्यया ॥

जेअ अईआ सिद्धा ॥

जेअ ते जेआवतेकाले सिद्ध थस्ये

जेअ नविस्संत णागए काले ॥

संपइ० ते जेवली हालकाले वरते वे ।

संपइअ वट्टमाणा ॥

सवे० ते जेपुर्वोक्त समस्तने त्रीवीध्यजे मन वचन का
यार्ये वांडुं ॥ इति ॥

सवे तिविहेण वंदामि ॥ इति ॥

| | | | | |
|----|-------|----------|---------|----------|
| पद | संपदा | सर्ववर्ण | लघुवर्ण | गुरुवर्ण |
| ३३ | ए | ३९७ | ३६४ | ३३ |

अथ जावंती वे०

हवे त्रएयलोकनां चैतवादवाने कहे वे ॥

जावंति० ते जावत वा जेटला जिननां चैत्य वा प्रा

साद तेटलां ॥

१ जावंति चेइआइं ॥

उहेअ० ते उर्धजे वैमानीकमांनां अधो-सुवनपतीआ
देमानां तिरियते मनुषलोकादिकनां एम त्रण्येलोकनां

२ उहेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥

सवाइं० ते सर्व तेटलां चैतप्रतें हुं वांछुं ॥

३ सवाइं ताइं वंदे ॥

इहणते हुं इहां रहोथको तीहां रहां चैतप्रत्ये ॥

४ इह संतो तव संताइं ॥१॥

हवे साधु मुनिराज त्रीगालोकेरह्यातेवांछुं ॥

जावंतणते जेटलावे कोइपण साधु मोक्ष पंथनेसाध

ता शुद्ध मारग पालक परुपक

५ जावंत केवि साहू ॥

जरहेणते जरत पांच औरवत पांच महावीदेह पांच ए
पन्नरे क्षेत्रना ॥

६ जरहे रवय महाविदेहेअ ॥

सवेसिणते समस्त वा संघला तेमने प्रणाम करुं ॥

७ सवेसि तेसिं पणज ॥

तिविहेणते त्रीवीधते मन वचन कायाइं करीने केवावे
ते मुनिराज त्रीवीधे मनआदे त्रण्येमुंमयी वीरमाठेतेमने वांछुं.

८ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥९॥

संपदा

पद

सर्ववर्ण

गुरुवर्ण

लघुवर्ण

८

८

७३

४

६९

॥ अथ उवसग्गहरं ॥

इवे उपसर्ग हर स्तवन पुर्वे श्रीभद्रबाहुस्वामीइं संघ
ना आग्रहर्था संघना उपइव नीवारवा कखुठे ॥ उवसग्ग
ते उपसर्ग देवादिकना करेलाने हरवा वा वारवा समरथ ए
इवो पार्श्वनामे यद्ध वा धरणीधरादि

१ उवसग्ग हरं पासं १

पासं० ते त्रेवीसमाश्रीपार्श्वनाथना सासननो सेवक ते
पार्श्वप्रक्षुने वांडुं केहवाठे ते प्रक्षु कर्मजे ज्ञाना वर्णिआदे
घन जे नीवम-तेशकी मुकाणाठे

२ पासं वंदामि कम्पन घण मुकं २ ॥

विसहर० ते दशजातीना सर्व तेहनु वीप वा ऊर तेह
नो हरणहार वा विषधरजे क्रोधादिक ज्ञाव सर्प तेहनुजेवि
प तेहने उपसमादिकेकर। समस्त नसामनार एहवानेवली

३ विस हर विसनिन्नास ३ ॥

मंगल० ते मंगलीकजे कल्याण रूपजहमी तेहनु घर
नीवास स्थानक एहवा श्रीपार्श्वनाथठे ॥

४ मंगल कल्याण आवासं ४ ॥ १ ॥

विसहर० ते हेस्वामी तमारानांमनो महीमातेरूप विष
घर फुलींग एहवेनामे मंत्रठे ॥

५ विस हर फुलींग मतं ५

कंठे० ते एमंत्र जेप्राण। कंठे धरे सदाय

६ कंठे धारेइ जो सया मणुउं ६ ॥

तस्त० ते प्राणीनें सूर्यादि माठाग्रह कास स्वासादिक

रोग मरगी ॥

७ तस्स गह रोग मारी ७ ॥

डुण्णते माठो ताव वा ज्वर जाय उपसमे ॥

८ डुठ जरा जंति उवसामं ८ ॥९॥

चिठ्ठण्णते रहो डुरे वा वेगलो रहो बीजा तप जप हो
म मंत्र कष्टदाइ ॥

ए चिठ्ठ दूरे मंतोए ॥

तुप्पण्णते हेपार्श्वप्रक्षु तुज्जप्रते प्रणाम कीधोथको पिण
बहु वा घणाफलने देनार थाय वा होय ॥

१० तुप्प पणामोवि बहुफलो होई १० ॥

नरतिरिएण्णते मनुष्य तिर्यंचगतिमां पण जीव ॥

११ नर तिरिएसु वि जीवा ११ ॥

पावंति० ते पांमेनही डुख असाता लक्षण दोगंच जे
वली दरीद्र पणाप्रते

१२ पावंति न डुरक दोगच्चं १२ ॥३॥

तुहण्णते तुमारुं समकीत वा नीश्चे दर्शन पांमे थकें

१३ तुह समत्ते लद्धे १३ ॥

चिंतामणिण्णते एसमकीत कहेवुडे तेकहेवें ॥ चिंताम
णि रत्न तथा कडपवद्ध थकीपिण अधीकडे एटलें तेतो मागे
तेने आज्ञवसमंदी पुज्जलीक क्कण बीनासी सुखदाइ ने सम
कीततो जावत मोक्षसुषदाइ माटे अधीकडे ॥

१४ चिंतामणि कप्पपायव प्रहिए १४ ॥

पावंति० तेवली तेजीव पांमे नीरवीघनपणे अंतरायवीना

१५ पावंति अविग्घेणं १५ ॥

जीवाण्ते जीव अजरा मरं स्थानक एटले जरा वा व
यहांणी मरण वा प्राणत्यागपणा रहीत एहवा मोक्षस्थान
लोकाग्र प्रत्ये ॥

१६ जीवा अयरा मरं ठाणं १६ ॥४॥

इअण्ते हेप्रजु महाजसजे त्रीलोकव्यापी यस कीर्ति
तीर्थकरनामकर्म पुन्य उदए एम पुर्वोक्त प्रकारे सम्यग्
संस्तव ॥

१७ इअ संथुज महा यस १७ ॥

जत्तिण्ते हवे तेस्तवन जगतीना समोदे एटले अंतरं
ग जावे पुरीत रदय वा मन तेणेकरीने

१८ जत्ति जर निप्ररेण हिअएण १८ ॥

ता देवण्ते हेदेव तेकारणमाटे दे वा थाप्प मुजने धो
धी वा धर्मनी प्राप्तीप्रते ॥

१९ ता देव दिङ्ग वोहिं १९ ॥

नवे नवे० ते नवोज्जव वा जन्म जन्मने वीपे हेपार्श्व
जिन सामान्यजिनमां चंझसमान जीहांसुधी मोक्षनपामुं
तिहांसुधी तमारा भारगनी वा तमारी वांणीनी सरधा
हज्यो ॥ इति ॥

२० भवे भवे पास जिणचंद २० ॥५॥ इति ॥

पट संपदा गुरुवर्ण लघुवर्ण सर्ववर्ण

२० २० २० १६५ १८५

॥ अथ जयवीथराय ॥

जय० ते जयवंता वरतो हे वितराग जगत गुरु वीस्व
नाथ जगतमां महोटा नाथ वा स्वामी

जय वीश्वराय जग गुरु ॥

होउणते हो वा आयो वा जवतु मम वासुजने तुमारा
प्रज्ञावधकी हेजगवंत ॥

होय मम तुह प्पज्ञावउ जयवं ॥

जव० ते जव वा संसार निर्वेद वा वैरागता एटले जव
दुःखथी नीकलवानीइहा । मार्गानुसारी एटले माठामारण
तजवेकरीने तत्वनी प्राप्ती रूप०

भव निवेउ मग्गाणुसारिआ ॥

इठ० ते इष्ट फल सिद्धि वा आजवसमंदी इठीत प्राप्ती
रूप चीत समाधीपणुं ॥

इठ फल सिद्धी ॥१॥

लोग० ते लोकमां वीरुध जे निंदनीक कार्य तेहनो
त्याग वा तजवु एटले सर्वज्ञादिकनी निंद्यादिक तजवी०

लोग विरुध चाउ ॥

गुरु जण० ते गुरुजनजे माता पीत्यादिकनी पूजा नक्ति
वली परना अर्थ वा कांमनु करवुं वंठा इहीत चवली अर्थ ॥

गुरु जण पुआ परउ करणं च ॥

सुहगुरु० ते शुभ गुरुनो जोग एटले वीसेष श्रुत चा
रीत्र वंत आचार्यनो संजोग तेमना हीतउपदेश वचननी
सेवना आराधवु ॥

सुह गुरु जोगो तवयण सेवणा ॥

आज्ञवमां अखंरु रहो संपुरण प्रणीध्यानरूप पण
नही नीआंणारूप ॥ एवेगाथा गणधरकृतवे ॥

आज्ञव मखंमा ॥५॥

वारिऊई० ते इहां जिनआगममांजोपिण वाखुं वे नी
आणानु करवुं ॥

वारिऊई जइवि नियांणं बंधणं ॥

वीअराय० ते हे वीतराग तुमारासिधांतिं ॥

वीयराय तुह समए ॥

तइवि० ते तोहेपिण मुजनें होजो तुमारी सेवा

तह वि मम डऊ सेवा ॥

जवेजवे० ते जवो जव वा जन्मो जन्म तुमारा चरण
कमलनी ॥

जवे जवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥

डुक्खखण्ड० ते डुःखते असातादायक कर्मते ज्ञानावर्णा
दिक तेहनो कयवा नास ॥

डुक्खखण्ड कम्म खण्ड ॥

समाहि० ते समाधी वा समभावे वा पंथित मरण व
ली वोधी वा समकीत धर्मनी प्राप्ती वा लान ॥

समाहि मरणं च वोहि लाभोअ ॥

संपक्कण्ड० ते संपजो वा थाण मुजने एह पुर्वोक्त लान

संपक्कण्ड मह एअं ॥

तुहनाह० ते तुमने हेनाथ तुमने परणाम करवायकी

तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥

सर्वमंगलं ते सर्वजे मंगलीक दही धरो प्रमुख द्रव्य
मंगलीकमां उत्कृष्टं मंगलीक ॥

सर्वं मंगल मागल्यं ॥

सर्वं ते समस्त कल्याणनु कारण वा हेतुवे ॥

सर्वं कल्याण कारणं

प्रधानं ते प्रधान वा श्रेष्ठे वाकीसर्वधर्ममां

प्रधानं सर्व धर्माणां ॥

जैनं ते श्रीजिनेश्वरनु शासन वा वचन जयवंतु वर्तो
॥ इति वा समाप्तः ॥

जैनं जयति शासनं ॥५॥ इति ॥

| | | | | |
|----|-------|----------|---------|----------|
| पद | संपदा | गुरुवर्ण | लघुवर्ण | सर्ववर्ण |
| १० | १० | १३ | १६८ | १९१ |

॥ अथ अरिहंत चेष्टायां ॥

अरिणं ते अरिहंतजे ज्ञाव अरिहंतनां चैत्य जेहथी ची
त समाधी करते चैत प्रतीमा लक्षण ॥

१ अरिहंत चेष्टायां ॥

करेमि ते ज्ञावअरिहंतने वंदनादिक नीमीत्य करुवु
हुं कानसगं एसबंधेकायाने वोसरावुवु वा नीवर्तावुवु बी
जाकार्योथी ॥१॥

करेमि कानस्सगं ॥२॥

वंदणं ते जला योगवमे करीने जेहवु वांदे फलथाय
तेहवु मुजने कानस्सगथी फल थान वत्तिआएते आर्ष वा
पुर्वसुपुरुष वचनवे ॥

१ वंदण वत्तिआए ॥

पूजण ते पूजन गंध मालादिकधी जे फल तेकाउस्स गगधी हो ॥

पूअण वत्तिआए ॥

सक्कारण ते वस्त्र आचुपणादिके पुजा करें जे फल ते काउस्सगणे हो ॥

सक्कार वत्तिआए ३ ॥

सम्माण ते स्तवनादिक गुण कीरतनधी जे फल था य ते काउस्सगधी हो ॥

सम्माण वत्तिआए ४ ॥

बोहि ते जिनधर्म तेहनो जे लाज वा समकीतनु पां मवु एटले आवते काले जिनधर्म वा समकीत पांमु ते नी मीते काउस्सग करुवु ॥

बोहि लाजवत्तिआए ५ ॥

निरुवसगण ते जन्म जरा मरणादिक उपसर्ग थकी र हीत वा एटले मोक्षसुख पांमवा नीमीते काउस्सग करुवु ॥ अथादिक सहीत ते बीना कखे सुंते कदेवे ॥ १ ॥

निरुव सगग वत्तिआए ६ ॥ २ ॥

सछाएण ते पोतानी स्वरुचिइं नही वल्लानी योगादीकें

३ सछाए १

मेहाएण ते मेधा वा ज्ञानी बुधीइं तज्जवा आदरवाना ज्ञानयुक्त नही जम्ता वा मुरपता सही तेण अथवा मर्यादा सहीत नही नुन्या धीक ॥

मेहाए९ ॥

धिईए० ते धृती जे मन स्वस्थपणें नही रागादिक आ
कुलीत मन

धिईए३

धारणाए० ते अरिहंत गुण अविसारणरूप पणे नही
स्युंन्यतापणे ॥

धारणाए४

अणुप्येहाए० ते अरिहंतना गुण एज वारंवार चिंतन
करवे करी नही वीकळपे

अणु प्येहाए५॥

वट्टमाणीए० ते पुर्व सर्धादिक पांच गुण वा जेदते सा
थे संबंध सहीत ब्रधी अर्थे ॥

वट्टमाणीए६ ॥

गमि० ते ए हेतु माटे रडुडु कान्ठस्सग्ग करुवुं अन्न सि
ष्य प्रस्न पुर्वे करेमी कहुं हतु वली केम कहुं तेहनो उत्तर ती
हां करीस्य एम क्रीया सनमुख अर्थे इहां करण अर्थे ॥ फेर
प्रस्न सूं सर्वथा काया नसराववी उत्तर० अन्नब्रज्ज० दिक आ
गार सहीत०

गमि कान्ठस्सग्गं७ ॥३॥

अन्नब्रज्ज० ते पद पुर्व वरणव्युंठे० हवे अरिहंत चेइआणं
तथा अन्नब्र नससिएणं एवेनां पदादि कहेवे ॥ गाथा ॥ अ
रिहं वंदण सद्वा ॥ अन्नबू सुहुम एव जा ताव ॥ अम संपय
ते आत्ता ॥ पय ॥ वन्न डुसय गुण तीस हिया ॥१॥

अरिहंतना० पद संपदा गुरु लघु सर्ववर्ण

१५—३—१६—७३—८९

अन्नतृणा० १८—५—१३—१२७—१४०

वेनाकुल० ४३—८—१९—१००—११९ ॥ इति ॥

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

पुस्कर० ते पुस्करवर द्वीप त्रीजो ते अरध मानुपोतर
परवत मांहील्यो

पुस्करवर दीवहे ॥

धायई० ते धातकीखंन वीजो द्वीप तथा जंबूद्वीप प्र
थम ए अदीद्वीपमां

धायई संमेत्र जंबु दीवेअ ॥

जरहे० ते जरत क्षेत्र मेरु थकी दक्षिण दिशी लवण
समुद्र हीमवंत परवत मध्य वरती ॥ एरवत क्षेत्र ते मेरु
थकी उत्तर दिशी लवणसमुद्र तथा शिखरी परवत मध्य व
रती ॥ विदेह ते महावीदेह क्षेत्र ते मेरु थकी पूर्व पठ्वीम
दिशी ई ए त्रण्य क्षेत्र जंबूद्वीपमां तेज नांमे ६ धातकीखंन
मां ६ पुस्करवर अर्धमां सर्वे मली पन्नर क्षेत्र थयां तेहमां

जरहेरुवय विदेहे ॥

धम्माइगरे० ते धर्म जे श्रुतधर्मनी आदिना करनार
वा परूपनार तेमने नमु स्तवु ॥१॥

धम्माइ गरे नमंसामि ॥१॥

इवे श्रुतधर्मनी स्तवना करेवे ॥ तमतिमिर० तेज जे
अज्ञान ते रूप तीमीर वा अंधकारं अथवा वद स्पष्ट निधन

नेदे ज्ञानावरणीअ कर्म तिमिर तेहनो पमल वा समोह तेहने
तम तिमिर पमल ॥

विद्वंसणस्स० ते वीध्वंस वा वीनास करे जे वली सुर
जे देवताना समोह नरेंड वा राजाना गण तेमने महीत
वा पुंजीत

विद्वंसणस्स सुर गण नरिंद महिअस्स ॥

सीमाण्ते मर्यादा धरे ते सीमाधर ते श्रुतप्रते वंदे वांडवु ॥

सीमा धरस्स वंदे ॥

पप्फोमिअ० ते प्रकसपणे फोमी वा त्रोमी विवेकीए
मोहरूप जाल मिथ्यात्वादिरूप जेणे करीने एहवु श्रुतज्ञान
तेहना वली गुण देखामे ठे काव्यें ॥

पप्फोमिअ मोह जालस्स ॥९

जाई० ते जनमनां दुःखने जरा ते वयनी हांणी वा
वृद्धपणाना दुःखने मरण ते प्राण त्याग दुःखने सोग ते इष्ट
वीयोगे दुःख धरवा रूप दुःखने सर्वथा नाश पमामनार

जाई जरा मरण सोग पणासणस्स ॥

कद्धाण० ते कड्याण वा आरोग्य पुष्कल वा घणु न
ही थोडु वीशाल वा वीस्तीरण सुख पमामे एहवुं ॥

कद्धाण पुष्कल विसाल सुहा वहस्स ॥

कोदेव० ते देव वैमानीक दानव जुवनपती आदे नर
जे मनुष्य तेमना इंद्र ते सुधर्मादीक चक्रवृती तेहना समु
हे अर्चति वा पुंजीत एहवु

कोदेव दाणव नरिंद गणान्नि अस्स ॥

धम्मस्स ते धर्म जे श्रुतधर्म ते सार पांमीने कोण प्रमाद करें न कोइ करें ॥

धम्मस्स सार मुवल्लभ करे पमायं ॥३॥

सिद्धे जो ते चतुर्थी ने ठामे सप्तमी वीनक्की ठे ॥ सिद्धमय हे लोको देखो प्रतीष्टीत समस्त नय व्यापकपणे त्रीकोटी समस्त शुधपणे देखो उद्यमे करीने नमस्कार करो जिनेश्वरनां आगम प्रते नंदी ते वृधीने अर्थे सदा नीरंतर संयम ते चारीत्र हो वीशेष पणे ॥

सिद्ध जो पयउ नमो जिण

मए नंदी सया संजमे ॥

देव ते देव वैमानीक नाग धरणेंद्रादिक जूवनपती सुवर्ण ते जले वर्णे सहीत जोतिपि सुर्यादिक किंनरते व्यं तरादिक तेमना गले ते समुहे बता जावें अरचीत एहवुं ॥

देव नाग सुवन्न किन्नर

गण स्सप्पुअ जावच्चिए ॥

लोगो ते ज्ञानादी जे लोक ते इहां श्रुतज्ञानमां प्रतीष्टीत ठे वा सर्वे ज्ञानादि गुण श्रुतज्ञान वस्यठे तथा जग त जे त्रण्य लोक ज्ञेश्वपणे मृत्या मनुष्या उपलक्षणथी तिर्यच नारकग्रहवा सुर देव वैमानीक उर्ध्वलोकं एम त्रण्ये

लोगो जउ पयउउ जग

मिणं तेलुक मच्चासुरं ॥

धम्मोवट्टण ते एहवा प्रकारनो श्रुतधर्म वृधी पांमो साश्वतो अर्थथी वीजय ते परवादि जितवे धम्मसुत्तरं चारी

त्रधर्म प्रधान वृध हो वा हे मोक्षार्थी ज्ञान वधी पमामो
इति उपदेशः

धम्मो वद्धन् सासन्नं विज

यन्नधम्ममुत्तरं वद्धन् ॥४॥

सुअस्सः ते श्रुत तेज वंदनादि नीमीते करुवु कान्
स्सग्ग ॥ श्रुतज्ञान ते अष्टप्रवचन माता सामायकादी चन्
द पुर्व सुधी जगवंतने समग्र इश्वर्यादिक सहीत इहां श्रोय
पण श्रुतज्ञाननी कहेवी ॥ गाथा ॥ सुअनाण ज्ञाय रूवो ॥
अहिगारो एस होइ सत्तमन् ॥ इह पय संपय सोलस ॥ न
वुत्तरा वन्न डुन्नि सया ॥१॥

॥ सुअस्स जगवन् ॥

॥ करेमि कान्स्सग्गं ॥

| | | | | | |
|----|-------|-------|------|-----|------|
| पद | संपदा | अक्षर | गुरु | लघु | इति॥ |
| १६ | १६ | २१६ | ३४ | १८२ | |

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

सिद्धाणं ते सर्व अनुष्ठान फलश्रुत एहवा सिद्धप्रते
वा चंतव्या अर्थ सिद्धा ते प्रते बुद्ध ते ज्ञानतत्त्व प्रते ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

पारगयाणं ते संसार दुःख जलधी पार पांम्या प्रते
परंपराए चण्ड गुणवाणां अनुक्रमे फरसी वा क्षयोपसम
जावें प्रथम दर्शन पठें ज्ञान पठें चारीत्र एम परंपराए सि
द्ध थया तेप्रते

पारगयाणं परंपर गमाणं ॥

लोक ते चन्द्रराज्य लोकने अग्रभागे सिद्ध सिद्धान्ते
परें जोयणने चन्द्रविसर्गें जागे पोहोता माटे ॥

लोअग्ग मुवगयाणं ॥

नमस्कार हो सदैव निरंतर सर्व सिद्ध जिण अजिणा
वि ते प्रतें ॥

नमो सयां सब सिद्धाणं ॥२॥

जे ज्वनपति आदे देवतानों स्वामि माटे देवाहीदेव
आसन उपगारि विरसांमि माटे ते प्रतें स्तवना करिईं ठे ॥

जो देवाण वि देवो ॥

जेहने देवता पण वेहाथ जोमि नमेठे ॥

जं देवा पंजली नमसंति ०

ते जगवंत प्रते देव देवि शक्रादि पुजेठे वा पुजीतठे ॥

तं देव देव महिअं ॥

मस्तकवडे करी एहवा श्रीमाहाविरस्वामि प्रते वांडवु

सिरसा वंदे महावीरं ॥३॥

एकवार पण नमस्कार प्रणांम ॥ करवें ॥

इको वि नमुक्कारो ॥

श्रुतजिन अवधिजिन ते मांही प्रधान केवलीजिन मा
ही वृषभ समान तिर्यंकर नाम कर्मना उदयथी उत्तम जि
नवर वृषज तथा विरस्वामि प्रते ते केहेवाठे ॥

जिन वर वसहस्स वद्वमाणस्स ॥

तिर्यंग नर अमर नारक जवानु जव लक्षणरूप संसा
र. जेहनि घणिठे स्थिति छुवेकरि पार पामाय ते संसार

समुद्र ते थकि ॥

संसार सागराउ ॥

तारे पार पमाडे पुरुषने वा नारी स्त्रीने ॥

तारेइ नरं व नारिंवा ॥३॥

गीरनार पर्वतना सिखर मस्तक जागने विषे ॥

उज्जित सेल सिहरे ॥

दिक्षा केवलज्ञान शहश्रावन्नमांही पांस्या निषेधि के
हेतां पाप व्यापार निषेध्या वा निरवांण मोक्षठे जेहने ॥

दिक्षा नाणं निसीहिआ जस्स ॥

ते धर्मने विषे चक्रवर्ति ॥ समान ॥

तं धम्म चक्रवर्ति ॥

श्री अरिष्टनेमिकेण नेमनाथ स्वाग्निने नमस्कारहो ए
गाथा ॥ ॥ अंबिकानी ॥ ॥ आपी ॥

अरिठ नेमिं नमं सामि ॥४॥

दक्षिणे च्यार पश्चिमे आठ उत्तरे दश पुरवे वे सर्व चो
विस श्री अष्टा पद पर्वतने विषे थापना ठे ते ॥

चत्तारि अठ दस दोय ॥

ते जिन ॥ ॥ चउविस ॥ ॥ प्रते ॥ ॥ वांद्या ॥

वंदिआ जिणवरा चक्रवीस्सं ॥

परमार्थ पणे कळपना मात्रे निहि नदि अठा केण कृत
कृत्य थया ठे ॥

परमठ निधिअठा ॥

जे सिद्ध पोहोता ते सिद्धः सिद्धि मुजने आपो ॥

सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥५॥

श्री जिनसासेननु वैआवेच करे प्रवचननी रक्षा करवा
ने सावधान अत्रे गौतमस्वामि ॥ कथा ॥

वेआवच्च गराणं ॥

सर्व लोकने उपेइवे प्रते शांति करे ठे ॥

संति गराणं

सम्यग दृष्टिने समाधि करे ठे गोमुख यक्ष प्रमुख
॥२४॥ ॥ चकेश्वरि प्रमुख यक्षणि ॥ ॥२४॥

सम्म द्विधि समाहि गराणं ॥

तें आराधवा निमित्ते काउसग करु ॥

करेमि काउससगं अन्नवठ ॥

॥ इति श्री संपूर्णः ॥

॥ अथ लिख्यते ॥

नमस्कार हो अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व
साधु प्रते ॥

नमोऽर्ह त्सिद्धा चार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥

संसार रूपि दावानलना वाहने विपे हे जगवंत तु
पाणि समान ठे ॥

संसार दावानल दाह नीरं ॥

मोहरूपणिजे धुलि तेहने हरवाने तु वायरा समान ठे ॥

संमोह धुली हरणे समीरं ॥

मायारूप प्रथवि तेहने विदारवाने हे जगवान तु ह
ल समान ठे ॥

માયા રસા દારણ સારસીરં ॥

નમસ્કાર કરું એહવા શ્રી માહાવીર પ્રતેં વલી જગવંત
કેહવાઠે ગીરીસાર કેહતાં મેરુ પર્વતનીપરે ધિરઠે ॥

નમામિ વીરં ગિરિસાર ધીરં ॥૧॥

જક્તિએ નમ્યાઠે સુર વૈમાંનિક દાનવ જીવનપતિ મા
નવ તેહના સ્વાંમિ જેહને એહવા ॥

જાવા વનામ સુર દાનવ માનવેન ॥

મુઃ કુટ તીहां મોલતિ જે કમલનિ આવલિ જે શ્રેણિ
તેણે કરિ શોજિત ઠે ચરણ જેહના ॥

ચૂલા વિલોલ કમલાવલિ માલિતાનિ

પુચ્યા ઠે અન્નિનત કેળ નમતા જે લોક તેહનાં સમિ
હિત કેહેતાં મન વાંઝિત ॥

સંપૂરિતા ભિનત લોક સમીહિતાનિ ॥

અત્યર્થે નમસ્કાર કરુ એહવા નિર્થેકર જગવંતના ચર
ણ કમલ તે પ્રતે ॥

કામં નમામિ જિનરાજ પદાનિ તાનિ ॥૨॥

જ્ઞાને કરી અગાધ કેહેતાં ગંજિર ઠે પ્રધાનરુપ રુડા પ
દની પદવી જે શ્રેણી તે રુપ જે પાણીના પુર તેણેકરિ અ
નિરામ સોને ઠે ॥

બોધા ગાધં સુપદ પદવી નીરપૂરા નિરામં ॥

જિવ દયારુપ આંતરા રહિત જે લહરી તેહને મિલવે
કરિ અપાર દેહ ઠે જેહનુ ॥

જીવાર્હિસા વિરલ લહરી સંગમા ગાહ દેહં ॥

चुलिका रुपणी वेल ऊधान गुरु मोहोटा गम ते नैग
म संग्रह व्यवहार तेज रुप मणिरत्न संकुल केहेता संकिर्ण
ठे छखे करि पार पांमिइं जेहनो ॥

चुला वेलं गुरु गम मणी संकुलं दूर पारं ॥

प्रधान श्री वीरस्वामिनो आगम सिद्धातरुप समुद्र
प्रतें आदर सहित हुं सेवु जले प्रकारें ॥

सारं वीरा गम जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥

मुख लगे लह लहति धुलि केण कमलना परागना र
सना कणिआ तेहनी जे बहुल परिमल सुगंधी तेणे करी
लीढ लंपट एवी लोल फिरति जे ब्रमरनि श्रेणि ॥

आमूला लोल धूली बहुल

परिमला लीढ लोलालि माला ॥

तेहना ऊंकाररुप शब्दे करि सार मनोहर सोजतां नि
रमल दल पत्र ठे जेहनां एवा जे कमल ते मांहे घरनि जे
चूमिका तिहा निवास ठे जे देविनो ॥

ऊंकारा राव सारा मल दल ॥

कमला गार जमी निवासेण ॥

ठायी सोजा तेहनो संजार समुह तेणे करि सार म
नोझ ठे वर प्रधान कमल ठे जेहना हाथने विपे मनोहर ते
जवांन हार जेहना गलाने विपे सोजे ठे ॥

ठायी संजार सारे वर कमल

करे तारहारा जिरामे ॥

वांणि भारति संदोह संघात ते रुप शरीर ठे जेनें ते ठे

વિ મુજ પ્રતે જવ સંસાર તેહનો વિરહ કહીઈ નાસે તે રુપ
વર સિદ્ધિ મુજને આપો સાર એવી ॥

વાણી સંદોહ દેહે જવ વિરહ ॥

વરં દેહિ મે દેવિ સારં ॥૪॥

ચૌવિસમાં તિર્થંકર શ્રી માહાવીરસ્વામિ જયવંતા વર
તો તે કેહવા છે અનુપમ એહવા સ્વામિ જેહને મેરુ સિંચરને
વિષે ઈંદ્રાણીનના પતી એ વાંલ અવસ્થામાં સ્નાન કરાવ્યું ॥
॥ એહવા ॥

સ્નાતિસ્યા પ્રતિમસ્ય મેરુ શિખરે ॥

શચ્યા વિન્નોઃ શૈશવે ॥

ઈંદ્રાણી કેહવિળ રુપ જોવાને વિસ્મયવંત થઈ થકિ તે
નાથી ઉપનો જે રસ તેને જઠણ કરિ થકિ ત્રાંતિ વડે કરિ
ને જમે છે નયન જેહના ॥

રૂપા લોકન વિસ્મયા હ્રતરસ ॥

આંત્યા ભ્રમ ચક્ષુષા ॥

લુણે પ્રજ્ઞના નેત્રની કાંતિ તે કેવિઠે ઝજ્જલ પવિત્ર
કરિઠે તેને સ્વરસમુદ્રના પાણિ આસંકાવડે કરિને ॥

નન્મૃષ્ટં નયન પ્રભા ધવલિતં

દ્વીરોદકા શંકયા ॥

મુખ જેહનુ જુવે છે વારંવાર એવા શ્રી માહાવીરસ્વામિ
તે જયવંતા વરતો ॥

વક્ત્રં यस્ય પુનઃ૭ સ જયતિ શ્રી

વર્ધ માનો જિનઃ ॥૧॥

हंसना खजा तेने करी दृष्टाता जे कमल तेनि जे रज
तेणे करी पीलावर्ण तथा रक्तवर्ण एहवु खीर समुद्रनु जे पा
णी तेणे नखा एहवा ॥

हंसांसा हत पद्मरेणु कपिश क्षीरा
एवां जो भूतैः ॥

जे सोनाना कलस ते केहवाठे देवागनाना जे स्तन ते
नो जे भार तेनी संगाथे जाणे वाद न करता होय एहवा क
लस तेवडे करिने ॥

कुम्भैरप्सरसां पयोधरजर प्रस्प
र्धिनिः कांचनैः ॥

रत्नसैल केण रत्ननो जे पर्वत तेनु जे शिखर एहवो जे
मेरुपर्वत तेना मस्तकने विपे जन्मा निपेक केण जन्म बुढव
कस्यो ठे जेहनो ॥

येपां मंदर रत्न शैल शिखरे ॥
जन्मा निपेकः कृतः ॥

समस्त सधला सुर देवलोकवासि असुर प्रातालवासि
तेमना जे स्वामि तेमना जे समुह तेमणे एहवा ते जि
नप्रते हुं नमस्कार करुवु अनुक्रमथी ॥

सर्वैः सर्व सुरा सुरे श्वर गणै
स्तेषां नतोहं क्रमात् ॥ ९ ॥

तीर्थंकर जगवानना मुख थकी निकळया एहवा जे
सिंहांत ते गौतमादिक गणाधर भगवाने रूच्यां एहवां जे आ
चारांगादिवारअंग ते विशाल कहीईं विस्तीर्ण वली केहवा ठे.

॥ અર્હ દ્વક્રં પ્રસુતં ગણધર રચિતં
દ્વાદશાગં વિશાલં ॥

આશ્ચર્ય કારી ઘણે અર્થે ઝરેલાં મુનિના ગણજે સમુહ
તેરુપ વૃષજ ધોરી તેમણે કંઠને વિષે ને હૃદયને વિષે ગોચર
કસ્યાં એહવા બુદ્ધિ મઙ્ગિકે બુદ્ધિમાન્ એહવા વલી કેહવાઁ ॥

॥ ચિત્રં વદ્ધર્થ યુક્તં મુનિગણ વૃષજૈ
ર્ચરિતં બુદ્ધિ મઙ્ગિઃ ॥

મોક્ષનુ પ્રથમ દ્વાર બારણુ તેરુપ વ્રત તે અણુવૃતાદિ ચ
રણતે ચારીત્ર તેનુ ફલ જાંણીઈ જેનાથી જ્ઞાનઁ તે જ્ઞાવ
દિવા સમાન ઁ ॥

મોક્ષાગ્ર દ્વારજીતં વૃત્ત ચરણ
ફલં જ્ઞેયજ્ઞાવ પ્રદીપં ॥

જગતીવદે કરિને નિરંતર હું અંગીકાર કરુ સમસ્ત શ્રુ
ત જે સિદ્ધાંત ત્રણલોકનુ સાર તે જ્ઞાનઁ એક ॥

જત્તયા નિત્યં પ્રપદ્યે શ્રુત મહ
મશ્વિલં સર્વ લોકૈ ક સારં ॥૩॥

કર્દમ કેળ કચરાદીકે કરિ રહિત નિર્મલ આકાશના
જેહવિ શ્યામવર્ણી કાંતિ ઁ જેહની કૃપા સૂચક ઁ લોચન
જેહનાં નવિન બીજના ચંડમા જેહવી કાંતિવાલી ઁ ઢાઢ જે
હની વલી બાલચંડનામે કર્તા પુરુષ ॥

નિષ્પંક વ્યોમ નીલં ધ્યુતિ મલ
સદૃશં બાલચંદ્રાભ દંષ્ટં ॥

મત્તં પ્રચંદ્રુ જનમત્ત દેહ ઁ જેહનો એહવો ઘટારવ શબ્દે

करीने जगतने चारेपास पुरतो एहवो जेहनु मदजल ऊरे
ठे एहवो ॥

मत्तं घंटारवेण प्रसृत मदजलं
पूरयंतं समंतात् ॥

जे दिव्य हस्ति ते उपर बेवो थको विचरे ठे आकाशने
विषे एहवो अजिलाखने आपनारो एहवो चिंतितरुप कर
वानी शक्तिठे जेहनी एहवो ॥

आरूढो दिव्य नागं विचरति
गगने कामदः कामरूपी ॥

जह्नु सर्वानुज्जुतिनामे आपो वर मम मुजप्रते सदा नि
रंतर समस्त कार्यनी सिद्धी आपो ॥

यद्गः सर्वानुज्जुति दिशतु मम सदा
सर्वकार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ इति

वांबुवु हे कृमाश्रमण ॥

इच्छामि खमासमणो ॥

वांदवाने एटले सिपे पोतानि डवा जणावि शरीर स
क्ति सहित करिने ॥

वंदिजं जावणिजाए ॥

सर्व पाप व्यापारनो निषेध ॥

निसीहि आए ॥

अनुमति आझा आपो अवग्रहमांहि पेसवानि ॥

अणु जाणह ॥

मुज प्रते मव्या अवग्रह मांहि ॥

मे मित्र ग्गहं ॥

गुरु वांदवाविना बीजो सर्व व्यापार निषेध ॥

निसीही ॥

अधोकाय ते गुरुना पगप्रते माहरे मस्तक निलामे क
रि सं० फरसतां ॥

अहो कायं काय संफासं ॥

खमज्यो भे केहतां हे भगवान माहारा शरीर फरस
थी जे किलामणा उपनि ते ॥

खमणिज्जो जे किलामो ॥

ग्रामे श्रमेवाखेदे करिने तथा बाधा वा पीडा रहितपणे

अप्प किलंताणं ॥

घणे सुभ जावे करिने हे नगवान ॥

बहु सुभेण भे ॥

दिवस अतिक्रम्यो वोढ्यो ॥

दिवसो वड्कंतो ॥

रात्रि अतिक्रमि वोली ॥

राट् वड्कंता ॥

पह पनर दिन रात अतिक्रम्यो वोढ्यो ॥

परको वड्कंतो ॥

अचार मास आठ पढ एकसोवीस रात दिवस अतिक्र
म्यु वोढ्यु ॥

चउमासी वड्कंता ॥

संवत्सर ते वरसते बारमास चोवीस पढ त्रण्यसेसाठ

दिनरात अतिक्रम्यो वोढ्यो ॥

संवत्तरो वड्ढंतो ॥

हे भगवान तुमने संयम यात्रा संयमनो निरवाह सु
खे प्रवर्तें ठे ॥

जत्ता चे ॥

वलि तुमने सरिरनि समाधिठे हे जगवन ॥

जवणिल्लं च चे ॥

खमाबुवु हे क्कमा श्रमण ॥

खामेमि खमासमणो ॥

दिवस सबंधिज्जे जे कांइ व्यतिक्रम अपराध ते प्रते ॥

देवसिअं वड्ढकमं ॥

अवस्य कर्णिमाटे दिवस समंधि अतिचार पम्भिकमवो

आवस्सि आए ॥

तेमाटे अवग्रह वाहिर निकलि पडिकमु निवरतुवु ॥

पम्भिकमामी ॥

हे क्कमाश्रमण क्कमावंत गुरु तुमने ॥

खमासमणानं ॥

दिवस मांहि जे ज्ञानादिकनि आसातना किधि ॥

देवसिआए आसायणाए ॥

तेत्रिसमांहिलि अनेरि एक्के किधी हुइ ॥

तित्तीस त्रयराए ॥

जे कांइ मिथ्यानावे खोटेजावे चिनयादिक किधो होय

जंकिंचि मिच्छाए ॥

मन दुःकृत के० माँठें मनें करि दुःकृत वचन बो
लवे करी ॥

मण दुक्कमाए ॥ वय दुक्कमाइ ॥

कायाथी अविनयने करवे करि ॥

काय दुक्कमाए ॥

क्रोध जावे करि मान अहंकारे करि माया कपटे करि
लोने करि ॥

कोहाए माणाए मायाए लोभाए ॥

अतित अनागत वर्तमान सर्व के० अण्ये काल मांहि
आशातना किधि ॥

सव कालिआए ॥

सर्व मिथ्या उपचारादि खोटे मने विनय किधो होइ ॥

सव मिछो वयाराए ॥

जेणे करि सर्वधर्म अतिक्रमें दुखित आय समकीतने
वीषें विरतिने विषे अष्ट प्रवचन मातादिक ॥

सव धम्मा इ क्रमणाए ॥

एहवि आशातनाए करि जेमे अतिचार अपराधकखो
आसायणाए जोमे अइआरो कउ ॥

ते अतिचार प्रते हेक्कमा श्रमण तुमारी सापें ॥

तरुस खमासमणो ॥

पंमिकमु फरि करवा थकी निवर्तु एटले फरि नकरु ॥

पमि क्रमामि ॥

ते प्रते निंडु आत्मा सापें ॥ गरहु गुरुनि सापें ॥

॥ नंदामि ॥ ॥ गरिहामि ॥

जे अतिचारनो करणहार आत्मा ते प्रते वोसीरावु ठांगु ॥

अप्पाणं वोसिरामि ॥

इति संपूर्णः॥

॥ अथ लिख्यते ॥

हे जगवंत आदेस द्यो दिवस सवंधी पाप आलोड ॥

इत्ता देवसिण ठाण इहं ॥

सर्व दिवस मांही मने करि डुष्ट पाणुड चिंतव्यु होइं ॥

सवस्स वि देवसिअ डुच्चिंतिअ ॥

वचने करि डुष्ट मावु जाख्यु ॥ कायाइं करि डुष्ट मा
ठी चेष्टा आचरी किधि ॥

॥ डप्पासिअ ॥ ॥ डच्चिठिअ ॥

ते मिळ्या डु कृत हो फोक हो ॥

तस्स मिठामि डुकमं ॥

इति संपूर्णः ॥

॥ अथ लिख्यते ॥

ज्ञानने विपे तथा दर्शनने विपे ॥

नाणंमि दंसणंमिअ ॥

चारित्र्णे विपे तपने विपे तिमज वीर्ये वीपे ॥

चरणंमि तवंमि तह्य वीरिअंमि ॥

आचरवु आचारनु तेज ज्ञानाचार दंसणाचार चारि
त्राचार तपाचार विर्याचार तेनु ॥

आयरणं आयारो ॥

इम ए आचार ज्ञानिइं पांच प्रकारे कहावे ॥

इअ एसो पंचहा भणीउ ॥१॥

काल वेलाइ जणवु १ विनय सहित जणवु २ गुरुने
बहु मान देइ जणवु ३ ॥

काले विणए बहुमाणे ॥

उपाध्यांन वही जणवु ४ तेमज जणावनार गुरुने उ
लववो नहि ५ ॥

उवहाणे तहअ निन्हवणे ॥

उद्धर सहित सूध पाठ उचरवो ६ अर्थ शुद्ध परुपवो
७ सुत्र अर्थ बेवाना शुद्ध केहेवां ८ ॥

वंजण अछ तडभए ॥

ए आठ प्रकारे ज्ञानाचार जेम कहा तिम न करे तो
आठ अतिचार लागे ॥

अछ विहो नाण मायारो ९ ॥

जिनेश्वरना ऐकें बोलने विषे संका न करवी आकांक्षा
मिथ्या दरशनिनो महिमा कष्ट देखि अजिलाख न करवो ॥

निस्संकिअ १॥ निक्कंखिअ २ ॥

क्रिया तप सजाय अनुष्ठानादि धर्म फलनो संदेह
न करवो ॥

जिनसासननें विषे नवतत्वाचार मांही मुऊइं नहि
प्रविण होइ ॥

निवित्तिगिह्ता ३ ॥ अमुठ दिठीअ ४ ॥

सम्यक्त धारीवंतनो ओमोइं गुण ते प्रकासे एटले गु

एवंतना गुणनो प्रकाश करे ॥

धर्म थकी पम्ताने थीर करे ॥

उववुह ॥ थिरी करणे ६ ॥

साहमि उपर हितकुरवु ॥ प्रज्ञावना जिनसासननि
उन्नति करवि दानादिके ॥ ए आठ प्रकारे दर्शनाचार ॥

वञ्जल ७ प्पभावणे ७ ॥ अठ ॥ ३ ॥

रुना अभ्यवसायनो योग तेणे करि सहित ॥

पणिहाण जोग जुत्तो ॥

पांच समतिइं करि त्रिन गुपतिइं करि सहित ॥

पंचहिं ५ समिइहि तीहिं ३ गुत्तीहि ॥

ए चारीत्रा चार ॥

एस चरित्ता यारो ॥

आठ जेद जिम कहा तिम नपालें तो अतिचार लागें
ते विपे कीइं जाणवा साधुने सदैव श्रावकने सामायक पो
सह मांहि पाले ॥

अठ विहो होइ नायवो ॥ ४ ॥

बार प्रकारना तपने विपे ॥

वारस विहंमि वितवे ॥

ठ जेदे अजितर तप ठ भेदे बाह्यतप जगवन्ते जाखेलो ॥

सजितर बाहिरे कुसल दिठे ॥

ए वारे जेदे तपने विपे गिलाण न थाय उजमाल अइ
करे आजीविका धन पुजावादिकनि वांठा रहित कर्म ख
पावा निमीते तप करे ॥

अगिलाइ अणाजीवी ॥

जाणवो ते तपाचार जोतपन करे तो अतिचार बाह्य
तप ६ नां नाम कहे ॥

नायवो सो तवायारो ५ ॥

अणसण ते उपवासादि उणोदरि ते एक कोलिओ
उणा उठे ॥

अणसण १ मूणोअरिआ ७ ॥

वृत्ति संक्षेप ते साधु अग्निग्रहने सर्व व्रतनो संक्षेप करे
अने श्रावक चौदनेम संजारे ने रसत्याग ते विगइ तथा
गळ्यां तळ्यां तथा लीलवण्या दिकनु ठांडवु ४ ॥

वित्ती संखेवणं ३ रसच्चाउं ४ ॥

कायकलेस ते लोच आतपना तथा विकट आसने रे
हेवु इत्यादीक अंगोपांग संकोची राखवां ॥

काय किलेसो ५ संलीणयाथ ६ ॥

ए बाह्य तप ठ जेदें होइ लोक प्रसिद्ध माटे बाह्य तप
हवे अन्न्यंतर ॥

बध्नो तवो होइ ६ ॥

प्रायश्चित ते गुरु पासें आलोयणनु लेवु ॥ १ ॥

देव गुरुनो विनय करवो ॥ २ ॥

पायडित्तं ॥

॥ विणउ ॥

गुरुनु सिष्यनु बाल गीलांणादिकनु वयावच करे ति
मज पांच प्रकारनु सज्जाय ध्यांन वाचना लेवी पुढना ते वि
सरेलु तथा न समजे ते पुढें ॥ ३ ॥ जण्यु होइ ते गणे ते परि

अटणा ॥३॥ अर्थनु चिंतववु ते अनुपेक्षा ॥४॥ ने धर्म क
थानु केहेबु ॥५॥

वेयावच्चं तहेव सश्चां ॥

आर्तरौड ध्यांन टालि धर्मध्यांन शुक्लध्यांन ध्याई॥५॥
शक्तीने अनुसारे काउसग्गनु करवु ॥६॥

जाणं उस्सग्गोविअ ॥

ए व प्रकारनो अभ्यंतर तप कर्म क्यनु अंतरंग कार
ण माटे अभ्यंतर तप ॥

अर्नितरउ तवो होइ ॥७॥

अण गोपवि ते बल विर्य थको कायानि शक्ति गोपवे
नही मनमां उवाह धरतो वचने वखांणतो ॥

अणिगुहिअ बल वीरिउ ॥

पराक्रम फोरवें यथोक्त विधि जे अवसरनि जे करणी
ते अवस्य करे जीम जगवेंते कहि तिम उजमाल थको करे॥

परिक्कमइ जोजहुत्त माउंतो ॥

बल प्रयु जे यथा शक्ति अनुसारे मन वचन काया ध
र्मने विपे प्रवत्तवि ॥

जुजइअ जहा थामं ॥

ते वीर्याचार जाणवो जो धर्मने वीपे बल वीर्य गोपवे
तो अतिचार ॥

नायव्वो वीरिआ यारो ॥८॥

इति अतिचार गाथा अष्टकं ॥ अथः

जो तुमारी इवा हुइ तो आदेश द्यो वल्लानि योगे वा

गणान्नि योगे करी नहि हे जगवंत ज्ञानवंत गुरु ॥

इच्छा कोरेण संदिसह भगवन् ॥

दिवस मांही जे अतिचार लाग्यो ते प्रते आलोउ तु ॥

देवसिअं आलोउंएमि ॥

गुरु कहे आलोयह ॥

आलोयह ॥

शिष्य कहे इत्तं एहवु वांउवु ॥

॥ इत्तं ॥

आलोउ तु प्रगट पलें ॥

आलोएमि ॥

जेमें दिवस मांही अतिचार किधो अनेक प्रकारे होइं ॥

जोमे देवसिउ ॥ अइआरो कउ ॥

कायाइं किधो वचने करि किधो मने करि किधो ॥

काइउ वाइउ माणसिउ ॥

सिद्धांत विरुध उसुत्र वोल्खे करि उनमार्गे प्रवर्तवे करी
कयोप समिक ज्ञाव मार्ग तजि उदीक ज्ञावनें विषे प्रवर्त्यो ॥

उस्सुतो उमग्गो ॥

अल्प वस्तुने वावरवे करी अण करवा योगने क
रवे करि ॥

अकप्पो अकरणिज्जो ॥

उर ध्यान एकाग्रह चित्तें आर्त रुडादिक करि उष्ट पा
उवुं चित्तववे करि ॥

उज्याउ उव्विच्चित्तं ॥

अनाचार आचार विरुद्ध अण वाठवा योग तेहने वांठवे करी ॥

अणायारो अणिच्छिअव्वो ॥

श्रावकने करवा योग नहि तेहने करवे करिने ॥

असावग पाण्णो ॥

ज्ञानने विपे दर्शनने विपे चारित्रा चारीत्रे के० देश वित्तिनो अतिचार लाग्यो सिद्धांतने विपे अकाले नणवे करि

नाणो दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए ॥

सामायकने विपे संकादिक लाववे करि त्रिएय गुप्तीने अ ए पाजवे करि ॥

सामाडए तिन्हे गुत्तिणं ॥

चार कपाय क्रोध मान माया लोभने करवे करि ॥

चउन्हं कसायाणं ॥

पाच अणुव्रत के साधुनि अपेक्षाई नाहानां माटे अणुव्रत तेने विपे ॥

पंचन्ह मणु वयाणं ॥

त्रण गुणव्रत ते पांच अनुव्रतने गुण करे माटे गुणव्रत तेने विपे ॥

तिन्हं गुण व्वयाणं ॥

च्यार सीक्काव्रत ते वारंवार सीपिई अन्यसिई तेने विपे ॥

चउन्हं सिक्का वयाण ॥

ए प्रकारे सर्वमलि द्वादश वारव्रतरूप श्रावक धर्मने विपे ॥

वारस विहस्स सावग धम्मस्स ॥

જે સ્વમિત્રં સ્વમુણા કિધુ દેશથિ જાગ્યુ જંવિરાહિત્રં વિરાથ
ના કીધિ સર્વથા જાગ્યુ ॥

જં સ્વમિત્રં જં વિરાહિત્રં ॥

તે પાપનુ મિઠામિ હુકમં હોઈ ॥

તસ્સ મિઠામિ હુકમં ॥

इति संपूर्णम् : ॥

॥ अथ वंदिता सुत्रः ॥ लिख्यते ॥

વાંહુ સર્વ અરિહંત તથા સર્વ સિદ્ધ પ્રતે ॥

વાંદિતુ સઘ્વ સિદ્ધે ॥

ધર્માચાર્ય તે જેનિ પાસે ધર્મ તથા જ્ઞાન સમજીઈ તે પ્રતે અ
શબ્દથિ નપાધ્યાય તે પ્રતે સર્વ સાધુ અઢિધિપમાં રહ્યા તે
પ્રતે વાંદિને ॥

धम्मायारिए अ सव्वसाहुअ ॥

ए पांच प्रमेष्टिने नमस्कार करिने वांहुबुं पाप थकि निवर्तवाने

इच्छामि पम्किमिउं ॥

શ્રાવક ધર્મ સમકિત મુલ વારપ્રકાર માંહિ જે અતિચાર લા
ગ્યો તેહ થકિ ॥

सावग धम्मा इआरस्स ॥१॥

જે મુજને અણુવ્રત આશ્રી અતિચાર લાગ્યો ॥

जो मे वया इआरो ॥

જ્ઞાનાચારને વિષે તિમ દર્શનાચાર તે સમકિતને વિષે ને ચા
રિત્રા ચારને વિષે અ શબ્દથિ તપાચાર વિર્યાચાર તથા સંલે
ખણા વ્રતના અતિચાર લાગ્યા ॥

नाणे तह दंसणे चरित्तेअ ॥

सुहृम नादानो वादर मोहोटो ॥

सुहुमोअ वायरो वा ॥

एकसो चौविस मांहिलो जे अतिचार लाग्यो होई ते निंदा
आतम साक्षें ग्रहणा गुरु साखे करु ॥

तं निंदे तंच गरिहामि ॥१॥

वे प्रकारना परिग्रह मांहि एक सचिन्ते द्विपद चतुष्पद वि
जो अचित ते द्रव्यादि तथा बाह्य अङ्गिंतररूप परिग्रह ते मांहि
उचिहे परिगृहंमी ॥

सावद्य के० पाप सहित ठे ते परिग्रह खेति प्रमुखने विषे अ
नेक प्रकारना आरंज जीव हिंसा मृपावादादिक पाप ॥

सावज्ये बहुविहेअ आरंजे ॥

विजा पासे करावें तथा अ शब्दधि अनुमोदवे वा पोतें क
रतां जे अतिचार लाग्यो ॥

कारावणे अ करणे ॥

ते पम्किमु निवर्तवु दिवस सर्वहि जे पाप सर्व ॥

पम्किमे देसिअं सव्वं ॥३॥

जे फरस आदे पाच शंझिमे करि कर्म बांध्यां तथा ॥

जं वध मिदिएहि ॥

चार कपाय क्रोधादिक अप्रसस्त केहेतां माठें करि एटले
क्रोधादिकें ज्ञानवंतनी निदा प्रमुख करि ॥

चउहि कसाएहि अप्पसठेहि ॥

अथवा रागेकरि वा द्वेषेकरि जे ज्ञानाचारना अतिचार लाग्या

रागेणव दोसेण व ॥

ते निंडु आतम साखे ते ग्रहं गुरु साखे ॥

तं निंदे तंच गरिहामी ॥४॥

मिथ्यात्वादिकना नुवनें वीपे जवे आववे नीर्गमने तेम
घर थकी राज्यादिकनी प्रसंसा कीधी जोवाने अर्थे गये जे
अतिचार ॥

आगमणे निग्गमणे ॥

मार्गने विपे कुत्तीर्थिना नुवव प्रमुख जोवाने अर्थे वाजां जो
वे ते अर्थे डुर गये थके आरहा परहा फिरतो वा अनुपयोगे।

ठाणे चंकमणे अणाचोगे ॥

राजादीक बलातकारे अनियोग केण सेव वर्ति आजीविका
दी अर्थे जे अतिचार ॥

अजिउगे अनिउगे ॥

समकितनाजे अतिचार जाग्या दिवसमांहि ते सर्व पम्किमु
पम्किमे देशीअं सव्वं ॥५॥

जिनवचननें विपे संदेहेते साचुकें जुवुहशते परदर्शनिनो
किरिआ अनुष्ठानादिक देखि तेहनो अजिलाखकस्यो धर्म कि
रिआ अनुष्ठानादिकना फलनो संदेह कीधो तथा साधु मुनि
राजनां वस्त्र मलिनदेषि डुगंठाकरी ॥

संका कंख विगीच्चा ॥

मिथ्यात्विना तपादिक देखि प्रसंसा करि वा तिमज तेहनो
परिचय किधो ॥

पसंस तह संथवो कुलिगीसु ॥

एपांच समकितनाजे अतिचार लाग्या ॥

सम्मत्तस्स अइआरे ॥

तेपन्निकमु दिवससबंधि सर्व एरिते शुद्ध समकित पालवाथी
श्रीकृष्णमाहाराज श्रेणिकप्रमुख अविर्ति थका पण आवते
काले तिर्थंकर पदवि पांमशे ॥

पन्निकमे देसीअं सव्वं ॥६॥

प्रथवि अप तेज वाज वन्स्पति त्रस ए ठकायने विपे आरंज
करवे करि ॥

ठकायस मारजे ॥

पचताते पोतेरांधतां पचावणे ते परपासे रंधावतां जेदोस अ
तिचार लाग्याहोइ ॥

पयणे पयावणेअ जे दोसा ॥

आत्माअर्थे आपणे पोताने अर्थे वा परार्थे परहुणाढीकने
अर्थे कस्य कराव्युं ॥

अत्तघाय परठा ॥

उन्नयार्थ वेने अर्थे कराववे निरर्थक राग द्वेषादिके करि जे
दोषलाग्या तेप्रते चेव कण निश्चे ते निंडुं ॥

उन्नयठा चेव तं निदे ॥ ७ ॥

पाचअणुव्रत प्राणातीपातादि विरतीआदिना पाचअतिचार ॥

पंचन्ह मणुव्वयाणं ॥

च पुनःगुणव्रतना त्रण्य अतिचार दिग्व्रतादि

गुणव्वयाणंच तीन्ह मइआरे ॥

चारसिद्धाव्रतना एटले वारव्रतना अतिचार लाग्या ते सामा

यकव्रतादीक

सिखाणंच चउन्हं ॥

पम्किमु दिवस सबंधि सर्व ॥

पम्किमे देसिअं सव्वं ॥८॥

पेहेला अणुव्रत प्राणातिपातनेवीपे ॥

पढमे अणुव्वयंमि ॥

थुल मोहोटा बेरंडे तेरंडि चोरीडि पंचिंडि प्राणातिपातके
हणवु एटले हिंसा तेहनिविरतीअकि ॥

थुलग पाणाइवाय विरइत्त ॥

आचखुजे कर्म प्रमादवमेकरिने विषय कथायादिकवमे करि
ने ते अप्रसस्तनावते माठे चंतववे ॥

आयरिय मप्पसत्ते ॥

इहां प्रमादने प्रसंगेकरिने तेनिंडुं ॥

इत्त प्पमाथ प्पसंगेणं ॥९॥

द्वीपद चतुष्यदादिकने लाकमी प्रमुखे ताडने तर्जने करिते
वध बंधते दोरमादिके क्रोधेकरि घामे बंधणे बांधेते ठविठेदते
कान नाक प्रमुखनु ठेदवुं ॥

वह बंध छविछेए ॥

अतिसे नार गजा उपरांत पोठी गामां प्रमुखमांही नरवे
करि नात पाणिनो निषेधकरवे तथा वेलाअये अण देवेकरि ॥

अइनारे नत्तपाण वुछेए ॥

एपेहेला व्रतआश्री पांच अतिचारमांहीलो जे लाग्योहोइते ॥

पढम वयस्स अइआरे ।

तेप्रते पन्तिकमु दिवस सर्वंधिन सर्वपाप ॥

पन्तिकमे देसिअं सव्वं ॥१०॥

मृपावाद विजा अणुव्रतने विपे ॥

वीए अणुव्वयंमी ॥

परिस्थुल मोटकां कन्यालिकादिक अलीक केण जुवु बोलवा
ने विपे विरत्ती अको घातरुप अलिक वचन ते ॥

परि थुलग अलिअ वयण विरईन ॥

आचखु सेव्यु अप्रसस्त माठे अध्ववसाये करीने ॥

आयरिअ मप्पसत्ते ॥

इहां प्रमादना प्रसंगे करी जे अतिचार लाग्या ते कहेठे पाचा

इत्त पमाय प्पसगंणे ॥११॥

सहसातकारे कोइने अण वीचारे आलदिइं कोइनी एकांत
नी वात तथा मर्म प्रकास्ये ॥१॥ दारे केण कलत्र स्त्रिइं तथा
मित्रादीके ठांनी वात कहि हुइ ते प्रगट करे ते स्वदार मंत्र
जेद कहीए साचु, वचन पण परपिडा कारी होय ते जुवु
जाणवु ॥ ३ ॥

सहसा रहस्स दारे ॥

मृपा उपदेश ते अज्ञान मंत्र उपधादीक सिखवेवा कोइने
कष्टमां पामवा कुमि बुद्धि दिए ॥ पोतानि परतिते जुगे
लेख लखे ॥५॥

मोसुवएसेअ कुम लेहेअ ॥

विजा व्रतना ए पांच मांहिला जे अतिचार लाग्या ॥

वीअं वयस्स इअारे ॥

ते दिवस सवंधि जे अतिचार लाग्या ते पन्तिकमु पाप सर्व प्रते
पन्तिकमे देसिअं सव्वं ॥१७॥

त्रिजा अदत्तादांन व्रतनें विषे ॥

तइए अणुठवयंमी ॥

मोहोटी चोरी छिपदादिक ते सचित्त अने अचित्त ते झ्या
दिकनु ग्रहण करवु जेनाथी चोरिनु आलचडे तेने विरती थके
थुलग परदव्व हरण विरइत्त ॥

आचरयु सेव्यु माठे अध्यवसाए करीने ॥

आयरिअ मप्पसत्ते ॥

इहां त्रिजा व्रतने विषे प्रमादने प्रसंगे करि जे अतिचार
लाग्या होय ॥

इत्त प्पमाय पसंगेणं ॥१३॥

स्तेन केण चोरे लावेदी वस्तु लीधी १॥

पणगे केण नधारे धन आपी चोरि करावी २॥

तेना हम प्पत्तंगे ॥

तत् प्रतिरुप जे वस्तु जेहमांहि जेले तेहना जेल संजेले क
रेवे करि ३॥ विरुध गमणे केण राज विरुध काम करेवे
जवु आववु ४॥

तप्पमिरूवे विरुध गमणेअ ॥

कुमां तोल कुडां मान माप करे नठे अधिकें वुहरे जेह अकि
राज दंम नपजे ५ ॥

कूमतूल कूममाणे ॥

त्रिजाव्रतना पांचअतिचार दिवस सवंधि लाग्या होय पडिकमु

पडिकमेदेण ॥ १४ ॥

हवे चोथा अणुव्रते ॥

चउठे अणुव्वयंमी ॥

नित्य सदैव परे परणिते परदारा अथवा घेर राखि तेहनु ग
मन सेववुं तेहनि विरति थकी ॥

निच्चं परदार गमण विरइत्त ॥

आदरयु अप्रसस्त जावे करी माठे जावे ॥

आयरिअ मप्पसत्ते ॥

इहां प्रमादने प्रसंगे करि ॥

इत्त प्पमाय प्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अप्रग्रहिता वेइथा विधवादिक् तेहनु गमन १ इत्तर केण वे
स्थादिकने द्रव्य आपी स्तोककालनु गमन करवु ॥

अपरिग्गहिआ १ इत्तर ९ ॥

अनंग क्किडा कुच वगल साथल मुख तेहनु चुवनादीक तेने
विपे रमण ते अनंगक्कीडा वीवाह कारण ते पोताना पुत्रा
दिक् विना पारका ३ विवाह जोढ्या ते तीव्र अनुराग ते स्त्रि
यादिकनो तिब्र ४ अज्जीलाख कख्यो ५ ॥

अणंग वीवाह तिब्र अणुरागे ॥

ए चोथा व्रतना पाच मांहिला जे अतिचार लाग्या ॥

चउठं वयस्स इआरे ॥

दिवस सवंधि ते पडिकमु सर्व ॥

पमी कमे देण ॥ १६ ॥

चोथा पठि पांचमा अणुव्रतने विपे ॥

इतो अणु वए पंचमंमि ॥

आदखुं अप्रस्तपणे ॥

आयरिअ मप्पसठंमि ॥

परिग्रहनु परीमाण जे कांइ नुलंघ्यु हुए ॥

परिमाण परिछेए ॥

इहां प्रमादने प्रसंगे करी पांचमा व्रतने विषे आचरीछं होइ ते निंड ॥

इच्छ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥

धन ते सोनु रुपु प्रमुख ने धान ते दांणा प्रमुख ते परिमाण उपरांत अइ पांच अतिचार तथा खेत्र प्रमुखमां धानादिक वावे ते तथा वस्तु ते घर हाट प्रमुख तेहना जे अतिचारः ॥

धण धन्न स्वित्त वच्चु ॥

रुपा सोनाना परीमाणनो नियम किधो होय ते उपरांत व धें कुपक केण आली वाटका प्रमुख सरव घर वाखरो तेहनु परिमाण अतिक्रम किधो ॥

रूप सुवन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥

द्विपद ते गाडां वेहेल दास दासि प्रमुख चतुसपद गाय नैस घोडा हाथी प्रमुख तेहनु परिमाण अतिक्रम करे ॥

उपए चणपयमी ॥

ते पडिकमु दिवस सबंधी सरव पाप ॥

पणीकमेण ॥ १८ ॥

च्यारदिसी विदिसी चार तथा उर्ध्व अधो उंचु नीचु जावानु परीमाण लीधु तेहने विषे ॥

गमणस्सय परिमाणे ॥

उर्ध्वं दिसीने विषे जावानु अधो दिसीने विषे तिर्यग दिसी ते
त्रिवु च्यारदिसी च्यारविदीसीनु परीमाण अतिक्रम कीधो॥

दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअंच ॥

निमीज्जमीमाथी एक दिसी संखेपे विज्जी दिसी वधारे अंतर
अत्रा विसमृत लगे अधीक ज्जमी गया ॥

वुट्ठिस्सइ अंतरा ॥

ए वेहेला गुण व्रतना पांच अतिचार ते निडु ॥

पढमंमि गुण व्वए निंदे ॥१॥

मदीरा मांस अशब्दथी वृथी वाविस अन्नक वत्रीस अनंत
काय प्रमुख जाणवां ॥

मज्झंमिअ मंसंमिअ ॥

फुल महुडां प्रमुखनां च शब्दथी नागवेलीना पत्र प्रमुख फल
ते वंताक तथा वोर प्रमुख चकारनु ग्रहण कखुं हे ते थकि
अज्ञान पणे जोगव्यु ते गंध ते कपुरादिक सूगंधी पदारथ
मल्ले ते चंपक केतकी प्रमुखना फुल तथा मालानें अशब्द
थी वस्त्र आज्ञरण प्रमुख योषितादीक ते स्त्रि प्रमुख ॥

पुप्फेअ फलेअ गध मल्ले अ ॥

ए वस्तुना उपजोग केण एकवार जोगमां आवि वा परिजोग
ते वारंवार भोगमां आवी ते करतां ॥

उवजोग परिभोगे ॥

ए विजा गुणव्रतने विषे जे पाप अतिचार लाग्या ते प्रते निंडु।

विअंमि गुण व्वए निंदे ॥२॥

સચિતનુ પરિમાણ કરચુ હોય ને વાવરે તે અધિકું પમ્બિવંધ
તે સચિતના ત્યાગ હોય ને રાયણ પ્રમુખ કલિઆ સહીત મુ
ખમાં અચીત જાંણિને નાચે ॥

સચિત્તે પમ્બિવંધે ॥

અપોલક કેળાવિત કણ્યક પ્રમુખ હપોલ કેળાવિ પુરુષ પાપડી
પ્રમુખ થોડુ પાકયુ હોય થોડુ અણ પાકયુ તેહને આહાર કરવે
અપોલ હપોલિઅંચ આહારે ॥

તુઠ્ઠ નંપધિ તે ઘણુ યાધે સંતોશ નથાય તેહવી જે વસ્તુ કુલિ
ફલી રૂપ તે તુઠ્ઠ અચિત પણ વાવરે તો તુઠ્ઠ નંપધિ જીવણ
તુઠ્ઠો સહિ જીવણકણયા ॥

૧૫ પાંચ અતિચાર આશ્રી દિવસમાં જે પાપ લાગ્યું તે પડિક
મુ સર્વ ॥

પમ્બિકમેળ ॥૭૧॥

ઈંગાલ ? તે કાષ્ઠવાલિ અંગારા કોહીલા કરિ વેચે તે પ્રમુખ
ઈંટના ને જાડાદીક વન ? તે ઢેચાંવન વા અણ ઢેચાં તથા પા
ન ફલ ફુલ પ્રમુખ વેચે તે તથા ઢાંણા પ્રમુખ દલાવિ આ
જીવીકા અર્થે વેચે તે વન કર્મ સામી તે ગામમાં પ્રમુખના પ
યડા તથા સમોલ પ્રમુખ કરી તથા કરાવી વેચે તે ॥

ઈંગાલી વન સાડી ॥

જાડી તે ગામમાં વેહલ પ્રમુખનાં આજીવિકા અર્થે લોકનાં
જાડાં કરે ઇચ્છ્ય લેતે ફોડિતે કુવા તલાવ પ્રમુખ યોદાવે
તે કરવુ કરાવવુ તેવુ કર્મ વરજે ॥

જાડી ફોમી સુ વજાણ કર્મ ॥

वेपारना पांच जेद तेमां दांत ते हाथी प्रमुखना तेनो वेपार॥
वाणिजं चेव दंत ॥

लाख प्रमुखनो वेपार घीतेल प्रमुख रसनो वेपार चमरी
गाय प्रमुख तथा हंस परादी वेपार ते केस सोमल प्रमुख
वीखनो वेपार ते सख तरवारादी ते वीपय व्येपार ॥

लख रस केस विस विसयं ॥२५॥

एज प्रकारे खु के० निश्चे जंत्र पिलण करम ते तलादीक घां
णी प्रमुखे पिलाववा ते कौल प्रमुखमां सेलडि प्रमुख पिले ते
एवं खुजंत पीछणं कम्मं ॥

निलंठन ते घोडा बलद प्रमुखना नाक कांन प्रमुख ठेदावे
वींघावे ते चिन्ह करे ते प्रमुख दवदाण ते व्यसनि जणी ध
र्मनी बुद्धिये द्रव्य आपे ते दवदाण कर्म ॥

नीछ्णं च दवदाणं ॥

सरोवर इह तलाव वाव्य प्रमुख सोसाव्यां अथवा ते मांही
थी पाणी नुळेचावे ते ॥

सर दह तलाइ सोसं ॥

असति पोपण ते पोपट कूतरां विलाडी प्रमुख तथा दास दा
सी प्रमुख वेचवा निमित्ते पोपण करे ते पत्रर कर्माढांन वर्जवां

असइ पोसंच वज्जिजा ॥२३॥

सख पालि प्रमुख अग्री मुसल उखल सांवेला प्रमुख जंत्र
ते घांणी गारुजादीक ॥

सठ गि मूसल जंतग ॥

तरणा ते डाज प्रमुख कव ते लाकमां प्रमुख मंत्र ते साप

गर्जपातन प्रमुख मुल ते धंतुरादिकनां जेसज ते घणी वस्तु
जेमां जेलवी होय ते वसीकर्ण प्रमुखनु ॥

तणे कठे मंत मल जेसजे ॥

एटली वस्तु दाक्षणाता प्रमुखयी दीधी अथवा देवरावी हुए
ते अनरथं दंड ॥

दिने दवाविएवा ॥

इत्यादीक जे दिवस संबंधी अतीचार ते पाप सर्व पडीकमु
पडिकमे ॥ ७४ ॥

स्नान ते नाहीने अजयणाये त्या जीवाकुल जुमीए वन्नगत
कस्तुरीनां पांढडां प्रमुख तेने विख उगटणु ते सरीरनो
मल उतारवो ॥

न्हाणु वट्टण वन्नग ॥

कुंकुम चंदनादीकनां विलेपन शब्दरूप रस गंधे ॥

विलेवणे सह रूख रस गंधे ॥

वस्त्र तथा आसन ते माची पाव्य पाटला प्रमुख आज्ञरण ते
घरेणां प्रमुख निम थकी प्रमादने वस्य अधीक वावरे जे
अतिचार लाग्या ॥

वच्चा सण आज्ञरणे ॥

दिवस संबंधी ते सर्व पाप पमीकमु ॥

पडिकमे दे ॥ ७५ ॥

जे वचने कंदर्प कहीए कामनी चेष्टा उपजे कुकुइएके ० मु
खे आंख्ये जमुह प्रमुखे जांम चेष्टा करे ॥

कंदप्पे कुकुइए ॥

मुखरिपणु असबंध बोलवे करी अधि करण ते कोप कोदा
ला प्रमुख पापोपकरण प्रमुख वधता करावि परने माग्यां
आप्यां जोगथी अधिक राख्यां इत्यादि तथा खेल प्रमुख
वधतिकरें विजा नाहोय ते ॥

मोहरि अहिगरण जोग अइ रते ॥

ए अनरअदंरुना पाच अतिचार विना अर्थे ते माहे ॥

दंमंमि अण ठाए ॥

त्रिजा गुणव्रतनेविषे जेलाग्या तेप्रते निड ॥

तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥

अण्यप्रकारे डप्रणिध्यानं पहेलु अनअवस्था ते निरादरपणें
मनडप्रणिध्यानं ते कुव्यापा समायक लिधु वा जेश अण
रनु चिंतन करवु बीजु वचन थइ पारीज वा पाखबु विसा
डप्रणीध्यानंते कुवचननुं बोल रिज तिमज स्मृति विहिनते
बु बीजु कायडप्रणीध्यानते मेंसामायक पारयुके वा न
अणपुजें हाथप्रमुख हेला मेहेले। थी पारयु लीधुं के नहि ते॥

तिविहे डपणि हाणे । अणवठाणे तहा सइ विहुणे॥
स्मृति रहितपणे ए पांच अ तेपेहेला सिद्धाव्रतना अति
तिचार समायकादिकने विषे चार प्रते निंड ॥
सेव्या होय ।

सामाइअ वितह कए । पढमे सिखावए निंदे ॥ १७ ॥

निमि जुमिका मांहिथि आप काम पढे निमिजुमिकामां
ऐकनें मंगाव्यु तथा आपणे हीथी घांटो काढी विजाने वो
कनेथी मोकलीज । लावे वा मेडाप्रमुखे चरिरुप

देखामे अथवा काकरा प्रमु
ख नांखि सांन करे ॥

आणवणे पेसवणे । सह रूव पुग्गल खेवे ॥

देसावगासिक व्रते जे अतिचा विजा सिक्षाव्रत्ते जे पाप ला
र लाग्या होय । ग्यां ते निंड ॥

देसावग्गसिअंमी । बीए सिखा वए निंदे ॥१७॥

संधारो ते पाट कांबलादिक ते प्रमादे तिमज निश्चे नोजना
अने उचार ते वडि निति बहु दिकनी चिंता किधी किवारे
नितीनी अंडिल्लुमी प्रमुख पारणु करस्यु वा अमुक फ
दृष्टे जोयां नहि तथा सून्य च लाणु जीमसु ॥

तें जोयां तथा संधारो वंडिल

पुज्यु नहि तथा सून्य चिते पुजीउ ।

संधारुं चार विहि । पमाय तह चेव भोअणा भोए ॥

ए प्रकारे पोसहनि विधी वि ते त्रिजा सिक्षाव्रतने विषे
परीतपणे किधी । निंडुबु ॥

पोसह विहि विवरीए । तइए सिखावए निंदे ॥१८॥

मोदक प्रमुख अणुदेवानी बु वा सचितादीके ठांके व्यप
क्षिये करिने सचित उपर मु देस पोतानी वस्तु अणुदे
के । वानी बुक्षीए पारकि कहे

अथवा देवानी बुक्षिये पारकी वस्तु

पोतानी कहे ते व्यपदेस कोइने दान देतो देखी पोते मञ्जरना
वें दान दे ते निश्चे ॥

सच्चित्ते निखवणे । पिहिणे ववए समञ्जरे चेव ॥

काल ते वोहरवानी वेला वि ए चोथा सिद्धाव्रतने विपे अ
त्या पठी तेडवा जाय जाणे तिचार पाप लाग्यु ते दिवस
साधू वोहोरे पण नहि ने नीय संबंधि निंड ॥
म पण पुरो थाय ।

काला इक्रम दाणे । चउठे सिखावए निंदे ॥३०॥
सुखि अकां अथवा दुखि जे मुजने असंयति तथा ब्रा
थकां । ह्यण वा पासयादि उपर न
क्ती अनुकंपा वा दया उप
नी दान दीधु ॥

सुहिएसुअ डहिएसुअ । जामे असंजएसु अणुकंपा॥
रागे करी ए माहारो मित्रवे विधु दान ते निंड तेनि ग्रहा
एम मोहे वा छेपे करी एकि करुवु ॥
या व्रष्ट पाहुवा जिनधर्मनि
निंदानो करणहारवे एम मत्सरे अथवा राजादिकना नक्ता
दिक तेहना जये करी ।

रागेणव दोसणेव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥३१॥
साधु प्रते ठती शक्ति संवी नकख्यो साधु मुनी केहवा ठे
जाग व्रत । वारजेठे नप चरणसितरी क

रणसितरी इत्यादिके सहित ठे तेहनो ॥

साहुसु संविजागो । नकउ तव चरणकरण जुत्ते सु ॥
ठते फासुक दानना योगे न तेप्रते निंड तेनी निंदाकरु
दीधु दान । वा ग्रहा करु ॥

संते फासअ दाणे । तं निंदे तंच गरिहामि ॥३२॥

इहलोके धर्मने प्रजावे राजा सुख आवे जिववानी वांठा
 दिकनी पदवी वांठी परलोके किधी दुख आवे मरवानी
 देव देवेंड चक्रवर्ति आदिकनी वांठा किधी काम जोगनी
 पदवी वांठी । वांठा किधी ॥

इहलोए परलोए । जीविअ मरणे आसंस पणगे ॥

ए पांच प्रकारे संलेखना व्रत महज्यो मुजने मरणां ते प
 ना अतिचार । ण ॥

पंचविहो अइआरो । मा मअ हुज्ज मरणंते ॥३३॥

जे कायावडे करी जिववधा पडिकमुठु वचने करी जे क
 दीक कस्या ते कायावमे तप रकस वचन वोढ्या ते वचने
 करी पापगालु फेरु । मिठामीडुकमादिक देवे क
 रीने ॥

काएण काइअरुस । पणिकमे वाइअरुस वायाए ॥

मनेकरी पाप लाग्यां सम्य सघलाए व्रतना अतिचार
 क्तादिकनेविषे संकादिक क आलोउ ॥

री ते मनेकरी हामें खोटु चिं
 तव्यु तेवि रीते ते पडिकमु ।

मणसा माणसिअरुस । सवरुस वया इआरुस ॥३४॥

वंदन ते देववंदन ने गुरुवंद संज्ञा चारने विषे कषाय चा
 ने वर्त ते सिद्धाव्रत सिद्धा ते रने विषे दंरु त्रणने विषे ॥

ग्रहणने आ सेवना बे प्रकारे

ग्रहण सिद्धाते श्रावक नोकारथी मांडी उत्तक्रष्टु ठजिवणीलगें
 जणे ते आसेवन ते श्रावकने दिवसनी सर्वसामाचारी पहिलु

नोकार कहे तो ज सुतो उठे पठे हु आवक तु मुजने एटलां
व्रत ठे इत्यादिक चिंतवे ते ।

वदण वय सिखा गारवेसु । सन्ना कसाय दंभेसु ॥

त्रीण गुपतिनें विपे पांच सु जे अतिचार लाग्या ते नि
मतीने विपे । डुवु ॥

गुतीसुअ समिइसुअ । जो अइआरो तंनिंदे ॥३५॥

सम्यक्इष्टि जिव । यद्यपि जोपण करसण आ
रंभाढीक पापप्रते समाचरे
कांइ थोमु पण ॥

सम्म द्विठी जीवो । जइ विहु पावं समायरे किंचि ॥

तोय पण आवकने कर्म बंध जे जणी निरधंसपणु निर
अद्वय थोडो होय । दयपणु नकरे ते माटे पाप
थोडु लागे ॥

अप्पोसि होइ बंधो । जेण न निधंघसं कुणइ ॥३६॥

तेपण कर्म बंध पडिकमण पश्चाताप वने करी गुरुदत्त
करवे करी । प्रायश्चित्तने करवे करी ॥

तंपिहुस पम्भिकमणं । सप्परिआवंस उत्तरगुणंच ॥

ते पापप्रते कर्म प्रते सिघ्रपणे जेम व्याधी रोग सुशिक्षीत
उपसमावे । निपुण डाह्यो वैद्य उपसमा
वे तेम समें ॥

खिप्पं उवसामेइ । वाहिब सु सिखिउ विज्जो ॥३७॥

जिम वीप कोठागत शरीरमांहिबुं मंत्र मुख विशारद
जांण माह्यो ॥

जहा विसं कुठ गयं मंत मूल विसारया ॥

वैद्य हणो टाले मंत्रादिक वडे तेवारे ते पुरुष होय विष र
करिने । हित पणे ॥

विज्ञा हणति मंतेहि । तोतं हवइ निविसं ॥३८॥

ए रिते आव प्रकारनां जे राग द्वेष करि उपारजन क
ज्ञानावर्ण्यादि कर्म । स्थां ते ॥

एवं अठविहं कस्मं । राग दोस समज्झिअं ॥

ते पाप आलोयतो अको निं सिघ्र उतावलां हणे सु जलो
दतो अको । श्रावक ॥

आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पंहणइ सुसावण ॥३९॥

कस्यांठे पाप जेणे एहवोजे आलोववे करी निंदवे करी गु
मनुष्य तेपण । रु समिपें ॥

कय पावोवि मणुस्सो । आलोइय निंदिअ गुरुसगासे ॥

थाय अतिरेक केहेतां तेमनु जिम ज्ञारनो उपामनार को
ष्य घणु हलुण थाय । इ मनुष्यठे तेमाथेथी जार

उतारे तेवारे हलको थाय ते
म तेपण थाय ॥

होइ अइरेग लहुण । उहरिअ भरुव भारवहो ॥४०॥

मन सूध्ये षट आवश्यक वमे श्रावक यद्यपि जो पण कर्म
प्रतिक्रमण वमेकरी । रूप रजें करी घणो ज्ञारी

होय तोपण ॥

आवरुसएण एएण । सावण जइवि बहुरुण होइ ॥

उखनो अंत प्रते एटले ते क अचिरेण केण थोमा कालमा

मना ह्यप्रते करे । एतले मुगतीप्रते पामे जाय ।
 ड्रकाण मंत किरिअं । काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
 आलोयण धणे प्रकारे वे तेमां न सांजरे पम्किणाने अत्र
 नी कोइ । सरे ॥

आलोअणा बहु विहानय संभरिआ पम्किमण काले ॥
 मुल गुण ते पांच अणुव्रत ने ते प्रते निंड तेनि ग्रहा गुरु
 उत्तरगुणते तिनगुणव्रत च्या पासे करु ॥
 र शिक्काव्रत तेने विषे जे पा
 प अतिचार लाग्या होय दिवस सबंधि ।
 मुणगुण उत्तरगुणे । तं निदे तंच गरिहामी ॥४२॥
 ते गुरु पासे अंगिकार करेलो श्रावकनों धर्म केवलि भगवा
 ननो परुपेलो ते ॥

॥ तस्स धम्मस्स केवलि पस्सत्तस्स ॥

उनो थउहु उद्यमें करी ते थ निवर्तु तु तेहनी विराधना
 मने आराधवा जणी । करवा थकी ॥
 अप्रच्छिन्नमि आराहणाए । विरज्जमि विराहणाए ॥
 त्रिविधे मन वचन कायाए क वाड्डु जिन तिर्यंकर चोवि
 रीपम्किम तो थको सर्व पा स प्रते ॥
 प प्रते ।

तिविहेण पम्किंतो । वंदामि जिणे अउविसं ॥४३॥
 अर्थ पाठल लख्यो वे ते रिते जावंती वेनो जाणवो ॥
 जावंति चेइआइं । उहेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥
 सवाइ ताइं वंदे । इह संतो तव संताइं ॥४४॥

जावंत केवि साहु । भरहे रवय महाविदेहेअ ॥
सवेसिं तेसिं पणउ । तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥४५॥

घणा कालनां संचेलां जे पाप नव शत सो हजारो नवनां
तेहने पणासण के० फेरना पाप तेहने मथनार ठे ॥
र ठे नास करनार ।

चिरसंचिअ पाव पणासणीइं।भवसय सहस्स महणीइं॥
चौवीस जिन तिर्थंकरनी वि वोलो अतिक्रमो माहारा दि
नर्ग के० निपजावी कही ते वस ॥
मना चरित्र गुण कितने ।

चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं।वोलंतुमे दिअहा॥४६॥
मुज प्रते एटलां मंगलकारी सिद्ध जगवांन साधु तथा श्रुत
हो अरिहंत । ज्ञानचपुनःधर्म चारित्ररूप ॥
मम मंगल मरिहंत । सिद्धासाहु सुअंच धम्मोअ ॥
सम्यग् इष्टि देवता पण प आपो द्यो समाधिपणे बोद्धि
त्यूह निवारक ते माटे मंग विज धर्मनी प्राप्ती ते प्रते ॥
लिक ।

सम्म द्विठी देवा । दिंतु समाहिंच बोहिंच ॥४७॥
प्रतिखेध बाविस अज्जक बत करवायोग सामायक पोस
रिस अनंतकाय माहा आरंज ह देव पुजादीक ते न कर
प्ररिग्रह तथा अठार पापस्थां वे ते पम्भिकमु ॥
नकादी करवावमे करिने जे
पाप लाग्यु होय ते पडिकमु ।
पम्भिसिद्धाणं करणे । किच्चाणमकरणेअ पम्भिकमणं ॥

निगोद पढ्योपमादीक विचा विपरीत जे उत्सुत्र सिद्धान्त
रने अणसरद्वदतो ते पत्नीक विरुद्ध परुषणा किधी होय
मु तिमज । ते पत्तिकमु ॥

असद्वहणेअ तहा । विवरीअ परुषणाएअ ॥४८॥
खमजो मुज प्रते सर्व जीव तुमे पण सघलाए जीव ख
तुमे । मावजो मुजप्रते॥

खामेमि सबजीवे । सबेजीवा खमंतु मे ॥
मैत्रीज्ञावणे माहरे सर्व ज्ञूत वैर माहरे नथी कोइ साथे॥
प्राणी साथे ।

मितिमे सब जूएसु । वेर मप्र नकेणइ ॥४९॥
ए प्रकारे में गुरु पासे सर्वपाप आलोइ निंदी आत्मा साथे ॥
एवमहं आलोइअ निदिअ ॥

ग्रहि गुरु साथे डगंठी सम्यग प्रकारे त्रिवीधें प्रति क्रांत ॥
गरिहिअ डगंठिअ सम्मं तिविहेण ॥
वांडुवु जिन तिर्यंकर चौवीस पतें मंगलीक जणी इत्यर्थः ॥
पत्तिकंतो वंदामिजिणे चउवीसं ॥५०॥

॥ इति श्री श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रं समाप्तं ॥

जो तुमारी इठा होय तो आ हूं उठयोवु सावधानं थयोवु
देशदिन हे जगवन । हूं आपे ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । अप्रुच्छिं हं ॥
दिवस मादिलो जे अपराध ते तिवारे गुरु कहे खामेदशि
खमावाने । प्य कहे इठं तदती ॥

अप्रितर देवसिञ्च खामेत्त । इत्थं ॥

खमावुत्तु पढे पंचांग परणांस जे कांइ अप्रीती उपजावी
करी मुखे मोहोपती राखी होय विषेप प्रकारे अप्रिती
एम कहे दिवस संबंधी मा उपजावी होय ॥
हारो अपराध तुमारी आज्ञामां ।

खामेमि देवसिञ्चं । जंकिंचि अप्पत्तिञ्चं परपत्तिञ्चं ॥
जातने विषे पाणिने विषे वीनयने विषे वयावचने विषे ए
कवार बोलवु ते आलापनेविषे वारंवार बोलवु ते संलाप
ने विषे ॥

जत्ते पाणे विणए वेयावच्चे । आलावे संलावे ॥

गुरुश्री जंच्चे आसने बेठा सम गुरु वातकरता वच्चेबोड्या
सरीखे आसने बेठा । गुरुए कथादीक कथापढी
उपरांती विस्तारी कही देखामे ॥

उच्चासणे समासणे । अंतर भासाए उवरि भासाए ॥

जेकांइ माहरो विणय रहित सुद्धम नाहानो अथवा वाद
दोष हुत्त होय । र मोहोटो ॥

जंकिच मज्झ विणय परिहीणं । सुहुमंवा बायरंवा ॥

हे ज्ञानवंत जगवन् तुमे जां ते सर्व पापनु मीथ्या दुःकृत
णोढो हु नथी जाणातो । हो ॥

तुप्पेजाणहअहंनयाणामि । तस्समिञ्चामि डुकमं ॥ १ ॥

आचारज ते छादसांगी अ शिष्यते विद्या शिखे ते सां
र्थना परुपक उपाध्यायते द्वा मिते सरिखा धर्मना पावण
दसांगी सूत्रना पाठक तेह हार कुल ते एकसाधुनो परि

प्रत्ये ।

वार गण ते घणा आचार्यनो
परिवार तेहने विपे ॥

आयरिय उवप्ताए । सीसे साहम्मिएकुल गणेअ ॥

जे में कोइ कखाय करीनुहो ते सर्व त्रीविधे मन वचन
य तथा मादारा थकी तेमने कायाए करी खमावुवु ॥
नपनो होय ।

जे मे केइ कसाया । सबे तिविहेण खामेमि ॥१॥

सर्व समण साधुने तथा चतु हे नगवन् हाथजोडी मस्तके
विध संघने । चढावी विनय पूर्वक ॥

सबस्स समण संघस्स । भगवन् अंजलि करीअसीसे ॥

ते सर्व प्रते अपराध खमा खमुवु हुं पण सर्व प्रते ॥
वी करी ।

सब खमावइत्ता । खमामि सबस्स अहयंपि ॥२॥

सर्व चौरासिलाख जिव रा जावेकरी धर्मनेविपे थापीने
सि प्रते । पोतानु चित ॥

सबस्स जीवराशिस्स । भावन् धम्म नहिअनियचित्तो ।

एहवो थको सर्वप्रते खमावु खमुवु हुं पण सर्व प्रते रोस
वु अपराध प्रत्ये । गम्भीने ॥

सबं खमावइत्ता । खमामि सबस्स अहयंपि ॥३॥

ज्ञान देवता ज्ञान अधिष्टाइ ज्ञानावर्णी कर्मना समोह
काजगवतिने । प्रते ॥

सुय देवया भगवइ । नाणावरणीय कम्म संघायं ॥

तेइनु फेम्मे सतत निरंतर जेहनी सुत सिगत रूप समु

सदा । इनेविषे नक्तवे तेहनु ॥
 तेसि खवेन सययं । जेसिं सुय सायरे नत्ति ॥१॥
 जेह खेत्रनेविषे साधुवे तेप समकित ज्ञानेकरी चारित्रिक
 ए केहवावे । री सहित एहवा साधु मुनी
 वली केहवा ॥

जिसे खिते साहु । दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥
 साधेवे मोक्षमार्ग प्रते आ ते साधुना डरीतप्रत्ये ते देवी
 राधे वे । हरो टालो ॥

साहंति मुक्त मग्गं । सादेवी हरन डरीयाइ ॥२॥
 ॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथस्तुतिर्लिख्यते ॥

ज्ञान दर्शन चारित्रादीक गु निरंतर सप्राय संयमने विषे
 ए करी सहित । आशक्त एहवा साधुने ॥

ज्ञानादिगुण युतानां । नित्यं स्वाध्याय संयम रतानां ॥
 निपजानु करो घरनी अधि कढ्याण मंगलीक निरंतर
 ष्टाइका देवी । सर्व साधु मुनिने ॥

विदधातु नुवन देवी । शिवं सदा सर्व साधूनां ॥१॥
 जे देवीनु खेत्र स्थानक पत्ये साधु मुनी साधे वे क्रिया
 आश्रय करिने । अनुष्ठानादी ॥

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया ॥
 ते स्थानकनी अधीष्टाइकादे अमने सुखनी देणहारी था
 वी सदाय निरंतर । न ॥

सा क्षेत्रदेवता नित्यं । नूयान्नःसूख दायिनी ॥७॥
॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथस्तुतिर्लिरुयते ॥

कमलनां पत्र तेहनिपेरे विस्तिर्ण विकस्यां लोचन ठे जेहना ॥

कमलदल विपुल नयना ॥

ने कमल जेहवु सुगंधि मुख ठे जेहनु वली कमलना घरन
नीपेरे केसर जेहवु वर्ण ठे जेनु ॥

कमल मुखी कमलगर्भ सम गौरी ॥

कमलने विपे रहेली एहदी श्रीसुतदेवता जगवति अम्ह
जे देवि ते । ने आपो सर्व कार्यनि सि
द्धि प्रत्ये ॥

कमले स्थिता जगवती । ददातु शुतदेवता सिद्धिं ॥१॥

नमस्कार हो श्रीमाहाविरस्वा स्पर्श करिने कर्मने जित्यां
मि प्रते पण ते केहवावे । ठे ॥

नमोस्तु वर्धमानाय । स्पर्धमानाय कर्मणा ॥

तेह कर्मना जीतवाथी जयप अदृश्य ठे परदर्शनि मिश्या
णे पाम्या ठे मोक्ष । त्विने ॥

तज्जया वाप्त मोक्षाय । परोक्षाय कुतिथीनां ॥१॥

जेहना विकथर जे कमल तेहनिजे श्रेणि तेहनी ॥

येपांः विकचार विंद राज्यां ॥

मोहोटा चरण कमलनि श्रेणि घरवे ॥

ज्यायः क्रम कमलावलीं दधत्या ॥

सरघासाथे मैत्री प्रसंसे संगत्ती एहवु ॥

सदृशै रिति संगति प्रशस्यं ॥

कह्यु हो मंगलीक जणी ते तिर्थंकर ॥

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥५॥

क्रोधादि च्यार कपायना जे ताप तेना थकि पिमाया जे जी
वने निवर्त्ती सुख प्रत्ये ॥

कषाय तापा दित जंतु निर्वृतिं ॥

करेबे जे श्री वितरागना सुखरूपीन मेघ थको उपनो ॥

करोति यो जैन मुखांबुदो द्रुतः ॥

ते जेष्ठमासथी उपनिजे व्रष्टि तेहने सरिखो ॥

स शुक्रमासो ब्रव व्रष्टि सन्निभो ॥

करो संतोष प्रते माहरे विषे विस्तारथी जांणवि वांणिनो ॥

दधानु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरं ॥ ३ ॥

इतिस्तुतिसंपूर्णं ॥

प्रधान सोनु पिलु शंख उज्ज निखरतन मेघकालो तेहना
लो परवालु रातु । सरिखां ठे वर्ण जेहना गयो
ठे मोह जेहने एहवा ॥

वरकनकशंख विष्णुम।मरकतघनसन्निभं विगय मोहं॥

सप्तति के० सितेर शतै के० सर्व जे देवता तेहने पुजीत
सो एटले १७० एकसो सि ते जिन सर्व प्रते हुं वांङ
तर जिन तेह केहवा ठे । इति चैत्यवंदनार्थ समाप्तः ॥

सप्तति शतं जिनाना । सर्वा मर पूजितं वंदे ॥१॥

इति चैत्यवंदन समाप्तः ॥

अढिद्विप समुद्धने विपे । पन्नर कर्मभूमिने विपे ॥
 अट्टाइ जेसु दीव समुद्धेसु । पन्नरससु कम्म भुमीसु ॥
 जावंत कोइपण साधु मुनि उधो मुहपति गुठो पन्निघो
 राज वलि ते केहवा ठे । तेहना धरण हार ॥
 जावंत केवि साहु । रयहरण गुठ पन्निग्गह धारा ॥
 वली पांच माहाव्रतना धार अठार हजार सिलांग रय
 क वलि । ना धरणहार ॥
 पंच मह वय धारा । अठारस सहस्स सीलंग धारा ॥
 अखंमि ते आचारने चारित्र जेहनामा एहवा जे साधु ॥
 अकया यार चरित्ता ॥
 ते सर्व प्रते माथे करि मने करि मस्तके करी वांड उठ ॥
 ॥ १ ॥ इति ॥
 ते सबे सिरसा मणसा मण्णण वंदामि ॥ १ ॥
 इति समाप्त. ॥

विस्तीर्ण जे आंख्य तेरुप पा उजला जे दांत तेहनां जे
 नमा ठे जेहनां । किरण तेह केसरान्ठ ठे जी
 हां ॥

विशाल लोचन दलं । प्रोद्य दंतांशु केशरं ॥
 प्रज्ञात समयने विपे श्री वी ते रुप जे कमल ते पवित्र क
 रजिननु भुख । रो मुज प्रते ॥

प्रातः वीरजिनेजस्य । मुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥
 जेमने अनिशोक कर्म करीने पाम्या ठे हर्षना जर समोह

प्रते तेथी देवलोकनां जे सुख ते प्रत्ये इंड ते ॥

येषा मन्निषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्षनरात् सुखं सुरेंद्रा ॥

तरणां वरोवर स्वर्गना सुखने नथि गणता अपितु ते तिमज
गणे ठे जिन स्नात्र कर्म तेज अधिक करि मानें ठे ॥

तृण मपि गणयति नैव नाकं ॥

प्रभात समयने विषे हो मंगलीक जणी ते जिनेश्वर स्वा-
मी तेज ॥

प्रात स्संतु शिवाय ते जिनेजाः ॥२॥

कलंक करि रहित सदाइ सं कुदर्शन रुप जे राहु तेहने
पुर्ण एहवा ठे । अगसनहारने सदा निरंतर
उदय ठे जेहनो ॥

कलंक निर्भुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्कराहु असनं सदोदयं ॥
एहवा अपूर्व चंडमासमान ॥ श्रीजिन चंडनो ज्ञाषित श्री
सिद्धांत प्रत्ये ॥

अपूर्व चंड जिनचंड ज्ञाषितं ॥

प्रज्ञात समये वांड नमु पंक्ति नमस्कार कखो ठे जेह
प्रत्ये इति ॥

दिनागमेनौमि बुधैः नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ इति समाप्तः ॥

क्रोधादिक जे च्यार कखाय ते रुप जे प्रतिमल तेहने उलुर
ए केण डुहावाने वा ठलवाने समरठ ॥

चउ कसाय पन्निमल्लु लूरणु ॥

डुखे करी जितिए एहवां मदन काम तेहनां जे बांण ते प्र
ते मुसुमुरणु केण ज्ञागवाने समरथ ठे ॥

डुऊय मयण बाण मुसु मूरणु ॥

ताजु रायणनु जे ब्रह्म तेहना सरिखु निलु वर्ण ठे जेहनु
हाथीना सरिखि चाढ्य ठे जेहनि ॥

सरस पियंगू वन्नु गय गामीउ ॥

जयवंता वरतो मन्त्रवांठीतना पुरणहार एहवा श्री पार्श्व
नाथ त्रिणय जुवनना नाथ एहवा वली ॥

जयउ पासु जुवणत्तय सामीउ ॥

जेहना तनु सरिनि कातिना जे समोह स्निग्ध वर्ण ॥

जसु तणु कंति कमप्प सिणिच्च ॥

सोने ठे फणि जे नाग तेहनि जे मणि तेहनां जे किरण तेने
करि व्यापित ठे ॥

सोहइ फण मणि किरणा लिच्च ॥

नवो जे मेघ तेहने विपे तन्निजे विजलि ते रुपजे लता तेने
करि लंगित चिन्हित जेम सोने तेम श्री पार्श्वनाथ लंठन
सहित सोने ठे ॥

नन्नव जलहरु तमि ह्वय लंठीउ ॥

ते जिन पार्श्वनाथ आपोद्यो वंछित प्रते ॥

सो जिणु पासु पयउउ वंछिउ ॥ २ ॥

॥ इति समाप्तः ॥

— ० —

सामायक व्रते करि जुक्त वा जो मने होय नियमें करि स

सहीत ।

हित ॥

सामाज्य वय जुत्तो । जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥
वेदे असूत्र कर्म प्रते । सामायक होय जेटली वार
त्यांसूधी ॥

बिन्नइ असुहं कम्मं । सामाज्य जत्तिआ वारा ॥ १ ॥
सामायक लिधे अके वा कर श्रमण मुनि सरिखो श्रावक
वे थके । होय जे कारण माटे ॥

सामाज्यं मिच्छं कए । समणोइव सावजं हवइ जम्मा ॥
तेणे कारणे करि । घणि घणिवार सामायक करवु ॥

एएण कारणेणं । बहुसो सामाज्यं कुजा ॥ २ ॥

सामयक विधि लीधू विधि पारयुं विधि कर
तां अविधि हुइ होय ते सबवे मनवचन का
याए करि तस्य मिहामि उक्कमं ॥

॥ इति श्री समाप्तः ॥



॥ अथ लिख्यतेः ॥

सामायक पोसहने विषे रहोजे । जीव तेनो जायछे जे काल ॥
सामाज्य पोसहं संविअस्स । जीवस्स जाइ जो कालो ॥
ते सफल जाणवो । विजो काल संसार फलने
हेतु जाणवो ॥

सो सफलो बोधवो । सेसो संसार फल हेउ ॥ १ ॥

॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथ लिख्यतेः ॥

करुवु हे जगवन् पोसह प्रते आहारनो त्याग ॥

करेमि जंते पोसहं आहार पोसहं ॥

देशथी सर्वथी शरिरनी शुश्रुखानो त्याग ॥

देसजं सव्वजं सरिर सक्कार पोसहं ॥

सर्वथी ब्रम्हचर्यनो पोसह । सर्वथी कुव्यापारनो पोपघ ॥

सव्वजं वंजचेर पोसहं । सव्वजं अव्वावार पोसहं ॥

सर्वथी व्जार प्रकारनो पोसह करु ॥

सव्वजं चजंविहे पोसहं ठामी ॥

जावत दिवस वा रात अथवा अहोरात्रि पोसह पन्निवजुं
तिहां जगे ए ॥

जाव दिवसं अहोरत्तं पञ्चुवा सामि ॥

उविधे त्रीविधे करिने । मने करी वचनें करी काया
ए करी ॥

उविहं तिविहेण । मणेणं वायाए काएणं ॥

न करु न करावु ॥ पन्निक्कमु तेहनु हे जगवन् ॥

नकरेमि नकारवेमि । तस्सजंते पन्निक्कमामी ॥

तेहनि निंदा करु ग्रहा करु ॥ आत्मा प्रते पोताथी वोसिरावुवु ॥
॥ इति ॥

निंदामि गरिहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

॥ इति समाप्तः ॥

सागरचंद श्रावक कामदेव श्री माहावीरना श्रावक चं

श्रावक कृशपुत्र वा ।

जवतंसक राजा सुदर्शन शे
ठ ते माहा पुरुषने धन्य ॥

सागरचंदो कामो । चंदवडसो सुदंसणो धन्नो ॥

जेणे श्रावकनी पोसह प्रति अखंमि पालि मरणात उ
मा ते कानसग । पसर्ग आव्या पण न च
ल्या ॥

जेसि पोसह पमिमा । अखंमिआ जीवियंतेवि ॥

धन्य प्रसंस्या करवा जोग । सुलसाजी श्रावीका अने आणंद
कामदेव प्रमुख श्रावक ॥

धन्ना सलाहणिजा । सुलसा आणंद कामदेवाय ॥

जेहनी प्रसंस्या करे जगवंत इठ व्रतपणु श्री माहाविर
पोते । वखाणे ॥

जास प्पसंसई जयवं । दढ वयंतो माहावीरो ॥१॥

पोसह विद्धिलिधो विधे पारयो ॥

विधिकरतां जेकांइ अविधि ॥

हुइहोय ते सविहं मनं वचने ॥

कायाए करि तस्स मिळामि उक्कमं ॥३॥इति

—:०:—

॥ अथ मन्ह जिणाणं सज्ञाय ॥

मन जेते प्रते जिन वितराग मिथ्यात दर्शन प्रते तजबु
देव तेहनी आझा तथा तेहनि समकित आदरबु धारण
जगतीनें विषे आणबु मनने । करबु ॥

मन्नह जिणाणं आणं । मिठं परिहर धरह समत्तं ॥

सामायकादि च आवस्यक उद्यमवन्तं यवु निरन्तर ॥
कह्यावे तेने विषे ।

ब्रविह आवस्सयंमि । उजुत्तो होइ प्पइ दिवसं ॥१॥
अष्टमि आदि पर्वतिथिने वि सूपान्नादि दांन सिल्लते ज्रम
पे पौषध वृत्त । चर्य तप बारज्जेदे करवा ज्ञा
व साधुने विषे तत्पर ॥

पब्बेसु पोसह व्वयं । दाणं सिल्ल तवोय जावोय ॥
पंच प्रकारे सञ्ज्ञाय ध्यान न परने शक्ति प्रमाणे उपगार
मस्कारनु चितववु । करवो सर्व प्राणी उपर दया
जाव राखवो जतना करवी ॥

सञ्ज्ञाय नमुक्कारो । परोवयारोअ जयणाय ॥७॥
जिन तिर्थकरनी पुजा करवी इव्व जाव हितना उपदेस
वा जिननी स्थुति करवी स्त क गुरुनी स्तवना करवि सा
वना करवी । धर्मी ज्ञाइनी जगति प्रजाव
ना करवि ॥

जिणपूआ जिण थुण्णंगुरु घुइ साहमियाणवज्जलं ॥
व्यवहार गुरु परंपरागत सूध वलि रघयात्रा तथा शत्रुंजा
व्यवहार ते सहित मनसुधी दिक आवर तिर्थनी तथा स
घ चतुर्विध जंगम तिर्थनी
जात्रा प्रते करवी ॥

ववहार स्सय सुधी । रहजत्ता तिच्च जताय ॥३॥
क्रोधनो जय हिता हित क साचु मिठु मवित प्राये वो
त्या क्रतनो विचार पाप आ लवुते जासा सूमति सर्व प्र

श्रव रोकवा ।

श्वी कायादि ठ जिव उपर
दया ज्ञाव राखवो ॥

उवसम विवेक संवर । भासासमइअ ठजिव करुणाय ॥
वली ज्ञलाधर्मी ज्ञाइनी संगति करवी समागम करवो ।

धम्मीय जण संसग्गो ॥

इंइयादिकने दमवापणु करवु चारित्र लेवाना प्रणाम क
रवा ॥

करण दम्मो चरण परिणामो ॥४॥

वलि चतुर्विध संघनां बहुमा शास्त्र लखवु लखाववु जि
न करवां । न तिर्यनी प्रज्ञावना ॥

संघो वरि बहुमाणो । पुढ्य लिहणं पज्ञावणा तिठे ॥

एटलावानां श्रावकने कृत्य निरंतर सुगुरुनो धर्मोपदेश
करवाना करवां । सांजलवो ॥

सढाण किच्च मेअं । निच्चं सुगुरु वएसेणं ॥ ५ ॥

इति समाप्तः ॥

—:०:—

॥ अथ नरहेसरनि सजाय लिख्यते ॥

नरतेश्वर चक्रवर्त्ति साधु । १। अन्नयकुमार मुनिश्वर । ३।

बाहुबली साधु । २। अने ढंढण कुमारमुनि ४ ॥

नरहेसर बाहुबलि । अन्नयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥

सिरीआजी । ५। अणीकापु अश्मत्ता केवली । ७। नागद

त्र । ६। त मुनि । ८ ॥

सिरिउ अनियाउतो । अश्मुत्तो नागदत्तोय ॥ १ ॥

मेतार्यमुनि । १॥ शुलिजइ वयरस्वामि । ११॥ नंदिखेण
 मुनि । १०॥ १२॥ सिहगिरी । १३॥
 मेअऊ थूलीनहो । वयररीसी नंदीसेण सीहगिरि ॥
 कयवन्नाजी । १४॥ शुको-स पुंडरिकमुनि । १६॥ केशिकु
 लसाथ ॥ १५॥ मार ॥ १७॥ करकंदु १८॥
 कयवन्नोअ सुकोसल । पुंनरिउ केसि करकंदु ॥ १॥
 हल्लमुनि । १९॥ विहल्लमुनि सालमुनि । २१॥ महासालमु
 ॥ २०॥ सुदर्शनमुनि ॥ २१॥ नि । २३॥ सालिभइमुनि २४॥
 हल्लविहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिजहोअ ॥
 दशारण जइ मुनि २५ जइ । पशनचंड राजरीपी । २६॥
 यसोनइमुनि ॥ २७॥
 भहो दसन्न जहो । पसन्नचंदोअ जरसजहो ॥ ३॥
 जंवुस्वामी । २८॥ वंकचुल २९ गज सुकुमालमुनि । ३०॥ अ
 वंतीसूकमाल मुनि । ३१॥
 जंवुपहु वंकचूलो । गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥
 धन्नोउत्तम । ३२॥ इलाचिपुत्र चिलाचिपुत्र । ३४॥ अने वाहु
 मुनि ॥ ३३॥ मुनि ॥ ३५॥
 धन्नो इलाइपुत्तो । चिलाइपुत्तो अवाहुमुणी ॥ ४॥
 श्री आर्यमाहागिरी मुनि ३६॥ आर्यसुहस्ति ॥ ३७॥ उदाय
 श्री आर्यरक्षित ॥ ३८॥ नराजरूपि ॥ ३९॥ मनक
 मुनि ॥ ४०॥
 अऊगिरि अजरखिआअऊसुहठी उदायगोमणगो ॥
 कालकाचार्य ॥ ४१॥ श्री आं श्री प्रद्युम्न ॥ ४३॥ मुलदेव

ब ॥४५॥

जी ॥ ४४ ॥

कालयसुरी संबो । पञ्चुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥

प्रज्ञावास्वामि ॥४५॥ विश्वकु आङ्कुमार मुनि ॥४७॥ इ
मार ॥४६॥ ठप्रहारी मुनि ॥ ४८ ॥

पन्नवो विन्दुकुमारो । अदकुमारो दठप्रहारी ॥

श्री श्रेयांस ॥ ४९ ॥ कुरगुरु शिप्रंनवसूरि ॥५१॥ श्री मे
॥५०॥ घकुमार ॥५२॥

सिप्रंस कुरगडु । सिजंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥

ए आदे देइ माहा सत्ववंत आपे सूरखप्रते ने गुणना स
ते । मोह सहित ॥

एमाइ महासत्ता । दितु सुहं गुणगणेंहिं संजूता ॥

जेमनां नाम ग्रहण करवाना पापना प्रबंध होय ते डर
प्रज्ञावथी । जाय ॥

जेसिं नाम ग्गहणे । पाव पबंधा विलयजंति ॥७॥

शुलसा श्रावीका ॥१॥ चंदन मणोरमा ॥ ३ ॥ मदनेरखा
बाला ॥२॥ ॥४॥ दमदंति ॥ ५ ॥

सुलसा चंदनबाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंति ॥

नर्मदा ॥६॥ सुंदरीजी ॥७॥ नंदा ॥ ८ ॥ न्नज्ञजी ॥१०॥
शीताजी ॥९॥ शुन्नज्ञजी ॥ ११ ॥

नमया सुंदरि सीया । नंदा नदा सुभदाय ॥१॥

श्री राजेमती ॥१॥ रुषिद पद्मावती ॥ १४ ॥ अंजणा
ता ॥१३॥ ॥१५॥ श्रीदेवी ॥१६॥

रायमइ रिसीदत्ता । पन्मावइ अंजणा सिरिदेवी ॥

ज्येष्ठा ॥१७॥ शुज्येष्ठा ॥१८॥ प्रजावति ॥ १७ ॥ चेलणारा
अगावती ॥१९॥ एणी ॥ १९ ॥

जिष्ठ सुजिष्ठ मिगावड । पभावड चिह्नणा देवी ॥१९॥
आंमि ॥२०॥ शुदस्त्रिजी ॥२१॥ रेवतीजी ॥ २० ॥ कुतिजी
रुपिणी ॥२१॥ ॥२२॥ शिवोदेवि ॥२३॥ ज
यवती ॥२४॥

वन्जी सुंदरी रुपिणी । रेवड कुंती शिवा जयंतीया ॥
देवकीजी ॥२५॥ दुपदिजी ३० कलावती राणी ॥ २५ ॥ पु
धारणीजी ॥२६॥ प्प चुलाजी ॥२६॥

देवड दोवड धारणी । कलावड पुप्फचूलाय ॥२७॥
पद्माजी ॥२८॥ अने गौरीजी लक्ष्मणाजी ॥ २८ ॥ अने
॥२९॥ गंधारी ॥३०॥ शुक्तिमाजी ॥३०॥

पञ्मावड गौरी गंधारी । लक्षणा सुसीमाय ॥
जंवुवति ॥३१॥ ने सत्यजां रुपिणीजी ॥३१॥ एकश्र
मा ॥३२॥ माहाराजनि आव अग्रमहि
पिन् ॥

जंवूवड सच्चभामा । रुपिणी कन्हठ महीसात्र ॥३३॥
जस्काजी ॥३४॥ जक्षदिनाजी नूताजी ॥३४॥ तीमज निश्वे
॥३५॥ नूतदिना ॥३५॥

जस्काय जक्षदिना । नूआ तह चेव भूयदिनाय ॥
सेणाजी ॥३६॥ वेणाजी ॥३६॥ वेहेनि ए घुलिन्नद्रजीनी जा
रेणाजी ॥३७॥ एवी ॥

सेणा वेणा रेणा । भडणीन धूलिभदस्स ॥३८॥

ए आदे देइ माहा वा मोहोटी संतिउ ॥

इच्चाइ महा सइउ ॥

जयवंति थइ अकलंक कलंक रहीत सीलें करि सोझीत ॥

जयंति अकलंक सील कलीयाउ ॥

आज सूधी पण वाजेठे जेहना ॥

अजवि वज्जाइ जासिं ॥

जसनो पमह त्रिभुवनने विपे सघले सदाय इति समाप्तः॥

जस पमहो तिहुअणे सयलै ॥ १३ ॥

॥ इति महात्मा महासतिकुलं समाप्तः ॥

॥ अथ लघुशांति लिख्यते ॥

श्रीमानदेवसूरिकृत.

श्री शांतिनाथ केहवाठे डुख उपसमे करि सहित ठे राग
उपसर्ग सम्याठे माटे शांति द्वेषे करि रहीत ठे शांत केण
नु घर वा स्थानक ठे । रागादि उपद्रव सम्याठे जे

हने अशिवं केण अकळ्याण

कारी नथी अपितु कळ्याण

कारी ठे एहवा तेमने नमस्कार करिने ॥

शांति शांति निशांतं । शांति शांता शिवं नमस्कृत्य ॥

स्तवना करनार पुरुषने उप मंत्रना पदवमे करिने शांती

इव निवारण करवाने निमी निमीते स्तवना करुबु ॥

ते कारणे ।

स्तोतुः शांति निमित्तं । मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥१॥

उँ इति पंच प्रमेष्टी निरधारं वाचक पदं जे जीहां ॥

उमिति निश्चित वचसे ॥

नमो नम इति वे उच्चारण ते संभ्रम अथवा द्वि वचन न
गवत समग्र दुकराई करि सहित पुजा योग्य ॥

नमो नमो भगवते हते पूजां ॥

श्री शान्तिनाथ जये करि सहित ॥

शान्ति जिनाय जयवते ॥

जेहनो यश विस्तारने पाम्यो ठे स्वामिनाथ दमवंता साधु
मुनि तेहना एहवाठे बली केहवाठे ॥

यशस्विने स्वामिने दमिनां ॥ १ ॥

समस्त चोत्रिस अतिशये अ जे संपति एटले समोवसर
ए महाप्राप्ती हार्य तेहनि जे एनि सघलि रुद्धि करी स
महति मोहोटी । मन्वीता केण सहित श्रेष्ठ ॥

सकला तिरोपक महा । संपति समन्विताय शस्याय ॥

त्रीलोकना पुजनिक एहवा नमस्कार थान श्री शान्तिना
ते प्रते । धजिने ॥

त्रैलोक्य पुजिताय च । नमोनमः शान्ति देवाय ॥ ३ ॥

समस्त देवताना समुह वृंदा जे स्वामि एटले चोसठ्य
रक वृंद तेहना । इन्द्रादिके सम्यक् प्रकारे पु

ज्या ठे जे कोइथि पण
जित्या न जाय ॥

सर्वा मरसु समह । स्वामिक संपूजिताय निजिताय ॥

जगतना जे लोक तेहनु रक्ष ते कारण माटे निरंतर नम

ए करवाने अतिशयपणे सा स्कार हो ते श्री शांतिनाथ
वधाने ठे । प्रते ॥

भुवन जन पालनो द्यत । तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥

समस्त पाप तेहनो नुघ जे सर्व उपद्रवनो समावणहार
समोह तेहना नासनो कर नास पमामनार ॥

ए हार ठे ।

सर्व डरितोघ नाशन कराय । सर्वा शिव प्रशमनाय ॥

कुर डष्ट असून ग्रहने नुत ने शाकिणीने मथणहार एट
ने पीशाचने । ले नासनो करणहार ठे एट
लानो ॥

डष्टगृह भूत पिशाच । शाकीनीनां प्रमथनाय ॥५॥

जेहनु श्री शांतिनाथनु पुर्वे श्रेष्ठ वाक्य वचने करि वा न
कह्यु जे नाम मंत्र ते प्रते । चार मात्र करवे करि वा स
मर्ण करवे करि चिंते संतो

ष करि उचारण करवाथी संतोष वंत थइ एहवि ॥

यस्येति नाममंत्र । प्रधान वाक्यो पयोग कृत तोषा ॥

विजयानामादेवि करे स्मर नमस्कार करसे एवि नम
ए करनार पुरुषने मनवंडि स्कार करो ते श्री शांतिना
तपुरे आपे विजयादेवि के थ प्रते ॥
विठे ।

विजया कुरुते जन हितामिति चनुतानमततं शांतिं । ६ ।

थान नमस्कार हे जगवति हे विजये हे सुजये हे पराप
अहिं जगशब्द बल सरूप वि रैरजिते परा कहिए प्रकृष्टा

यं वाचि जाणवो ।

परै अन्यदेव अजित के० ते
मनाथी नजितांणी माटे परा
परै रजिते ॥

भवतु नमस्तं भगवति । विजये सुजये परापरै रजिते ॥

हे अपराजित ते जगत्यां त्रण प्रथविने विषे सर्वोत्कर्ष से
जुवनने विषे । वकजनने जयनि पमारुना

रि हे जयतीति जयावहे हे

जवती तमारा प्रते नमस्कार करुवु इत्यनेन

विजया ॥१॥ जया ॥२॥ अपराजिता ने ॥३॥ अजिता

॥४॥ ए च्यार सोचव्या ॥

अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे जवति ॥५॥

सर्व स्यापिच चतुर्विध संघ भद्र सुख कल्याण रोग रहि
प्रते । तपणु मंगल पापनु नासप

णु आपदानु नासपणु प्रक्र

पृ प्रकारे एटलावानां आपे माटे ॥

सर्वस्पापिच संघस्य । भद्र कल्याण मंगल प्रददे ॥

मोक्ष मार्ग साधे ते साधु मु तुष्टि संतोष पुष्टि धर्म कार्य

निश्चर तेमने निरंतर शिवं नि वाहिं अतिशय पणे आपे

उपज्व रहितपणु आपे मा एहवि ते जगतने विषे यवं

टे हे साधुनां सदा शिव । ति वर्तो ॥

साधूनांच सदा शिव । तुष्टि पूष्टि प्रदे जीया ॥६॥

हे ज्ञान्याना रुत सिद्धं जवि जविप्राणिने निर्वृति के० सौ

प्राणीने सर्व कार्य निर्विघन ख्य निर्वाण मोक्ष परमानंद

पणें सघाय ।

ते प्रते जनयति उत्पादयति

निपजावे वा आप तेमाटे हे

निर्वृति निर्वाण जननि धर्मने विपे साहय्य करवा

अकि जावत् मोक्ष प्रते पामे ॥

जठयानां कृत सिधे । निवृति निर्वाण जननि सत्त्वनां ॥

निरजयपणाने प्रकृष्ट प्रकारे

नमस्कार हो कळ्याणनि क

आपवाने विपे तत्पर तेमाटे

रणहारि प्रकर्षे करि आपना

हे अजय प्रधान निरतेण ।

री तमारा प्रते ऽतेमाटे हे

स्वस्ति प्रदतुभ्यं ॥

अजय प्रदान निरते । नमोस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यं ॥१॥

जगत ते पोतानि सेवाने वि

शुभ्र श्रेयः कल्याण आ सम

पे तत्पर ते सेवक तेप्रते जं

तात् तेप्रते वहति पमामे क

तु सर्व जिव प्रते ।

रे नित्य सदैव उद्यता साव

धानं तत्पर एहविते देवि मा

टे शुभावे हे नित्य मुद्यति ॥

जक्तानां जंतुनां । शुभा वहे नित्य मुद्यते देवी ॥

सम्यग्द्रष्टि प्राणिने धृति सं

मति ते आगामि कालनु दे

तोष रति शाता प्रिति ।

खबु बुद्धिते वर्तमानकालनु

देखबु तेहनि प्रकर्ष प्रकारे

देणहार ते माटे हे धृति रति मति बुद्धि प० ॥

सम्यग्द्रष्टिनां धृति रति । मतिबुद्धि प्रदानाय ॥२॥

जिन वितरागनी आझाने विषे तत्पर एहवा जक्त होय तेहने ॥

जिन शासन निरतानां ॥

श्री शांतिनाथ प्रत्ये नता नम्रिचुता परणांम करता एहवा-
जे जन जगति लोकने विषे जे जनना समुह तेह प्रते ॥

शांति नतानांच जगति जनतानां ॥

श्री लक्ष्मी संपत् रुद्रि की वर्द्धिनी पमामुनारि ठे हे दे
तिं ख्याती यश परसिधपणु वितु जयवंति विजयवंति स
ते इत्यादिक सर्व प्रते । वोल्लुष्टपणे वतों पोने ॥

श्रीसंपत्कीर्ति यशो । वर्द्धनिजयदेवी विजयस्वा ॥ ११ ॥

पाणिनो जय अगनिनो विष ऊहेरनो जय सर्पनो ॥

सलिला नल विष विषधर ॥

डुष्ट ग्रह ते अगोचर असूज ग्रहनि पीना राजानो जय रोग
ते कुष्ट ज्वर जगंदरादि रण ते सग्रांमना जय ॥

डुष्टग्रह राज रोग रण जयतः ॥

राक्षसनो जय शत्रुना समुह चोरनो सात इतिनो हाथि
नो जय मारि मरगिनो उप सिद्धादिक स्वापदनो जय
इव । आदि शब्दार्थी साकिणी ना
किनी जूत पैपाच बेताला
दिकना जय ॥

राक्षस रिपुगण मारी । चौरैति स्वापदा दिभ्यः ॥ १२ ॥

अथ के० उपर कहा तेहना कख कख उपज्वनु नाशप
जय थकी रक्षा कुरु कुरु व णु एटले शांति कुरु कुरु स
लि शिवं निरुपद्रवपणु कर । दा सर्वदा बलि ॥

अथरक्षरक्षसु शिवांकुरु कुरु शांतिच कुरु कुरु सदेति ॥
संतोष प्रते करो करो पुष्टि कख कख स्वास्ति कल्याण

वृद्धिपणु ।

कर कर त्वंतु हे देवि कस्य
कस्य ॥

तुष्टिकुरु कुरु पुष्टिकुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं ॥१३॥
हे भगवती समस्त दुकराश्वंत हे गुणवति उदार्यादिक गुण
सहित माटे शिव कळ्यांण शांति उपद्रवनु समावबु ॥

भगवति गुणवति शिव शांति ॥

संतोष पुष्टि वृद्धि स्वस्ति हेम वा कळ्यांण कुरु करु जना
नां के० ते लोक प्रते ॥

तुष्टि पुष्टि स्वस्तिह कुरु कुरु जनानां ॥

ऊँ के० परमज्योति स्वरूपवंत एहवी तमारा प्रते नमस्कार
हो तथा ऊँथी ते स्वाहा सुद्धि मंत्र जाणवो ॥

ऊँ मिति नमो ।१। ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ए मंत्र रुप तुदेवी तुज प्रते नमस्कार हो ॥

यः कः ह्रीं फुट् ।१। स्वाहा ॥१४॥

एवं के० ए प्रकारे यत् जेहने पुरस्सरं पुर्वोक्त प्रकारे करि
नामाकर के० नाम उच्चारण संस्तुता स्तवि एहवि जया
करिने । देवि ॥

एवं यन्नामा कर । पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ॥

कुरु ते कस्य सर्व उपद्रवनु नमस्कार हो श्री शांतिनाथ
निवारणपणु ते शांति निमि नें अर्थे वा काजे ॥

तं के० कारण एटले शांतिनु

ज कारण कस्य वा नमती के० नमता पुरुष प्रते कस्य ।

कुरुते शांति नमतां । नमोनमः शांताये तस्मै ॥१५॥

आ प्रकारे करि पुर्व के० आ जे मंत्र पद तेणे करि रच्यु
गल गइ काले सुरी आचार्ये जे स्तवन स्तोत्र श्री शांति
दर्शित उपदेशेलां एहवां । नाथनु ॥

इति पुर्वसूरि दर्शित । मंत्र पद विदर्भित स्तवशांते ॥
पाणि प्रमुख पुर्व कह्यावे जय तेहनु टाळणहार ठे ॥

सलिलादि जय विनाशी ॥

शांति प्रमुख सुख पुर्वे कह्यावे तेहनो करणहार ठे नक्तिवं
त प्राणी नरने ॥

शांत्यादि करश्च भक्ति मत्तां ॥१६॥

यः के० जे प्राणि एनं पठति वा सांजले अथवा चितमां
के० ए स्तवन स्तोत्रप्रते जणे जावे यथायोग्य मनतिक्रम्य
सदा निरंतर सर्वदा । योगं योगं प्रति अथवा कांइ
कार्य उदेशि जणे सांजले ॥

यश्चैनं पठति सदा । शुणोति भावयति वा यथायोग्यं ॥

ते पुरुष निश्चे शांतिपद के० रा श्री मानदेवसूरि पण यावत्
गादिक उपसर्गे करी रहितपणु शांतिपदप्रते पामे करता पु
पामे माटे श्री शांतिपद ए रूपे पण तेज पोतानु नाम
हवु मोक्ष स्थानक प्रते पामे । जणव्यु ॥

सहि शांति पदं यायात् । सूरि श्री मानदेवश्च ॥१७॥

ते पुरुषने उपसर्ग होय ते प विघ्नरूप वेळ तेहने तो ठेदि
ए क्य थाय वा जाय । नाखे मुलमांथी ॥

उपसर्गा क्यं यांति । विद्यं ते विघ्न वल्लयः ॥

पोताना मन चितने त्रिपे स पुजतां थकां जिनेश्वर तिर्थ

दाय प्रसन्न आणंदपणे वर्ते कर जे तेमने ॥

स्याधि ते कहेढे ॥

मनः प्रसन्न ता मेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१७॥

समस्त मंगलीकमांमंगलीक । समस्त कल्याणनु कारण ॥

सर्व मंगल मागढ्यं । सर्व कल्याण कारणं ॥

प्रधान वा स्नेष्ट सर्व धर्मो थ जिनेश्वर जयवंतु वरतो एह
की एहवु । बु शासन ॥

प्रधानं सर्व धर्म्माणां । जैनं जयति शासनं ॥१८॥

॥ इति लघुशांति समाप्ता ॥

॥ अथ सातलाख लिख्यते ॥

हवे चोरासिलाख योनीयो जीवनी कहेढे ॥

सातलाख योनी प्रथवीकाय सातलाख योनी पाणीना
ना जीवनी । जीवनी ॥

सातलाख प्रथिवीकाय । सातलाख अपकाय ॥

सातलाख योनी अगनीना सातलाख योनी वायु काय
जीवनी । ना जीवनी ॥

सातलाख तेज काय । सातलाख वातकाय ॥

दसलाखयोनी प्रतेक वनस्पतीना जीवनी ॥

दशलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥

चउद लाख योनी साधारण वनस्पतीना जीवनी ॥

चउदलाख साधारण वनस्पति काय ॥

बे लाख योनी बे इंडीना जी बे लाख योनी त्रिइंडीना जी

वोनी ।

वोनी ॥

बेलाख बेरेडि । बेलाख तेरेडि ॥

बे लाख योनी चोरंडीना च्यार लाख योनी देवता स
जीवोनी । मस्त जीवोनी ॥

बेलाख चउरिडी । च्यारलाख देवता ॥

च्यार लाख योनी नारकी च्यार लाख योनी तिर्यच पं
ना जीवोनी । च इंडवाला जीवोनी ॥

च्यारलाख नारकी । च्यारलाख तिर्यच पंचेडी ॥

चउदलाख योनी मनुष्य जीवोनी एम समस्त बोखोनी ॥

चौदलाख मनुष्य एवंकारे ॥

चौरासि लाख जीवोनी योनीयो ते मांहे ॥

चौरासिलाख जीवायोनि मांही ॥

माहारा जीवथी पुर्वोक्त योनीयोना जीव प्रत्ये हण्यो होय
आपे ॥

माहारे जिवे जेकोइ जीव हण्योहोय ॥

हणाव्यो होय परपासे परहणताने अनुमोद्यो होय ॥

हणाव्यो होय हणता प्रत्ये अनुमोद्यो होय ॥

ते पाप समस्त प्रते मने करी ते प्रते मिष्ट्या वा फोक आ
वचने करी कायाए करि । उ ॥

ते सर्वे मन वचन कायाए करि । तस्स मिट्ठामि डक्कमं ॥

इति सातलाख समाप्तः ॥

॥ अथ अठार पापस्थानकः ॥

पेहेले, प्राणातिपात ॥ बीजे, मृषावाद ॥ त्रीजे, अदत्तादा
न ॥ चोथे, मैथुन ॥ पांचमे, परिग्रह ॥ षठे, क्रोध ॥ सात
मे, मांन ॥ आठमे, माया ॥ नवमे, लोभ ॥ दशमे, राग ॥
अगीआरमे, द्वेष ॥ बारमे, कलह ॥ तेरमे, अन्याख्यांन ॥
चौदमे, पैसूत्र ॥ पन्नरमे, रतिअरति ॥ सोलमे, परपरिवाद
॥ सत्तरमे, माया मृखावाद ॥ अठारमे, मिथ्यात्व सद्य ॥
ए अठारे पापस्थानक मांहि माहारे जिवे जे कांइ सेव्युं हो
य सेवराव्यु होय सेवतां प्रते अनुमोद्यु होय ते सर्वे मन व
चने कायाए करि तस्स सिद्धामि डुक्रमं ॥

॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथस्तुतिर्लिख्यते ॥

इच्छकार सुह राइ सुह देवसी ॥

सुख तप सरिर निराबाध ॥

सुख संयम यात्रा निरवहोगोजी स्वामी साताबेजी ॥

भात पांणिनो लाज देज्योजी ॥

॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथ कल्याणकंदं स्तुति लिख्यतेः ॥

कल्याण मंगलिकना कंद ठे एहवा पेहेला तिर्थंकर श्री कृ
ष्णदेव स्वामि ते प्रत्ये तथा वली ॥

कल्याण कंदं पढमं जिणंदं ॥

श्री शान्तिनाथ प्रत्ये तिमज नेमिनाथ मुनिना इंड ते प्रत्ये ॥

सतिं तव नेमिजीणं मुणिंदं ॥

श्री पार्श्वनाथ लोका लोकना प्रकाशक ज्ञानादिकगुणानो
दरीउ वा ठाम एहवा ते प्रत्ये ॥

पासं पयासं सुगणिक ठाणं ॥

श्री वर्द्धमान वीरस्वांमि प्रत्ये ए सर्वने न्निक्तिवने करिने वांडुवु।

भतिअ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥

डखे करि पार पांमिए जेहनो एहवो जे संसार रुप जे स
मुइ तेहना पार ठेना काठा प्रत्ये ॥

अप्पार संसार समुह पारं ॥

पाय्या एटले मोह प्रत्ये पांय्या ठे दिउ आपो ते सार मोह
प्रत्ये सद अनुष्ठाननु अठितिय फल ठे ॥

पत्ता शिव दितु मुइक सारं ॥

समस्त जिन इंड तिर्थकर देवताना समुहे वांयाठे पुज्याठे ॥

सवे जिणदा सुरविंद वंदा ॥

कड्यांणरुप जे वेलि तेहने विस्तिरण करवाने तुमे कंद
समान ठे तेहनु तो तमे मुल ठे ॥

कह्नाण वह्नीण विशाल कदा ॥२॥

मोह मारगने विपे प्रधान रथ तुह्य ॥

निवाण मग्गे वर जाए कप्पं ॥

अतिशय पणे करिने नाश करया ठे समस्त पाखंमीयोने
अहंकार जेणे ॥

पणासिया सेस कुवाइ दप्पं ॥

શ્રી જિનેશ્વરોનો મત જે આગમ શરણ એટલે આધાર જુત
હે પંક્તિને ॥

મયં જિણાણં સરણં બુહાણં ॥

એહવો તે પ્રતે નમસ્કાર કરુ બુ નિત્ય સદા તે કેહવો હે ત્રણ
જગતને વિષે પ્રધાનજુત હે ॥

નમામિ નિચ્ચં તિજગ પ્પહાણં ॥૩॥

મચકંદનુ ફુલ ચંડમા ગાયનુ હુધને હિમ એ ચારના જેવો
નજલો વર્ણ હે જેહનો ॥

કુદેંહ ગોસ્કીર તુસાર વન્ના ॥

કમલ હે હાથને વિષે જેહના વલિ કમલને વિષે બેઠિ થકિ
વા રહેલિ એહવિ ॥

સરોજ હઢા કમલે નિસન્ના ॥

વાગેસરિ નામા જે દેવી વલિ કહેવિ હે પુસ્તકનો વર્ગ સમો
હ હે જેહના હાથમાં ॥

વાહ સિરિ પુહયવગ્ગહઢા ॥

સુખને અરથે તે વાગેશ્વરિઃ કેઃ શ્રુત દેવિ અમને સદા પ્રસસ્ય હો ॥

સુહાય સા અમ્હ સયા પસઢા ॥૪॥

॥ ઇતિ પંચપરમેષ્ઠિ સ્તુતિ સમાપ્તઃ ॥

॥ અથ સંથારા પોરસી લિચ્ચતેઃ ॥

પાપ વ્યાપાર નિષેધીને ।

નમસ્કારહો ચમાશ્રમણ મા
હાત્મા પ્રતે ॥

નિસીહી ॥૩॥ નમો ચમાસમણાણં ॥

गौतमादिक मोटा मुनिश्वर नमो० नमस्कार हो अरिहंत
ने । प्रत्ये ॥

गोअमाईणं महा मुणीणं । नमो अरिहंताणं० ॥

॥ जंते जवान् ॥

करेमि जंते सामाइयं० वार० ॥ ३ ॥

आ देश दिठ वमा माहात्मा । आझा दिठ जे पोसाज मां
हि वमा गुरु ॥

अणुजाणह जिठिजा ठिजा । अणुजाणह परमगुरुं ॥
मोटा जे गुण ते रुपिया रत्ने सोजित सरीर वे जेदनु ॥
करी ।

गुरु गुणरयणेहि । मंनिअ सरीरा ॥

घणी प्रति पुरण थइ थोमि रात्रिना संथारा दिकने विपे
सी ठंणी पोरसी । ठाठं ॥

बहुपमिपुत्रा पोरसि । राइ संथारण ठामिं ॥१॥

अनुझादिठ मुजने संथारु ॥

अणुजाणह संथारं ॥

जुजाने जशीके करि नावे पासे सूवे वे ॥

बाहुवाहणेणं वामपासेण ॥

कुक्कनीनिपरे पग पसारिने । एम करिने जंचा लांवा पग

करु अंतरजुमि पुजु नपुंजी नकुं

तो सुइ जी पग पसारु अनुक्रमे

कुक्कुमि पाय पसारेण ।

पमजण जूमि ।

सकोची संमासा केण ॥

ने काय ।

ची सूत्र ।

लेहण करुं ॥

संकोइअ संमासा । उवटंतेअ काय पमिलेहा ॥

जाग्ये थके इव्यादिक ।४। नो एम जो निंझ ननुमे तो सा
उपयोग संनारुं । सो सास रुंधि पठें दीसा लो

क कीजें ॥

दवाइ उवजंगं ॥ ऊसास निरुंभणा लोए ॥३॥

जे वारे मुजने हुज्य होय प्र ते वारे आ काया प्रते एरात्रि
माद मरण । ने विषे तथा ॥

जइमे हुज पमाण । इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥

वली आहार ४। प्रकारे उप ते सर्व मन वचन कायाए
धि प्रमुख उपगरण ने शरिर । त्रिविधे वोसिरावुं ॥

आहार मुवहि देहं । सवं त्रिविहेण वोसरिअं ॥४॥

च्यार मंगलीक प्रते पमिवजु अरिहंत वारगुणे सहीत ते मं
ते कहे ठे । गलीक पेहेलु ।३॥

चत्तारि मंगलं । अरिहंता मंगलं ॥

सिद्ध आठ गुणे सहीत लोक साधु पंच महाव्रत धारी कं
माहि उत्तम तेहनु मंगली॥१॥ चन कामनीथी रहीत मोक्ष
पद साधे ते मंगलीक ।३। त्रीजु ॥

सिद्धा मंगलं । साहु मंगलं ॥

केवलि जगवंतनो परुपेलो जे सरधा विनय करुणा मई ध
र्म लोक मांहि ते मंगलीक ।४। च्यार ॥

केवली पन्नतो धम्मो मंगलं ॥५॥

च्यार लोकने विषे उत्तम ते अरिहंत लोक मांहि उत्तम ॥

कहीइ ठे ।

चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा ॥

सिद्ध लोकमांहि उत्तम । १ । साधु लोकमांहि उत्तम । ३ ॥

सिद्धा लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा ॥

केवलीनो परुप्पो धर्म लोकमांहि उत्तम । ४ ॥

केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमा ॥ ६ ॥

व्यार सरण पन्नि वजुं ते क अरिहंतनु सरण पन्नि वजु वा
हे ठे । आदरु ॥ १ ॥

चत्तारि सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि ॥

सिद्धु सरण पन्नि वजु । १ । साधूनु सरण पढी वजु । ३ ॥

सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहु सरणं पवज्जामि ॥

केवलीनो परुप्पो जे धर्म तेहनु सरण पढि वजुं । ४ ॥

केवलि पन्नतं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

जीवनु इणवु ते प्राणातीपा चोरि करवि ते अदत्ता दांन । ३
त ॥ १ ॥ जुवु बोलवु ते मृषा मैथुन स्त्री सेववि ते ॥ ४ ॥ इ
वाद ॥ २ ॥ व्यादिकनी मुर्खा ते परिअ
ह ॥ ५ ॥

पाणाइवाय मलिअं । चोरीक मेहुणं दविणं मुच्च ॥

क्रोध ॥ ६ ॥ मांन ॥ ७ ॥ माया लोअ ॥ ८ ॥ पीजं राग ॥ ९ ॥
॥ ५ ॥ तिमज द्वेप ॥ ११ ॥

कोहं माणं माया । लोअं पिजं तहा दोसं ॥ ७ ॥

कज्ज ॥ १२ ॥ अज्याख्यान चाडि करवि ॥ १४ ॥ अध-
भालदेअ ॥ १३ ॥ र्मनी करणिने विषे रति ते

શાતા અરતી તે અશાતા ॥

૧૫॥ તેણે સહિત ॥

કલહં અપ્રજ્ઞાણં । પેસુન્નં રદ્ધઅરદ્ધ સમાગતં ॥

અનેરાના દોષ બોલવા ॥૧૬॥ મૃજા તે જુઠ વે મલીને ॥૧૭॥

માયા તે કપટ બોલવું ॥૧૭॥ મિથ્યાતરુપ સાલ ॥૧૮॥ એ

અઢાર પાપસ્થાન પ્રતે ॥

પરપરિવાયમાયા । મોસં મિઠ્ઠત્તસહ્જંચ ॥ ૧૯ ॥

વોસિરાવું એ આદિ સર્વ તે કે મોક્ષ માર્ગ જાતાં વિઘ્નનાં કારણ છે ॥

વોસિરિસુ દ્ધમાદ્ધ । મુક્ક મગ્ગ સંસગ્ગ વિગ્ગજ્ઞુઆદ્ધ ॥

હર્ગતિ તે નરકાદીકના અનુ એ રિતે હુલના દેણ હાર એ અઢાર પાપસ્થાનક છે ॥

હુગ્ગદ્ધ નિવંધણાદ્ધ । અઠારસ પાવ ણણાદ્ધ ॥૨૦॥

હું એકલો તું માહારો કોઈ નથિ હું કોઈ વિજાનો ॥ નથિ ।

એગ્ગોહં નઢિ મે કોઈ । નાહ મનસ્સ કસ્સદ્ધ ॥

એ રિતે અદિણ વૈરાગ્યવંત મને । આત્માને માનું તું સાસ્વતો ॥

એવં અદ્દીણ મણસો । અપ્પાણ મણુ સાસણ ॥૨૧॥

એકલો માહારો સાસ્વ તો જ્ઞાન દર્શને કરિ ચારિત્રે સ આત્મા છે ॥

હિત સંયુક્ત છે ॥

એગ્ગોમે સાસઞ્ઞ અપ્પા । નાંણ દંસણ સંજૂઞ્ઞ ॥

સેસ સર્વ પદારથ માહારા સર્વ સંયોગ લક્ષણ જાણવા ॥

શ્રી બાહ્ય જુદા જાવે છે ।

सेसा मे बाहिरा जावा । सवे संयोग लखणा ॥१९॥

सजोग मुलअकि जिवे । पांमी ठे अनेक डखनि परं
परा प्रते ॥

संजोग मला जीवेण । पताडखपरंपरा ॥

ते कारण माटे सर्व संसार ते सर्व प्रते त्रिविध मन वच
संयोगना संबंध । न काये करि वोसरारु ॥

तह्या संजोग संबंधं । सवे त्रिविहेण वोसिरिअं ॥२३॥

अरिहंत माहा मोहोटा मा अने जाव जीवे नला साधु मु
हरे देव । नि माहरे गुरु ॥

अरिहंतो मह देवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥

जिन तिर्थकरनो परुपेलो ए रिते समकित प्रते में लिधु
जीव दया मूल ते माहरे ग्रहण कर्युं निश्चल मने क
धर्म । रिते इति ॥

जिण पनतं ततं । इअ सम्मतं मए गहिअं ॥२४॥

॥ इति श्री संथारा पोरसि सूत्रार्थ समाप्तः ॥

खमिअ खमाविअमइ खमिय सवह जीवनि काय ॥

सिधह साख आलोयणह मुज्जह वडरन भाव ॥२५॥

सवे जीवा कम्मवस चउदह राज्ज भमंत ॥

तमे सव खमाविआ मुज्जवि तेह खमंत ॥२६॥

जं जं मणेण वाक्खे जं जं वाएण भासिअं पावं ॥

जं जं कायेण कयं मिआमि डक्कं तरस ॥ २७ ॥

आसकलाईत्त चैत्यवंदनमां सर्व जिनने विपे जेनो वास

केहेवाय ठे ते श्री हिमाचार्य ठे हेवु ॥

जीएज्ये त्रेसठ सलाका चरी

त्रनी धुराये रच्यु ठे ।

अथ सकलार्हत् । सकलार्ह त्प्रतिष्ठान ॥

रहेवानु स्थान मोक्ष ल- अधो लोक त्रीढो लोक उर्ध्व
दमीनु । लोक तेहनु नायक हेवु ॥

मधिष्ठानं शिव श्रियः । नू भुवः स्वः स्रथीशान ॥

पुज्यपणाने प्रणाम वा नमस्कार वा वंदना करिये ठैये ॥

मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥

नाम रुषजादिते नाम निखे पवित्र करता एहवा त्रण्य
पो १ आकृती ते स्थापना लोकमां वासि प्राणीजनने ॥
नीखेपो २ इव्य ते तिर्थंकर

नाम नीकाव्या जे जीव ते इव्य निखेपो ३ नाव ते भाव नी
खेपो केवलज्ञानेसहीत समोसरणे बेठा ए च्यार ४ नीखे
पे करिने ॥

नामा कृति इव्य नावैः । पुनत स्त्रि जग ज्ञानं ॥

क्षेत्र जे पन्नर कर्म नूमिमां तिर्थंकरोने उपासीये ठैये वा
उत्सर्पिणि अवसरपिणिने वि सेवीये ठैये ॥

षे वलि समग्र हेवा ।

क्षेत्रे काले च सर्व स्मि । नर्हतः समुपास्महे ॥५॥

प्रथम हेवा राजा आ अवसर प्रथम हेवा आ अवसरपिणि
पिणिकालमां हेवा । कालमां मुनि हेवा ने ॥

आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं निःपरिग्रहम् ॥

प्रथम हेवा आ चोवीसीमां रुषज नामे स्वामिने स्तुति
चतुर्विध संघ तेदना नाथ हे करिये ठैये ॥
वा वलि ॥

आदिमं तीर्थ नाथं च । वृषज स्वामिनस्तुतुमः ॥३॥
पूज्यहेवा इव्य ज्ञाव शत्रूधी कमल समूह तेनो प्रकास क
न जिताय हेवा अजितनाथ रनार हेवो सूर्य तेना समान
जव्य जीव विश्व रूपि जे । हेवा ॥

अर्हंत मजितं विश्व । कमला कर चारकरं ॥
मले करी रहीत प्रकाशित तेदने विपे संक्रम्यु लोका
हेवु जे केवलज्ञान रूपि दर्प लोक वा त्रण्य चुवन जेमने
ए वा आइस्य । ते प्रते स्तुति करवु ॥

अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥४॥
जगतमां रह्या हेवा योग्य ते बनने विपे पाणीनी नीक
प्राणी गण ते रूप जे आराम समान हेवीयो जय करे
वा बाग वा वन । वे ते ॥

विश्व भव्य जना राम । कुल्या तुल्या जयंति ताः ॥
धर्मो पदेशना अवसरे वाणी ज्ञान अतीसय लक्ष्मी युक्त
यो जे ते । जे त्रीजा संजवनाथ नामा
जगतना स्वामि हेवा तेमनी ॥

देशना समये वाचः । श्रीसंभव जगत्पतेः ॥५॥
नधी एकांत इव हेवो अनेकां तेने ब्रह्म हेतु अपुरव चं
ते वा स्याद्वाद जे मत रूपि द्रमा समान ॥
समुद्र ।

अनेकांत मतां चोधि । समुह्नासन चंद्रमाः ॥

आपे नथी मंद एटले अमंद ज्ञानादी गुणे सहीत हेवा चो
वा घणा हर्षने । था अजीनंदन नामा जिन
जे ते ॥

दद्या दमंद मानंद ॥ जगवानजिनंदनः ॥६॥

देवना जे मुगट ते मुगटनां तेणे प्रकाशित चरण वा प
शिखरना जे अग्र । गना नखनी पंक्ति वा श्रेणी
ते जेनी हेवा ॥

द्युसत् किरीट शाणायो । तेजितांघ्रि नखावलिः ॥

समर्थ हेवा पांचमा सुमति विस्तारो वांछितने हे नव्य
नामे स्वामि जे ते । प्राणीनु तमारा ॥

जगवान् सुमति स्वामि । तनोत्व निमतानिवः ॥७॥

ठठा पद्म प्रज्ञ हेवे नामे जे कांतियो जे ते पुष्टि करो हे न
प्रभुना शरीरनी । व्यो तमारा कढ्यांणने ॥

पद्मप्रज्ञ प्रज्ञो देह । नासः पुष्पंतु वः शिवं ॥

अंतरंग वा अज्यंतर हेवा जे क्रोधना आवेशथीज जेम रा
राग द्वेष कामादी सत्रु तेम ति हेवियो ॥

ना मथन वा तेमना वलने
ध्वंसवाने विषे ॥

अंतरंगा रि मथने । कोपा टोपादि वारुणाः ॥८॥

ज्ञानादि लक्ष्मी सहीत हेवा वासव जे इंद्र तेमणे पुज्यां
जे सातमा सुपार्श्वनाथ सा ठे चरण कमल, जेमनां हेवा ॥
मान्य केवलिना इंद्र हेवा ॥

श्रीसुपार्थ जिनेंजाय । महेंद्र महितां ग्रये ॥

नमस्कार करुवु च्यार वर्ण आकाश तेनो आ जोग जे
वा जेदनो जे समूह वा संघ विस्तार तेने विपे प्रकाशक
साधु १ साध्वी २ श्रावक ३ हेवा ॥

श्राविका हेवा ॥

नम श्वतु वर्ण संघ । गगना जोग जारुवते ॥९॥

आठमा चंड प्रज्ञ नामा प्र किरणनो समूह ते सरखी
जुनी चंडना । उजली हेवी ॥

चंड प्रज्ञ प्रभो श्वंड । मरीचि निचयो ज्वला ॥

काया जे ते मुर्तिमान सुक निपजावी होय शुं लक्ष्मीने
लक्ष्याने करिने । अर्थे हो हं ज्ञव्य जीवो तमारी ॥

मूर्ति मुर्ति सित ध्यान । निर्मितेव श्रिये स्तु वः ॥१०॥

कर जे हाथनेविपे जे आं जाणता सता केवलज्ञान लक्ष्मी
बलु वा नीरमल जल ये करिने ॥

नि पेठे जगतने ॥

करामलकवद्विश्व । कलयन् केवल श्रिया ॥

विज्यारवाने अशक्य जे नवमा श्री सुविधिनाथ नामे
महात्म महिमा । धर्म प्राप्तिने अर्थे हो हे ज्ञव्य

जीवो तमारा ॥

अर्चित्य महात्म्य निधिः । सुविधि बौधये स्तुवः ॥११॥

प्राणियोने ठत्कृष्ट जे आनं तेज कंद वा मूल तेने प्रगट
द वा सुख । करवा नवामेघ सरखा ॥

सत्त्वानां परमानंद । कंदोद्भेद नवां बुदः ॥

अनेकांत वाद तेज अमृत दशमा श्री शीतल स्वामीजे
तेने स्तवेहेवा । ते रखोपु करो हे ज्ञव्यो तम
ने तीर्थकर हेवा ॥

स्पाघादा मृत निस्पंदी । शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥
संसार व्यागती भ्रमण रो रोग रहित करनार जे वैद्य ते
गे पीमायेला जीवोने । सरखु ठे दर्शन जेमनु ॥

जव रोगार्त जंतुना । मगदं कार दर्शनः ॥
जे मोक्ष तेनी लक्ष्मीना अंगीयारमा श्रेयांसनामा
स्वामी वा जर्त्ता हेवा ॥ कळयाणने अर्थे हो हे ज्ञव्य
जनो तमारा ॥

निःश्रेयस श्रीरमणः । श्रेयांसः श्रेयसे स्तु वः ॥ १३ ॥
जगतने उपकार रूप ठे । तीर्थकर नामने करे हेवु जे
नाम कर्म तेना निर्माण क
रनार हेवा ॥

विश्वो पकारकी जूत । तीर्थकृत कर्म निर्मितिः ॥

वैमानीक देवता जुवन पत्या बारमा श्री वासुपुज्य ना
दिक देव मनुष्ये पुजवा यो मा जेते हे ज्ञव्यो पवित्र क
ग्य हेवा । रो तमने ॥

सुरा सुर नरै पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥

तेरमा श्री विमलनाथजीनि कतक फल तेनु जे चुर्ण ते
वाणियो जे ते । ना समान हेवियो ॥

विमलस्वामिनो वाचः । कतक क्षौद सोदराः ॥

जय करे ठे त्रण जुवननां चि जे जल तेनु निर्मलपणु तेना

तरूपि । कारणरूपि हेवियो ॥
जयंति त्रिजगच्चेतो । जल नैर्मल्य हेतवः ॥ १५ ॥
स्वयंभू नामे ठेहलो समुद्र दया वा करुणानो रस ते रू
तेमां जे रमवु तेने ईच्छे हेवा । पि जले करिने ॥
स्वयंभू रमण स्पर्श । करुणा रस वारिणा ॥
चञ्चदमा जिन श्री अनंतनाथ जे आपो सुखनी लक्ष्मीने
ते नथी वीनाशी हेवी हे नव्यो ॥ १६ ॥
तमने ।

अनंतजि दनंतांवः । प्रयत्नतु मुख श्रियं ॥ १६ ॥
कल्प वृक्षना तुल्य ठे साथ वंछित वा अजिष्ट प्राप्ति वा
स्य हेवा ॥ पामवाने विषे प्राणियोने ॥
कल्पद्रुम सधर्माण । मिष्ट प्राप्तौ शरीरिणां ॥
चार प्रकार जे दान शील त पन्नरमा श्री धर्मनाथ स्वा
प जाव जेदे धर्मना उपदेश मिनि उपासना वा सेवा क
करनार हेवा । रिये ठैये ॥

चतुर्धा धर्म देष्टारं । धर्मनाथ मुपास्महे ॥ १७ ॥
अमृतना तुल्य हेवि वाणिरु ते वाणीए करिने निर्मल क
पि जे चंङ्कांति । स्यां ठे दिशानां मुख ते जे
णे हेवा ॥

सुधा सोदर वाग् ज्योत्स्नाः । निर्मलीकृत दिगमुखः ॥
इरिण लांठन हेवा अज्ञान सोलमा श्री शांतिनाथ हेवा
नी शांति वा समावाने अर्थे । केवलज्ञानी जे ते हे नव्यो
हो तमारा ॥

મૃગ લક્ષ્માતમઃશાંત્યૈ । શાંતિનાથ જિનો સ્તુ વઃ ॥ ૧૬ ॥
 કેવલજ્ઞાનાદી ગુણ લક્ષ્મીયે સહિત હેવા અતિશય ચોત્રી
 સહીત હેવા સતરમા શ્રી કું સની વિજ્ઞૂતિયે કરિને ॥
 યુનાથ પ્રજુ જે તે જગવાન્
 હેવા ।

શ્રી કુંથુનાથો જગવાન્ । સનાથો તિશયર્ધિનિઃ ॥
 વૈમાનીકદેવ જૂવનપતી આ એક સ્વામી હેવા હે જ્ઞવ્ય જી
 દીકદેવ મનુષ્ય તેમના જે વો તમારી લક્ષ્મીને અર્થેહો ॥
 નાથ ઇંડાદિક તેમના ।

સુરા સુર નૃ નાથાના । મેકનાથો સ્તુ વઃ શ્રિયે ॥ ૧૭ ॥
 અઢારમા અરનાથ નામા પ્રજુ ચોથા આરારુપ જે આકાશ
 જે તે વલી જગવાન્ વા જા તેને વિષે સૂર્યરુપ હેવા ॥
 ગ્યવાન્ હેવા ।

અરનાથ સ્તુ ભગવાં । શ્રુતુર્થા ર નમો રવિઃ ॥
 ચોથો અર્થ હેવો મોક્ષવર્ગ તે ક્રીમાને વિસ્તારો હે જ્ઞવ્યો ત
 પુરુષ્યાર્થ તેની જે લક્ષ્મીની । મારી ગાથા ॥ ૧૮ ॥

ચતુર્થ પુરુષાર્થ શ્રી । વિલાસ વિતનો તુ વઃ ॥ ૨૦ ॥
 વૈમાનીકદેવો જુવન પત્યાદી તેજ મોર તેમને નવા મેઘ
 કો મનુષ્યો તેમના જે અર્ધી સરખા ॥
 શ ઇંડ ચક્ર વ્યત્પાદિ ।

સુરા સુર નરા થીશ । મયુર નવવારિદં ॥
 કર્મજ્ઞાનાવરણી આદિ વ્રહ્મનુ મહ્ત્વ ઇરાવણ હેવા જંગલી
 ઝલેરુવુ તેને વિષે હાથીમાં । સમા શ્રી મલિનાથને સ્તુ

ति करिये ठैये ॥

कर्मज्जन्मुलने हस्ति । मद्धं मद्धि मन्निपूमः ॥ ७१ ॥

जगत्तना जनोनी मोटी हेवी तेने प्रजात कालना सरखा
मोहरूप निंझ जे । हेवा ॥

जगन् महा मोह निद्रा । प्रत्यूष समयोपमं ॥

वीसमा श्री मुनि सूत्रत नाथ धर्मोपदेश वचनने स्तुति
वा स्वामीनां । करिये ठैये ॥

मुनि सूत्रत नाथस्य । देशना वचन स्तुमः ॥ ७२ ॥

लागता वा पडतां हेवा प्रणा निर्मल करवाना कारणरूप
म करता जनना मस्तकने हेवा ॥

विषे ।

जुवतो नमतां मुग्धि । निर्मली कार कारण ॥

जलना प्रवाह ते जेम नमि रक्षणा करो पगना नखना
नाथना । किरणो तमने ॥

वारि प्लवा इव नमेः । पांतु पाद नखांशवः ॥ ७३ ॥

याव्वना कूलरूपी समूह वा कर्म ज्ञानावर्णिआदिरूप व
सागरने विषे चंझरूप हेवा । नने विषे अग्निरूप हेवा ॥

यद्यवंश समुद्रें छ । कर्म कद्ध हुताशन ॥

बावीसमा श्री अरिष्ट नेमि हो हेज्जव्यो तमारा उपड्व
जाग्यवान् वा ज्ञानादि गुण नो निवारक हेवा ॥

वान् हेवा ।

अरिष्टनेमि र्जगवान् । भूयादवोरिष्ट नाशनः ॥ ७४ ॥

कमठ तापस देवने विषे व ते बे हुए पोताने योग्य हेवु

ली धरणेंद्र नागराजने विषे कर्म वा कामने करता हेवा
च अपरं वा वली अर्थे । प्रथमे उपसर्ग कस्यो बीजे
निवारयो ॥

कमठे धरणेंद्रे च । स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥

ते वे उपर पशु जे तेमणे त्रेवीसमा श्री पार्श्वनाथ हे
समान वा तुल्य चित वृत्ति नव्यो लक्ष्मीने अर्थे होत
करी हेवा । मारी ॥

प्रभु स्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्श्वनाथ श्रिये स्तुवः ॥१५॥
कस्योठे अपराध जेणे हेवा जे द्याने कृपा सूचना करे
पण जन जे अधम संगम हेवी ठे ताराः केः किकियो
नामा देवने विषे । जेमनी तेहवां ॥

कृतापराधेपि जने । कृपा मंथर तारयोः ॥

कांश्च वा लगारेक जले करि चोविसमा श्री वीर जिननां
ने जिनां हेवां कळ्याण हो । नेत्रनु ॥

इषद्वाष्पा र्जयो भद्रं । श्रीविर जिन नेत्रयोः ॥१६॥

केवलज्ञानादिक लक्ष्मीवंत विश्वनाथ हेवा अतिशय ल
हेवा श्री वीरनाथने । क्ष्मी वाळा हेवा ॥

श्रीमते वीर नाथाय । सनाथाया झुत श्रिये ॥

मोहोटा आनंदरूप जे सरो हंसरूप हेवा पूज्य हेवाने न
वर तेमां राज । मस्कार ठे ॥

महा नंद सरो राज । मरालायार्हते नमः ॥१७॥

जय करो जितांठे विजानां तेज जेमणे हेवा ॥

जयति विजितान्य तेजाः ॥

वैमानीक देव जुवन वाशी देव तेमना पती वा इंडे सेवे
ला गुण लक्ष्मी वान् वा सोजायमान ॥

सुरा सुरा धीश सेवितः श्रीमान् ॥

निर्मल हेवा ज्ञये करी रहित हेवा ॥

विमल स्वास विरहित ॥

त्रण्य लोकना मुगटरूप पर्म बुकराइवांन् ठे वा ज्ञाग्यवा
न ठे ॥

स्त्रि जुवन चूमामणि जंगवान् ॥१७॥

श्री वीरस्वामी सर्व देव दानवना इंडे पूज्येला वीरस्वामिने
बुध केः पंक्ति आश्रया ठे ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिताः ॥

वीरस्वामीये पोताना कर्मनो समूह हण्यो ठे ते वीरस्वा
मि प्रते नित्य नमस्कार वा वंदना करुवु ॥

वीरेणा भिहृतः स्व कर्मनीचयो वीरायनित्यं नमः ॥

ते श्री वीरस्वामिणि आ प्रसिद्ध चतुर्विध संघ रूप तीर्थ प्रव
र्त्यु ठे ते वीरस्वामिनु उग्र तप ठे ॥

वीरा तीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपो ॥

ते वीरस्वामिने विषे लक्ष्मी धैर्य यश कातिनो समूह ठे हे
वा हे वीरस्वामी कळ्याणने आपो भव्य जीवोने ॥

वीरे श्री धृति कीर्ति कांति निचयः श्रीवीर जज्ञं
दिशः ॥ १८ ॥

पृथ्विना तलमा वा उपर प्राप्त थयां हेवां शाश्वत ते अकृत्री
म नें अशाश्वतते कृत्रीम हेवां ॥

अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां ॥
 वली सुंदर पातालमां रह्यां हेवां तथा जलां अंतरिक्षमां
 रह्यां हेवां ॥

वर भुवन गतानां दिव्य वैमानिकानां ॥
 इहां मनुष्यनां करेलां देवनां राजा जे इंडे पूजेलां हेवां ॥
 इह मनुज कृतानां देव राजार्चितानां ॥
 जिन राजनां जे देहरां वा जिन चुवन तेमने जावथी हुं
 नमु बु ॥

जिनवर भवनानां भावतो हं नमामि ॥ ३० ॥

॥ इति सकलार्हत समाप्तः ॥



॥ अथ नव समरण लिख्यतेः ॥

॥ अथ नवकार ॥

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं ॥

नमो आयरिआणं । नमो उवप्रायाणं ॥

नमो लोए सब साहुणं । एसो पंच नमुकारो ॥

सब पाव प्पणाससो । मंगलाणंच सबैसि ॥

पढमं बहइ मंगलं ॥ १ ॥

॥ इति नवकार समाप्तः ॥



॥ अथ उपसर्ग हर स्तवनः ॥

उवसग्ग हरं पासं । पासं वंदामि कम्म घण मुक्कं ॥

विसहर विस निन्नासं । मगल कल्लाण आवासं । १ ।
 विसहर फुलिग मंतं । कंठे धारेइ जो सया मणुअ ॥
 तरुस गह रोग मारी । उठ जरा जति उवसामं ॥ २ ॥
 चिठ्ठ उरे मंतो । तुअ पणामो वि बहु फलोहोइ ॥
 नर तिरिए सुवि जीवा । पावंति न उख दोगच्च ॥ ३ ॥
 तुह सम्मत्ते लद्धे । चितामणि कप्यपायव प्र हिए ॥
 पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाण ॥ ४ ॥
 इअ संघुअ महायस । भत्तिअर निअरेण हिअएण ॥
 ता देव दिऊ बोहि । भवे नवे पास जिण चद ॥ ५ ॥
 ॥ इति उपसर्ग हर स्तवन समाप्तः ॥

॥ अथ संतिकरं लिख्यतेः ॥

ए स्तोत्र केणे कीधु केम कीधु क्याखे कीधु तपागठे
 ॥ ५१ ॥ पाटे हजार बीधानी वादी खंरुन श्री मुनि सुंदरसू
 रिजीए श्रीरोइपती लाखारावना कहणायी योगणिकत् उप
 द्रव नीवारवा करूं ए गुरु सं० १४३६ जन्म्या । ४६। दिक्का
 जीधी १५०३ काति सूदी । १। स्वर्गे पधारथा ॥

॥ अथसंतिकर ॥

शांतिनो करणहार श्री शा जगना प्राणिने सरण जय ल
 तिनाथ सोलमो तिर्थकर । द्दमीनो दातार ॥
 संतिकरं सतिजिणं । जग सरण जयसिरी दायारां ।
 एहवा श्री शांतिनाथने स निर्वाणी देवी गरूरु नामे य

मरुं चक्रीवंतना पालण कृतेण्ये करिठे सेवा जेमनी॥
हार ।

समरामि भक्त पालण । निवाणी गरुड कय सेवं॥१॥

ऊँ ए मंत्र सहित नमस्कार पांम्या एहवा शांतिनाथ स्वा
हो वीषोषधि लब्धी । मीना पद कमल प्रत्ये ॥

ऊँस नमो विष्णोसहि । पत्ताणं संतिसामि पायाणं ॥

ऊँ स्वाहा ए मंत्र ठे देविनो वलि जे समस्त उपड्व अने
कहेलो मंत्र बिज सहित ठे पाप तेहनो हरण हार ठे ए
ते मंत्र केहवो ठे । वाने नमु ॥ २ ॥

ऊँ स्वाहा मंतेणं । सवा सिव डुरिअ हरणाणं ॥२॥

ऊँ ए मंत्रे करी श्री शांतिना श्लेष्मादि उष्यधी लब्धी पा
थना पद कमलने नमु ते के म्या ठे ते प्रत्ये ॥

हवा प्रकारना ठे ।

ऊँ संति नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं ॥

सौँ क्ली ए मंत्र ऊँक्ली सहित उषधी लब्धी प्रत्ये पांम्या
नमस्कार हो सर्व । सर्व उषधि ते नख दांत के

श रोमादि अंग अवयव ते

सर्व उषधि वलि दीयो लद्धमी प्रत्ये ॥

सौँ क्ली नमो सबो । सहि पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥

वाणी ते सरस्वती श्रुता धीष्ठाका त्रिभूवन स्वामिनी ॥

वाणी तिहुअण सामिणि ॥

लद्धमीदेवी यक्षराज ध्वादशांगी अधीष्ठाका ते माटे ग
णि पिटक नाम ॥

सिरिदेवी जकराय गणि पिमग्गा ॥

सूर्यादि ग्रह सोमादि दिशापाल सदाय रक्षा करो जिन न
देवताना इंद्र सूधर्मादिते सर्व ॥ कने ॥ ४ ॥

गह दिसी पाल सुरिंदा । सयावि रक्कंतु जिणजते । ४ ॥
रक्षा करि तुं मुजने रोहिणिदेवी मम ए उपलक्षणथि वि
जानु पण जाणवु ॥

रक्कंतु मम रोहिणि १ ॥

प्रज्ञप्तीदेवी वज्रगृंखलादेवी सदाय ॥

पन्नत्ती ९ वज्रसिखलाय ३ सया ॥

वज्रांकुशीदेवी चक्रेश्वरीदेवी ॥

वज्रकुसि ४ चक्रसरि ५ ॥

नरदत्तादेवी कालिकादेवी माहाकालीदेवी ॥

नरदत्ता ६ कालि ७ महाकाली ७ ॥ ५ ॥

गौरीदेवी तिमज गंधारीदेवी ॥

गौरी ८ तह गंधारी १० ॥

महाज्वाला देवी मानवी देवी वैरुद्धा देवी ॥

महजाला ११ माणवी १२ वहरुद्धा १३ ॥

अद्रुप्तादेवी मानसी देवी ॥

अद्रुप्ता १४ माणसि १५ ॥

माहामानसी ए सोलनां नाम देवी ३ ॥

महामाणसि १६ देवी ३ ॥ ६ ॥

देवे चोविस तिर्थकरना यद्दनां नाम गोमुख यद्द महायद्द ॥

जक्का गोमुह १ महजग्क ९ ॥

त्रिमुखयक्ष यक्षेसयक्ष तुवरुयक्ष कुसुमयक्ष ॥

तिमुह३ जक्केसु४ तुंवरु७ कुसुमो६ ॥

मातंगयक्ष विजययक्ष अजितयक्ष ॥

मायंग७ विजय८ अजिआए ॥

ब्रह्मायक्ष मनुजयक्ष सूरकुमारयक्ष ॥

वंभो१० मणुए११ सुरकुमारो१२ ॥७॥

षण्मुखयक्ष पातालयक्ष किनरयक्ष ॥

ठमुह१३ पायाल१४ किंनर१५ ॥

गुरुनयक्ष गंधर्वयक्ष तिमज यक्षेंड्यक्ष ॥

गरुमो१६ गंधव१७ तहय जक्किंदो१८ ॥

कुवेरयक्ष वरुणयक्ष अकुटीयक्ष ॥

कुवर१९ वरुणो२० जिन्नमी२१ ॥

गोमेदयक्ष पार्श्वो वा वासनयक्ष मातंगयक्ष ए चोविस य
क्ष कक्षा ॥

गोमेहो२२ पास२३ मायंगा२४ ॥ ८ ॥

हवे सासन रक्षक देवीयो कहे ठे चक्रेश्वरी देवी ॥

देवीन चुक्केसरि१ ॥

अजितादेवी डुरीतारीकादेवी कालीकादेवी माहाकालीकादेवी.

अजिआए डुरिआरि३ कालि४ महाकाली ५ ॥

अच्युतादेवी शांतादेवी ज्वाला वा अकुटी ॥

अच्चुअ६ संता७ जाला८ ॥

सूतारादेवी अशोकादेवि श्री वशादेवी ॥

सुत्तारयाए सोय१० सिखिवा११ ॥ ९ ॥

चंदादेवि विजयादेवि अंकुसिदेवि ॥

चंमा११ विज१३ यंकुसि१४ ॥

प्रज्ञप्तीदेवि निर्वाणीदेवि अच्युतादेवि धारेणीदेवि ॥

पन्नइति१५ निवाणि१६ अञ्जुआ१७ धरणी१८ ॥

वैरोद्यादेवि अतुप्ता वा नरदत्तादेवी गांधारीदेवी ॥

वइरुह१९ दत्त१० गंधारी११ ॥

अंबीकादेवि पद्मावतिदेवि सिद्धाकादेवी ॥

अंब११ पद्माव१३ सिद्धा१४ ॥ १० ॥

ए तिर्थ जे चतुरबीध संघनी वीजा पण देव ते देवता त
रक्षा करवाने रक्त । था माणिनद्र यक्ष क्षेत्रपाल

वावनविर प्रमुख सर्व जाण

वा देवीउ ते नइकालि प्रमुख चतुप्यष्टि ॥६४॥ संख्या जां

णवि सर्व च्यार प्रकारना ॥

इअ तिष्ठ रक्कण रया । अन्नेविसुरा सुरीउ चउहावि॥

व्यंतर, जोगणि योतपी प्रमु करो रक्षा वा सानीध्य सदा
ख । निरंतर अम्हने समरण कर

नार पुरुष प्रते ॥

वंतर जोइणि पमुहा । कुणंतु रक्कं सया अम्हं ॥११॥

एणे प्रकारे सम्यक् दृष्टि स सहीत श्री शांतिनाथ सामा
हीत देव समुह । न्य केवलि जिनने विपे चंद्र

समान संघनि ॥

एवं सुदिठि सुरगणासहिउ संघस्स सति जिण चंदो॥

त्रिस पंच्योत्तर एटला जिनवरेंद्र ॥

तीसा३० पन्नत्तरी७५ जिणवरिंदा ॥

सूर्यादि ग्रह जूत राक्षस शा विहामणो जे उपसर्ग तेने
किनी इत्यादिकनो । नाश पमामे ॥

ए विजी पंक्ति एहवा एकसो सिसेर जे जिन ते ॥
गह जूय रक्क साइणि । घोरु वसग्गं पणासंतु ॥३॥
सित्तेर पांत्रिस निश्चे ॥

सित्तरि७० पणतीसा३५ विय ॥

साठ पांच ए जिण समुदाय तेज ॥

सठी६० पंचेव५ जिण गणो एसो ॥

व्याधि जल अग्नि सिंहादिक डुष्ट गज ॥

वाहि जल जलण हरि करि ॥

चोर जय वयरिना इत्यादिक मोटा जय समावे तेहना ना
स करणहार ए त्रिजी पंक्ति ॥

चोरा रि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥

पंचावन्न दश जाणवा ॥

पणपन्नाय५५ दसेवय२० ॥

पांसठ तिमज निश्चे चालिस एहवा एकसो सित्तेर जिन ते ॥

पन्नठी६५ तहय चेव चालीसा४० ॥

ए पुर्वोक्त जयथी मुज शरि वैमानिकदेव जुवनपति व्यं
रने राखो । तरादि तेणे पुजित वा प्रण

म्याठे एहवा सिद्ध ए चोथी पंक्ति ॥

रक्कंतु में सरिं । देवा सुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥

मंगलिक विज पद्मा जया वि त्रिजी पंक्ति मधे लखवा ते
जया अपराजिता प्रथम पं म निश्चे चोथी पंक्तिमां लख
क्ति मधे लखवा विजी पंक्ति वा ॥
मधे लखवा ॥

ॐ ह र हुं हः सरसुंसः । हरहुं हः तह चेव सरसुंसः ॥
समस्त लिखी ए मधे नाम ए यंत्र सर्वत्र मंगलिक पदा
गर्जीत । र्थनु प्रणहार ॥

आ लिहिय नाम गप्रं । चक्रं किर सबडं भद्रं ॥६॥
मंगलीक अर्थ सोल विद्यादेवि नाम रोहिणीदेवि प्रज्ञासिदेवि ।
ॐ रोहिणी १ पन्नती २ वज्र ॥

वज्रश्रंखलादेवि तिमज वज्रा कुशादेवि ॥
श्रंखला ३ तहय वज्रअंकुसिआ ४ ॥

चक्रेश्वरी देवी नरदत्तादेवी ॥
चक्रे ५ सरी नरदत्ता ॥
कालिदेवि महाकालिदेवि तिमज गौरिदेवि ॥ ७ ॥
कालि ७ महाकालि ८ तह गोरीए ॥ ७ ॥
गंधारिदेवि महाज्वालादेवि ॥

गंधारि १० महाज्वाला ११ ॥
मानविदेवि वशरुआदेवि तिमज अबुतादेवि ॥
माणवी १२ वशरुट १३ तहय अबुता १४ ॥
मानसिदेवि महामानसिदेवि ॥
माणसि १५ महामाणसिआ १६ ॥
ए सघली विद्यादेवि रक्षा करो ॥ ८ ॥

विद्या देवीन रस्कंतु ॥ ८ ॥

पांच ज्ञरत पांच ऐरव्रत पांच उपन्या एहवा एकसो सितेर
विदेह ए पन्नर कर्म जूमिने तिर्यंकर ॥
विषे ॥

पंचदस कम्म भुमीसु । उपन्नं सितरि जिणाण सयं॥
विविध प्रकारना रत्तादिक स सोन्नित एहवां, डुर करो से
मान वर्णे करि । वकनां माठां पाप प्रत्ये ते
जिन वलि केहवाठे ॥

विविह रयणाइ वन्नो । विसोहिअ हरउ डुरियाइ ॥ ए
चोत्रीस अतिसये करी सहि असोक ब्रह्मादीक आठ महा
त । प्राती हारये करी करिठे सो
जा जेहनी एहवा ॥

चउतीस अइसयजूआ । अठमहा पामिहेर कय सोहा॥
संघ वा द्वादशांगी प्रथम तेमने सूध्याने पदस्थादीके
गणधररूप तिर्यंका करता ध्यायवा प्रयत्ने करिने ॥
गयो ठे मोह ते जेहनो ।

तिठथरा गय मोहा । जाएयवा पयत्तेणं ॥ १० ॥
जँ शब्द सिध जाणवो अथवा अतित परमात्मा जाणवा
हवे तिर्यंकरनां वर्ण पांच कहे ठे भला सोनावर्णे जला सं
खवर्णे वा उजलवर्णे जला परवाला समान रातेवर्णे ॥

जँवर कणय संख विहुम ॥

निला रत्नवर्णे मेघ समान सांमवर्णे सइस्य वांन ठे देहनु
मोह गयो ठे जेहनो ॥

मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥

एहवा एकसो सितेर जिने ज्यारेनी कायाना ठेवें पुजी
श्वर केहवा ठे । तवे हुं पण वांडुं सुष्टु ते
स्वाहा इंद्रादिके ॥११॥

सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥१२॥
पंच प्रमेष्टी पढ जुवन पति ज्योतिषिमां वसनार देवता
ना देवता व्यंतरना देवता । सूधर्मादि विमानमां वसना
र देवता ॥

उंचुवणवइ वाण मंतरा जोइस वासी विमाण वासीय ॥
जे कोइ डुष्ट मिश्यात्वि जि ते समस्त उपसमावो शां
नशासनना छेपि उपइव क ति करो मुज प्रते स्वाहा ते
रता जे देव । मंत्र पद ठे ॥

जे केइ डुष्ट देवा । ते सवे ऊवसमंतु मम स्वाहा ॥१५॥
सूखने केसरे वरासे सहीत । पाटीआदिक उपरें लीखिने
पखाळकरी पीजीए ॥

चंदन कप्पूरेणं । फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥
एकांतरायादी ज्वर डुष्ट ग्रह शाकिनी प्रमुखना जे उपइ
जुत । व ते सघला सीघ्र नासे ॥

एगंतराइ गह भूअ । साइणि मुग्गं पणासेइ ॥१३॥
एहवो सीतरसो यंत्र । सम्यक् प्रकारे जलो मंत्र घ
रना ध्वारादिके गुन स्थान
के लीखिए ॥

इय सत्तरिसयं जतं । सम्मंमंतं डवारिपमिलिहिअं ॥

माठा पाप कष्ट तथा वैरी प्र निर्जयपणे दिन प्रत्ये अरची
मुख सर्व वश प्रते पांमे ते ये ध्याइए सर्व कार्य सीजें॥
नो नपाय

डरिआरि विजयज्जंतं । निप्रतं निच्च मच्चेह ॥१४॥

॥ इति तिजय पढुत्त स्तवन ॥

॥ अथस्तुतिर्लिख्यते ॥

अथ नमिउण स्तव श्री मानतुंग सूरिजी वीसमापाट प्र
चावक नक्तामर स्तवना करता ए करूं ठे ॥

नमिने नमता जे देवना गण वा समुह ॥

नमिउण पणथ सुर गण ॥

तेहना मुगटनि जे मणी तेहना जे कीरण तेणे रंगिउ एह
बु श्री पार्श्वनाथनु ॥

चुमामणी किरण रंजिअं मुणिणो ॥

चरणनु युगल जोम्लु मोटा नसामण हार एवु स्तवन क
नय प्रते । हीश ॥ १ ॥

चलणं जुअलं महाभय । पणासणं संथवं वुद्धं ॥२॥

सन्ति हाथ पग नख मुख ॥

समिअ कर चरण नह मुह ॥

वेसिगइ नासिका गयु ठे लावण्य जेहनु ॥

निव्वुम नासा विवन्न लायन्ना ॥

कोढ मोटा रोग रूप अग्नी । तेनी जे पिमा ते रूप तणखा

तेणें करी बली गयां ठे सर्व

अंग ते जेहनां एहवा ते तथा ॥२॥

कुठ महारोगा नल । फुलिग निद्वद्ध सवंगा ॥२॥

जे प्राणी श्री पार्श्वनाथजीना चरणानु आराधन रुप ॥

जे तुह चलणा राहण ।

पाणी तेहनी जे अंजली तेह सींचवे करी ब्रधी पाम्यो ठे
उठाह जेहनो ॥

सलिलं जलि सेयं वुद्धि उठाहा ॥

वननो जे दावानल तेणे बळ्या ते पाम्यां वली सोजा प्रति
जे परवतना वृक्ष । तेणि पेरं वधतो उठाह ॥३॥

वण दव दह गिरि पायवव । पत्ता पुणो लठि ॥३॥

माठा जे वायरा तेणे करी उद नट कल्लोल तेणे बीहा
खोभ्यो जे समुद्र केहवा प्र मणा शब्द ठे जेहना ॥

कारनो ॥

डुवाय खुभिअ जलनिहि।उप्रम कल्लोल भीसणा रावे ॥

ससंग्रंत जये करी विसंस्थ वाहाणना चलावनारा तेम
ल विव्हल एहवा । णे वाहाण चलाववानो मु

क्यो ठे व्यापार जीहा एहवा

प्रकारना समुद्रे ॥ ४ ॥

संनंत जय विसंगुल । निज्जामय मुक्क वावारे ॥४॥

तेणे करी ज्ञाग्या ठे वाहाण जेहनां एहवा ॥

अवि दलिअ जाणवुता ॥

तेपण घनिना उठा ज्ञागे पामे वाठित तट प्रते ॥

खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥

હે શ્રી પાર્શ્વજિન તુમારા ચરણ વે પ્રતે ॥

પાસજિણ ચલણ જુઝ્ઝલં ॥

સદૈવ જે પુરુષ નમે પ્રણમે ત્રીવિધે તે ॥ ૫ ॥

નિઞ્ચં ચિઞ્ચ જે નમંતિ નરા ॥ ૫ ॥

પ્રચંરુ વાયરો તેણે ઝમામીઝ વનનો દાવાનલ તેહની ॥

ઝર પવણુ ધુઞ્ચ વણ દવ ॥

જ્વાલાની શ્રેણી મલી સમસ્ત વનના વ્રક્ષ તેહના ગહન છે
જિહાં તથા ॥

જાલા વલિમિલિઞ્ચ સયલ હમ ગહણે ॥

વલતી જે મુગ્ધ વા જોલી જે વિહામણા જે શબ્દ તેણે વિ
મૃગની જે સ્ત્રી મૃગલી તેહના । હામણુ વન જિહાં એહવુ જે
વન તેને વિપે પણ ॥

મપ્રંત મુદ્ધમય વહુ । જીસણ રવ જીસણમિ વણે ॥ ૬ ॥

જે જગગુરુ શ્રી પાર્શ્વનાથના પદ યુગલ ॥

જગ ગુરુણો કમ જુઝ્ઝલં ॥

સંતોષિઝ સઘલું એ ત્રણ્ય જૂવન વીસ્તાર છે જેણે આ જોગે
જરંતિ પુર્યંતિ પુરે ॥

નિવાવિઞ્ચ સયલ તિહુઞ્ચણા ભોઞ્ચં ॥

જે સંજારે મનુષ્ય જે તે પ્રતે । ન કરે અગ્નિ જયે તેને એહવુ
પદ યુગલ ॥ ૭ ॥

જે સંભરંતિ મણુઞ્ચા । નકુણ્દ જલણો જયં તેસિં । ૭ ।

ઝલસંત દીપતા જે જોગ શરીર રુદ્ધ વિહામણુ ॥

વિલસંત જોગ જીસણ ॥

जे दीपतां रातां नेत्र ठे जेहना अतिचपल ठे जीन जेहनि
एहवो ॥

फुरिआ रुप नयण तरल जीहालं ॥

जयंकर सर्प अपाढो मेघ । समान बिहामणी आकृती ठे
जेहनी वा आचार ठे जेहनो ॥

उगग भुअंगं नव जलय । सन्नहं जीसणा यारं ॥७॥

तेवा सर्पने माने कीमा वेगलो समस्त टाले आकरो
समान तेह प्रते । विपनो वेग ॥

मन्नंति कीम सरिसं । डर परितुढ विसम विस वेगा ॥

हे श्री पार्श्वनाथ तुमारु जे मंत्र गारुमादिक थकी मोहो
नाम तेना जे अकर प्रगट टा नर लोक मांहि तेह नाम
सिद्ध ठे । ना प्रजावे ॥

तुह नाम स्कर फुम सिद्ध मंत गरुआ नराजोए ॥८॥

अटवी मांहि जील पल्लीवा वनचर बाघ तेना जे सब्द न
सी तस्कर चोरव्रतीक ॥ यकरने विपे ॥

अमवीसु निह्ल तकर । पुलिंद सडल सद भीमासु ॥

नये करि बिखवादवत धीष्ट लुब्धा रस्तागीर साथ एहवा
पुरुष तेथी कायर । प्रकारनि अटविने विपे ॥

भय विहुर वुन कायर । उल्लूरिअ पहिअ सचासु ॥९॥

हे नाथ श्री पार्श्वप्रजो न लुब्धो धन सार तोहे पण ॥

अविलुत्त विहव सारा ॥

तुजने हे नाथ हे स्वामी नमस्कार मात्र व्यापार ते अवस
रे करे तेहने ॥

तुह नाह पणाम मुक्क बावारा ॥

विपेश डुर गया जाय अंतरा पामे केण्हदयने विपे वांठीत
य सीघ्र उतावला । स्थानक प्रते ॥

ववगय विध्या सिध्दं । पत्ताहिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥

बलो जे अग्नि तेहवा रातां वेगलुं वीदारुं ठे मुख जेहनु
लोचन ठे जेहनां एहवो । मोटु शरिर ठे जेहनु एहवा ॥

पङ्कलिआ नल नयणं । डुरवियारिय मुहं महा कायं ॥

नखरुप वज्र तेहनो घात प्रहार तेणे विदारां एहवां ॥

नह कुलिस घाय विअलिअ ॥

मोटा हाथीनां जे कुंज स्थल मस्तक जाग ते विस्तारने
पाम्या ठे जेहनाथि एहवो सिंह ॥

गइंद कुंभल्ला ज्ञेयं ॥ १२ ॥

नमता ससंज्ञांत पणे राजा ॥

पणय ससंभम पडिव ॥

तेहना जे नख तेना जे मणीरत्न माणिक तेने विषे पड्या
प्रतिबींब ठे जेहेने ॥

नह मणि माणिक पणिय पणिमस्स ॥

ताहरा वचनरुप प्रहरण के सिंह वा पंचानन रुगे थको
हथियार धरनार पुरुष ॥ तो पण न गणे कीसो ज्ञेय

एटले पुर्वोक्त सिंहनो ज्ञेय नगणे ॥

तुह वयण पहरण धरा । सीहं कुधंपि नगणंति ॥ १३ ॥

चंडनिपेरे धोला दंत रुप मु लांबी सुंढनो जे उगालो तेणे
शज ठे जेहना । वधतो उग्राह पामेलो एहवो ॥

ससि धवल दंत मुसलादीह करु ह्नाल वुट्टि वुछाहं ॥

मधुनीपेरे पीलां नेत्र ठे वा आंखयो वे ठे जेहने एहवो ॥

महु पिग नयण जूअलं ॥

सहीत पाणिए नवो अपाढा मेघनिपेरे गरजा रव शब्द ठे
जेहनो एहवो ॥

स सलिल नव जलहरा रावं ॥१४॥

नयंकर मोटो जे हाथी प्रते । अतिगय हुंक्रमो पिण ते पु
रुप्य नगणे जय प्रते कोण
ते कहे ठे ॥

भीमं महा गइंदं । अच्चा सन्नंपित्ते नविंगणंति ॥

जे तुह्य केण हे श्री पार्श्वनाथ हे मुनीपती हे श्री पार्श्वना
तुमारा पद जुगल प्रते । थ गुणे उत्तम हेवा जे तमारा
चरणो आश्रा ठे जेणे ते
पुरुष ॥ १५ ॥

जे तुह्य चलण जुअलं । मुणिवइ तुगं सम ह्नीणा १५
संग्रामने विषे तीखां खड्ग ते प्रहार तेणे भेरा उठलां मस्त
हना जे । क पर्मांठे यत्र मस्तक वीना
धरु ठे जीहां नाचवा प्रवर्त्यां ॥

समरंमि तिस्क खग्गा । भिघाय पविष्य उहूय कवधे ॥
जाला तेणे वीशेपे वीदारी तेणे मुकी एहवी चीस वा
त हाथीनां बालक । शब्द उत्कष्ट प्रचुर ॥

कुंत विणिभिन्न करि कलह । मुक्क सिकार पउरंमि १६ ।
जीत्यो अहंकारवंत वैरी ॥

निष्पिय दपुधर रिउ ॥

राजा तेहनो समोह जेणे एहवा सून्नट जस कीरती नजल
ते प्रते ॥

नरिंद निवहा भडा जसं धवलं ॥

पांमे साठा कर्मनो उपसम हे श्री पार्श्वनाथ तुमारा म
प्रते । हीमाए करी ॥ १७ ॥

पावंति पाव पसमिण । पासजिण तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥
रोग कोढादी पांणी अगनी सर्प ॥

रोग जल जलण विसहर ॥

तस्कर वयरी मृगेंड सिंह हाथी संग्राम एहवा जे जय तेह ॥

चौरा रि मइंद गय रण जयाइं ॥

श्री पार्श्वजिननु जे नाम स पुर्वोक्त समस्त जये ते उप
म्यक् स्तव वें करी उच्चारण समे जाय ॥ १८ ॥
करवें करी ।

पासजिण नाम संकित्तेणं । पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥

एम मोटा जयनो हरनार । श्री पार्श्वनाथजीनु स्तवन
उदार वा प्रधान ॥

एवं महानय हरं । पासजिणिंदस्स संथव मुआरं ॥

मुक्ति जवाने जोग जीवने ह कळ्याणनी श्रेणी तेहनु
खनु करण हार । स्थानक ॥ १९ ॥

भविय जणा णंद यरं । कळ्हाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥

राजानो जय जह्नुनो राक्षसनो ॥

राय भय जक रकस ॥

मातु स्वप्न दुस्वप्न राग द्वेष जन्य माता सकुन नक्षत्र ते
नी जे पीमा तेने विषे वा ते थकी ॥

कुसुमिण दुस्सडण रिक्क पिमासु ॥

प्रज्ञाते सांजे एवे संध्या पद देव मनुष्ये कीधा उपसर्गों
ठे तेने विषे मार्गने विषे । तिमज रात्रीने विषे ॥१७॥

संजासु दोसु पंथे । उवसर्गगे तहय रयणीसु ॥२०॥

जे जीव ए स्तवन न्ने जे ते भयहर कवीश्वर स्तुतीक
जीव वली सान्ने तेने । रता श्री मानतुंगसूरि तेहने ॥

जो पढइ जोअ निसुणइ । ताणं कइणोय माणतुंगस्स ॥

श्री पार्श्वनाथ ने पार्श्व नामे समस्त अत्र जुवन शब्द र
यक्क पाप प्रते उपसमावे । हेला लोक जाणवा पुजीत
पग ठे जेहना ॥ ११ ॥

पासो पाव पसमेउ । सयल जूवणच्चिय चलणो ॥२१॥

वली श्री पार्श्वनाथ केहवाठे तोहे पण ध्यान थकी न च
उपसर्ग कस्यो कमठ नामा व्यायः जगवान् वलि ध्यान
असुर तपासनो जिव तेणे । माथी नक्षोन्नाणा वली केह
वा ॥

उवसर्गगंते कमठा सुरमिजाणाउ जोनसंचलिउ ॥

सुरनी नैरंडनि किनरनीयुव सम्यक् मन वचन कायाए
ति जे स्त्री तेमणे एटले देवा त्रीधा सुधिए स्तवना करि गु
झादिके । ए समस्त वर्णव्या जेहना ए

हवा जयवंता सर्वोत्कृष्टपणे वर्तो कोण ते
श्री पार्श्वजिन तेविसमा तिर्थकर थया ते ॥ १२ ॥

सया अजिअ संतीणं ॥

नमस्कार हो रागादी सत्रुने न गणीत ते माटे अजित शांति ते उपसम रूप ते वे ॥ ३ ॥ श्लोक नामा वंद ॥

नमो अजिअ संतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥

हे श्री अजितजिन सुखनो करणहार ॥

अजिअ जिण सुह प्पवत्तणं ॥

तुमारु हे पुरुष मांहि उत्तम नाम कीर्तन ठे ॥

तव पुरिसु तम नाम कित्तणं ॥

तिमज धीर्य बुद्धीना करणहार ॥

तहय धिई मइ प्पवत्तणं ॥

हे श्री शांतिनाथ हे जिनमांही उत्तम हे शांति कीर्तन नामा ए प्रकारे सामर्थ्य गम्य मिति प्रधान तुमारां नाम ॥४॥ माघधीका नामे वंद ॥

तवय जिणु तम संति कित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥

कायकादि पचीश क्रीया तेणे करी मेलवां जे कर्म कलेश थकी मुकावे एटले तेहनाथि रहित ॥

किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्कयरं ।

अजितनाथ तीर्थंकर गुण समोहे करी वली माहामुनी सिद्धि अणिमादिक पांम्या ॥

अजिअं निचिअं च गुणेंहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥

अजितनाथ तथा शांतिनाथ एवे तीर्थंकरने मोटा मुनीस्वर कहिए त्रिकाल वस्तुने जाणे माटे केहवा ठे ते शांतिना करणहार ठे ॥

अजिअस्स य संति महामुणिणोवि असंतिकरं ।

सदा मुजने मोक्ष सुखनु प्रशस्त कारण जुत ठे नमस्कार
वंदन पुजा प्रमुख थान ॥५॥ आलीगनक नामा ठद ठे ॥

सययंमम निवुइ कारण यंच नमसणयं५आलिंणयं॥

अहो पुरुषो जो दुख टालवा जो वली मारग सुखनु का
वांगता होतो । रण वाढो तो ॥

पुरिसा जइ दुख वारणं। जइअविमग्गह सुख कारणं ॥

श्री अजितनाथजी तथा शान्तिनाथजीनु नाव थकी ॥

अजिअं संतिंच भावन् ॥

अजयना करणहार ते जिननु सरण आदरो ॥ ६ ॥ माग
धीका नामे ठद ॥

अजय करे सरण पवऊहा ६ मागहिआ ॥

पूर्वे वे तीर्थकर स्तवी हवे प्रते के जिनस्तवे ठे अशाता शाता
मिथ्यात अज्ञान ते रुप अंधकारे करी रहित गयु ठे जरा ते
ब्रध अयस्ता मरण ते प्राण रहीतपणु ते जेनु वलि केहवाढे ॥

अरई रइ तिमिर त्रिरहिअ मुवरय जर मरणं ॥

वैमानोकदेव जुवनपतिदेव ज्योतिषिदेव व्यंतरदेव वइ के
ते देवना इइ तेणे प्रणम्या ठे जेहना पाय ॥

सुर असुर गुरुल जुअगवइ पयय पणिवईअं ॥

एहवो ते अजितनाथने हुं पण स्तवुठु केवाढे ते नईगमादी
नय नले प्रकारे परुप्पा ठे जेणे आलोकादी सात जय ते
थकी रहीत अजय करे ठे ॥

अजिअ महमविअ सुनयनय निऊण मज्जयकर ॥

जेहनु सरण कीधुठे मनुष देवताये पुष्पादिके पुजीत ठे स
ततं सर्व काल उपसमिपे हुं नमस्कार करुवु ॥ ७ ॥ संगत
क नामा ठंद ॥

सरण मुवसरिअ जुविदिविज महिअं ।

सययं मुवणमैं ॥ ७ ॥ संगययं ॥

ते जगवंत वली सामान्य केवलीमां प्रधान अज्ञाने करी र
हीत साहासीक धरु ठे जेणे ॥

तं च जिणुत्तम मुत्तमनित्तम सत्त धरं ॥

मायात्याग मानत्याग क्रोधत्याग लोभत्याग तिम वलि स
माधिध्यांन ए समस्त गुणनो नीधान ठे ॥

अज्जव मद्व खंति विमुत्ती समाहि निहिं ॥

विघ्ननो अजाव करणहार वांडु पांचे इंद्री दमी एहवा
उत्तम तीर्थंकर शांतिनाथने ॥

संति करं पणमामि दमुत्तम तिठयरं ॥

निरवीधन जांणे जे त्रीकाल अवस्था ते सुनी सुजने शां
ति संतोष रूप समाधिवर आपो ॥८॥ सोयानक नामाठंद ॥

संति मुणि मम संति समाहि वरं दिसनं सोवाणयं ॥

सावथी केतां अयोध्यानग्री तेमां प्रथम राजा वर प्रधा
न हस्तीना मस्तक समान वीस्तारवंत आकार जेहना सं
स्थीत नीश्वंद सरीखो हैयो ठे जेहनो एहवो ॥

सावठि पुवपठिवं च वर हठि भठयं ॥

पसठ विठ्ठिन संथिअं थिर सरिठ वठं ॥

मद ऊरतो लीलाए चालतो वर प्रधान गंधहस्ती तेहनी प

रे चाल्य ठे जेहनी बली स्तवना स्तुतीने योग्य ठे हाथी
नी सुंदर समान ठे जुजान जेहनी लांबी ॥

मयगल लीलायमाण वर गंधहठीपठाण ॥

पठिअं सथवारिहं हठी हठ वाहुः ॥

धमाव्यु सूवर्ण तेनु जे आजरण ते सरीखो निकलंक शरी
रनो पिलोवरण ठे जेहनो प्रधान संख चक्राढी लक्षणे करी
सहित शरीर ते जेहनु चंद्रकी नलु रुपठे जेहनु ॥

धंत कणग रुअग निरुवहय पिजरं ॥

पवर लक्षणे व चिय सोम चारु रूवं ॥

कानने सुखनो करणहार मनने बलज मनने घणा आनंद
नो करणहार प्रधान देव सवंधी डुंदनीनो नाद मधुर तर ते
समान नली ठे वाणी जेहनी ॥९॥ वेष्टक नामा ठंद ॥

सुई सुह मणाजिराम परम रमणिऊ ।

वर देव डंडहि निनाय महुखर सुह गिरं ए वेढन ॥

एहवा श्री अजितजिन जि जीत्या ठे समस्त जय ते
त्या ठे समस्त कर्मत्रुशना ग जेणे व्यार गती रुप संसार
ए ते जेणे ।

तेमां जन्म जरादी खल डर
कखां ठे जेणे ॥

अजिअं जिआरि गण। जिअ सव जयं भवो हरिण॥

एहवा जगवंतने प्रणाम करुंदु हु उद्यमे करी मन वचन
कायाये ॥

पणमामि अहं पयन ॥

हे जगवन् मारा पाप प्रते डर करो ॥१०॥ रासालुब्धक ठंद॥

पावं पसमेउ मे जयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धन ॥

कुरु देश तीहां हथीना पुरनगर राजा पहेलो तेवार पठी
मोटो चक्रवृत्ती हुन मोटा प्रजावे करी सहीत ॥

कुरु जणवय हन्निणार नरीसरो ॥

पढमंतउ महा चक्रवट्टि भोए महप्पजावो ॥

जे बहुतेर नग्र वर हजार माहा प्रधान नगर तेमां वणीक
देश पति ते निगम कहिए तेहना स्वामि वसे वत्रीस हजार
मुगट बंध राजा ते सघला पुठे चाले ॥

जो बावत्तरि पुर वर सहस्स वर नगर निगम ॥

जणवय वई वत्तीसा रायवर सहस्साणुआय मग्गो ॥

सात एकेंडी सात पंचेद्री एहवां चउद प्रधान रत्न नव मोटा
नीध्यांन चोसठ हजार प्रधान नारी तेना चला पती वलि
चोराशि हजार प्रते के ॥

चउदस वर रयण नव महा निहि चउसठि ।

सहस्स पवर जुवईण सुंदर वई चुलसी ॥

घोमा हाथी रथ तेना स्वामी ठनु कोम गामना स्वामी थ
या आ ज्जरत क्षेत्रने विषे जे जगवंत ॥११॥ वेढक नामा ठंडा ॥

हय गय रह सय सहस्स सामी ठन्नवइ ।

गाम कोमि सामी आसजो नारहंमि जयवं ११ वेढन
ते श्री शांतिनाथ शांतिनो शांत थया ठे मरणादि जय
करणहार ॥ थकी ॥

तं संति संति करं । संतिणं सब्व जया ॥

ते शांतिनाथ नाम प्रते स्तवु शांति करो मुजने ॥११॥ रा

जिन तीर्थंकर ॥ सानंदित नामा ठंद ॥
 संति थुणामि जिणं । संतिं विहेउमे ११ रासानंदिययं ॥
 इक्काग वंसने विपे विदेह केता ग्रहवास राजा नरने विपे
 धोरि समान मुनीने विपे ॥

इरकाग विदेह नरीसर नरवसहा मुणिवसहा ।
 नवो उगतो शरद कालनो चंड संपुरण कलाए सहीत गयो
 बे तम अंधकार अज्ञान जेहथी गइवे कर्म रज जेहथी एहवा ॥
 नव सारय ससि सकलाणण विगय तमा विहुअ रया ॥
 अजितनाथ उत्तम तेज ठे जेहनु ज्ञानादि गुणे करी मोटा
 मुनी अमवीत बल ठे जेहनो मोटो ठे कुल के वंश ते जेनो
 एहवा ते प्रते ॥

अजि उत्तम तेअ गुणोहिंमहा ।

मुणि अमिअ बला विजल कुला ॥

प्रणाम करुवु नव जे संसार तेनो जे ज्ञय तेने मुरणहार
 डर करणहार बलि जगतना प्राणीना शरण ठे मुजने शरणे
 राखो ॥ १३ ॥ चित्रलेखा ठंद ॥

पणमामि ते नवज्ञय मूरण ।

जगसरणा ममसरणं । १३ । चितलेहा ॥

देव वैमानीक दांनव पाताळ वासी तेना इंड चंड सूर्य ते
 योतीपीइंड वांदे हरखे संतुष्ट चिते श्लाघा घणी करो ॥

देव दाणाविद चद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम ॥

प्रधान रुपठे जेहनु धमेलु वा तावेलु रुपु तेनो पाट तेनी

પરે શ્વેત નિરમલ ચિકણા ધોલા ॥

લઠ્ઠ રૂવ ધંત રૂપ્પ પદ્ધ સેય સુધ્ધ નિધ્ધ ધવલ ।

દાંતની શ્રેણી છે જેહનિ શક્તિ યશ મુક્તિ નિર્લોચતા યુક્તિ
વચન ગુપ્તિ ન્યાય સહિત મનોગુપ્તિ પ્રમુખે પ્રવર છે ॥

દંત પાંતિ સાંતિ સતિ કિત્તિ મુત્તિ જુત્તિ ગુત્તિ પવર ॥

દિત્ત તેય વંદ ધેય સઠ્ઠ લોચ ભાવિય પ્પભાવણેઞ્ચ
દિપતુ તેજઘે જેહનુ વાંદવા યોગ્ય ધ્યાવા યોગ્ય સમસ્ત લો
ક નાવીત છે જેહનુ માહત્મ્ય નીરંતર સમાધી સંતોષ આ
પો ॥ ૧૪ ॥ નારાચ નામા ઠંદ ॥

પર્દસમે સમાર્હિં । ૧૪ । નારાયણ ॥

નીરમલ ચંદ્રકલા થકી ઞ વાદલ પ્રમુખ અંધકાર રહી
ધીક છે સોમ્યતા તે જેહનિ ॥ ત સૂર્ય તેનાં જે કીરણ તેદ
થી અધીક છે તેજ તે જેહનો ॥

વિમલ સસિ કલાર્દ્રેઞ્ચસોમં ॥

વિ તિમિર સુરકરાર્દ્રેઞ્ચ તેઞ્ચ ॥

દેવતાના પતી જે ઇંદ્ર તેહના જે ગણ તે થકી સાર છે બલ
તે જેહનુ ॥

તિઞ્ચસ વદ્ ગણાર્દ્રે રુવં ।

પરવતે તેહમાં પ્રવર શ્રેષ્ઠ જે મેરુ તે થકી સાર છે બલ તે
જેહનુ ॥

કુસુમલતાનામા ઠંદ

ધરણી ઞ પ્પવરાર્દ્રેઞ્ચ સારં । ૧૫ । કુસુમલયા ॥

સાહસને ગુતિયો કરી નિરંતર શરીર વજે કરિ કેણે જિત્યો
કેણે જિત્યો નહિ છે । નહિ છે ॥

सत्तेअ सया अजिअं । सारीरेंअ बले अजिअं ॥
 बारजेदे जे तप सतर प्रकारे जे संजम तेणे करी अजित ठेजे ॥
 तव संजमेअ अजिअं ॥

एहवा अजितनाथ जीन प्रते हु स्तबुवु ॥१६॥ जुजंग परी
 गित नामे वंद ॥

एस थुणामि जिण अजिअं ॥१६॥ जूयग परिरंगीयं ॥
 सौम्यता गुणे करी प्रभु तुल्य ते न आवे नवी सरद ऋतु
 आसोकार्तिकनो चंद ।

सोम गुणेंहिं पावइन तं नव सरय ससी ।

तेज गुणे करी पवीत्र न थाय ते नवि शरद ऋतुनो सूर्य ॥

तेअ गुणेंहि पावइन तं नव सरय रवी ॥

शरीरना रुप गुणे पहुचे नहि ते श्री अजितनाथ प्रते सुर
 समुदायना पति ईंद ते पण ।

रूव गुणेंहि पावइन तं तिअस गण वर्ड ।

बल धैर्य गुणे करी धरणीधर परवत तेनो पति मेरु पण
 पोहेचे नहि ते प्रते सर्वोत्कृष्ट जगवंत जाणवा ॥ १७ ॥ स्त्री

जिय नामा वंद ॥

सार गुणेहि पार्वइन तं धरणीधर वर्ड १७ खिज्जिअयं ॥

तिर्थ जे चतुर्विधसंघ प्रधान तेहनो करणदार अज्ञान पाप
 रज ते थकी रहित ।

तिष्ठ वर पवत्तय तम रय रहिअं ।

पंक्तिजन तेणे पुज्यो स्तव्यो गयो ठे जेहनो कलह पाप मल ॥

धीर जण थुअ च्चिअं चुअ कलि कलुसं ॥

મોક્ષનાં જે સુખ તેહનો મારગ પ્રવ્રતાવણહાર છે ત્રિક્રણ
મન વચન કાયાયે આદરતા થકાં પ્રયત્ને ।

સંતિ સુહ પ્પવત્તયં તિગરણ પયન્ત ।

હું શ્રી શાંતિનાથ માહામુની તેહના સરણ પ્રતે આદરું કરું
॥ ૧૬ ॥ લલીત નામા ઠંદ ॥

સંતિ મહં મહામુણિં સરણ મુવણમે ૧૬ લલિત્રયં ॥

વીનય કરિ નમા છે મસ્તક તિહાં રચિત છે હાથ છે જેહના
એહવા મુનિના સમોહ તેણે સ્તવ્યા છે નિશ્ચલ ॥

વિણન્તણય સિરિરઙ્ગ અંજલિરિસિગણ સંથુઅં થિમિઅં
દેવતાના અધિપતિ જે ઇંડ કુબેર નંદારિ નરના પતિ મોદા
રાજા તેણે સ્તવના કિધિ છે નમસ્કાર કસ્યા છે પુજ્યા છે
ઘણીવાર ॥

વિબુહાહિવ ધણવડ નરવડ થુઅમહિ અચ્ચીઅં વહુસો ॥
તત્કાલનો ઝગ્યો જે શરદ કાલનો સૂર્ય તે થકિ ઘણો તે
જ છે તપે કરિ જેહનો ।

અડ રુગ્ગય સરય દિવાયર સમહિય સપ્પન્નં તવસા ।
આકાશ માર્ગે ચાલવો તેણે કરિ હરચિત જે સમસ્ત ઝંઘા
વિદ્યા ચારણ મુનીશ્વરે વાંઘ્યા છે મસ્તકે કરિ ॥ ૧૭ ॥ કિ
સલય નામા ઠંદ ॥

ગયણં ગણ વિઅરણ સમહિઅ ચારણ વંદિઅં સિ
રસા ॥ ૧૭ ॥ કિસલમાલા ॥

અસુર કુમાર સુવરણ કુમાર કિન્નર જે વ્યંતર નાગ કુમાર
તેમને સમસ્ત પ્રકારે વાંઘ્યા છે । તે નમ્યા છે જેને ॥

अमुर गरुल परि वंदिअं । किन्नरो रग एमंसिअं ॥

देवनी कोमि समुहे स्तव्या ठे जेने ।

देव कोमि सय संधुअ ।

मुनि आये संधना समुह तेणे मन वचन कायाए करि
वांछा ठे जेने । १७ ॥ सुमुख नामा ठंड ॥

समण संध परि वंदिअं ॥ १७ ॥ सुमुहं ॥

सात नय रहित पापे करि मैथुने रहित रोग रहित ॥
रहित ।

अजयं अणहं । अरयं अरुयं ॥

केणे जित्या नहि एहवा श्री प्रयत्ने करि आदरे करि प्र
अजितनाथ ।

एणंम करुवु ॥ ११ ॥ बीजु

विलसी नामा ठंड ॥

अजिय अजियं । पयउ पणमे ११ विज्जु विलसिअं ॥

आव्या ठे प्रधान वीमाने करि देवना संबंधीयां सूवरण मइ ।

आगया वर विमाण दिव कणग ।

रथ घोडा तेना समुहे करि सीघ्र उतावली ॥

रह तुरय पहकर सएहि हुलिअं ॥

ससंभ्रम पणे आकाश थकी उतरि तेणे करि चलीत लुलिता

स संजमो अरण खुजिय लुलिय ।

मोलता कुमल कान नृपण बहेरखा मोर तेणे करि सोजे
ठे मस्तकना मुगटनि श्रेणि ॥ १२ ॥ वेढ नामा छंड ॥

चल कुमल गय तिरीर सोहंत मौलिमाला १२ वेढज ॥

जे देव समुह नृवनपती देव बैरे करी रहित नक्तिए क

समुहे सहीत ।

री सहीत ॥

जं सुर संघा सासुरसंघा । वेर विजिता नति सुजुता ॥

आदरे करी सहीत सोज्जीत वीस्मयवंत ।

आयर जूसिअ संजम पिंमिअ ॥

जलु धणु आश्चर्यवंत ठे समस्त देव सवंधी सेना तेना

ओघ समुह ॥

सुतु सुविम्विअ सब बलोघा ॥

प्रधान कांचन रत्न तेणे करी जमां एहवां ।

उत्तम कंचण रयण परूविअ ।

दिपता आजरण तेणे करी शोज्जीत ठे अंग जेहना ॥

नासूर जूसण नासुरि अंगा ॥

गात्र शरिरे करी नमतां नक्तिवशे आव्या ठे ।

गाय समोणय नति वसा गय ।

बेहाथ जोमी मस्तकेकरि प्रणाम कीधोठे ॥१३॥ रत्नमालावंद ॥

पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥१३॥ रयणमाला ॥

वांदिने स्तविने तिवार पठे त्रणवार एव वारंवार प्रदक्ष

जिनने । णा देइने ॥

वंदिऊण थोऊण तो जिणं । तिगुण मेवय पुणो पयाहिणं ॥

प्रणमीनें जिनेश्वरने सुर असूर ।

पणमिऊणय जिणं सूरु सुरा ।

हरखीत थका पोताने जवने ते जता इवा ॥ १४ ॥ खीत

य नामा वंद ॥

पमुइआ स जवणाई तो गया ॥१४॥ खित्तयं ॥

तेहीज मोटा मुनी तीर्थकर जगवंतने हुं पण हाथ जोमी ॥

तं महामुणि महंपि पंजली ।

ते प्रभु केवा ठे रीजवु ते राग खीजवु ते देश जय पांसु ते
जय मुजावु ते मोह तेणे करी रहित ठे ॥

राग दोस जय मोह वज्जिअं ॥

असुरदेव दाणव चक्रवृती तेणे वांदा जेने ।

देव दाणव नरिंद वंदिअं ।

एहवा श्री शातिनाथ उत्तम मोटु तप ठे जेहनु तेमने नमु
वांडुः ॥ १५ ॥ क्षिप्तकनामा वंद ॥

सति मुत्तम महा तव नमे ॥ १५ ॥ खितयं ॥

आकाश मार्गने विपे चालवानो आचार ठे जेहनो एहवि ।

अंवरंतर विआरणि आहिं ।

प्रधान हंसनि वधूते हंसली ते रिते चाळ्य ठे जेमनी एवीओ ॥

ललिअ हंस बहु गामणिआहिं ॥

पुष्ट कवीन स्तन तेणे करि सोजायमान ।

पीण सोणी थण सालणिआहिं ।

समस्त कमलनी पांखनी ते सरीखां लोचन ठे जेहनां ए
हविओ ॥ १६ ॥ दिपक नामा वंद ॥

सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ १६ ॥ दीवयं ॥

पुष्ट मध्ये आंतरा रहीत एहवो स्तननो जे जार तेणे करि
नम्युं ठे गात्र शरीर जे वेवांग नानु ।

पीण निरंतर थणभर विणमिअ गायलआहिं ।

रत्न सोनो तेनी पसिठिल जे कटी मेखला तेणे करी सोजे

ढे कटि प्रदेश ते जेमनो एहविओ ॥

मणि कंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥

प्रधान नानी घंटमीन जांऊर प्रमुख पगनां आचुपण ति

लक सहित हाथनां कंकण घरेणां सोभायमान एहविओ ॥

वर खिखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणि आहिं ॥

शातानि करणहार चतुर विचक्रण मनने हरे सोजनीक द

र्शनढे जेहनो ॥ १७ ॥ चीत्रा कुरा ठंद ॥

रइकरचउरमणोहर सुंदर दंसणिआहिं १७चित्तकरा ॥

एहवी देवांगना जगवंतना चरण प्रते वांदे वांधा ते जेना

जला प्राक्रमवंतना चरणकमल प्रते ॥

देवसुंदरीहिं पाय वंदि आहिं वंदिआय जस्सते

सुविक्रमा कमा ।

पोत पोताना कपाले करिने वलि घरेणां शणगारे करि ।

अप्पणो निमालएहिं मंणोमृण प्पगारएहिं ॥

वलि केहवा प्रकारनी जेहवा देवांगनाने योग्य ढे तेहवा

सिणगार कीधा अवंग जे नेत्रना खुणा तीहां काजल सारां

ढे मस्तके प्रत्र लेख केतां कस्तुरीनु टीलु करूं ढे दिपतां एह

वां योग्य आन्नरण आप्यां छे जेहना शरिने विषे ॥

केहिं कहिवि अवंग तिलय पत्तलेहिं नामएहिं

चिह्नएहिं संगयं गयाहिं ॥

नक्तिए करी वांदवा जणी आवी एहवी देवी जगवंतना च

रण कमल वारंवार वांधाढे ॥ १८ ॥ नाराच नामा ठंद ॥

नक्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंतिते वंदिआ पु

णो पुणो ॥ १८ ॥ नारायण ॥

ते प्रते हुं वाडु सांमान्य केव अजितनाथ प्रते वली केवा
लीमां चंडमा एहवा । ठे जीत्या ठे मोहनी कर्मरुप
वेरि जेणे वलि ॥

त महं जिण चंदं । अजिअं जिअ मोहं ॥

टाला ठे समस्त पाप क्लेश ते प्रचु प्रते आदर सहीत
जेणे एहवा । चरणे लागु हुं ॥ १९ ॥ नं
दितक नामा ठंद ॥

धुअ सब किलेसं । पयउ पणमामि १९ नंदिअयं ॥
गुणानी स्तुति मस्तके करि बांध्या ठे मुनिना समुदाये तथा
देवताना समुहे ।

थुअ वंदिअयस्सा रिसि गण देव गणोहिं ।
तेवार पठि देवतानी देवागनान्ण आदरें करि प्रणम्या छे
प्रचु प्रते ॥

तो देव वहूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥

जे वलि जगतने विपे प्रधान आंणा ठे जेहनी जक्तिए क
री आवी एकठी मीली ठे एहवी ॥

जस्स जगुत्तम सासणयस्सा जत्ति वसा गयें
पिंमिअ याहिं ।

देववर जे इंद्र तेहनि अपठरा ते पण घणि सूर देवता संघा
यें काम सूख विपे चतुर पंन्ति ठे ॥ २० ॥ जासूरक ठंद ॥

देव वर छरसा बहुआहिं सूर वर रइ गुण पंन्ति
अयाहिं ॥ २० ॥ जासुरयं ॥

वांसलिनो शब्द वीणा ताल प्रमुख वाजित्र मेलवि त्रिपु
ष्कर वाजित्र मनोहर मिश्र शब्द मिढ्योढे जीहां ।

वंस सह तंति ताल मेलिए तिउस्करा निराम
सह मीसए कएअ ॥

कांने सरखा शब्द सनमान करवा योग्य सुध डुत विलंबि
तादि दोष रहित शब्द स्वर सहित गीत सहित पगनें विषे
घंटा घुघरि जालीए करि सहीत हाथना कंकण मेखला क
टि आनुषण तेना समोह पगनां आनुषण तेना मनोहर
शब्द मांहो मांहे एकठा मिले ॥

सुइ समाणणे य सुध सज्ज गीय पाय जाल घं
टिआहिं वलय मेहला कलाव नेउरा भिराम शह
मीशए कएअ ॥

एम देवतानी नाटकणी हावते मुख चेष्टा बहु कांम विका
र जाव ते चित समुज्जव विप्रम ते नेत्र विकार तेणे प्रकारे
करी नाचीने शरिरनो नमवो बाहुबंध हारादि तेणे करि
वांयाढे जेहना प्राक्रमवंत चरण कमल प्रते एहवा ॥

देव नटिआहिं हाव भाव विप्रम पगारेहिं नच्चिऊण ॥

अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्रम कमा ।

ते जगवंत त्रिलोक्यना सर्व जिवने शांतिनो करणहार जे

थकी गयाढे सघला पाप अठार दूषण ते जेहना एहवा हुं

नमु प्रणाम करु श्री शांतिनाथ सामान्य केवली मांहि प्र

धान जिन प्रते वलि केहवा ठे ॥३१॥ नाराच नामा ठंद ॥

तयं तिलोय सबसत संति कारयं पसंत सबपाव

दोस मे सहं नमामि संति मुत्तमं जिणं ३१ नारायण ॥

उन्नता आकार चामरना आकार ध्वजना आकार यक्षस्तंज
नो आकार एहवे लक्षणे मंन्ति ठे वलि ।

उत्त चामर पमाग जूय जव मंन्तिआ ।

मोटी ध्वजाना मोटा मागवाना घोमाना श्रीवत्सना आ
कार रुमां लक्षणे ठे जेहने वलि ॥

जयवर मगर तुरय सिरिवच्च मुलंभणा ॥

जंबूद्वीप प्रमुख द्वीप लवण समुद्र मेरु रुमा द्वायी एहवा
लक्षणे करि शोचीत ठे वलि ।

दीव समुद्र मंदर दिसा गय सोहिआ ।

साधिआना आकार वलधना आकार सिंहना आकार रथ
ना आकार चक्रना आकार तेणे करि लक्षणवंत वलि के
वा ॥ ३२ ॥ जलीत नामा ठंद ॥

सच्चिअ वसह सीह रह चक्र वरंकिआ ३३ ललिययं ॥

सज्जावे करि सोभन समान जे मांहि डुपण नहि ठे अने
प्रतीष्टा । क गुणे करि मोटा ठे ॥

सहावल्लभा समप्पइण । अदोसइण गुणेंहिजिठा ॥

पसाय केतां नीरमलताए श्रेष्ठ तपे करि पुष्ट ठे ।

पसाय सिण तवेण पुठा ।

लक्ष्मीए करी प्रधान ठे रीखीश्वरे सेव्या ठे जेहने एहवा
॥ ३३ ॥ वाणवासिता ठंद ॥

सिरीहि इण रसीहिंजुण ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥

ते प्रसिध वार चेदे तपे करि समस्त लोकने हित जे मोक्ष

डुर कस्यां सघटां पाप । तेनु मुल जे ज्ञानदर्शन चा
रित्र तेदना पवित्र ॥

तेतवेण धुअ सव पावया॥सव लोअ हिअ मूल पावया॥
संस्तव्यामें श्री अजितनाथ तथा श्री शांतिनाथना चरण
कमल तेह प्रते ।

संथुआ अजिअ संति पायया ।

थान मुजने मोह सूखना देण हार दातार ॥ ३४ ॥ अप
रांतिका ठेद ॥

हुंतु मे सिव सुहाण दायया ॥३४॥ अपरांतिका ॥
एम तपना बलवने करि घणा ठे विशाल एहवा ।

एवं तव बल विजलं ।

स्तव्या में श्री अजितनाथ श्री शांतिनाथ वे तिर्यंकर ॥

थुअं मए अजिअ संति जिण जूअलं ॥

समस्त गयाठे कर्मरुप रज मज्ज जेदना थकि ।

ववगय कम्मरय मलं ।

मोहरूप गति गत प्राप्त विस्तारवंत पाम्या ठे ॥ ३५ ॥
गाथा ठेद ॥

गइ गर्यं सासयं विजलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

ते प्रह्लु बहु ज्ञानादि गुणनो मोहनु सूख उतकष्ट वर्तमा
प्रसाद ठे । न तेणे करि विषवाद रहित ॥

तं बहुगुण प्पसायं । मुखसुहेण परमेण अवि सायं॥
डुर करो माहारो विखाद खेद डुख ते प्रते ।

नासेउ मे विसायं ।

करो परिसदा सांजलणहार लोकने प्रसाद करो ॥ ३६ ॥
गाथा ठंद ॥

कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

ते श्री अजितनाथ अने श्री पमानो मुजने समृधि हुं नं
शांतिनाथ मुजने हरख करो दिपेण प्रते सघला सूख आ
आपो सर्व लोकना मनवंठि नंद प्रते दिठ ॥

त समृधि पमानो ।

तं मोएउअनंदिं । पावेउअ नंदिसण मज्जिनंदिं ॥

परखदा सांजलनारने पण सुखनि वृधि करो ।

परिसाविअ सुहरांदिं ।

मुजने दियो चारित्रनी नंदि वृद्धि सूख ॥ ३७ ॥ गाथाठंद ॥

ममय दिसउ संजमे नंदि ॥ ३७ ॥ गाहा ॥

पाखिने दिवसे चोमासाने ठमछरिने दिवसे अवस्य क
दिवसे । हेबु ॥

पखिअ चाउम्मासिअ । संठवरिए अवस्सजणि अब्बो ॥

सांजलबु समस्तने । ए स्तवन उपसर्ग विघननो
निवारण हार ठे ॥ ३८ ॥

सोअबो सवेहिवि । उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥

जे जिव जणे जे जिव सांजले ।

जो पढइ जोअ निसुणइ ॥

वे संघ्या उपलक्षणथी त्रिकाल ए श्री अजित शांतिनामा
स्तवन ॥

उजउ कालंपि अजिअ संति थअ ॥

ते ज्ञानार सांनलनारने न पुरवे जे रोग उपना होय ते
वा रोग न थाय । पण समस्त छर आय ३९ ॥

नहुहुंति तस्स रोगा । पुवुप्पन्ना वि नासंति ॥३९॥

हे ज्ञव्य प्राणिन जो तुमे अथवा कीर्ति सविस्तर त्री
मोक्ष पदने इच्छता हो । भुवनने विपे इच्छता हो ॥

जइ इच्छह परमपयं । अहवा किन्निं सुविठ्ठमं भुवणे ॥

तो त्रण लोकने उधरण एहवा श्री जिनकेवली जग
हार । वंतना वचनने विपे सम्यक्

प्रकारे आदर करो ॥ ४० ॥ इति०

ता तेलुकुधरणे । जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

॥ इति श्री अजितशांति स्तवनं ॥



॥ अथ नक्तामरस्तोत्रं लिख्यते ॥

अथ श्री मान्तुंग सूरिजी विसमे पाटे थया तेमणे रज्यु जे
नक्तामर स्तोत्र ते द्विख्यते नक्त वा सेवक एहवा देवोना
नमता मुंगट मणिनी कांतिनु ।

भक्तामर प्रणत मौलि मणिप्रज्ञाणा ।

उद्योतं करनार नाश कस्यो ठे पापरूप अंधकारनो समूह ते
जेणे एहवु ।

मुद्योतकं दलित पाप तमो वितानम् ॥

सम्यक् वा रुमी रित्ये नमीने जिनेश्वरना चरण जुगल प्र
त्ये ते चरण केहवु ठे ते जुग जे आ अवसर पिणि कालनेआदि॥

सम्यक् प्रणम्य जिन पाद युगं युगादा ।

धर्म आलंबन ठे जव जे ज्यार गति भ्रमण संसाररूपि समु
५ जलमां पमता प्राणि लोकोने ॥ १ ॥

वालंबनं भव जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

बलि जे स्तुति कख्याठे समस्त शाखना रहस्यने जाणवाथकि

यः सस्तुतः सकल वाडमय तत्व बोधाद् ।

उपनी जे बुद्धि तेणे करिने जला माह्या देव लोकना स्वामी
जे इंद्रादि देवोये ॥

उन्नूत बुद्धि पटुभिः सुर लोक नाथैः ॥

स्तोत्रे करिने ते स्तोत्र केहेवां ठे त्रण्य जगतना नव्य पाणी
ठ तेमना मनने हरे एहवां ने प्रधान गंजीर अर्थ वालां ।

स्तोत्रैर्जगत्रितय चित्त हरै रुदारै ।

स्तुति करवु निश्चे हुं पण ते श्री आदि जिनेश्वरनी ॥ ३ ॥

स्तोष्ये किलाह मपितं प्रथमं जिनैः जम् । १ युग्मम् ॥

हेवे मानतुंगसूरि आपनी लघुता कहेठे जे बुद्धि विना पण
हे आदिनाथ हे देवोये पुज्यु ठे पग मुकवानु स्थान वा वा
जोव ते जेनु एहवा नगवान् ।

बुद्ध्या विना पि विबुधां चित्त पाद पीठ ।

स्तुति करवाने उद्यम युक्त ठे बुद्धि जेनी एहवो ने गइ ठे
लज्या जेनी एहवो हु वु ॥

स्तोतु समुद्यत मति विंगत त्रपोऽहम् ॥

ते दृष्टात जे वालक विना जलमां रहु एवं जे चंझु प्रति
विवने ।

वालं विहाय जल संस्थित मिड विव ।

विजो कोण इहे वा वांछे पुरुष तत्काल गृहण करवाने
जालवाने ॥ ३ ॥

मन्यः क इति जनः सहसा गृहीतुम् ॥ ३ ॥
केहेवाने गुणने हे गुणना सयुद्ध चंद्रमा सरखा मनोहर ए
हवा गुणने ।

वक्तुं गुणान् गुण समुद्र शशांककांतान् ।
कोण ते तमारा गुण केहवाने समर्थ ठे बृहस्पतिना जेवो
पण बुद्धिये करिने होय तोयेपण शुं ॥

कस्ते क्षमः सुर गुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥
ते दृष्टांत जेम ठगा आराना वायुये क्षोन पमाद्ध्या ठे नक्र
चक्र जे जलचर जंतु जेने विषे हेवो ।

कटपांत काल पवनो घत नक्र चक्रं ।
कोण वलि तरवाने समर्थ होय समुद्धने हाथ वते एटले हे
वो समुद्ध हाथे न तराय तेम आपना अनंता गुणन केहेवाय ४

को वा तरीतु मल मंबुनिधिं जुजाभ्याम् ॥४॥
ते हुं तोपण तमारी जक्तिना वशायी हे मुनिना स्वामि ।

सोऽहं तथापि तव जक्ति वशान्मुनीश ।
करवाने स्तोत्रने गई ठे शक्ति ते जेनी एहवो पण उद्यम
जुक्त थयो तु ॥

कर्तुं स्तवं विगत शक्ति रपि प्रवृत्तः ॥
ते दृष्टांत स्नेह थकि पोतानी शक्तिने अण विव्याख्ये मृग
लो सिंह प्रत्ये ॥

प्रीत्यात्म वीर्य मविचार्य्य मृगो मृगैर्ज ।

नधि सांमो थतो शुं पोताना बन्धानु रक्षणा करवा सारु ए
नाभ्येति किं निज शिशोः परि पालनार्थम् ॥५॥

थोमु नणेलुब्रे घणु नणेलाना मध्ये हांसि करवानु घरठे ।

अल्प श्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम ।

पण तमारी नक्ति एज बोलवाने चंचल करे ठे जोरावरी
थी मुजने ॥

लनक्ति रेव मुखरी कुरुते बलान् माम् ॥

ते दृष्टांत जे कोयल निश्चे वसंत रतुमां प्रीतीकारि बोले ठे ।

यत् कोकिल किल मधौ मधुरं विरौति ।

तिहां सुंदर आंवानी कलि वा मांजरनो समूह एज कारण
ठे तीम मारे तमारी नक्ति ठे ॥ ६ ॥

तच्चारु चूत कलिका निकरैक हेतुः ॥ ६ ॥

तमारी स्तुति वते संसारनी परंपरा वने बांध्यु जे ।

त्वत् संस्तवेन भव संतति संनिवधं ।

पाप ते क्षणमात्रमां नाशने पामे ठे देहधारि जे संसारीनु ॥

पापं क्षणात् क्षय मुपैति शरीर भाजाम् ॥

ते दृष्टांत विटी लिधो ठे लोक जेणे एवु ने ब्रमर जेवु कालु
एहवु समग्र एवु उतावळु ।

आक्रांत लोक मलिनील मशेष माशु ।

सूर्यना किरण वडे नाश कखु एवु जेम रात्रिनु अंधारु ७

सूर्य्यां शु चिन्न मिव शर्वर मंधकारम् ॥ ७ ॥

मांनिने ए प्रकारे हे आदिनाथ तमारा स्तोत्र में मानतूंग
सूरिदे ।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद ।

आरंभ्यु ठे ओमी बुद्धि ठे तोपण तमारा महिमार्थी ॥

मारभ्यते तनु धिया पि तव प्रजावात् ॥

ते स्तोत्र चित्तने हरशे सत पुरुषना ते दृष्टांत जेम कमल
ना पत्रने विषे ।

चेतो हरिष्पति सतां नलिनी दल्लेषु ।

मोतिनी कांतिने पांम ठे निश्चे पाणिनो बिंङ ॥ ७ ॥

मुक्ताफल द्युति मुपैति ननूदविंङः ॥ ७ ॥

डर हो तमारु स्तोत्र नाश कख्याठे सर्वे दोष ते जेणे एवु ।

आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं ।

तमारी कथा वा वार्ता पण लोकनां पापने हणे ठे ॥

त्वत् संकथा पि जगतां डरितानि हंति ॥

ते दृष्टांत ठेठे रह्यो सूर्य करे ठे पोतानी कांति निश्चे ।

डरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभै व ।

सरोवरने विषे कमलने प्रफुल्लित एहवाने ॥ ए ॥

पद्माकरेषु जलजानि विकाशनांजि ॥ ए ॥

नष्टि अत्यंत आश्चर्य हे लोकना अलंकार रूप हे चूत वा
प्राणिना स्वामी ।

नात्यद्भुतं भुवन भूषण चूतनाथ ।

प्रत्यक्ष वा जणाता गुणवंत पृथ्वीमां तमने स्तुति कर
नारा लोको ॥

चूतै गुणै चूवि चवंत मभिष्टु वंतः ॥

सदृश होयठे तमारे निश्चे ते लोको नष्टि शु ।

तुल्या भवन्ति जवतो ननु ते न किवा ।

समृद्धिवते पोताना आश्रीतने आ लोकमां नधि शुं पोताने
तुल्य करि सकता ॥ १० ॥

भूत्या श्रितं य इह ना त्मसमं करोति ॥ १० ॥

जोइने तमने देवोने पण जोवाने योग्य एवा ।

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष विलोकनीयं ।

नहि विजे ठेकाणे संतोष प्रत्ये पांमे ठे लोकनां नेत्र ॥

नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्यचक्षुः ॥

ते दृष्टान्त पान करिने जलने वा डधने चंड कांति समान
एवु किर समुझु ।

पित्वा पयः शशिकर द्युति डग्ध सिंधोः ।

खारा जलने समुझना पीवाने कोण इच्छे अपितु नाज इच्छे ॥ ११ ॥

द्वार जलं जलनिधे रसितुंक इच्छेत् ॥ ११ ॥

जे डपशमि ठे रागनी रुचि ते जेमनी एवा परमाणुव
ते तमो ।

यै शांत राग रुचिभिः परमाणुचिस्त्वं ।

निपट्वा ठे हे त्रैण लोकमा एक सुदर रूप ॥

निर्मापित स्त्रि भुवनैक ललाम भूत ॥

तेटलाज निश्चे ते पण परमाणवा पृथ्वीमा ठे ।

तावन्तएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां ।

जे कारण माटे तमारे तुल्य विजु नधि स्वरूप ठे ॥ १२ ॥

यत्तं समान मपरं नहि रूप मस्ति ॥ १२ ॥

मुख जे ते कीहां तमारु देव मनुष्यने नागकुमार तेमना
नेत्रने हरि ले एवु ।

वक्त्रं कृ ते मुर नरो रग नेत्र हारि ।

समग्र जिती ठे लोक त्रैएनी उपमायो ते जेणे एवु ठे ॥

निःशेष निर्जित जगत त्रितयोपमानम् ॥

ने मंमल कलंकवते मेलु कीहां चंडमानु ।

बिंबं कलंक मलिनं कृ निशाकरस्य ।

जे कारण माटे दिवसमां आय ठे पीलां पांढमां जेवु वा
पीला खाखरा जेवु जाव के चंड करतां तमारु मुख घणु
शोने ठे ॥१३॥

यद् वासरे भवति पांडु पलाशकल्पम् ॥१३॥

सोल कला संपूर्ण ठे मंमल जेनु एवा चंड तेनि कलाने स
मूह जेवा ।

संपूर्ण मंमल शशांक कला कलाप ।

उज्ज्वल गुण जे ते त्रैए लोकने तमारा उल्लंघन करे ठे ना
व सर्वोपरि ठे ॥

शुभ्रा गुणा स्त्रिजुवनं तव लंघयन्ति ॥

जे गुण आशरि रह्याठे हे त्रैए जगतना ईश्वर स्वामी एवा
एक तमनेज ।

ये संश्रिता स्त्रिजगदीश्वरनाथ मेकं ।

कोण ते गुणने निवारे गति करता वा चावता पोतानी इ
हा परमाणे ॥ १४ ॥

कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥

आश्चर्यं शुं ठे ए वातमां जे तमारु देवतानी स्त्रीयोये ।

चित्रं कि मत्र यदि ते त्रिदशांग नाभि ।

पमारुचु लगार पण मन जे ते नधि विकारना मारग प्रत्ये॥

नीतं मनाग पि मनो न विकार मार्गम् ॥

ते दृष्टात ठग आरानो वा प्रलय काजनो वायु ए चलाव्या
ठे पर्वत ते जेणे एवो ।

कटपांत काल मरुता चलिता चलेन ।

शुं मेरु पर्वतनु शिखर चलाव्यु ठे कीवारे पण अपीतु न
थी हलाव्यु ॥१५॥

कि मदराजि शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

धूमामाये रहितठे वाळ्य वा दिवेट वा बतीए रहितठे जेनी
एहवाने वर्ज्यु ठे तेखनु पूरवु ते जेमां एहवा ने ।

निर्द्धूम वर्तिर पवर्जित तैल पूरः ।

समग्र लोक त्रैणने आ प्रकाश करो ठो ॥

कृत्स्नं जगत् त्रय मिदं प्रकटी करोषि ॥

होलव्यामां गम पन्ती नथी क्यारे पण वायुने चलाव्याठे
पर्वत ते जेणे एवो वायु ।

गम्यो न जातु मरुता चलिता चलानां ।

माटे दिवो बीजी रीत्यनो तमो रूपि ठो हे स्वामी जगत्
मात्रने प्रकाश करनार एहवो ॥ १६ ॥

दीपो पर स्त्वम सि नाथ जगत् प्रकाशः ॥१६॥

नधि थस्त पणाने क्यारेय पण पांमता नधि राहुने गम्य
पन्ता ।

નાસ્તં કદાચિ હપયાસિ ન રાહુ ગમ્યઃ ।

પ્રકાશ કરો હો બતાવલા એકેકાલે જગતને ॥

સ્પષ્ટી કરોષિ સહસ્રા યુગપક્ષગન્તિ ॥

નથિ મેઘના મધ્યમાં રોકાયો હે મોટો પ્રતાપ તે જેનો એવા ।

નાં ધોધરો દર નિરુદ્ધ મહા પ્રજાવઃ ।

મોટે સૂર્યથી અધિકો હે મહિમા તે જેનો એવા હો હે જિને
શ્વર લોક જે જગતમાં ॥ ૧૭ ॥

સૂર્યાતિશાયિ મહિમા સિ જિનેંઙ્ર (મુનીંઙ્ર)લોકે ॥ ૧૭ ॥

નિરંતર બદલે તે જેનો એવું ને નાશ કર્યું હે મોહરૂપી મો
ટું અંધારું તે જેણે એવું ને ।

નિત્યો દયં દલિત મોહ મહાંધકારં ।

ગમ પમતી નથી રાહુના મુખને વલી નહીં મેઘને જાવ ત
મારો મુખ ચંદ્ર મેઘ વતે ઢંકાતો નથિ ॥

ગમ્યં ન રાહુ વદનસ્ય ન વારિદાનામ્ ॥

વિશેષ શોજે હે તમારું મુખ કમલ મોટી હે કાંતિ તે
જેની એવું ।

વિભ્રાજતે તવ મુખાબ્જ મનહ્પ કાંતિ ।

વિશેષ પ્રકાશ કરે હે જગતને મોટે અપૂર્વ ચંદ્રમાના વિંબ
સરખું હે ॥ ૧૮ ॥

વિદ્યોતય ક્ષગદ પૂર્વ શશાંકવિભમ્ ॥ ૧૮ ॥

શું પ્રયોજન હે રાત્રિમાં ચંદ્રમાવતે વલિ દિવસમાં સૂર્યવ
તે અથવા ।

કિં શર્વરીષુ શશિનાન્હિ વિવસ્વતાવા ।

तमारा मुख चंड़े नाश करे सते अंधकार जे ते हे स्वामि ॥

युष्मन्मुखें छ दलितेषु तमस्सु नाथ ॥

ते दृष्टांत परिपक्व थया जे रुंगेरनां वन तेनि पेरे शोजतो थ
यो सते प्राणि लोक जे ते ।

निष्पन्न शालि वनशालिनि जीवलोके ।

काम पमे ठे शुं नथि परतु केटलाक मेघवते पाणीना ना
र वते नमता एवा ॥ १ए ॥

कार्यं कियत् जलधरै र्जलनारनमैः ॥ १ए ॥

ज्ञान जे ते जेम तमारे विपे सोने ठे कस्यो ठे प्रकाश ते
जेणे एवु ।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं ।

नथिज ते प्रकारे विश्व महादेव आदिक देवमां ते थणी वा
स्वामि एवा लोकमा केहेवाय ठे तोपण नथि शोजतु तेम
ने विपे ॥

नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥

ते दृष्टांत सूर्यादिनु तेज जे ते दीपता मणिमां पांमे ठे जे
बु मोटापणाने ।

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं ।

नथि पांमंतु ए प्रकारे तो काचना कमकामां ते काति युक्त
केवाय ठे तोपण जाव मणिमा जेवु तेज प्रकाशवंत ठे तेवु
काचमा नथि तेम तमारे विपे जेवु ज्ञान ठे तेवु विजा दे
वोमा नथि ॥ २० ॥

नैवं तु काच शकले किरणा कुलेपि ॥ २० ॥

માનુહુ એજ ઠીક વિશ્વુ મહાદેવ આદિ દેવ જે તે નિશ્ચે પ્ર
થમ દિશા જે કારણ માટે ।

મન્યેવરં હરિહરાદય એવ દૃષ્ટા ।

દિઠે સતે જે મન તમારે વિષે સંતોષને પાંમે છે ॥

દૃષ્ટેષુ યેષુ હૃદયં ત્વયિ તોષ મેતિ ॥

શુ વલિ જોયા એ હેતુ માટે તમો પૃથ્વીમાં જે નથિ વીજો ।

કિં વીક્ષિતેન ભવતા નુવિ યેન નાન્યઃ ।

કોઈ કુદેવ મનને હરે છે નથી હરતો હે સ્વામી વીજા જવ
માં પણ ॥ ૧૧ ॥

કશ્ચિન્ મનો હરતિ નાથ ભવાંતરે પિ ॥૧૨॥

જગત્માં સ્ત્રિયોનો શેકમો છે તે શેકડો જણે છે પુત્રોને ।

સ્ત્રિણાં શતાનિ શતશો જનયંતિ પુત્રાન્ ॥

નથી વીજી પુત્રને તમારા જેવાને માતા જણતી ઉપજાવતી ॥

નાન્યા સુતં ત્વહુપમં જનની પ્રસૂતા ।

કેમ જે સર્વે દિશાઓ ધારણ કરે છે ગ્રહ નક્ષત્ર ને પણ સૂ
ર્યને તો ।

સર્વા દિશો દધતિ ભાનિ સહસ્ર રશ્મિં ।

પૂર્વ હેવીજ દિશા જે તે જન્મ છે પ્રકાશમાન છે કાંતિ સમૂ
હ તે જેનો એહવાને ॥ ૧૨ ॥

પ્રાચ્યે વ દિગ્ જનયતિ સ્ફુરદં શુજાલમ્ ॥૧૩॥

તમને કહે છે મુનિયો પ્રધાન પુરુષ એવા ॥

ત્વાષુ મામનંતિ મુનયઃ પરમં પુમાંસ ॥

સૂર્ય જેવો જેનો વર્ણ છે એવા ને નિર્મલ એવા ને અજ્ઞાન અં

धाराश्री वेगला एवा ॥

मादित्य वर्णं ममलं तमसं पुरस्तात् ॥

तमोनेज रुनी रीत्ये पामीने जिते ठे मृत्यु ने ।

त्वा मेव सम्य गुपलभ्य जयंति मृत्युं ॥

माटे नथी बीजो सुखकारी मोक्ष पदनो हे मुनीश्वर मार
ग जे ते ॥२३॥

नान्यः शिव शिव पदस्य मुनींश्च पंथाः ॥

तमने अविनाशि एवाने समर्थ एवाने चितव्यामां न आवे
एवाने जेना गुणानी संख्या नथी एवाने मुख्य एवाने ।

त्वा मव्ययं विष्णु मचित्य मसंख्य माद्यं ॥

ब्रह्मा एवाने महादेव एवाने अनंत एवाने वा नथि पार जे
नो एवाने काम नाश करवाने केतुना तारा समान एवा ॥

ब्रह्माण मीश्वर मनत मनंग केतुम् ॥

ने योगीना ईश्वर एवाने जाणी ठे योगकला जेमले एवाने
अनेक स्वरूपीने वली एक स्वरूपी एवाने ।

योगीश्वरं विदित योग मनेक मेकं ॥

ज्ञान ठे स्वरूप ते जेनु एवाने निर्मल एवाने कहे ठे सत्पु
रूपो ॥२४॥

ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥

वली बुद्धदेव ठो तमोज हे देवोए पुजेला बुद्धिना बोध थकी ।

बुद्ध स्त्व मेव विबुधार्चित बुद्धिवोधात् ॥

तमो महादेव ठो त्रेण लोकने सुख करो ठो ए हेतु माटे ॥

त्व शकरो सि भुवन त्रय शकरत्वात् ॥

ब्रह्मा ठो हे धीरज्यवंत मोक्ष मार्गनी रीत्यना करि देखाम
नार ठो मोटे ।

धाता सि धीर शिव मार्ग विधेर्विधानात् ॥

प्रगटपणे तमोज हे ऐश्वर्य युक्त पुरुषोत्तम जगवान् ठो १५

व्यक्तं त्व मेव जगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥१५॥

तमने नमस्कार हो त्रैण जगतनी पीमाना हरनार एवा
हे स्वामी ।

तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ ॥

तमने नमस्कार हो पृथ्वी तलना निर्मल अलंकाररूप एवा ॥

तुभ्यं नमः क्षिति तला मल नूषणाय ॥

तुमने नमस्कार हो त्रैण जगतना परमेश्वर एवा ।

तुभ्यं नम स्त्रिजगतःपरमेश्वराय ॥

तमने नमस्कार हो हे जिन संसार समुझना नाश करनार
एवा वा सुकवनार एवा ॥ १६ ॥

तुभ्यं नमो जिन जवो दधि शोषणाय ॥१६॥

शु आश्चर्य ठे एमां जे नाम गुणे करिने समग्र एवा ।

को विस्मयोऽत्रयदि नाम गुणै रशेषै ॥

तमो जुक्त ठो अवकाश रहितपणे हे मुनीश्वर ॥

स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥

सर्व दोष ग्रहण कस्वा जे नाना प्रकारना आश्रय तेथी न
पन्यो ठे अहंकार जेमने एवा ।

दोषै रूपात्त विविधा श्रय जात गर्वैः ॥

ते मोटे स्वप्नमां पण नथी क्यारेय पण जोता एवा निर्दो

प तमो हो ॥ १७ ॥

स्वभांतरे पि न कदाचि दपी क्षितो सि ॥१८॥

समो सरणमा उंचा अशोक वृद्धना तले रयेखु ने उंचां ठे
कीरण ते जेना एवु ।

उच्चै रशोक तरु संश्रित मुन्म युख ॥

शोभे ठे स्वरूप जे ते निर्मल तमारु अत्यंत ॥

मा जाति रूप ममल जवतो नितांतम् ॥

ते दृष्टांत प्रगटपणे शोभता ठे किरण ते जेना एवु टाढ्यो
ठे अंधकारनो समूह ते जेणे एवु ।

स्पष्टो ह्यसत् किरण मस्त तमो वितानं ॥

मंजुलनी सूर्यना पेठे मेघनी पासे रयेखु ते सूर्य मंजुल जे
म शोभे तेम ॥ १९ ॥

विवं रवे रिव पयोधर पार्श्व वर्ति ॥ २० ॥

सिंहासनमां घणा मणियोनी कातिनो ऊलकारो तेथी
चित्र विचित्र एवु ।

सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे ॥

शोभे ठे तमारु शरीर सोना सरीखु शुद्ध उज्ज्वल एवु ॥

विभ्राजते तव वपुः कनका व दातम् ॥

ते दृष्टांत मंजुल जे ते आकाशमा विलास करती ठे काति
रूपी लतानो समूह जे तेनो एवु ।

विवं वियद् विलास दशु लता वितानं ॥

उच्च उदया चल पर्वतनु शिखर तेने विषे जेम सूर्यनु मंजुल
शोभे ठे तेम शरीर शोभे ठे ॥ २० ॥

तुंगो दया जि शिरसीव सहस्ररशमेः ॥१९॥

मोघरानां फुल जेवां शुद्ध धोलांने चंचल एवा चामर वते
सुंदरठे शोभा ते जेनी एवुं ॥

कुंदा वदात चल चामर चारु शोभं ॥

शोभेते तमारु शरीर जेते सोनारूपा सरखु मनोहर एवुं ।

विभ्राजते तव वपुः कलधौत कांतम् ॥

ते दृष्टांत उगता चंद्रमासरखी श्वेत उज्ज्वल ने मल रहित ए
वीठे जल धारा जेनेविषे एवुं ॥

उद्यच्छांक शुचि निर्जर वारिधार ॥

उचु शिखरजे ते मेरु पर्वतनुं जेम सोनानुं नाव मेरुपर्वत
ना शिखरनी पेठे शरीर शोभेते ॥ ३० ॥

मुच्चैः स्तटं सुरगिरे रिव शात कौंचम् ॥३०॥

त्रैणवत्र तमारे शोभे ते एक एक उपर चंद्रमा सरखां मनो
हर एवां ॥

उत्र त्रयं तव विजाति शशांक कान्त ॥

मस्तक उपर रक्षां एवां रोक्यो ते सूर्यना किरणनो तरुको
ते जेणे एवुं ।

मुच्चैः स्थितं स्थगित जानु करप्रतापम् ॥

मोतिनी सेखोनो समूह तेनां जालियांवते वधिठे शोभा ते
जेनी ॥

मुक्ताफल प्रकर जाल विवृष्ट शोभं ॥

विख्यात करि कहेते त्रण जगतना परमेश्वरपणाने ॥३१॥

प्रख्या पयत् त्रिजगतः परमेश्वर त्वम् ॥३१॥

विकसित सोनानां नवां वा नव संख्या वाला कमलनो स
मूहनी कांन्तिवते ।

उन्निज हेम नव पंकज पुंज कांति ॥

उल्लास पामती वा शोचती नखना किरणानी शिखायो ते
वते मनोहर एवां ॥

पर्युल्लसन् नख मयूख शिखा चिरामौ ॥

चरणकमल पगलाने तमारा जे स्थानके हे जिनेश्वर मुकेढे
धारणकरढे ॥

पादौ पदानि तव यत्र जिनेंज धत्त. ॥

कमलने तेस्थानके देवता रचेढे जाव तीर्थकर केवली पणे
ज्यारे विहार करेढे तारे देवता सोनानां नव नव कमल आ
गल आगल मुकेढे ते उपर पग धरी चालेढे ॥ ३१ ॥

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥

ए प्रकारे जेवी ऐश्वर्ययुक्त शोभा होयढे हे जिनेश्वर ।

इत्थं यथा तव विभूति रञ्जुज्जिनेज ॥

धर्मनो उपदेश देतीवखत नथी तेवी बीजा कोइ देवादिकनी ।

धर्मोपदेशन विधौ न तथा परस्य ॥

दृष्टात जेवी कांति सूर्यनीढे नाश कखोढे अंधकाजेणीये
एवी ॥

यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रहतां धकारा ॥

तेवी क्पांहांथी होय नक्षत्र समूहनी कातिवाला ठे तो
पण ॥ ३३ ॥

तादृक् कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनो पि ॥ ३३ ॥

ઝરતો એવો મદવતે મલિન ચંચલ જે ગંભીરજનો મૂલજાગ
તેને વિષે ॥

શ્ચોતન્ મદા વિલ વિલોલ કપોલ મૂલ ॥
મદોન્મત્તને જમતા જે જમરા તેના શબ્દ વતે વધ્યો છે કો
ધ તે જેને એવો ॥

મત્ત ભ્રમદ્ભ્રમર નાદ વિરુદ્ધ કોપમ્ ॥
ઈન્દ્રો ઈરાવણ હાથીના જેવો હાથી ને ગાંધો સન્મુખ દો
મી આવતો એવો ।

ઈરાવતા ન મિત્ર મુદ્ધત માપતતં ॥
જોડેને જય હોય નહીં તમારા આશ્રિત જતને ॥૩૪॥
દૃષ્ટા જયં જવતિ નો જવદા શ્રિતાનામ્ ॥
જેદનકરયું જે હાથીનું કુંજસ્થલ તેથી ગલતુને તરતનું માટે
ઝજલુંજે રુધિર તેણે યુક્તજે ।

જિન્નેજ કુંજ ગલ હજ્જલ શોણિતા ક્ત ॥
મોતિનો સમૂહ તેણેકરિને શોનાવ્યોઢે પૃથ્વીનો જાગ તેજેણે
એવા ॥

મુક્તાફલ પ્રકર જૂષિત ભૂમિજાગઃ ॥
ને વાંધેઢે ફાલ વા તલફ તેજેણે એવો પગતલે આવેલો મૃગ
નો સ્વામી સિંહપણ ॥

વદ્ય ક્રમઃ ક્રમગતં હરિણાં ધિપો પિ ॥
નથી પરાજવ કરી સક્તો ચરણ જુગલ રૂપ પર્વતને આ
શ્રીને રચેલા જક્તને તમારા ॥ ૩૫ ॥

ના ક્રામતિ ક્રમ યુગા ચલ સંશ્રિતં તે ॥૩૫॥

प्रलय वा ठग आरासमंदी कालना वायुये वेदिष्यमान क
खोजे अग्नि तेना जेवो आकरो एवो ॥

कटपांत काल पवनो ऋत वन्हि कटपं ॥

दावानलने ज्वालाव्याप्त वा धुक्त एवो ठजलो एवो ने ठंचा
ठवलतावे अग्निकणजेमां एवो ॥

दावानलं ज्वलित मुज्वल मुत्फुलिगम् ॥

जगतने हणवा इठतो होयनै शुं एवो ने सन्मुख आवतो एवो ॥

विश्वं जिघत्सु मिव सन्मुख मापतंतं ॥

तमारा नामनुं केहेवुं तेरूपी जलजेते शमावेठे समग्रने ॥३६॥

त्वन् नाम कीर्तन जलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

लाल जेनां नेत्रवे एवो ने मदसहित जे कोयल तेना गला
जेवो कालो एवो ॥

रक्ते क्षणं समद कोकिल कंठ निल ॥

क्रोधवते वीहामणो एवो सर्पने ठंचीठे फणाजेनी एवो शे
नी आवतो एवो ॥

क्रोधो ऋतं फणिन मुत्फण मापतंतम् ॥

दवावेठे तोपण ते रुसतो नथी पग युगले वा धेये करीने
गइठे शंका ते जेनी एवो ते पुरुष ॥

आक्रामति क्रम युगेन निरस्त शंक ॥

तमारा नामरूपी नागदमनी नामे छंधि हृदयमां ठे जे
पुरुषना ॥ ३७ ॥

स्त्वन् नाम नागदमनी हृदयस्य पुंसः ॥३७॥

घाता वा शिकीत वा चंचल एवा घोमा हाथी तेमना शब्द

वते नयंकरहे कोलाहल ते जेमां एवुं ॥

वदग तुरंग गज गर्जित नीम नाद ॥

संग्राममां सैन्य जे ते बलवाला पण राजायेनुं ॥

माझों बलं बलवता मपि नूपती नाम् ॥

जगता सूर्यना किरणनो समूहवते नाश कस्युं एवुं ॥

उद्यद् दिवाकर मयूख शिखापविधं ॥

तमारु नाम स्मरणथकी अंधारु जेम एम तरतनाश पामे
हे ॥ ३८ ॥

त्वत् कीर्तनात् तम इवा शु निदा मुपैति ॥ ३९ ॥

नालाना अग्रवते नेद्योजे हाथी तेनुं रुधिररूपी जल प्रवाहतेनुं ।

कुंता अ निन्न गज शोणित वारि वाह ॥

वेगसहित आववुं तेमां तरवाने आकुलव्याकुल जे ज्योळा
तेवते नयंकर एवुं ॥

वेगा वतार तरणा तुर योध नीमे ॥

ज्युद्धमां जीत्यने जित्याढे नजिताय एवा कठोर शत्रु पकते
जेमणे एवा ॥

युधे जयं विजित डर्जय जेय पक्षा ॥

तमारा चरणरूपी कमलवननो आश्रय करनार नक्त जेते
पामेढे ॥ ३९ ॥

स्वत् पाद पंकजवन श्रयिणोलनंते ॥ ३९ ॥

समुद्रमां कोन पांम्याजे नयंकर नक्रने चक्र जलचर जीवने ।

अंनो निधौ क्षुनित नीषण नक्र चक्र ॥

मह्यादी जाती तेना पुठन्नाग तेवते नयकरनारने आकरो

वमवानल अग्निवीसेष जेमांठे एवो ॥

पाठीन पीठ नयदो लवण वाम्बवाग्नौ ॥

चपल वा चंचल तरंग वा कल्लोलना उपरिजागमां रहेलांठे
वांहांण जेमनां एहवा पुरुष ॥

रंगत् तरंग शिखर स्थित यानपात्रा ॥

त्रासने मुक्रीने तमारा स्मरणथी सुखे जायठे ॥४०॥

स्त्रासं विहाय नवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४०॥

उपन्योजे नयंकर कठोदरनो रोग तेना नारथी वांका व
लेलाने ।

उन्नूत नीषण जलोदर नार चुन्नाः

शोक करवा योग्य हेवि अवस्थाने पांमेलाने गर्डिठे जीववा
नी आझा जेमनी एवा ।

शोच्यां दशा मुपगता श्र्युत जीविता शा.

तमारा चरण कमलनुं रज रूपी अमृत वते व्याप्तठे देह
जेमना एवाठेतो

त्वत् पाद पंकज रजो मृत दिग्घदेहाः

मनुष्यजेते होयठे काम देवना सरखांठे रूप जेमने एवा
ते ॥ ४१ ॥

मर्त्या नवंति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥

पगथी ते कंठ सुधी मोटी सांकजोवते वीव्याठे अंग जेम
नां एवाने ।

आपाद कंठ मुरु शृंखल वेष्टितांगा

अत्यंत मोटि वेमीयो तेना वेढावते घसाती ठे जांय जेम

वते नयंकरे कोलाहल ते जेमां एवुं ॥

बल्लग तुरंग गज गर्जित नीम नाद ॥

संग्राममां सैन्य जे ते बलवाला पण राजायोनं ॥

माझौ बलं बलवता मपि नूपती नाम् ॥

उगता सूर्यना किरणनो समूहवते नाश कस्युं एवुं ॥

उद्यद् दिवाकर मयूख शिखापविधं ॥

तमारु नाम स्मरणथकी अंधारु जेम एम तरतनाश पामे
ठे ॥ ३८ ॥

त्वत् कीर्तनात् तम इवा शु निदा मुपैति ॥ ३९ ॥

नालाना अग्रवते नेद्योजे हाथी तेनुं रुधिररूपी जल प्रवाहतेनुं ।

कुंता य निन्न गज शोणित वारि वाह ॥

वेगसहित आवुं तेमां तरवाने आकुलव्याकुल जे ज्योक्ष
तेवते नयंकर एवुं ॥

वेगा वतार तरणा तुर योध नीमे ॥

ज्युद्धमां जीत्यने जित्याठे नजिताय एवा कठोर शत्रु पकते
जेमणे एवा ॥

युधे जयं विजित डर्जय जेय पक्षा ॥

तमारा चरणरूपी कमलवननो आश्रय करनार नक्त जेते
पामेठे ॥ ३९ ॥

स्वत् पाद पंकजवन श्रयिणोलनंते ॥ ३९ ॥

समुद्धमां ह्योन पांम्याजे नयंकर नक्रने चक्र जलचर जीवने ।

अंनो निधौ क्षुभित नीषण नक्र चक्र ॥

मझ्यादी जाती तेना पुठन्नाग तेवते नयकरनारने आकरो

वन्वानल अग्निवीसेष जेमांठे एवो ॥

पाठीन पीठ नयदो द्वण वाम्बाग्नौ ॥

चपल वा चंचल तरंग वा कल्लोलना उपरिजागमां रहेलांठे
वांहांण जेमनां एहवा पुरुष ॥

रंगत् तरंग शिखर स्थित यानपात्रा ॥

त्रासने मुकीने तमारा स्मरणथी सुखे जायठे ॥४०॥

स्त्रासं विहाय नवतः स्मरणाद् व्रजति ॥४०॥

उपन्योजे जयंकर कठोदरनो रोग तेना नारथी वांका व
लेलाने ।

उद्भूत नीषण जलोदर नार नुग्राः

शोक करवा योग्य हेवि अवस्थाने पामेलाने गर्ईठे जीववा
नी आशा जेमनी एवा ।

शोच्यां दशा मुपगता श्र्युत जीविता शाः

तमारा चरण कमलनुं रज रूपी अमृत वते व्याप्तठे देह
जेमना एवाठेतो

त्वत् पाद पंकज रजो मृत दिग्घदेहाः

मनुष्यजेते होयठे काम देवना सरखा ठे रूप जेमने एवा
ते ॥ ४१ ॥

मर्त्या नवंति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥

पगधी ते कंठ सुधी मोटी साकजोवते वीव्याठे अंग जेम
नां एवाने ।

आपाद कंठ मुरु शृंखल वेष्टितांगा

अत्यंत मोटि वेम्नीयो तेना वेम्नावते घसाती ठे जाघ जेम

नी एवा डखीया पण तमारा नामरूपी मंत्रने निरंतर म
नुष्य संनारेढे तो

त्वन् नाम मंत्र मनिशं मनुजाः स्मरंतः
तत्काल पोतानी मेले गयुढे बंधननुं जय जेमने एवा होय
ढे ॥ ४२ ॥

सद्यः स्वयं विगत बंध जया जवंति ॥ ४२ ॥
मदोन्मत्त हाथी तथा सिंह तथा दावानल तथा सर्प ।
मत्त द्विपेंड मृगराज दवानलाहि
तथा ज्युड तथा समुड तथा कठोदर वा जलोदर तथा बंद्धि
खानु तेथी उपन्यु एवुं ॥

संग्राम वारिधि महोदर बंधनोढम्
ते पुरुषनुं तरत नाश पामेढे जय जेते बीके करीनेज शु
जाणे ।

तस्याशु नाश मुपयाति जयंजियेव
जे तमारु स्तोत्रने आ बुद्धिमान जणेढे ॥ ४३ ॥
य स्तावकं स्तव मिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्ररूपी मालाने तमारा हे जिनेश्वर गुणावते रचेली ए
हवा ।

स्तोत्र स्रजं तव जिनेंज गुणैर्निबद्धां
जक्तिये करीने मे सुंदर अक्षर रूपी आकृति चित्रविचित्र
ढे पुष्प जेमां एवी ॥

जक्तया मया रुचिर वर्ण विचित्र पुष्पम्
धारण करेढे लोक जे आजगतमां कंठे रही एहवी निरंतर

वा सदाय ।

धत्ते जनो य इह कंठ गता मजस्र

ते मानवत मोटा पुरुषने वा स्तोत्र करता मानतुंग आचार्य
ने अवश्य वा नीयमा पामेढे लक्ष्मी शोभा जेते ॥४४॥

तं मान तुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

समाप्त जक्तामर स्तोत्र जेते ।

॥ इति श्रीजक्तामर स्तोत्रं समाप्तं ॥

हेवे कल्याण मंदिर टंवार्थ केहेढेः ॥

॥ अथा कल्याणमंदिरलिख्यते ॥

प्रथम मंगलीकनणी श्रीपार्श्वनाथना चरण कमल प्रत्ये प्र
णाम करेढे ते केहवाठश्चरण कल्याण कहतां शुभ तेहना
मंदिर घरढे वली उदार कहता उत्कृष्टढे वली अवद्य पाप
तेहनी जेदि कहतां नेदनहारढे वलीकिस्योढई अंग्रिपद्म ।

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि

जीताजयप्रद केः संसारथकी जय पामेलाने अजय भापे
एवु वली किस्यो वै अनिदितं श्लाघा प्रसंशायोग्यं अंग्रिपद्मं
के० चरणकमल वली किस्याठई अंग्रिपद्म ॥

जीताजयप्रदमनिंदितमंग्रिपद्मं

संसार सागर केहेता जवसमुझ तेहनिं विपश्निमजन् वूरु
ता अशेष केहेता समस्त जंतु प्राणियो जव्यलोक तेहनि
तारवाजणी इत्यर्थः ।

संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु

पोतायमानं केहेतां प्रवहणसमान अजिनम्य केहेतां नम

स्कारीनइं जिनेश्वरस्य केहेतां जिनसमान्य केवली माहिं
इश्वर परमेश्वर श्रीपार्श्वनाथजीना गुणवर्णवेढे ॥ १ ॥

पोतायमानमज्जिनस्यजिनेश्वरस्य ॥ २ ॥

यस्य केहेतां जे श्रीपार्श्वनाथनो स्वयंपोत्तइं सुरगुरु वृहस्पतिदे
वता जेते श्रीपार्श्वनाथ जे तेमनो महिमा रुप समुझ जे तेनु
गरिमांबुराशोः गरिमा केः मोटमताये करी समुझसरीखाठइं ।

यस्यस्वयंसुरगुरुर्गरिमांबुराशोः

स्तोत्रंस्तवनं सविस्तरबुद्धिनो धणीइस्योवृहस्पतितेपणिनवि
ज्जुः समर्थनही विधातुंकरुं करि वा जणी श्रीपार्श्वनाथ तेह
नो स्तोत्र श्रीपार्श्वनाथ केहवाढे ॥

स्तोत्रंसुविस्मृतमतिर्नविज्जुर्विधातुं

तीर्थेश्वरस्य कहतां चतुर्विध श्रीसंघ तेहनो ईश्वर कहतां
धणीठै वली किस्याठै श्रीपार्श्वनाथ कमठस्मयधूम केतांः
कमठासुर तेहनो स्मय के० गर्व तेहने हणवा जणी धूमकेतु
ग्रहसमान सरिखाठै इत्यर्थः ।

तीर्थेश्वरस्यकमठस्मयधूमकेतो

ते श्रीपार्श्वनाथनो एव आहुं कवि कहेढे किल सत्य संस्तवनं
केहेतां जलु स्तोत्र जलो गुणवर्णना रूपकरिण्ये करिस्युं जलो
स्तवन करिण्ये क० करिस्युं इम कवीश्वर कहेढे ॥

स्तस्याहमेषकिलसंस्तवनंकरिण्ये ॥ ३ ॥

कवि श्रीकुमुदचंड आपणो गर्व उतारवा जणी ए त्रीजु
काव्य कहेढे सामान्यतोपिसंक्षेपथकी हे श्रीपार्श्वनाथ तव
केहेतां ताहरो वर्णयितुं कहि वा जणी स्वरूप कहतां रूपप्रति ।

सामान्यतोपितववर्णयितुंस्वरूप

असमादृशाः केहेता मुज सरीपा मनुष्य कथं केहेतां किम
हे अधीश हे स्वामिन् नवंति केहेता हुवै अधीशाः केहेता स
मर्थ इत्यर्थः ॥

मस्मादृशाः कथमधीश नवत्यधीशाः

धृष्टोपि केहेतां भड्डे तोपणि कौशिकशिशु केहेतां घुयम
जे तेनो वालक घणु प्रवीण हुइ तोपणि यदिवा केहेतां जे
पक्षांतरनेविपइ दिवसइ अंध एहवो थको ।

धृष्टोपिकौशिकशिशुर्यदिवादिवांधो

रूपंस्वरूप प्ररूपयति केहेतां प्रगटपणे कही शके कि
केहेतां किलसत्ये धर्मरश्मे. श्रीसूर्यनो अपितु न कही शके
ए सूर्यस्वरूप धूम न कही शके तेम हुं तुमस्वरूप कही न
शकुं ॥३॥ इत्यर्थः

रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहनी कर्मना क्य करवायकी अनुभवन्नपि केहेतां जाणी
ये ठीये सर्ववाततोहीपण हे नाथ हे स्वामि मर्त्य केहेता
मनुष्य ।

मोहक्यादनुभवन्नपि नाथमर्त्पो

नूनं केहेता निश्चयथकी गुणान् कहता गुणप्रति गणयितुं
कहतां गणवान्जणी संख्या करिवा जणी तव केहेतां ताहरा
अहोश्री पार्श्वदेव नक्षमेतसमर्थ नहुइ तिहा दृष्टांत कहैठई ॥

नूनगुणान् गणयितुं न तव क्षमेत

कट्यांतवातपयस कहतां प्रजयकाले वांतवान्पुंठे पय के

हेतां पाणी जे समुडे एसा समुझनो प्रकटोपि के० प्रगट हुन
बाहिर निसस्यो जे कारण माटे ।

कल्पान्तवांतपयसःप्रकटोपियस्मा

मीयेत केहेतां गणी सकिए केणइपुरुषइ जलधेः स
मुझनो ननुनिश्चयथकी रत्नसमुह जिमकिणही गुणो न जा
य तिम ताहरा गुण गणया ना जाय ॥ ४ ॥

न्मीयेतकेनजलधेर्ननुरत्नराशिः ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोस्मि केहेतां उद्यमवंत हुं अयोवुं आलस प्रमाद र
हित तव ताहरो हे नाथ हे स्वामिन् केहवोवुं अपिनिश्चय
सुंजमाशय केहेतां मूर्खहृदयवुं निर्वुक्खिं तुोपण ॥

अभ्युद्यतोस्मितवनाथजमाशयोपि

करि वा जणी स्तवंस्तवनप्रतिं लसदसंख्यगुणाकरस्य ल
सन् दीपता जे औदार्यादिक गुण तेहनो आकरस्य केहेतां
आगर स्थानकइस्या पार्श्वनाथनो हुं मूर्खघको ताहरु स्तोत्र
करुंवुं तिहां दृष्टांत कहेवे ।

कर्तुंस्तवंलसदसंख्यगुणाकरस्य

बालोपि बालकपणि किं केम न केहेतां नही निजबाहुयुग पो
ताना बिहु हाथप्रति विस्तारिनें लांवा करीनइ ॥

बालोपिकिननिजबाहुयुगंवितत्य

विस्तीर्णतां विस्तारपणा प्रतिं कथयति कहतां कहइं स्वी
धीया कहितां पोतानी बुद्धिये करी अंबुराशेः के० समुझनो

विस्तीर्णतांकथयतिस्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

येयोगिनां के० जे सर्व गुणताहरा योगीश्वरोनइं पण

नयाति गुणाः केहेतां गुण तव ताहारा हे इश हे प्रजो ॥

येयोगिनामपिनयांतिगुणास्तवेश

वक्तुं कहि वा जणी कथकिम जवति केहेतां होय तेपुतेगुण
न विपे ममावकाश कहता माहरो अवकाश किमहस्यई ।

वक्तुकथंजवतितेपुममावकाशः

जाता केहेतां थई तदेवं केहेतां ते असमीक्षितकारिता
कहतां अणदीवुं काम करिबुं ते असमिक्षितकारिताथइदीस
इंठई जे वातनी सामर्थ्यई नही ते काम करतां हासी था
य इत्यर्थः ॥

जातातदेवमसमिक्षितकारितेयं

ते दोष टालवा जणी कवीश्वर दृष्टांत कहैठै वा पक्षांतरे
ननुनिश्चितं पक्षिणोपि केहेतां पंखिओठे ते पण निजगिरा
आपणी वांणीइं करीने जल्पंति कहितां बोलैवइं तिम हुं
माहरी मति सारू श्रीपार्श्वनाथजीना गुण कहुं ॥ ६ ॥
इत्यर्थः

जल्पंतिवानिजगिराननुपक्षिणोपि ॥६॥

हे जिन हे श्रीपार्श्वनाथ ते तव ताहरो संस्तव कहितां स्तो
त्र आस्तां कहता अलगो रहो कवीश्वर ताहारा स्तोत्रने दूर
करेठे ते किम स्तवनमाहि कांई दोष ठे एहवी शंका टाल
वा जणी विशेषण केहवो कहइंठई स्तोत्र अचित्यमहिमा
न चितवी सकिइं जेहनो महिमा

आस्तामचित्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते

अपिनिश्चितंजवतः ताहरो नामठे ते पण जवतः कहतां मं

सारथकि जगंति त्रिणज्जवनप्रतिपाति कहतां रापई ताहरे ना
मेनवढेदहुइंतो स्तोत्रनुं कार्य किस्युं तिहां दृष्टांत कहइं ठई

नामापिपातिनवतोन्नवतोजगंति

तीव्रातपोपहत कहतां तीव्रअत्यंत आकरो आतप तरुको
तेणइं उपहत पीमाणा जे पंथी जनान् कण मारग वेहता
लोकप्रति निदाघे कहतां ग्रीष्मऋतुनइं विषे

तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे

प्रीणातिसंतोषपमामइ पद्मसरसः केहेतां पद्म सरोवरनो स
रसः केहेतां सीतल अनील केहेतां वायरो जिम वाय रइं
उष्णता दोष टाढ्यो तो पद्म सरोवरनुं गुं काम तिम
ताहरा नामथी निस्तार हुवेतो स्तोत्रनुं स्युं काम ॥ ७ ॥

प्रीणातिपद्मसरसःसरसोनिलोपि ॥७॥

इत्यर्थः

हे स्वामिन् हृदयनइं विषइं वर्त्ततइंथकइ त्वयिइं कहतां त
इं हे प्रज्जो हे नाथ शिथिलीज्वंति शिथिलबंध ढीला हुइ
स्युशिथिल हुइं ते कहइंठइं

हृद्वर्त्तिनित्वयिविज्जोशिथिलीज्वंति

जंतोः प्रव्य जीवना क्षणेन कहतां क्षिणमाहि निवम्मा कह
तां निश्चयघणुंकाठा अपिनिश्चयस्युंकर्मबंधाः आठकर्मतइप
बंधन तिहां दृष्टांत कहिहै अर्थनिश्चल करी वा जणी ॥

जंतोःक्षणेननिविमाअपिकर्मबंधाः

सद्यः कहतां उतावलन जुजंगममयाः कहतां सर्पबंधनै
इवनपमार्यथ जिम सर्पना बंध ढीला परइं मध्य जागइं

विचालेयके ।

सद्योभुजंगममयाश्वमध्यजाग

अभ्यागते केहेतां आवेठते वनशिखंमिनि केण्वननोमयूर ते
चंदनस्य के० वावनाचंदनना वृद्धना ॥७॥

मभ्यागतेवनशिखंमिनिचंदनस्य ॥ ७ ॥

मूच्यंते केहेतां मूकायठेज मनुजा केहेतां मनुष्यो जेते
सहसा के० उतावला जिनेंइ के० हे सामान्य केवलजिनाइंइ ॥

मुच्यंतएवमनुजाःसहसाजिनेंइ

रौडैः केहेता जयंकर हेवा उपश्वशतैः के० डखना सें
कमा ते थकी त्वयिवीक्षितेपि के० तमोने दिठेठते ॥

तां इष्टांत कहेठे जेमके ॥

रौडैरुपश्वशतस्त्वयिवीक्षितेपि

गोस्वामिनि केहेतां किरणोनो स्वामीजे सूर्य वा पृथिवीनो
स्वामी जे राजा ने गायोनो स्वामि गोवाल ३ ए त्रण्य अर्थ
हेवे गो स्वामी केवाठे स्फुरितेजसि के० जेनुं दृष्टमात्रे के०
जोवायेठते ॥

गोस्वामिनिस्फुरितेजसिदृष्टमात्रे

चौरैरिव केहेता जिम चोरे पशवः केहेतां गाय जेंस मूकी
प्रपलायमानैः केहेतां उतावला नासेठे जिम चोरे पशु ठोरी
गोस्वामीये दीठेयके विघ्न रहित हुए एम तमोए दिठेसते कर्म
चोर नासेठे ए जावार्थ जाणवो ॥८॥

चौरैरिवाशुपशवःप्रपलायमानैः ॥ ८ ॥

इवे कविश्री कुमुदचंड श्रीपार्श्वनाथजीनी निदास्तुतिरूप

काव्य कहेठे हे जिनत्वं कहितां तुं तारक जव्योने तारणहार
कथंकिमकहिइं तेहिज भव्य लोक एव कहतां निश्चयसेती ।

त्वंतारकोजिनकथंजविनांतएव

त्वांतुऊप्रतिं के० उद्धंति केहेतां तारइठै हृदये के० हृदये
करीनें चित्तमांध्यावेतेतुऊनिंतारेठे जेकारणमाटिंउत्तरंयेतः
केहेतां जवसंसार थकी उतरताथका इति निंदा हवै स्तुति
कहइठै ॥

त्वामुद्धंतिहृदयेनयउत्तरंतः

यत् जे माटिं वा विकल्पे एपकहितांआवृति केहेतां चांमरा
नि मसक नूनं कहतां निश्चइं यज्जनं जे पांणी प्रतिंतरति
केहेतां तरइ ठै

यद्वाटिस्तरतियज्जलमेषनून

अंतर्गतस्य के० माहेगत प्राप्त हुउ दीवरीमांहिं मसकमांहि
पेठो मरुत वायरो स केहेतां ते किलनिश्चयसुं अनुज्ञाव
प्रज्ञावजे दीवरीतरे ते प्रज्ञाव पवननो जांणवो तिम हे श्री
पार्श्वदेव आज्ञव्य लोक तरेठे तेतुऊनिं ह्रीयामांहिं राषइ तेह
थी तरइठे दीवरी सरिषा लोक पवनसम तारोध्यान ॥१०॥

मंतर्गतस्यमरुतःसकिलानुज्ञावः ॥१०॥

यस्मिन् के० कंदर्पनइं विषे हरप्रभृतयः श्रीमहादेव प्रमुख
सगला देव अपिनिश्चयसुं हतप्रज्ञावाः केहेतां हणाणुं ठे मा
हात्म्य जेहोनुं एहवा थया ॥

यस्मिन्हरप्रभृतयोपिहतप्रज्ञावाः

सोपि के० तेपण रतिपतिः के० कामदेव त्वया के० तमोये क

लोतके० कृण एकमाहि क्षपितः के० हण्यो ते कदर्पदेवनंजी
त्यो ता दृष्टात कहेवे

सोपित्वयारतिपतिःक्षपित क्षणेन

येन के० जिणपाणीडंहुतजुज के० अग्नि विध्यापिता केहे
ता बुजाव्या समाविया ॥

विध्यापिताहुतभुजःपयसाथयेन

तत्पानियं अपि ते पाणी डुर्द्धरवाम्नेन के० सबलइं वरुवा
नलइं नपीतं नपीधुंशु अपितुपीधुं जिस्यो वरुवानल तिस्यो
श्रीपार्श्वनाथ जिस्योपाणी तिस्यो कदर्प जिस्यो बीजो
अग्नि तिस्या हरिहर प्रमुख जाणवा इति ज्ञावार्थ. ॥११॥

पीतंनकितदपिडुर्द्धरवाम्नेन ॥११॥

हे स्वामिन् अनल्पगरिमाणं कहता तोलवाने अयोग्य तो
ढ्युं नजाय गरिष्ठपणुं जेहनुं इस्तातुंप्रति अपिनिश्चयसु प्रप
न्ना. पान्या एहवा तो कृण ते कहेवइ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपिप्रपन्ना

जंतवः प्राणीया त्वाकहता तमो प्रति अहोअश्वर्यं कथंचित्
महता आदरेणभोटे आदरइकरीनइ हृदये हीयानि प्रपइ
दधाना धरतावे इतिज्ञाव. ।

स्त्वार्जंतवःकथमहोहृदयेदधाना

जन्मोदधिं केहेता नवसमुद्र प्रति लघुतरति शीघ्रतरेवे कु
ण पूर्वे कह्या तेजंतव. प्राणिआ अतिलाघवेन कहता अति
उतावजिपाणि करीनइ ॥

जन्मोदधिलघुतरन्त्यंतिलाघवेन

घणुं अत्यंतजारी वस्तुहीया आगलि जिवारेधरी जे तिवारे
हलूआंपण तरीनसकइं अनिंजव्यजीव ताहरो गरिष्ठध्यानं
करताथका शीघ्रतरे तो कवि कहे महतां मोटारो प्रज्ञाव
अचिंत्य चींतव्यो नजाय हंत इति निश्चे ॥ १२ ॥

चित्योनहंतमहतांयदिवप्रज्ञावः ॥१२॥

हे विज्ञो हे स्वामिन्यदि केहेतां जो त्वया तइं क्रोधरूप वै
री प्रथम पहिलो निरस्तः केहतां दूर कख्यो जे माटिं क्रोध
मान माया लोभ तज्या ठे ॥

क्रोधस्त्वयायदिविभोप्रथमंनिरस्तो

तदा कहतां तनु बतइति प्रश्ने किलनिश्चितं कथं किम कर्मचौ
रा आठ कर्म रूप धनना हरणहारानेकथंध्वस्ताः किम ह
एया जीवने क्रोध उपजे तिवारे वैरी मराय क्रोधवि ।

नामाख्यो न जाय ए शंका टालवा नणी दृष्टांत कहेठे ॥

ध्वस्तास्तदावतकथंकिलकर्मचौराः

यदिं वा पक्षांतरे अमुत्र लोके इह लोकनि विषइपणि शिशि
रापि कहतां सीतल ठइतोपण ॥

श्लोषत्यमुत्रयदिवशिशिरापिलोके

नीलडुमाणि केहेतां नीलाळे डुमजिहां इस्या विपिनवन ते
प्रतिहिमानी केहेतां बरफ ते पण स्युंनश्लोषति न बाले अपि
तुश्लोषतिबाले तिमतुह्ये कर्म चोरने हणया इतिज्ञावार्थः ॥१३॥

नीलमाद्रुणिविपिनानिनार्केहिमानी ॥१३॥

हे जिन सदासदैव त्वांतुज प्रति योगिनः केहेतां योगिश्वर
ठे ते पण परमात्मा रूप केहेतां परमेश्वर रूपे करीने (सर्वोत्तम

(करीने ॥

त्वांयोगिनोजिनसदापरमात्मरूप

अन्वेपयंति तुजनेदेखेढे हृदयावुजकोश कहेतां हृदय कमल
तेहनो मध्य ज्ञाग देशने विषे ॥

मन्वेपयंतिहृदयांवुक्ताकोशदेशे

तिहां दृष्टांत कहेढे पुतस्य पवित्र (दोष रहित) वली निर्मल
रुचेः निर्मल ठे काति ते जेहनि एवुं अथवा शु विजु ॥

पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य

अहस्य के० कमलना बीज तेहना संजवेढे ननु कहतां निश्चय
कर्णिकाया. कहता कमल नाज्जी तेहथी स्थानक अने रोकि
अन्यत् बीजोपदं स्थानं संजवति संजव होइ अपितु नहुइ
जिम कमल बीज कमल कर्णिकाथी अन्यत्र नहुइ तिम
तिहारो ध्यान योगिश्वरना चितविना नहुवइ ॥१४॥

दहस्यसंजविपदंननुकर्णिकायाः ॥१४॥

ध्यानात् कहता ध्यान हुती हे जिनेश्वर जवतः कहता तुमा
रा जविन प्राणिआतेक्षणो कहता क्षणकमाहि देह कहता
शरीर प्रति ॥

ध्यानाज्जिनेशभवतो जविनःक्षणेन

शरीर प्रति कहतां देहं विहाय कहता ठोरीने परमात्मदशा
कहता मुक्ति पद प्रति व्रजतिजायठे तिहां दृष्टांत कहइठे ॥

देहंविहायपरमात्मदशां व्रजंति

तीव्रानलात् कहतां आकरो अग्नि तिण थकी उपलजाव
कहता पापाणजाव प्रति अपास्य ठांडीने लोक कहइतां

लोकने विषे पण दीसेढे ॥

तीब्रानलाडपलजावमपास्यलोके

चामी करत्वं कहतां सुवर्णं जाव प्रतिअचिरात्स्तोक काल
अकीज यथार्थवाची धातुजेदाः कहतां ताम्रादिक धातु जेम
ताम्रादिक धातु अग्नि प्रसंगशी सौवर्णं पणु पामइं तिम
ताहरा ध्यानथी ज्ञव्यजीव परमेश्वर पणुं पामइं इति ज्ञा
॥ वार्थ १५ ॥

चामीकरत्वमचिरादिवधातुजेदाः ॥१५॥

हे जिन सदा निरंतर यस्य कहतां जे शरीरमांहि अंतः क
हतां तुं प्रति विज्ञाव्यसे कहतां विचारी जइ किणइ विचारी
जइ ते कहीढीए ॥

अंतःसदैवजिनयस्यविज्ञाव्यसेत्वं

ज्ञव्यैः कहतां ज्ञव्यजीवे तदपि (तोपण) शरीर कहेतां तिण
शरीर (देह) प्रति कथं कहेतां तूं किमनाशयसे कहितां
विणासय ठइ इति दोषः ॥

ज्ञव्यैःकथंतदपिनाशयसेशरीरं

अथ कहतां दोष निवर्त्त करवाज्जणी हि नीश्रयसुं मध्य वि
वर्त्तिनः कहतां समविचाले रह्यां इस्या जे पुरुष तेओनो
एतत्स्वरूपं एहिज स्वरूपढे (एहज आचारढे) ॥

एतत्स्वरूपमथमध्यविवर्तिनोहि

यत् जे कारण माटे महानु जावा मोटो अनुज्ञाव (प्रज्ञाव)
जेहोनो एहवा सत्पुरुष ते जिवारइ मध्य वर्त्ति हुवे तिवारें
विग्रह कहीइ शरीर प्रति प्रशमयंति शमावइ ॥ १६ ॥

यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुजावा ॥१६॥

हवे कवि आत्मा परमात्मा करी वखाणठे हे जिन अयं कहता एते आत्मा मनीषिनिः पंमिने त्वदज्ञेद्वुध्या ताहरी अज्ञेद बुद्धिये करीने ॥

आत्मामनीषिन्निरयं त्वदभेद्वुध्या

ध्यातो के० ध्यानं कर्यो अने हे जिनेइ इह कहता इण लोक ने विपईं जन्मप्रज्ञाव. के अहो श्री पार्श्वदेव ताहरो प्रज्ञाव ज्ञवति कहेता हुवइ कवि तिहां दृष्टांत कहेठे ॥

ध्यातो जिनें ज्ञवतीह ज्ञवत्प्रज्ञावः

पानीयं के० पाणिष्ठे ते पण अपिनिश्चित अमृत कहतां सुधा इत्यनु चिंत्यमानं कहता इणइपरिं चीतव्युं अकुं (पाणी अमृत करी जाण्यो हुंतो) ॥

पानीयमप्यमृतमित्यनचिंत्यमानं

किं नामनः कहता स्युं प्राणियोनो विष विकार कहतां जे ह रना विकारने न अपाकरोति दूरनकरे अपितु करेज जि म पाणी अमृत चितव्यो हुंतो पाणी अमृत करी जाण्यो हुंतो विष प्रतिं छुर करे तिम आत्मा ताहरी बुद्धी ध्यायो हुंतो ताहरोज प्रज्ञावः ॥ १७ ॥

किं नामनो विष विकारमपाकरोति ॥१८॥

अहो श्री पार्श्वदेव त्वामेव कहता तुं प्रतिइहिज परवादिनो पि कहतां परतीर्थी मिथ्यात्वीठे ते पण विततमसं कहतां (अज्ञान रहित) ज्योती स्वरूप कथयन्ति कइइठइ ॥

त्वामेव वीततमसपरवादिनोपि

परवादी कस्याठे नूनं कहतां निश्चय सुं हे विज्ञो हे नाथ
हरिहरादिधिया कहतां हरिकृष्ण हरमहादेव प्रमुख गणेश
खेत्रपालादिक रिधि बुधीये करीने त्वांप्रपन्नाः कहतां तमा
रो आश्रय करिने रह्याठे ते ऊपर दृष्टांत कहेठे ॥

नुनंविज्ञोहरिहरादिधियाप्रपन्नाः

काचका मलि निः कहेतां कमल वायु हुन ठे जेहने ए
हेवे पुरुषे सितः शंखः कहेतां धवलो ठे शंख तो पण हे
ईश हेपरमेश्वर किं० शुं ॥

किंकाचका मलिनिरीश सितोऽपिशंखो ॥

विविधवर्ण विपर्ययेण कहेतां विविध विचित्र रातो पीलो
नीलो प्रमुख जे वर्ण तेहनो विपर्यय संभ्रमपणो तिणइं
करीने नोगृह्यते कहेतां स्युं न गृहिइं अपितु गृह्यते ग्रहिइं
॥ १८ ॥

नोगृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥

हे स्वामिन् धर्मोपदेश समये कहेतां धर्मदेशना निंसमय
इं (अवसरनें विषइं) सविधानुज्ञावात् कहेतां समीप रे
हवाना प्रज्ञाव थकी ॥

धर्मोपदेश समये सविधानुज्ञावा ॥

आस्तां कहेतां अलगो रहो कजंश जनः (लोक) सचैतन्य
(मनुष्य) तव कहेतां ताहरा तरु पि वृद्ध पण अशोको नवति
शोक रहित ठेये तो लोक तो शोक रहित हुइज सदा आ
नंद सहित हु वेज ॥

दास्तांजनो नवति तेतरुप्य शोकः

(दिनपतौ के०) सूर्यनो (अभ्युज्जते के०) उदय थये ठते
(समहीरुहोपि के०) वृक्षादिके सहित एवो पण

अभ्युज्जते दिनपतौ समहीरुहोपि,

(जीवलोकः के०) जीवलोक (किवा के०) शुं (विवोधं
के०) विकाशपणाने (न उपयाति के०) न पामे ठे ?
अर्थात् पामे ठे ॥ १९ ॥

किंवा विवोध-मुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

(विजो के०) हे स्वामिन् । (चित्रं के०) आ आश्चर्य ठे
के (कथं के०) केवी रीते (मवाङ्मुख के०) नीचुं ठे मुख
जेनुं एवुं जे (वृत्तं के०) बीट, ते (एव के०) जेम होय तेम

चित्रं विजो कथ-मवाङ्मुख वृत्त-मेव,

(अविरला के०) निरंतर (सुरपुष्पवृष्टिः के०) देवता
उए करेली पुष्पनी वृष्टि (विष्वक् के०) चारे तरफ (पतति
के०) पड़े ठे ।

विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ॥

(मुनीश के०) हे मुनियोना स्वामी । (त्वज्जोचरे के०)
तमो प्रत्यक्ष ठते (सुमनसा के०) शोभायमान ठे मन
जेमनां एवा न्नव्यजनो (यदिवा के०) अथवा देवताज,
तेमनां

त्वज्जोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश,

(बंधनानि के०) बंधनो (नूनं के०) निश्चे (हि के०) जे
कारण माटे (अथएव के०) नीचेज (गच्छन्ति के०) जाय
ठे. ॥ २० ॥

गच्छन्ति नून-मधएव हि बंधनानि ॥५०॥

(स्थाने के०) ए युक्तज ठे (गन्नीर के०) गंन्नीर (हृदयो दधि के०) हृदय रूप समुद्र थकी (संज्ञवायाः के०) उत्पन्न थएली

स्थाने गन्नीर हृदयोदधि संज्ञवायाः,

(तवगिरः के०) तमारी वाणीना (पीयूषतां के०) अ मृतपणाने, श्रोताजनो (समुदीरयन्ति के०) कहे ठे.

पीयूषतां तवगिरः समुदीरयन्ति ॥

(यतः के०) जे कारण माटे, तमारी वाणीनुं (पीत्वा के०) पान करीने (परमसंमद के०) उत्कृष्ट हर्षना (संग ज्ञाजो के०) संयोगने ज्ञजनारा एवा

पीत्वा यतः परमसंमद संगज्ञाजो,

(ज्व्याः के०) ज्व्य जीवो (तरसापि के०) शिघ्रपणे (अजरामरत्वं के०) अजरामरपणाने (व्रजन्ति के०) पामे ठे ॥५१॥

ज्व्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ ५१ ॥

(स्वामिन् के०) हे स्वामिन् ! (सुदूरं के०) अत्यन्तपणे (अवनम्य के०) नीचा नमीने, फरी (समुत्पतन्तः के०) कुंकचां उठलतां एवां,

स्वामिन् सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,

(शुचयः के०) पवित्र एवा (सुरचामरौघाः के०) देवता उए वीर जेला चामरोना समूह, नीचे प्रमाणे (वदन्ति के०) कहे ठे, मनुहुं (मन्ये के०) मानुं ठुं.

मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥

(ये के०) जे मनुष्यो (यस्मै के०) आ प्रत्यक्ष (मुनि
पुंगवाय के०) मुनियोने विषे प्रधान श्री पार्श्वनाथस्वामीने
(नति के०) नमस्कार (विदधते के०) करे ठे,

येऽस्मै नति विदधते मुनिपुगवाय,

(ते के०) ते मनुष्यो (खलु के०) वाक्यालंकारे (नृनं के०)
निश्चे (ऊर्ध्वगतयः के०) ऊर्ध्व गतिवाला अने (शुद्धनावाः
के०) शुद्धनाववाला थाय ठे. ॥ २१ ॥

ते नून-मूर्ध्वगतयः खलु शुद्धनावाः ॥२१॥

(श्यामं के०) श्यामवर्ण युक्त, तथा (गज्जीरगिरं के०)
गज्जीर वाणीवाला, तथा (उज्ज्वल के०) निर्मल (हेमरत्न
के०) सुवर्ण अने रत्ने मिश्रित एवा

श्यामं गज्जीरगिर-मुज्ज्वल हेमरत्न,

(इह के०) आ समवसरणने विषे (सिंहासनस्थं के०)
सिंहासन उपर बेठेला (त्वां के०) तमोने (ज्व्यशिखंमिनः
के०) ज्व्यजीव रूप मोर

सिंहासनस्थ-मिह ज्व्यशिखंमिनस्त्वां ॥

(रत्नसेन के०) उत्सुकपणाय करीने (आलोकयन्ति के०)
जुवे ठे. ते एवी रीते के, (उच्चै के०) उंचे स्वर करी (न
दंतं के०) शब्द एटले गर्जना करतो

आलोकयन्ति रत्नसेन नदंत-मुच्चै-

(चामिकरादि के०) मेरुपर्वतना (शिरसि के०) शिख
रने विषे (नवांबुवाहम् के०) नवो मेघज होय नहि ।
(इव के०) जेम ॥ २२ ॥

श्वामिकराञ्चि शिरसीव नवांबुवाहम् ॥७३॥

हे स्वामिन् ! (तव के०) तमारा (उज्ज्वता के०) उंचे
प्रसरता (शितियुतिमंफलेन के०) श्याम प्रज्ञाना ज्ञामं
मूले करी

उज्ज्वता तव शितियुतिमंफलेन,

(लुप्त के०) लोपाणी ठे (छद के०) पानडानी (छविः
के०) कांति जेनी, एवो (अशोकतरुः के०) अशोकवृक्ष
(वज्रूव के०) थतो हवो.

लुप्त छद छविरशोकतरुर्वज्रूव ॥

(यदिवा के०) अथवा (वीतराग के०) हे वीतराग !
(तव के०) तमारा (सान्निध्यतोऽपि के०) सान्निध्य
थकी पण

सान्निध्यतोऽपि यदिवा तव वीतराग,

(सचेतनोपि के०) चेतन सहित एवो पण (कः के०) कोण
(नीरागतां के०) नीरागताने (न व्रजंति के०) न पामे ?
अपितु पामेज ! ॥ ७४ ॥

नीरागतां व्रजति को न सचेतनोपि ॥७४॥

(जो जोः के०) हे जगत्ना लोको ! तमे (प्रमादं के०)
प्रमादने (अवधूय के०) ठांडीने (एनं के०) ए श्री पा
श्वनाथ प्रभुने (नजध्वं के०) नजो.

जोजोः प्रमाद—मवधूय नजध्व—मेन—

(आगत्य के०) आवीने (निर्वृतिपुरिंप्रति के०) मोरु
पुरी प्रत्ये (सार्थवाहम् के०) सार्थवाह तुल्य (प्रभुने नजो)

मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम् ॥

(देव के०) हे देव ! (एतत् के०) आ प्रकारे (जगन्न
याय के०) त्रण जगत्ने (निवेदयति के०) निवेदन करे
वे-जाहेर करे वे.

एतन्निवेदयति देव जगन्नयाय,

(ते के०) तमारो (सुरङ्गञ्जिः के०) देवङ्गञ्जि (अग्नि
नः के०) आकाशने व्यापीने (नदन् के०) नाद करतो थको
(जाहेर करे वे) एम हुं (मन्ये के०) मानु हुं. ॥ २५ ॥

मन्ये नदन्नग्निनः सुरङ्गञ्जिस्ते ॥ २५ ॥

(नाथ के०) हे नाथ ! (नवता के०) तमोए (नुवनेपु
के०) त्रण नुवनने (उद्योतितेपु के०) प्रकाशित करे ठते

उद्योतितेपु नवता नुवनेपु नाथ,

तारान्वितः के०) तारामंमले करी सहित, तथा (वि
हताधिकारः के०) विशेषे करी हणाणो वे प्रज्ञाव जेनो
एवो (अयं के०) आ (विधुः के०) चंडमा

तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥

(मुक्ताकलाप के०) मोतीना समूह (कलित के०) स
हित अने (उद्धसित के०) उद्धसित एवां जे (आतपत्र
के०) त्रण उत्र, तेना

मुक्ताकलाप कलितोद्धसितातपत्र,

(व्याजात् के०) मीशे करीने (त्रिधा के०) त्रण प्रकारे
(धृततनुः के०) धारण कस्युं वे शरीर जेणे एवो चंडमा
(ध्रुवं के०) निश्चे (अच्युपेतः के०) तमारी सेवाने अर्थे

जाणे पासे आव्यो होय नहि शुं ! ॥ ३६ ॥

व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ३६ ॥

(स्वेन के०) पोताना (प्रपूरित के०) प्रकर्षे करीने पू
खुं ठे (जगत्रय के०) त्रण जगत् जेणे, तेणे करी (पिं
मितेन के०) पिंमिन्नूत एटले एकठा अएला

स्वेन प्रपूरित जगत्रय पिंमितेन,

(कांति के०) कांति (प्रताप के०) प्रताप अने (यशसां
के०) यश, तेना (संचयेन के०) समूहे करीनेज (इव
के०) जाणे हांय नहि ! तेम

कांति प्रताप यशसामिव संचयेन ॥

(माणिक्य के०) नीलरत्न, (हेम के०) सुवर्ण अने
(रजत के०) रूपुं, तेणे करीने (प्रविनिर्मितेन के०)
वनावेलो

माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन,

(अजितः के०) चारे पासे (सालत्रयेण के०) त्रिगडो
गढ तेणे करी (जगवन् के०) हे जगवन् ! तमे (विज्ञासि
के०) शोचो गो. ॥ ३७ ॥

सालत्रयेण जगवन्नजितो विज्ञासि ॥ ३७ ॥

(जिन के०) हे जिन ! (दिव्यसृजः के०) मनोहर फू
लनी मालात (नमस्त्रिदशाधिपानां के०) तमारा चरणे
नमेला देवेंडो तेमना

दिव्यसृजो जिन नमस्त्रिदशाधिपाना-

(रत्नरचितानपि के०) रत्नोए रचित एवा पण (मौलि

बंधान् के०) मुकुटोने (नृत्सृज्य के०) त्याग करीने
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥

(ज्वतो के०) तमारा (पादौ के०) चरण कमलनो
(श्रयंति के०) आश्रय करे ठे (यदिवा के०) अथवा
(परत्र के०) अन्य स्थानके

पादौ श्रयंति ज्वतो यदिवा परत्र,

(सुमनसः के०) पंढितो, अथवा देवतान् (त्वत्संगमे
के०) तमारो संगम ठते (न रमंतएव के०) नथीज र
मता ॥ १६ ॥

त्वत्संगमे सुमनसां न रमंतएव ॥१७॥

(नाथ के०) हे नाथ ! (त्वं के०) तमे (जन्मजलधेः
के०) ज्वसमुद्भूतकी (विपराङ्मुखोपि के०) पराङ्मुख
थया तो पण

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि,

(निजपृष्ठलग्नान् के०) तमारा वांसाने बलगेला (अस्तु
मतः के०) प्राणीयोने (यत् के०) जे कारण माटे (ता
रयसि के०) तारो ठे.

यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥

(पार्थिवनिपस्य के०) विश्वना स्वामी अने (सतः के०)
सुझ एवा (तवैव के०) तमोनेज (हि के०) निश्चे (युक्तं के०)
युक्त ठे. त्यां दृष्टात कहे ठे. जेम “पार्थिवनिप” ते माटीनो
घडो पोतानी पूंठे बलगेलाने तारे ठे,

युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,

परंतु अहिं (चित्रं के०) एक आश्चर्य ठे के (यत् के०)
जे कारण माटे (विज्ञो के०) हे स्वामिन् ! तमे (कर्मवि
पाकशून्यः के०) आठ कर्मना विपाक (फल) थी रहित
(असि के०) गो ॥ १९ ॥

चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ १९ ॥

(जनपालक के०) हे जनपालक ! (त्वं के०) तमे
(विश्वेश्वरोपि के०) विश्वना ईश्वर बतां पण (दुर्गतः के०)
दरिद्रि गो. ए विरोधनो परिहार करे ठे के, (जनप के०)
हे जनप ! तमे (अलक के०) केश तेणे करी (दुर्गतः
के०) दरिद्रि अर्थात् रहित गो. अथवा (दुर्गतः के०) दुः
खे करी जाणवा योग्य गो.

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं,

(ईश के०) हे स्वामिन् ! (किंवा के०) शुं (त्वं के०)
तमे (अक्षर प्रकृतिरपि के०) मोहस्वप्नावी बतां (अलि
पिः के०) लीपि रहित गो. ए विरोधनो परिहार करे ठे के,
(अक्षर के०) स्थिर (प्रकृति के०) स्वप्नाववाला (अ
लिपिः के०) कर्मरूप लेप रहित गो.

किंवाक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥

(अज्ञानवत्यपि के०) अज्ञानवाला एवा पण तमारे विषे,
अथवा अज्ञान लोकोने रक्षण करता एवा तमारे विषे (क
थंचित् के०) केमज (एव के०) निश्चे (सदैव के०) निरंतर

अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,

(विश्वविकाशहेतुः के०) त्रण जगत्ने प्रकाश करवाने

हेतुनूत एवं (ज्ञानं के०) ज्ञान (त्वयि के०) तमारे विषे
(स्फुरति के०) स्फुरे ठे ॥ ३० ॥

ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥

(प्राग्ज्ञार के०) अधिकपणाये करी (संज्ञृत के०) व्या
प्या-नखा ठे (नञासि के०) आकाशो जेणे एवी (रजां
सि के०) रजो (रोषात् के०) क्रोध थकी

प्राग्ज्ञार संज्ञृत नञांसि रजांसि रोषा-

(शठेन के०) मूर्ख एवा (कमठेन के०) कमठासुरे (या
नि के०) जे (उद्धापितानि के०) उड्डाडीठ

उद्धापितानि कमठेन शठेन यानि ॥

(तैः के०) ते रजोए करीने (नाथ के०) हे नाथ ! (त
व के०) तमारी (वायापि के०) शरीरनी काति, ते पण
(न हता के०) न हणाणी, परंतु (हताशाः के०) हणा
णी ठे आशा जेनी एवो

वायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो,

(डुरात्मा के०) डुरात्मा (अयमेव के०) ए कमठासुर
पोतेज (अमीजिः के०) एज रजोए करीने (अस्तः के०)
व्याप्त थयो (परं के०) परंतु ॥३१॥

अस्तस्त्वमीजिरयमेव परं डुरात्मा ॥३१॥

(यत् के०) जे कारणे (गर्जत् के०) गर्जना करतो अ
ने (उर्जित के०) प्रबल बलवंत एवो (घनौघं के०) मेघ
नो समूह ठे जेने विषे, तथा (अदब्रज्जीमं के०) घण्टां
नयंकर एवं जे

યજ્ઞર્જઙ્ગિત ઘનૌઘમદભ્રત્રીમં,

(અશ્યત્ કે०) આકાશ, તે થકી પડતી (તડિત્ કે०)
વીજલીત જે થકી, તથા (મુસલ કે०) મૂસલના સરખી
(માંસલ કે०) પુષ્ટ અને (ઘોર કે०) જયંકર (ધારમ્
કે०) ધારાત બે જેને વિષે

અશ્યત્તડિન્મુસલ માંસલ ઘોર ધારમ્ ॥

(હસ્તર કે०) હુઃસ્વે તરવા યોગ્ય એવું જે (વારિ કે०)
પાણી, તે (દૈત્યેન કે०) કમઠાસુર દૈત્યે (મુક્તં કે०) મૂ
કયું-વર્ષાવ્યું. (અથ કે०) હવે (દધ્રે કે०) કીધું

દૈત્યેન મુક્તમથ હસ્તર વારિ દધ્રે,

(તેનૈવ કે०) તેજ પાણીયે (તસ્ય કે०) તે કમઠાસુરને
(જિન કે०) હે જિન ! (હસ્તરવારિકૃત્યં કે०) જૂંડી ત
રવારનું કાર્ય ॥૩૬॥

તેનૈવ તસ્ય જિન હસ્તરવારિકૃત્યમ્ ॥૩૬॥

(ધ્વસ્ત કે०) નીચે પડ્યા એવા જે (ઊર્ધ્વકેશ કે०) (ઉ
પરના કેશ તેણે કરીને (વિકૃતાકૃતિ કે०) વિરૂપ થઈ
હે આકૃતિયો જેની એવા જે (મર્ત્યમુંઠ કે०) મનુષ્યનાં
માથાં, તેનું

ધ્વસ્તોર્ધ્વકેશ વિકૃતાકૃતિ મર્ત્યમુંઠ,

(પ્રાલંબ કે०) ઝૂલતું ઝૂમણું, તેને (ભૃત્ કે०) ધારણ ક
રનાર એવો, તથા (જયદ કે०) જયંકર (વક્ર કે०) મુઘ
થકી (વિનિર્યદગ્નિઃ કે०) નીકલે હે અગ્નિ જેને એવો,

પ્રાલંબ નૃજયદવક્ર વિનિર્યદગ્નિઃ-॥

(यः के०) जे (प्रेतव्रजः के०) दैत्यनो समूह (ज्वंतं के०) तमारी (प्रति के०) प्रत्ये (अपि के०) पण (ईरि तः के०) प्रेक्ष्यो.

प्रेतव्रजः प्रति ज्वंतमपीरितो यः,

(सः के०) ते दैत्यनो समूह (अस्य के०) ए कंमठासु रनेज (प्रतिज्वंतं के०) नव नवने विषे (नवदुःखहेतुः के०) संसारना दुःखनुं कारण (अनवत् के०) अतो हवो.

सोऽस्याऽनवत् प्रतिज्वंतं नवदुःखहेतुः ॥३३॥

(जुवनाधिप के०) हे त्रण जगत्ना अधिपति ! (तएव के०) तेज पुरुषो (धन्याः के०) धन्य ठे के (ये के०) जे (त्रिसंध्यं के०) त्रण्ये कालने विषे,

धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य-

(विधुतान्यकृत्या के०) विशेषे करी टाढ्यां ठे अन्यकृत्यो जेमणे एवा थइने (विधिवत् के०) विधि पूर्वक (आराधयंति के०) आराधन करे ठे.

माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥

(नक्त्योल्लसत् के०) नक्तिये करी उल्लास पामता (पुलक के०) रोमांच तेणे करी (पक्ष्मल के०) व्यास ठे (देहदेशा. के०) शरीरना जाग जेमना एवा

नक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल देहदेशाः,

(विज्ञो के०) हे विज्ञो ! (जुवि के०) पृथ्विने विषे (जन्मजाजः के०) जन्म जनों (तव के०) तमारा (पाद द्वयं के०) चरण युगजेनुं आराधन करे ठे ॥३४॥

पादद्वयं तव विन्नो नुवि जन्मजाजः॥३४॥

(मुनीश के०) हे मुनियोना ईश्वर ! (अस्मिन् के०) आ
(अपारजववारिनिधौ के०) पार विनाना संसार समुद्धने विषे,

अस्मिन्नपारजववारिनिधौ मुनीश,

तमे (मे के०) महारां (श्रवणगोचरतां के०) कानना
विषय प्रत्ये (न गतः के०) न प्राप्त थयेजां (असि के०)
गे, एम हुं (मन्ये के०) मानुं हुं.

मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोसि ॥

(तव के०) तमारा (गोत्रपवित्रमंत्रे के०) नाम रूप प
वित्र मंत्र (आकर्णितेतु के०) श्रवण करे ठते पण

आकर्णितेतु तव गोत्रपवित्रमंत्रे,

(किंवा के०) शुं (विपद्विषधरी के०) आपदा रूप सर्पि
णी (सविधं के०) समीप (समेति के०) आवे ठे? अपि
तु नथी आवती. ॥३५॥

किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

(देव के०) हे देव ! (जन्मांतरेपि के०) जन्मांतरने वि
षे पण (तव के०) तमारा (पादयुगं के०) चरण युगलने
(न के०) नथी

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव,

(महितं के०) पूज्युं (मया के०) में, एम हुं (मन्ये के०)
मानुं हुं. ते चरण युगल केवुं ठे? तो के, (ईहित के०) वां
छितने (दानदक्षम् के०) देवामां चतुर ठे.

मन्ये मया महितमीहित दानदक्षम् ॥

(मुनीश के०) हे मुनियोना ईश्वर ! (तेन के०) ते कारण माटे (इह के०) आ (जन्मनि के०) जन्मने विषे (पराजवानां के०) पराजवानुं

तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां,

(मथिताशयाना के०) मथन कस्यो ठे चित्तनो आशय जे मणो एवा ते पराजवानुं (निकेतनं के०) स्थानक (अहं के०) हुं (जातः के०) अथो ॥३६॥

जातो निकेतनमह मथिताशयानाम् ॥३६॥

(नूनं के०) निश्चे (न के०) नथी (मोहतिमिरावृतलोचनेन के०) मोहरूप अधिकारथी ढंकाएलां ठे नेत्रो जेनां एवा में

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,

(विज्ञो के०) हे विज्ञो ! (पूर्वं के०) पहेलां (सकृदपि के०) एक बार पण तमे (प्रविलोकितोसि के०) जोएला ठो पूर्वं विज्ञो सकृदपि प्रविलोकितोसि ॥

(हि के०) जे कारण माटे (मर्माविधः के०) मर्मस्थानने जेदनारा एवा (अनर्थाः के०) अनर्थों (मां के०) म मे (विधुरयंति के०) पीडा करे ठे.

मर्माविधो विधुरयति हि मामनर्थाः,

(प्रोद्यत्प्रबंधगतयः के०) अत्यंत प्राप्त थइ ठे कर्मप्रबंध नी प्रवृत्ति जेने एवा ते अनर्थों ठे. (अन्यथा के०) जो त मारुं दर्शन कस्युं होत तो (एते के०) आ अनर्थों (कथं के०) केम मने पीडे ? अपितु न पीडे ॥३७॥

प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥

तमोने (आकर्णितोऽपि के०) सांज्ञय्या तो पण, तथा (महितोऽपि के०) पूज्या तो पण, तथा (निरिद्धितोऽपि के०) दीठा तो पण,

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरिद्धितोऽपि,
(नूनं के०) निश्चे (नक्त्या के०) नक्तिये करीने तमो
(मया के०) महाराथी (चेतसि के०) चित्तने विषे (न
विधृतोऽसि के०) धारण करायेला नथी.

नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि नक्त्या ॥

(तेन के०) ते कारण माटे (जनवांधव के०) हे जन
बांधव ! हुं (दुःखपात्रं के०) दुःखनुं पात्र (जातोऽस्मि
के०) उत्पन्न थयो हुं.

जातोऽस्मि तेन जनवांधव दुःखपात्रं,

(यस्मात् के०) जे कारण माटे (ज्ञावशून्याः के०)
ज्ञावे करी रहित एवी (क्रियाः के०) क्रियाउ (न प्रतिफलंति के०) फल आपती नथी. ॥३७॥

यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः ॥३७॥

(नाथ के०) हे नाथ ! (दुःखिजनवत्सल के०) हे
दुःखीजन वत्सल ! (हे शरण्य के०) हे शरण करवा ला
यक ! (त्वं के०) तमे

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य,

(कारुण्यपुण्यवसते के०) हे दया धर्मना घर ! (वंशि
नांवरेण्य के०) वश्य करी ठे इंडियो जेमणे, तेमने विषे श्रेष्ठ

कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवेरेण्य ॥

(महेश के०) हे महेश ! (नक्त्या के०) नक्तिये करी
ने (नते के०) नमस्कार कखो ठे जेणे एवा (मयि के०)
महारे विपे (दयांविधाय के०) कृपा करीने

नक्त्या नते मयि महेश दयांविधाय,

(डःखांकुर के०) डःखनुं जे उत्पत्ति स्थानक, तेनो
(उद्वलन के०) नाश करवाने विपे (तत्परतां के०) तत्प
रणं (विधेहि के०) करो ॥३६॥

डःखांकुरोद्वलन तत्परतां विधेहि ॥३६॥

(निःसंख्य के०) अनंत (सार के०) बलनुं (शरणं के०)
घर एवं, तथा (शरणं के०) शरण करवा योग्य एवा
(शरणं के०) शरणे

निःसंख्य सार शरणं शरण शरण्य—

बली (सादित के०) कय पमाड्या ठे (रिपु के०) रा
गादिक बैरी जेणे, तेथी (प्रथित के०) प्रसिद्ध ठे (अव
दातम् के०) प्रज्ञाव जेनो, एवं ते (आसाद्य के०) पामीने

सासाद्य सादित रिपु प्रथितावदातम् ॥

(त्वत्पादपंकजं के०) तमारा चरणकमलने, (प्रणिधा
नबंध्यः के०) तमारा ध्याने करी शून्य एवो (अपि के०)
पण हुं

त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानबंध्यो,

(जुवनपावन के०) हे त्रण जगत्ने पवित्र, करनार !
(अस्मिचेत् के०) जो हु एवो तुं तो (वध्य के०) रागा

दिक शत्रुये करी हणवा योग्य हुं. एज कारणा माटे (हा के०) हा इति खेदे ! हुं (हतोऽस्मि के०) डुदैवे हणायो हुं.

वध्योऽस्मिचेज्जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥४०॥

(देवेंद्रवंद्य के०) हे देवताना इंझे वंदन करवा योग्य ! वली हे (अखिल के०) समग्र (वस्तु के०) वस्तुना (सार के०) सारने (विदित के०) जाणनार !

दैवेंद्रवंद्य विदिताखिल वस्तु सार,

(संसारतारक के०) हे संसार समुद्धी तारनार ! (विज्ञो के०) हे विज्ञो ! (जुवनाधिनाथ के०) हे त्रण जुव नना नाथ !

संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथ ॥

(देव के०) हे देव ! (करुणाहृद के०) हे करुणाना समुद्ध ! महारुं (त्रायस्व के०) रक्षण करो अने (मां के०) मने (पुनीहि के०) पवित्र करो.

त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि,

(अद्य के०) हमणां (सीदंतं के०) सीदाता मने (जयद के०) जयंकर (व्यसनांबुराशेः) दुःखना समुद्ध थकी ॥४१॥

सीदंतमद्य जयद व्यसनांबुराशेः ॥४१॥

(नाथ के०) हे नाथ ! (यदि के०) जो (जवदंद्दिस शेरुहाणां के०) तमारा चरणारविंद संबंधी (अस्ति के०) ठे

यद्यस्ति नाथ जवदंद्दिसशेरुहाणां,

(संततिसंचितायाः के०) निरंतर संताननी परंपराये सं चेली (जक्तेः के०) जक्तिनुं (फलं के०) फल (किमपि

के०) क्यांहि पण (जो होय)

नक्ते. फल किमपि संततिसंचिताया. ॥

(तत् के०) तो (शरण्य के०) हे शरणागत वत्सल !
जेने (त्वदेकशरणस्य के०) तमारुं एकज शरण ठे एवा
(मे के०) मने (न्यूयाः के०) थान

तन्मै त्वदेकशरणस्य शरण्य न्यूयाः,

(अत्र के०) आ (नुवने के०) लोकने विपे, तथा (न
वातरेपि के०) नवातरने विपे पण (त्वमेव के०) तमेज
(स्वामी के०) स्वामी थान ॥ ४२ ॥

स्वामी त्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥४२॥

(जिनेंइ के०) हे जिनेंइ । (इहं के०) ए प्रकारे (स
माहितधिय. के०) समाधीवाली ठे बुद्धि जेनी एवा (वि
धिवत् के०) विधिपूर्वक

इहं समाहितधियो विधिवज्जिनेइ,

(सांज्ञोद्धसत् के०) आकरो उद्धास पामतो एवो (पु
लक के०) रोमाच तेणे (कंचुकित के०) कंचुके करी स
हित ठे (अंगजागाः के०) शरीरनो जाग जेनो एवा

सांज्ञोद्धसत्पुलक कंचुकितांगजागाः ॥

(त्वर्द्धिव के०) तमारा विवना (निर्मल के०) मल र
हित (मुखावुज के०) मुख कमलने विपे (वक्षलक्षाः
के०) बाध्युं ठे ध्यान जेमणे एवा

त्वर्द्धिव निर्मल मुखावुज वक्षलक्षा,

(विज्ञो के०) हे विज्ञो । (ये के०) जे (नव्याः के०)

ज्व्य प्राणीन् (तव के०) तमारुं (संस्तवं के०) स्तोत्रने
(रचयंति के०) रचे ठे, ॥४३॥

ये संस्तवं तव विज्ञो रचयंति ज्व्याः ॥४३॥

(जननयन के०) मनुष्यना नेत्र रूप (कुमुदचंद्र के०)
चंद्रविकाशी कमलने विषे चंद्रमा समान

जननयन कुमुदचंद्र,

(प्रज्ञास्वराः के०) अत्यंत देदीप्यमान एवी (स्वर्गसं
पदः के०) देवलोकनी संपदाना सुखने (नुक्त्वा के०)
नोगवीने

प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदोनुक्त्वा ॥

(विगलित के०) विशेषे करीने गली गयो ठे (मलनि
चयाः के०) कर्मरूप मल जेमनो एवा (ते के०) ते
ज्व्य प्राणीन्

ते विगलित मलनिचया,

(अचिरात् के०) थोडाक कालमां (मोहं के०) मोह
ने (प्रपद्यंते के०) पामे ठे.

अचिरान्मोहं प्रपद्यंते ॥४४॥ युग्मम्

इति श्री कल्याणमंदिरस्तोत्र अर्थ सहित
समाप्तम्.



અથ શ્રી વૃહદ્દાંતિ પ્રારંભઃ

(જોજોજ્ઞવ્યાઃ કે૦) હે જ્ઞવ્ય જીવો ! (પ્રસ્તુતં કે૦)
અવસરને યોગ્ય અને (સર્વં કે૦) સાધ્યંત એવું (એતત્ કે૦)
આ (વચનં કે૦) વચન, તે તમે (શ્રુણુત કે૦) સાંજ્ઞલો.

જોજોજ્ઞવ્યાઃ શ્રુણુત વચનં પ્રસ્તુતં સર્વમેતત્,

(યે કે૦) જે જ્ઞવ્ય પ્રાણિયો (ત્રિજુવનગુરોઃ કે૦) ત્ર
ણ ભુવનના ગુરુ જે જગવાન, તેમની (યાત્રાયાં કે૦) યા
ત્રાને વિષે (જક્તિનાજઃ કે૦) જક્તિમંત છે, તથા (અર્હ
તાં કે૦) અરિહંત છે દેવ જેના એવા

યે યાત્રાયાં ત્રિજુવનગુરોરાર્હતાં જક્તિનાજઃ ॥

(તેષાં કે૦) તે (જવતાં કે૦) તમોને (અર્હદાદિપ્રજ્ઞા
વાત્ કે૦) અરિહંતાદિ પંચ પરમેષ્ઠિના પ્રજ્ઞાવથી (શાંતિઃ
કે૦) શાંતિ (જવતુ કે૦) થાન

તેષાં શાંતિર્જવતુ જવતામર્હદાદિપ્રજ્ઞાવા-

તે શાંતિ (આરોગ્ય કે૦) આરોગ્ય (શ્રી કે૦) જદ્દમી
(ધૃતિ કે૦) ધૃતિ અને (મતિ કે૦) મતિ, તેની (કરી
કે૦) કરનારી તથા (ક્લેશવિધ્વંસહેતુઃ કે૦) ક્લેશને નાશ
કરવાની કારણજૂત છે. ॥૧॥

દારોગ્ય શ્રી ધૃતિ મતિ કરી ક્લેશવિધ્વંસહેતુઃ ॥૧॥

(જોજોજ્ઞવ્યલોકાઃ કે૦) હે જ્ઞવ્ય લોકો ! (હિ કે૦)
જે કારણ માટે (ઇહ કે૦) આ (જરતૈરાવતવિદેહ કે૦)
જરત, એરાવત અને મહાવિદેહ તેને વિષે (સંજ્ઞવાના કે૦)

उत्पन्न अथा एवा

नोन्नोन्नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेह संनवानां

(समस्ततीर्थकृतां के०) समस्त तीर्थकरोना (जन्मनि के०) जन्म समयने विषे (आसन के०) सौधर्माधिपति नां आसन (प्रकंप के०) प्रकंपित थया (अनंतरं के०) पढी (अवधिना के०) अवधिज्ञाने करी (विज्ञाय के०) प्रप्तुनो जन्म जाणीने

समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकंपानंतर

मवधिना विज्ञाय

(सौधर्माधिपतिः के०) श्री सौधर्मेण जेते (सुघोषा घंटा के०) सुघोषा नामा घंटा (चालनानंतरं के०) वगा ब्या पढी

सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटा चालनानंतरं

(सकल के०) समस्त (सुर के०) देवता अने (असुर के०) पातालवासी देवो, तेमना (इंद्रैः सह के०) इंद्रोनी साथे (समागत्य के०) त्यां आवीने

सकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य

(सविनयं के०) विनय सहित (अर्हन्नद्वारकं के०) अ रिहंत नगवानने (गृहीत्वा के०) करसंपुटमां ग्रहण करीने (कनकाद्रिशृंगे के०) मेरु पर्वतना शिखर उपर (गत्वा के०) जइने

सविनयमर्हन्नद्वारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे

(विदित के०) निर्माण कस्यो ठे (जन्मानिषेकः के०)

जन्मान्निषेक जेषे, एवो ते सौधर्माधिपति स्नात्रनी समा
ति ध्ये वते (शांतिमुद्घोषयति के०) महोटा शब्दे करीने
शांतिने पठन करे ठे.

विहित जन्मान्निषेकः शांतिमुद्घोषयति

(ततः के०) ते कारण माटे (अहं के०) हु पण (क
तानुकारं के०) तेमज अनुकृति (यथा के०) जेम थाय
(इति के०) ए प्रकारे (कृत्वा के०) करीने

यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा

(महाजनः के०) महोटा पुरुष जे इंशदिक देव समूह
(येन के०) जे मार्गे (गतः के०) प्रवर्त्यो (सः के०) ते
ज (पंथा के०) मार्ग

महाजनो येन गतः स पंथाः

(इति के०) एज कारण माटे (भव्यजनैः सहसमेत्य के०)
नव्य प्राणीयो साथे जिनालयमां आवीने (स्नात्रपीठे के०)
स्नात्रपीठने विषे (स्नात्रविधाय के०) स्नात्र करीने

इति नव्यजनै सहसमेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रविधाय
हुं पण (शांतिं के०) शांतिना पाठने (उद्घोषयामि
के०) उद्घोषणा करुं हुं,

शांति-मुद्घोषयामि

(तत्पूजायात्रास्नात्रादि के०) तेनी पूजा यात्रा स्नात्रादि (म
होत्सवानंतरं के०) महोत्सव कस्या पठी (इतिकृत्वा के०)
ए प्रकारे करीने, ते शांतिने

तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानंतर-मितिकृत्वा

(કર્ણદત્વા કે૦) કાન દેશને એક ચિત્તથી (નિશ્ચમતાં નિશ્ચમતાં સ્વાહા કે૦) સાંજલો સાંજલો. સ્વાહા એ મંત્રા કરૂં પૂર્વક આંહિ દ્વિરુક્તિ છે, તે અત્યાદર રૂપાપનને માટે છે.

કર્ણદત્વા નિશ્ચમતાં નિશ્ચમતાં સ્વાહા ॥

(હું કે૦) હુંકાર જે છે, તે પંચપરમેષ્ઠિ વાચક મંગલને નિચ્ચારણ કરીને કહે છે કે, હે જ્ઞવ્ય પ્રાણિયો ! (પુણ્યાહં પુણ્યાહં કે૦) આજ પુણ્યનો દિવસ છે પુણ્યનો દિવસ છે (પ્રીયંતાં પ્રીયંતાં કે૦) અતિ સંતુષ્ટ થાઉં અતિ સંતુષ્ટ થાઉં.

હું પુણ્યાહં પુણ્યાહં પ્રીયંતાં પ્રીયંતાં

(જગવતઃ કે૦) સમગ્ર ऐश्वर્યયુક્ત એવા (અર્હંતઃ કે૦) તીર્થંકરો, તથા (સર્વજ્ઞાઃ કે૦) સર્વજ્ઞ તથા (સર્વદર્શિનઃ કે૦) સર્વદર્શી

જગવતોર્હંતઃ સર્વજ્ઞાઃ સર્વદર્શિન—

(ત્રિલોકનાથાઃ કે૦) ત્રણ લોકના નાથ (ત્રિલોકમહિતાઃ કે૦) ત્રણ લોકે પુષ્પાદિક્રે કરી પૂજેલા (ત્રિલોકપૂજ્યાઃ કે૦) ત્રણ લોકને પૂજવા યોગ્ય (ત્રિલોકેશ્વરાઃ કે૦) ત્રણ લોકના ઈશ્વર (ત્રિલોકોદ્યોતકરાઃ કે૦) ત્રણ લોકને ઉદ્યોતના કરનારા (એવા તેનું છે.)

ત્રિલોકનાથા—ત્રિલોકમહિતા—ત્રિલોકપૂજ્યા—
ત્રિલોકેશ્વરા—ત્રિલોકોદ્યોતકરાઃ ॥

(હું કે૦) હુંકાર મંગલાર્થ વાચક જાણવો. (રૂષન્ન કે૦) રૂષન્નદેવ (અજિત કે૦) અજિતનાથ (સંજ્ઞવ કે૦) સંજ્ઞવનાથ (અન્નિનંદન કે૦) અન્નિનંદન (સુમતિ કે૦) સુમતિનાથ

ॐ रूपन्न अजित सन्नव अजिनन्दन सुमति

(पद्मप्रज्ञ के०) पद्मप्रज्ञ (सुपार्श्व के०) सुपार्श्वनाथ
(चंद्रप्रज्ञ के०) चंद्रप्रज्ञ (सुविवि के०) सुविधिनाथ (शी
तल के०) शीतलनाथ

पद्मप्रज्ञ सुपार्श्व चंद्रप्रज्ञ सुविधि शीतल

(श्रेयांस के०) श्रेयांसनाथ (वासुपूज्य के०) वासुपूज्य
(विमल के०) विमलनाथ (अनंत के०) अनंतनाथ (धर्म
के०) धर्मनाथ (शांति के०) शांतिनाथ

श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति

(कुंथु के०) कुंथुनाथ (अर के०) अरनाथ (मल्लि के०)
मल्लिनाथ (मुनिसुव्रत के०) मुनिसुव्रत (नमि के०) नमि
नाथ (नेमि के०) नेमिनाथ (पार्श्व के०) पार्श्वनाथ

कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व

(वर्धमानांताः के०) महावीरस्वामी ठे ठेला तीर्थंकर
जेने विपे (जिनाः के०) राग द्वेपना जीतनार तथा (शांताः
के०) क्रोधादिकथी शांति पामेला एवा ते (शांतिकराः के०)
शांतिने करनारा (जवंतु के०) थानु.

वर्धमानांताः जिनाः शांताः शांतिकरा जवंतु स्वाहा
(ॐ के०) ॐकार मंगलार्थ वाचक जाणवो. तथा (मुनि
प्रवराः के०) मुनियोने विपे श्रेष्ठ एवा (मुनयः के०) मुनि
यो (रिपुविजय के०) शत्रुकृत पराजय, तथा (छर्जिद्र के०)
छप्काल, तथा (कांतारेपु के०) चोर कंटकादिके दूषित मा
गने विपे, तथा (दुर्गमार्गेषु के०) अरण्यमार्गने विपे (वः

के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु के०) रक्षण करो.
 ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्मिच्छा कांतारेषु
 दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥

(ॐ के०) ॐकार परमात्म वाचक प्रणव बीज ठे, (ह्रीं के०)
 ह्रींकार मायाबीज ते वश्य करनार ठे, (श्रीं के०)
 श्रींकार लक्ष्मीबीज ते इयागमन कारण ठे, तथा (धृति के०)
 धैर्य (मति के०) बुद्धि (कीर्ति के०) यश (कांति के०)
 शोभा (बुद्धि के०) बुद्धि (लक्ष्मी के०) धनादि संपत्ति

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी

(मेधा के०) धारण करवानी बुद्धि (विद्यासाधन के०)
 विद्यानुं साधन, तथा (प्रवेशन के०) प्रवेश तथा (निवेश
 नेषु के०) मुकाम करवो. तेने विषे (सुगृहीत नामानः के०)
 रूढां ग्रहण करवा योग्य ठे नाम जेमनां एवा (ते के०) ते
 पूर्वोक्त (जिनेंशः के०) तीर्थं करो, ते सदैव (जयंतु के०)
 जयवंता बर्त्ता.

मेधा विद्यासाधन प्रवेशन निवेशनेषु

सुगृहीत नामानो जयंतु ते जिनेंशः ॥

(ॐ के०) ॐकार मंगलार्थे जाणवो. (रोहिणी के०) रो
 हिणी (प्रज्ञप्ति के०) प्रज्ञप्ति (वज्रशंखला के०) वज्रशंख
 ला (वज्रांकुशी के०) वज्रांकुशी

ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशंखला, वज्रांकुशी

(अप्रतिचक्रा के०) अप्रतिचक्रा (पुरुषदत्ता के०) पुरुष
 दत्ता (काली के०) काली (महाकाली के०) महाकाली

अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली,
(गौरी के०) गौरी (गांधारी के०) गांधारी (सर्वास्त्रा
के०) सर्वास्त्रा (महाज्वाला के०) महाज्वाला (मानवी
के०) मानवी

गौरी, गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी,
(वैरुद्धा के०) वैरुद्धा (अद्भुता के०) अद्भुता (मान
सी के०) मानसी (महामानसी के०) महामानसी (षोड
श के०) ए सोल (विद्यादेव्यो के०) विद्यादेवीन (वः के०)
तमोन (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतुस्वाहा के०) रक्षण क
रो. ए ठेकाणे "स्वाहा" जणवु. कारण के, ते वृक्षो आ
म्नाय ठे.

वैरुद्धा, अद्भुता, मानसी, महामानसी,

षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥

(उँ के०) उँकार मंगलार्थे बोलवो. पवी (आचार्योपा
ध्यायप्रज्ञृति के०) आचार्य अने उपाध्याय प्रमुख (चातु
र्वर्णस्य के०) आचार्य, उपाध्याय, साधु अने साध्वी ए चा
र प्रकारवाला एवा

उँ आचार्योपाध्यायप्रज्ञृति चातुर्वर्णस्य

(श्री श्रमणसंघस्य के०) सुशोभित एवा श्रमण जे श्री
वीर जगवान् तेमना संघने (शांतिर्भवतु के०) शांति था
न. (तुष्टिर्भवतु के०) तुष्टि थान तथा (पुष्टिर्भवतु के०)
धर्मनी पुष्टि थान.

श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु

(नै के०) नै संगलार्थे जाणवो. (ग्रहाः के०) ग्रहो,
 ते (चंद्र के०) चंद्र (सूर्य के०) सूर्य (अंगारक के०)
 अंगारक (मंगल) (बुध के०) बुध (बृहस्पति के०) बृ
 हस्पति (शुक्र के०) शुक्र (शनैश्वर के०) शनैश्वर (रा
 हु के०) राहु (केतु के०) केतु, ए नवग्रहो (सहिताः
 के०) सहित

नै ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति
 शुक्र शनैश्वर राहु केतु सहिताः

तथा (सोम के०) सोम (यम के०) यम (वरुण के०)
 वरुण अने (कुबेर के०) कुबेर, ए (सलोकपालाः के०)
 चार लोकपाले सहित तथा (वासव के०) इंद्र अने (आ
 दित्य के०) आदित्य ते वार प्रकारना सूर्य (स्कंद के०)
 स्कंद (विनायक के०) गणेश तेणो करी (उपेताः के०) म
 ल्या एवा सर्व देवतान

सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर
 वासवादित्य स्कंद विनायकोपेताः

(येचान्येऽपि के०) वली बीजा पण (ग्राम के०) ग्रा
 म (नगर के०) नगर (क्षेत्र के०) क्षेत्रना (देवतादयः के०)
 देवतादिक जे ठे (ते सर्वे के०) ते सर्वे (प्रीयंतां प्रीयंतां
 के०) प्रसन्न थान प्रसन्न थान

येचान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे
 प्रीयंतां प्रीयंतां

तथा (अक्षीण के०) नक्षी क्षीण थया (कोश के०) जं

मार जेमना (च के०) वली (कोष्ठागाराः के०) धान्यना गृह
जेमनां एवा (नरपतयः के०) राजान (नवंतु के०) आन
(स्वाहा के०) स्वाहानो अर्थ पूर्ववत् जाणवो.

अक्षीण कोश कोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतुस्वाहा॥

(नै के०) नै मंगलार्थे जाणवो (पुत्र के०) पुत्र (मित्र के०)
मित्र (द्रातृ के०) नाई (कजत्र के०) स्त्री (सुहृद् के०) समा
न वयवाला (स्वजन के०) स्वजन (संबंधि के०) संबंधी
माणस तथा (वधुवर्ग के०) वंधुवर्ग (सहिता. के०) ते सहित
नै पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन संबंधि
बंधुवर्ग सहिताः ॥

ते सर्वे (नित्यं के०) निरंतर (च के०) वली (आमोद
के०) हर्ष अने (प्रमोद के०) चित्त प्रसन्नता, तेने (कारिण
के०) करनारा यान

नित्यं चामोद प्रमोद कारिणः

तथा (अस्मिन् के०) आ मृत्युलोकने विषे (जूमंमलाय
तन के०) पृथ्वीमां पोताना स्थानकोने विषे (निवासि के०)
निवास करनारा (साधु के०) साधु (साध्वी के०) साध्वी
(श्रावक के०) श्रावक अने (श्राविकाणा के०) श्राविका
यो तेमना

अस्मिश्च जूमंमलायतन निवासि साधु साध्वी
श्रावक श्राविकाणां

(रोग के०) रोग (उपसर्ग के०) उपसर्ग (व्याधि के०)
व्य धि (दुःख के०) दुःख (छर्जिह के०) छर्जिह अने (दौ

र्मनस्य के०) डर्मनपणुं तेमना (उपशमनाय के०) उपश-
मने अर्थे (शांतिर्भवतु के०) शांति आओ.

रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपश-
मनाय शांतिर्भवतु ॥

(नै के०) नैकार मंगलार्थे जाणवो. (तुष्टि के०) संतोष
(पुष्टि के०) शरीरादि तोष अथवा पुरुषार्थ साधन सामर्थ्य
(रुद्धि के०) संपत्ति (वृद्धि के०) पुत्र पौत्रादिक परिवारनो
विस्तार (मांगढ्य के०) कढ्याण अने (उत्सवाः के०) म
होटा उन्नवो ते सर्वे थाओ.

नै तुष्टि पुष्टि रुद्धि वृद्धि मांगढ्योत्सवाः

तथा (सदा के०) निरंतर (प्राडुर्नूतानि के०) उत्पन्न थ
यां एवां जे (पापानि के०) पापो, तथा (डुरितानि के०) ड
रित, ते (शाम्यंतु के०) शांतिने पामो.

सदा प्राडुर्नूतानि पापानि शाम्यंतु डुरितानि

तथा (शत्रवः के०) शत्रुन (पराङ्मुखा के०) अवला मु
खवाला (भवंतु के०) थान. (स्वाहा के०) सुष्ठु एटले रूडुं
आह एटले कहे ठे.

शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥

| | |
|------------------------------|------------------------------|
| (श्रीमते के०) समवसरणा | (नमः के०) नमस्कार थान |
| दि लक्ष्मीए युक्तएवा (शांति | जे (शांतिविधायिने के०) शां |
| नाथाय के०) श्री शांतिनाथ | तिना करनार ठे |
| जगवानने | |

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥

(त्रैलोक्य के०) त्रणे लोक
ना, (अमराधीश के०)
देवताजना अधीश जे चोश
ठ इंडो तेमना

त्रैलोक्यामराधीश,
(शांतिः के०) श्री शातिना
अ भगवान, ते (शातिकर.
के०) शांतिने करनार तथा
(श्रीमान के०) सुशोभित
एवा.

शांतिःशातिकरःश्रीमान्,
(तेषां के०) तेमना (घरने
विषे) (सदा के०) निरतर
(शांतिरेव के०) शांतिज था
य ठे.

शांतिरेव सदा तेषां,
(उन्मृष्ट के०) दूर कस्या ठे
(रिष्टुष्ट के०) उषड्य तथा
डष्ट एवी

उन्मृष्ट रिष्टुष्ट, ग्रहगति
(संपादित के०) संपादन क
री ठे (हितसंपन्न के०) हि
तनी संपत्ति जेणे

(मुकुट के०) मुकुटे करी
(अन्यर्चित के०) पूजित ठे
(अंहये के०) चरण जेमनां
एवा ठे.

मुकुटाभ्यर्चिताहये ॥१॥
तथा (गुरुः के०) गुरु समा
न एवा (मे के०) मने (शां
ति के०) शांतिने (दिशतु
के०) थापो.

शांति दिशतु मे गुरु ॥
(येषां के०) जेमना (गृहे
के०) घरने विषे (शांति के०)
शांतिनाथ पूनन थाय ठे, ते
मना (गृहे के०) घरने विषे
येगां शांतिर्गृहे गृहे ॥२॥
(ग्रहगति के०) ग्रहनी गति
तथा (उःस्वप्नप्रणिमितादि
के०) डष्ट स्वप्नां जे उःखनां
हेतु ठे तेने,

उःस्वप्नप्रणिमितादि ॥
(शांतेः के०) श्री शांतिना
अनुं (नामग्रहणं के०) नाम
ग्रहण पण (जयति के०)

उत्कृष्ट वर्त्ते ठे. ॥३॥

संपादित हितसंप- त्रामग्रहणं जयति शांतिः॥३॥

(श्री संघजगज्जनपद के०) (राजाधिपराजसन्निवेशानां
श्री संघ, तथा जगत्ना देशो के०) महोटा राजाञ्च तथा
राजाञ्चने उपदेशना स्थान
क तेमने

श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम्॥

(गोष्टिकपुरमुख्यानां के०) (व्याहरणैः के०) नाम लश्
गोष्टिकपुर प्रमुख जे नगरना लश्ने (शांतिं के०) शांतिने
मुख्य मनुष्य तेनां पण (व्याहरेत् के०) उंचे स्वरे क
री उद्घोषण करे. ॥४॥

गोष्टिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेत्तांतिम् ॥४॥

(श्रीश्रमणसंघस्य के०) श्री श्रमणसंघने (शांतिर्भवतु
के०) शांति थान्.

श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु

(श्रीपौरजनस्य के०) शेहेरना लोकोने (शांतिर्भवतु के०)
शांति थान्.

श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु,

(श्रीजनपदानां के०) देशोने (शांतिर्भवतु के०) शांति थान्

श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु,

(श्रीराजाधिपानां के०) महोटा राजाञ्चने (शांतिर्भवतु
के०) शांति थान्.

श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु,

(श्रीराजसन्निवेशानां के०) राजानना उपदेश स्थानको
ने (शांतिर्भवतु के०) शांति धातु.

श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु,
(श्रीगोष्टिकानां के०) धर्मसन्नास्थ लोकोने (शांतिर्भवतु
के०) शांति धातु

श्रीगोष्टिकानां शांतिर्भवतु,
(श्रीपुरमुख्याणां के०) शेहेरना मुख्य माणसोने (शां
तिर्भवतु के०) शांति धातु.

श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु,
(श्रीब्रह्मलोकस्य के०) ब्रह्मलोकने (शांतिर्भवतु के०)
शांति धातु.

श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु,
(नैस्वाहा के०) नैस्वाहा ए पद मंगलार्थे ठे. तथा बीजी
वारनुं (नैस्वाहा के०) नैस्वाहा पद रुडे प्रकारे देवोने कहे
ठे. तथा (नै श्री पार्श्वनाथायस्वाहा के०) कुंकुम, चंदन, वि
लेपन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपादिक ए पूजानां उपकरण
श्री पार्श्वनाथने संतोपने माटे धातु.

नैस्वाहा नैस्वाहा नैश्रीपार्श्वनाथायस्वाहा ॥

(एषा के०) आ (शांतिः के०) शांति पाठ, ते (प्रतिष्ठा
के०) प्रतिष्ठाना तथा (यात्रा के०) यात्राना तथा (स्नात्र
के०) स्नात्रना (अवसानेषु के०) अंतमां अवश्य जणवो.
तथा (आदि के०) आदि शब्दे करी पाक्षिक सांवत्सरिक
प्रतिक्रमणना अंतमा अवश्य पाठ करवो तथा बीजां पण

धर्मकार्योनी समाप्तिमां संगलार्थे ते शांतिपाठ अवश्य उद्घोषण करवा योग्य ठे.

एषा शांति प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु

एक गुणवान् श्रावक उन्नो यज्ञे (शांतिकलशं के०) शांतिने माटे शुद्ध जले नरेला शांतिकलशने (गृहीत्वा के०) मावा हाथमां जालीने तेनी उपर जमणो हाथ स्थापीने (कुंकुम के०) कुंकुम (चंदन के०) चंदन (कर्पूर के०) कर्पूर (अगुरु के०) अगुरु (धूप के०) धूप (वास के०) वास (कुसुमांजलि के०) कुसुमांजलि, तेणे (समेतः के०) युक्त बतो.

शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुम चंदन कर्पूरागुरु
धूप वास कुसुमांजलि समेतः

(स्नात्रचतुष्पिकायां के०) स्नात्र मंरुपमां (श्रीसंघसमेतः के०) चतुर्विध संघ युक्त बतो

स्नात्रचतुष्पिकायां श्रीसंघसमेतः

(शुचिशुचिवपुः के०) ब्राह्म्याज्यंतर मलिनता रहित ठे शरीर जेनुं एवो (पुष्प के०) पुष्प (वस्त्र के०) पवित्र देवपूजा योग्य वस्त्र तथा (चंदन के०) चंदन (आनरण के०) आनरण, तेणे (अलंकृतः के०) सुशोणित बतो (पुष्पमालां के०) पुष्पनी माला (कंठे के०) पोताना कंठे विषे (कृत्वा के०) धारणा करीने

शुचिशुचिवपुः पुष्प वस्त्र चंदनानरणालंकृतः
पुष्पमालां कंठे कृत्वा

(शांतिमुद्घोषयित्वा के०) महोटा शब्दे करी शांतिनो
पाठं उद्घोष करीने पढी ते महान् पुरुष तथा बीजानये
(शांतिपानीयं के०) शांतिकलशना जलने (मस्तके के०)
मस्तकने विषे (दातव्यं के०) नांखवुं (इति के०) इति ए
समाप्तिना अर्थमां ठे.

शांतिमुद्घोषयित्वाशांतिपानीयंमस्तकेदातव्यमिति
(नित्यं के०) निरंतर (नृत्यंति के०) नृत्य करे ठे (म
णि के०) रत्न उपलक्षणशी मोतीन अने (पुष्पवर्षं के०)
पंचवर्ण युक्त फूलोनी वृष्टिने

नृत्यंति नित्यं मणि पुष्पवर्षं,

(सृजंति के०) करे ठे. (च के०) चली (मंगलानि के०)
मंगल एवां भीत अने घवलने (गायंति के०) गान करे ठे.

सृजंति गायंति च मंगलानि ॥

तथा (स्तोत्राणि के०) स्तोत्रने तथा (गोत्राणि के०)
गोत्र जे तीर्थकरना वंशने (पठंति के०) पठन करे ठे, चली
(मंत्रान् के०) मंत्रगर्जित एवा पाठोने पठन करे ठे.

स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्,

(जिनाग्निषेके के०) जिनना अग्निषेकने विषे एटले स्ना
त्र महोत्सवने विषे, ते (हि के०) निम्बे (कल्याणभाजः
के०) कल्याणने भजनारा थाय ठे. ॥ १ ॥

कल्याणभाजो हि जिनाग्निषेके ॥ २ ॥

(सर्वजगतः के०) सर्व जग (चतुर्गणाः के०) प्राणि स
वन् (शिवमस्तु के०) क मूह जे ठे ते (परहितनिरताः

હ્યાણ થાનું.

કે૦) પરહિત કરવામાં (જ
વંતુ કે૦) સાવધાન થાનું.

શિવમસ્તુ સર્વજગતઃ, પરહિતનિરતાભવંતુન્નૂતગણાઃ

(દોષાઃ કે૦) આધિ વ્યાધિ અને (સર્વત્ર કે૦) સર્વ સ્થા
વિગેરે (નાશં કે૦) નાશને નકને વિષે (લોકાઃ કે૦)
(પ્રયાંતુ કે૦) પામો. સમગ્ર લોક (સુખીજવંતુ
કે૦) સુખી થાનું. ॥ ૨ ॥

દોષાઃપ્રયાંતુ નાશં, સર્વત્રસુખીભવંતુ લોકાઃ॥૨॥

(અહં કે૦) હું (તિઢ્યરમાયા (સિવાદેવી કે૦) શિવાદેવી
કે૦) બાવીશમા તીર્થંકરશ્રી હું. તે કેવી હું તો કે? (તુ
નેમિનાથ જગવાનની માતા મ્હ કે૦) તમારા (નયર
કે૦) નગરને વિષે (નિ
વાસિનિ કે૦) નિવાસ કરના
રી એટલે સાન્નિધ્યકારી હું.

અહંતિઢ્યરમાયા, સિવાદેવીતુમ્હનયરનિવાસિનિ॥

એ કારણ માટે (અમ્હ (અસિવોવસમં કે૦) અશિવનો
કે૦) અમારું (સિવં કે૦) જે ઉપશમ જેમાં એવું (સિવં
કહ્યાણ થાનું અને (તુમ્હ કે૦) કહ્યાણ (જવતુ કે૦)
કે૦) તમારું પણ (સિવં થાનું. સ્વાહા પદનો અર્થ પૂર્વ
કે૦) કહ્યાણ થાનું. ત જાણવો. ॥૩॥

અમ્હસિવંતુમ્હસિવં, અસિવોવસમંસિવંભવતુસ્વાહા૩

(ઉપસર્ગાઃ કે૦) ઉપસર્ગો (વિઘ્નવહ્નયઃ કે૦) વિઘ્નની
(ક્ષયંયાંતિ કે૦) ક્ષયને વહ્નિયો (િંદ્યતે કે૦) જે

पामे ठे.

दाय ठे.

उपसर्गाः क्षयंयांति, विद्यंते विघ्नवह्नयः ॥

अने (मनः के०) मन (प्र (जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर भ
सन्नतां के०) प्रसन्नताने (ए गवानने (पूज्यमाने के०)
ति के०) पामे ठे. पूजे थके ॥४॥

मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

(सर्वमंगल के०) सर्व लौ तथा (सर्वकल्याणकारण के०)
किक मंगल पदार्थने विपे (भां सर्व कल्याणनुं कारण
गढयं के०) मंगल करनां

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥

(सर्वधर्माणां के०) सर्व ध (जैनं के०) जिन संबंधी
मोने विपे (प्रधान के०) (शासनं के०) शासन ते
श्रेष्ठ (जयति के०) जयवंतु वर्ते
ठे ॥ ५ ॥

प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

॥ इति श्री बृहत्ताति समाप्तम् ॥



॥ अथ श्री पाक्षिकादि श्रावकना अतिचार लिख्यते ॥

नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवंमि तहय विरि
यंमी ॥ आयरणं आयारो, इअएसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥
ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार,
ए पंचविध आचारमांहि ॥ अनेरो जे कोई अतिचार पढ़
दिवसमांहि सूद्धम बादर जाणतां अजाणतां हुन होय, ते
सवि हुं मन वचन कायाए करी मिठामिडुक्कमं ॥ १ ॥ तत्र
ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उ
वहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अठ तडुन्नए, अठविहो
नाण-मायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वेलाए जणयो गुणयो ॥
विनय हीन बहुमान हीन, योग उपधान हीन अनेरा
पासे जणी अनेरो गुरु कह्यो, देववंदन वांदणे पम्किम
णे सप्राय करतां जणतां गुणतां कूमो अहर कानो मात्र
आगतो उठो जणयो सूत्र अर्थ जिहुं कूमां कहां ॥ साधुत
णे धर्मे काजो मांमो अणपडिलेहो काजो अणउधरि अस
आई उणोजामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जणयो गु
णयो श्रावकतणें धर्मे थिविरावली पम्किमणासूत्र उपदेश
माला प्रमुख कालवेलाए काजो अणउद्धरीयों॥पडियो गुणयो
ज्ञानड्य ज्ञित नपेक्षित प्रज्ञापराध विणासियो विणसतां
उवेखीयां सारसंजाल न कीधी ॥ तथा ज्ञानोपगरण पाटी
पोथी ठवणी कवली नोकारवाली, सापमा सापमी दस्तरी
वही उलीया प्रति पग लाग्यो शूक लाग्यो शुंकेकरी अहरमां

ज्यो पासे वतां आहार निहार कीधो ॥ ज्ञानवंत प्रतिक्षेप मत्स
र अतराय अवज्ञा कीधी ॥ आपणा जाणवा तणो गर्व चिं
तव्यो ॥ ज्ञानाचार व्रत विपईनु ॥ अनेरो जे कोई अतिचार
॥ ५० ॥ १ ॥ दंसेणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्क
खिये, निव्वित्तिगिह्वाअ मूढ दिगीअ ॥ उव्ववूह थिरी करणे,
वच्चल प्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म तणे विपे नि
स्संकपणुं न कीधुं ॥ तथा एकांत निश्चय न कीधुं ॥ ध
र्म संबंधिया फल तणे विपे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं ॥ तपो
धन तपोधनी प्रति मलमलीन गात्र देखी डगंग कीधी मि
थ्यात्वि तणी पूजा प्रजावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं ॥
तथा संधमांहि गुणवंत तणी अनुपवृहणा कीधी अस्थिरी
करण अवावृह्य अशीति अजक्ति कीधी ॥ तथा देवइव्य गु
रुइव्य साधारणइव्य जक्ति उपेक्षित प्रज्ञापराध विणास्यो
विणसतो उवेख्यो गती शक्ति ए सार संजाल न कीधी ॥ तथा
साधर्मिकशुं कलह कर्मबंध कीधो ॥ अधोती अष्टपट्ट मुख
काश पाखी देवपूजा कीधी वासकूपी धूपघाणुं कलस
तणो ठवको लाग्यो देहेरा पोसालमांहि मल श्लेष्म लुह्यां हा
स्य केलि कुतुहल कीधां जिनजुवने चोराशी आशातना ॥
गुरु प्रति तंत्रीश आशातना ॥ ठवणहारी हाथअकुं पडयुं प
डिलेहवो वीसास्यो ॥ गुरुवचन तहत्तकरी पडिवज्युं नहीं ॥
दंसेणाचार व्रत विपईनु अनेरो जे कोई अतिचार ॥ ५१ ॥
॥ ३ ॥ चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग जुतो,
पंचहि समिईहिं तिहिंगुत्तीहि ॥ एस चरित्तायारो, अठ
विहो होइनायवो ॥ ४ ॥ ईर्या समिति ज्ञापा समिति ॥ एंप

णा समिति ॥ आदानज्ञानं निखेवणा समिति ॥ पारीठावणि
 का समिति ॥ मनोगुप्ति ॥ वचनगुप्ति कायगुप्ति ॥ ए अष्ट प्र
 वचन माता साधु तणें धर्मे सदैव श्रावक तणें धर्मे सा
 मायक पोसह लीधें रूमीपेरे चिंतव्युं नही खंरुण विराधना
 किधी ॥ चारित्राचार व्रतविषईनु ॥ अनेरो जे को अ० ॥ प०
 ॥ ३ ॥ विशेषत श्रावक तणे धर्मे ॥ सम्यक्त्व मूल वारव्रत
 सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंख विगिह्ठा, संको
 श्री अरिहंत तणा बल अतिशय ॥ ज्ञानलक्ष्मी गंजीर्यादिक
 गुण साश्वति प्रतिमा चारित्रीयानां चारित्र ॥ जिन वचन त
 णो संदेह कीधो ॥ आकांक्षा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल
 गोगो आसपाल पादरदेवती ॥ गोत्रदेवती ॥ देव देहरानो
 प्रनाव देखी ॥ रोग आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या मां
 न्या बोध सांख्य संन्यासी जरडा जगत लिंगीआ योगी द
 रवेश अनेराई दर्शनीयानुं कष्टमंत्र चमत्कार देखी परमा
 र्थ जाण्याविण झूला व्या मोह्या कुशास्त्र सीख्यां सांज्जल्यां
 सराध संवत्सरी होली वलेव माहीपुनिम अजापमवे प्रेत
 बीज गौरीत्रीज विणायगचोथ नागपंचमी जीजणठ
 सीयलसातम झे आठम नुलीनुम अयवदसम व्रत ६
 ग्यारस वत्सवारस धनतेरस अनंतचौदस अमावास्या
 आदित्यवार उत्तरायन नैवेद्य याग जोग मान्या पिंपले पा
 णी रेम्ह्यां रेम्हाव्यां घरबाहर कूड तलाव नदी इह कुंढ वा
 व समुडे पुन्य हेतु स्नान कीयां ॥ ५ ॥ वितिगिह्ठा धर्म सं
 बंधिया फलतणो संदेह कीधो जिन अरिहंत धर्मना आगा
 र विश्वोपगार सागर मोक्ष मार्गना दातार इस्या गुण न

णी पूज्या नही इहलोक परलोक संबंधिया जोगवन्ति पू
जा कीधी रोग आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या
महात्माना ज्ञात पाणी मल शोजातणी निंदा कीधी ॥
॥ ३ ॥ प्रीति मांमी ॥ तेहनी दाक्षिण लगी ॥ तेहनो धर्म
मान्यो ॥ श्री सम्यक्त व्रत विपईन अनेरो जे को ॥ अ०
॥ ५० ॥ ४ ॥ पहिले श्रूज प्राणातिपात विरमणव्रत ॥ पां
च अतिचार ॥ वह बंध ठविठेए ॥ द्विपद चतुष्पद प्रति री
सवशे गाढु घाय घाढ्युं गाढुं बंधण बांध्युं धणे नारे पी
ढ्युं नीलंबण कर्म कीधुं चार पाणीतणी वेलाए सारसंजा
ल न कीधी जेहणे देणे कूणहने नढ्युं लंधाव्युं तिणे नूखे
आपण जिम्या सढ्यां धान्य रूमीपरि जोयां नहीं ॥ पाणी ग
लतां ढोढ्युं जीवाणी सुकव्युं गलतां जालक नाखी गलणुं
रुहुं न कीधुं इषण ठाणां अणसोभ्यां वाढ्यां ते मांहि सा
प खजूरा विठी सरोला मांकण जूआ गिगोमा साहतां मू
आ दूहव्या रूमे थानके ना मुक्या कीमी मंकोमी उदेही
धीमेल कातरा चूमेलि पतंगीया मेमका अलसीयां ईयल
प्रमुख जे कोइ जीव विणवा विणसतां उवेख्या चांप्या दूह
व्या हलावतां चलावतां पाणी ठांटतां अनेराइ काम काज
करतां निधंसपणुं कीधुं जीवरक्षा रूमी न कीधी ॥ पहिले
धूल प्राणातिपात विरमणव्रत विपईन अनेरो जे को अति
चार ॥ ५० ॥ ५ ॥ बीजे धूल मृपावाद विरमणव्रत ॥ पांच
अतिचार ॥ सहस्ता रहंस्तदारे ॥ सहसाकारे कुणहप्रति
अयुक्त भाल दीधुं स्वदारा मंत्रजेद कीधो ॥ अनेराइ कुण
हनो मंत्र आजोच मर्म प्रकास्यो ॥ कुणहने अपाय पाडवा

कूनी बुद्धि घरी कूडो लेख लख्यो जूठी साख जरी ॥ थाप
 णमोसो कीधो कन्या ढोर जुमि संवधिआ लेहेणें देखे वा
 द वढवाढ करतां मोटकुं जूठुं वोढ्या ॥ बीजें थूल मृपावा
 द विरमणव्रत विषइउं अनेरो ॥ ६ ॥ त्रिजें थूल अदत्तादान
 विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ तिन्नाहम प्पणंगे ॥ घर बाहि
 र खेत्र खले परायुं अणमोकळ्युं लीधुं दीधुं वावस्युं चो
 राज वस्तु लीधी चोर प्रति संबल दीधुं विरुद्ध राज्यादिक
 कर्म कीधुं कूडां मान मापां कीधां माता पिता पूत्र मित्र
 कलत्र वंची कुणहनें दीधुं जूदी गांठ कीधी नवां जूनां सर
 स नीरस वस्तु तणा जेल संजेल कीधां ॥ त्रीजे अदत्तादा
 न विरमणव्रत विषइउं अनेरो ॥ ७ ॥ चोथे स्वदारा संतोष
 परस्त्री विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ अपरिगृहीया इत्तर ॥
 अपर ग्रहीतागमन कीधुं ॥ अनंगकीडा कीधी ॥ बी
 वाह कारण कीधुं ॥ कामजोग तणे विषे ॥ अती अजि
 लाख कीधो दृष्टिविपर्यास कीधो आत्म चउदस तणां ने
 म लेइ जाग्या ॥ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार
 सूहणें सुपनांतरे हुआ ॥ चोथे मैथुन विरमणव्रत विषइ
 उं ॥ अनेरो ॥ ८ ॥ पांचमे थूल परिग्रह परिमाणव्रत पांच
 अतिचार ॥ धण धन्न खेत वडू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरु
 खाव्युं ॥ सोनुं रूपुं नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नही प
 ढवुं विसारुं ॥ पांचमे परिग्रह प्रमाणव्रत विषइउं ॥ अने
 रो ॥ ९ ॥ षष्ठे दिग् विरमणव्रत पांच अतिचार गमणस्त
 य परिमाणे ॥ उद्धदिशें अहोदिशें तिर्यग्दिशें ॥ जावा आ
 ववा तणा नेम लेइ जाग्या एक दिश संक्षेपी बीजी दिस व

धारी विस्मृत लगे अधिक जूमि गया पाठवणी आधी मो
 कली वाहण व्यवसाय कीधुं ॥ वर्षाकाले गामंतरे कीधुं ॥
 ठेठे दिग् विरमणवत विषइतु ॥ अनेरो ॥ १० ॥ सातमे
 जोगोपजोगवत प्रांच अतिचार सचिते पन्निवडे सचित आ
 हारे ॥ सचित प्रतिवरु आहारे ॥ अप्पोलसहि नरुणया
 छप्पोलसहि नरुणया तुळोसहि नरुणया ॥ सचितनरु
 णया अपक आहारे उपक आहारे तुळोपधि कुली आंव
 ली नुला नंबी पुंख पापनी तणां नरुण कीधां अनंतकाय
 अथाणा तणा नरुण कीधां तथा रिगण विंगण पीलू पी
 चू पंपोटा महुडां वरुवोर प्रमुख बहुबीज तणां नरुण
 कीधां ॥ गाथा ॥ सचित दब विगई ॥ वाहण तंवोल वड कु
 सुमेसु ॥ वाणही सयण विलेवण ॥ वंन दिसि न्हाण जते
 सु ॥ १ ॥ ए चउद नीयम दिन प्रति लीधानही लेई संदे
 प्या नही ॥ सचित ड्व्य विगय खासम वाहण तंवोल फो
 फल बेसण सयन पाणी अंधोलणी फल फूल जोजन आ
 उदनी जे कोई नेम लेई जाग्या ॥ वावीस अजक वत्रीस
 अनंतकाय माहि आडं मूला गाजर पिंम पिंमालु कचूरो स
 रण खिलोमां मोरडी सेलरा कुली आंवली वाघरमा गीर
 मर नीलीगलो वालोल खाधी वासी कवोल पोली रोदली
 त्रण दिवसना उदन मधु महुमां विप हेंम करदा घोलवडां
 अजाण्यां फल टीवरुं गुंदां वोर अथाणां काचुं मीठं तल ख
 सखस कोठंबडां खाधां लगजग वेलाए वालु कीधां दिन उ
 ग्याविण सीराव्यां जे कोई अनेरो अतिचार हुन होय ॥
 तथा कर्मतः ॥ इंगालकम्मे वनकम्मे सामीकम्मे जामीक

म्मे फोडीकम्मे ॥ ए पंचकर्म ॥ दंतवाणिज्य लखवाणिज्य
 रसवाणिज्य विषवाणिज्य केशवाणिज्य ॥ ए पंच वाणिज्य
 ॥ जंतपीलणकम्मे नीलंठणकम्मे दवगिदावणया सरदहंत
 लाय सौसणया असईपोसणया ॥ ए पंच सामान्य ॥ ए
 पंनर कर्मादान मांही कीधां कराव्यां अनुमोद्यां अनेराइ
 कांइ सावेद्य कर्म समाचख्यां होय ॥ सातमे जोगोपजोगव्र
 त विषईत ॥ अनेरो ॥ ११ ॥ आठमें अनर्थदंरु विरमण
 व्रत पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुकुईए ॥ अनर्थदंरु जे कही
 ए काम काज पाखि मंहीयां पाप लाग्यां मुखहास्य खेल कु
 तुहल अंगकुचेष्टा कीधी निरर्थक लोकने करसणा गाडां वा
 ही गामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी कण वस्तु ढोर लेवरा
 व्यां अनेरा पापोपदेश दीधा कोश कुहांडा रथ ऊखल मु
 शल घर घरटी प्रमुख सज्ज करी मेहळ्यां माग्यां आप्यां
 अंधोल नाहणे पग धोयण खाले पाणी ढोळ्यां अ
 थवा जीवणां फिळ्यां जूवटूं रम्या नाटिक पेखणां जोयां
 पुरुष स्त्रीना रूप शृंगार वखाण्या राज कथा देश कथा नक्त
 कथा स्त्री कथा परांस्तांत कीधी कर्कस वचन बोळ्या संजे
 डा लगाड्या सरन कूकडा प्रमुख जूजतां जोया कलह क
 रतां जोया लोक तणी उपार्जना कीधी सुख कीर्ति देश लेश
 चिंतवी लुण पाणी माटिकण कपासीया काज विण चांप्यां
 ते उपर बेठा आलि वनस्पती चुंटी अंगीठा काष्ठ वणिज
 कीधा ठास पाणी घी तेल गुल आम्ल वेतस बेरंजा तणां
 नाजन ऊघामां मेहळ्यां ते मांही कीमी मंकोमी कुंथुआ
 उदेही घीमेल गिरोली प्रमुख जे कोई जीव विणठ्या सुभा

सावही क्रीमा हेतु पांजरे घाळ्या अनेराइ जीवने रोग द्वेष
 लगे एकनि रुद्रि परिवार वंठी एकनि मृत्यु हाणि वंठी आ
 ठमें अनर्थदंन विरमणव्रत विपइउ॥अनेरो०॥१३॥नवमें सा
 मायकव्रत पांच अतिचार ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे सामाय
 क मांदि मन आहट दोहट चिंतव्युं वचन सावद्य बोळ्या
 सरीर अणपडीलेहुं हलाव्युं ठति शक्ति सामायक लीधुं न
 ही उघामे मुखे बोळ्या सामायक माहि उंध आवी बीज
 दीवा तणी उजेही लागी विकथा कीधी कण कपासीया
 माटी पाणी तणा सघट हुआ मुदपती संघटी सामायक
 अणपुगे पाखुं ॥ पारवुं वीसाखुं नवमें सामायकव्रत विपई
 उ ॥ अनेरो० ॥ १३ ॥ दशमे दिशावगाशिक व्रत पांच अ
 तिचार आणवणे पेसवणे आणवणप्पयोगे पेसवणप्पयोगे
 सदाणवाइ रूवाणवाइ वदिया पुगलखेवे नीमी जुमिका मां
 हिथी वाहिर अणाव्युं आपण कनेथी वाहिर मोकळ्युं श
 ब्द संनलावी रूप देखाडी कांकरो नाखी आपणपण ठतुं
 जणाव्युं पुज्जल तणो प्रक्षेप कीधो दशमे देशावगाशिकव्रत
 विपइउ ॥ अनेरो० ॥ १४ ॥ इग्यारमें पौषधोपवासव्रत
 पांच अतिचार संथारूचारविहि ॥ पोसह लीधे संथारा त
 णी जुमी वाहिरला थंनिला सदीसैं रूडां सोध्या नही ॥ प
 मीलेह्यां नही थंडिल वावरतां मात्रु परठवता चित्तवणी
 न कीधी अणुजाणह जस्सगो न कह्यो ॥ परठव्या पुंठे वार
 त्रिण वोसरे वोसरे न कह्यो ॥ देहरा पोसाल माहि पेसतां
 निसरतां निसही आवस्सही कहेवी विसारी पुढवी अप्प
 तेऊ वाऊ वनस्पती त्रसकाय तणा संघट परिताप उपइव

कीधा ॥ संधारा पोरसितणो विधि जणवो विसाख्यो ॥ अथ
 धि संधाख्या पारणादिक तणी चिंता नीपजावी कालवेला
 ए देव न वांछा पोसह असुरो लीधो संवेरो पाख्यो पर्वतिधि
 ये पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइत्त ॥
 ॥ अनेरोण ॥ १५ ॥ बारमे अतिधिसंविजागव्रत ॥ पांच अ
 तिचार ॥ सचिते निस्कवणे सचित वस्तू हेतां उपर ठतां अ
 सुऊतुं दान दीधुं वोहरबा वेला टली रह्या मत्सर लगे दान
 दीधुं देवा तणी बुद्धि पराई वस्तु धणीने अण कहे दीधी ॥
 अथवा आपणी करी दीधी ॥ अणदेवा तणी बुद्धि सुऊ
 तुं फेमी असुऊतुं कीधुं ॥ गुणवंत आवे ज्ञाति न साचवी
 अनेराई धर्म क्षेत्र सीदातां ठती शक्ति न द्रव्यां नही ॥ दीन
 खीन प्रते अनुकंपा दान दीधुं नही देतां वाखुं ॥ बारमे अति
 धि संविजागव्रत विषइत्त ॥ अनेरोण ॥ १६ ॥ संलेखणा त
 णा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए इहलोका संसप्प
 योगे परलोका संसप्पयोगे जीवया संसप्पयोगे मरणा सं
 सप्पयोगे कामजोगा संसप्पयोगे इह लोके धर्म तणा प्रज्ञा
 व लगे राज रुद्धि जोग वंढ्या परलोक देव देवेंड चक्रवर्ति
 तणी पदवी वंढी सुख आवे जीववा तणी वांछा कीधी ॥
 दुःख आवे मरवा तणी वांछा कीधी कामजोग तणी वांछा
 कीधी संलेखणा व्रत विषइत्त ॥ अनेरोण ॥ १७ ॥ तपाचार
 बार भेद ठ बाह्य ॥ ठ अज्यंतर अणसण मुणोअरिया ॥
 अणसण जणी उपवासादिक पर्वतिधि तप न कीधो ऊणो
 दरी बे च्यार कवल ऊणा न उठ्या ॥ इव्य जणी सर्व वस्तु
 तणो संक्षेप न कीधो रस त्याग न कीधो कायाकलेश लो

चादिक कष्ट कस्यां नही ॥ संलीणता अंगोपांग संकोची
 राख्यां नही पचखाण जाग्यां पाटलो मगतो फेड्यो नही ॥ गं
 ठसही पक्वस्काण जाग्यो उपवास आंघिल नीवी कीधें मुखें
 सचित्त पाणि घाड्युं वमन हुज वाह्य तप व्रत विपश्च ॥ अ
 नेरो ॥ १८ ॥ अर्ज्यंतर तप पायठितं विण्ण ॥ सुधु प्राय
 चित्त पक्विज्युं नही आलोयण तणी सुधी टीप कीधी न
 ही ॥ सुधो तप पसाख्यो नही साते जेदे विनय न कीधो ॥ द
 श जेदे वैयावच न कीधो पंचविध सजाय न कीधो कपाय
 वोस्तराव्यो नही दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्ते काष्ठसग्न न
 कीधो शुक्लध्यान धर्मध्यान ध्यायां नही आर्त्तरौड ध्यान
 ध्यायां अर्ज्यंतर तपव्रत विपश्च ॥ अनेरो ॥ १९ ॥ वीर्या
 चार त्रण्य अतिचार ॥ अणगुही बल वीरियो मनवीर्य धर्म
 ध्यान तणें विषे उद्यम न कीधा पत्तिकमणे देवपूजा धर्मा
 नुष्ठान दान शील तप जावना ठती शक्ति गोपवी आलसे
 उद्यम न कीधो वेठां पत्तिकमणें कीधुं रुडां खमासण न
 दीधां वीर्याचार तप विपश्च ॥ अनेरो ॥ २० ॥ पत्तिस्तिज्ञ
 णं करणे ॥ प्रतिषेध अज्ञक अनंतकाय महा परिग्रह जे
 कोइ प्राणातिपात मृपावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध
 मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन रति
 अरति परपरिवाद मायामृपावाद मिश्रयात्वसद्व्य ए अठार
 पापस्थानक मांही कीधां कराव्या अनुमोद्या होय, तथा दीव
 स कृत्य प्रतिक्रमण देवपूजादिक क्रिया नहि, जीवाजीवादिक
 सुक्ष्म विचार सहसा नहि आपण कुमति लगे उत्सृजनी
 प्ररूपणा कीधि होय ए चिहुं प्रकारे जे कोइ अतिचार सुक्ष्म

बादर जाणतां अजाणतां हुज होय ते सवि हुं मन वचन का
याए करी मिच्छामिडक्कमं ॥१॥ एवंकारे श्रावक तणे धर्मे
सम्यक्त मूल बारव्रत एकसो चोवीस अतिचार मांहे अने
रो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवस मांहे सुद्धम बादर जाणतां
अजाणतां हुज होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा
मिडक्कमं ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्यवंदन अधिकार लिख्यते ॥

अथ श्री सीमंधरजिननुं लिख्यते.

श्रीमंधर परमात्मा शीवसुखना दाता ॥ पुष्क
लवई विजये जयो ॥ सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व वि
देह पुंमरीगणी ॥ नयरीए सोहे ॥ श्री श्रेयांस राजा ति
हां ॥ जविअणनां मन मोहे ॥ २ ॥ चौद सुपन नीरमल
जही ॥ सत्यकी राणी मात ॥ कुंशु अर जिन अंतरे ॥ श्री
मंधर जिन जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमीया ॥ वलि यो
वनमां पावे ॥ मात पीता हरखे करी ॥ रूखमणी परणा
वे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां ॥ संयम मन लावे ॥ मु
निसुव्रत नमी अंतरे ॥ दीक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो
हय करी ॥ पाम्या केवलनाण ॥ वृषज लंठने शोभता ॥
सर्व ज्ञावना जाण ॥ ६ ॥ चोरासी प्रभु गणधरा ॥ मुनिवर
एकसो कोरु ॥ त्रण जुवनमें जोवतां ॥ नही कोई एहनी
जोड्य ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या केवली ॥ प्रभुजीनो परिवार
॥ एक समे त्रण कालना ॥ जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उ

दय पेढाल जिनांतरे ए ॥ थाशे जिनवर सिद्धे ॥ जसविजय
गुरु प्रणमतां ॥ शुच वंठित फल लिह ॥ ए ॥

अथ श्री सिद्धाचलजीनुं.

विमल केवल ज्ञान कमला ॥ कलित त्रिभुवन हि
तकरं ॥ सुर राज संस्तुत चरणपंकज ॥ नमो आदि जिनेश्व
रं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंगमंमण ॥ प्रवर गुण गंगा नू
धरं ॥ सुर असुर किन्नर कोमि सेवित ॥ नमो ॥ २ ॥ कर
ती नाटिक किन्नरी गण ॥ गाये जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरा
बलि नमे अहनिश ॥ नमो ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणपति सि
द्धि सांधी ॥ कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरीव
रं शृंग सिद्धा ॥ नमो ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनि
वर ॥ कोमिनंत ए गिरीवरं ॥ मुगति रमणी बर्या रंगे ॥
नमो ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोक मांहि ॥ विमलगिरी व
र तोपरं ॥ नही अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो ॥ ६ ॥
इम विमल गिरीवर शिखर मंमण ॥ दुःख विहंमण ध्याइए ॥
निज सुख सत्ता साधनार्थ ॥ परमज्योतिने पाइए ॥ ७ ॥ जीत मो
हकोह विठोह निंछा ॥ परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरीरा
ज सेवा करण तत्पर ॥ पद्मविजय सुदितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पंचपरमेष्टि चैत्यवंदन लिख्यते ॥

वारं गुण अरिहत देव ॥ प्रणामिजे जावे ॥ सिद्ध आ
ठ गुण समरतां ॥ दुख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारजे गुण

ठत्रीस ॥ पचविश उवझाय ॥ सताविस गुण साधुना ॥ ज
पतां सुख आय ॥ अष्टोत्तरसय गुण मलीए ॥ एम समरो नव
कार ॥ धिरविमल पंमिततणो ॥ नय प्रणमे नित सारा ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वीसथानक नाम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

पहिले पद अरिहंत नमुं ॥ बिजे सरव सिद्ध ॥ त्री
जे प्रवचन मन धरो ॥ आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणां
पांचमे ॥ पाठक गुण ठे ॥ नमोलोए सबसाहुणां ॥ जे ठे
गुण गरीढे ॥ २ ॥ नमो नार्णस्स आठमे ॥ दरसणा मन
जावो ॥ विनय करो गुणावंतनो ॥ चारित्र पद ध्यावो ॥ ३ ॥
नमो वंज्रवय धारिणां ॥ तेरमें कीरीयाणां ॥ नमो तवस्स चौ
दमे ॥ गोयम नमोजिणां ॥ ४ ॥ चारित्र झोन सुअस्सने
ए, नमो तीहुस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्यने, नमतां
होय सुख खाणी ॥ ५ ॥ इति श्री विसथानक नाम चैत्यवंदन ॥

अथ वीसथानक तपना काउसगनुं.

चोवीस पन्नर पीस्तालीसनो, ठत्रीशनो करीए ॥ दस
पचवीस सतावीसनो, काउसगग मन धरीए ॥ १ ॥ पंच स
मसठि दसवली, सितेर नव पणविस ॥ बार अरुवीस लो
गस तणो, काउसगग धरो गुणीस ॥ २ ॥ वीस सतर इगव
न, छादशन पंच ॥ इणीपरे काउसगग जो करे, तो जाए न
व संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउसगग मन धरो, गुणी लेज्यो वी
स ॥ वीस थानक इम जाणीए, संक्षेपश्री लेश ॥ ४ ॥ जाव

धरी मनमां घणोए, जो एक पद आराधे ॥ जिन उत्तम पद
पद्मने ॥ नमी नीज कारज साधे ॥ ५ ॥ इति संपूर्णम्. ॥

अथ श्री परमात्मानुं लिख्यते.

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिष्ठ ॥ जयजय गुरु दे
वाधिदेव, नयणों में दिष्ट ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार,
करुणारस सिंधू ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधू
॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहराए, कीमती कट्या न जाए ॥
राम कहे जिन ध्यानधी, चिदानंद सुख आय ॥ ३ ॥ इति ॥
श्री संपूर्ण ॥ ६ ॥

अथ श्री जिनपूजानु लिख्यते.

निजरूपे जिननाथके, इत्येपण तिमही ॥ नाम आ
पना जेदधी, प्रगट जग माही ॥ १ ॥ अध्यात्मधी जोमीए,
निखेपा च्यार ॥ तो प्रभु रूप समान जाव, पामे निरधार ॥
॥ २ ॥ पावन आत्मने कहे ए, जनम जरादिक दूर ॥ ते प्रभु
पूजा ध्यानधी, राम कहे सुख पूर ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ श्री बीजनं चैत्यवंदन लिख्यते.

द्विविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोपा अजिनंदन ॥ बीजें
जनम्या ते प्रभु, जव दुःख निकंदन ॥ १ ॥ द्विविध ध्यान
तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ इम परकाशुं सुमति
जिने, ते घवीया बीज दिन्न ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेह

ने नवि तजिए ॥ मुजपरे सीतल जिन कहे, बीज दिन सि
 व नजीए ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥
 बीज दिने वासुपूज्य परें, लहो केवजनाण ॥ ४ ॥ निश्चय
 नय व्यवहार दोय, एकांत नग्रहीए ॥ अरजिन बीजे दिन
 चवी, इम जन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीसीए,
 इम जिन कढ्याण ॥ बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण
 निर्वाण ॥ ६ ॥ इम अनंत चोवीसीए ए, हुआ बहु कढ्याण ॥
 जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होए सुख खाण ॥ ७ ॥ इति॥

अथ श्री ज्ञानपंचमी चैत्यवंदन लिख्यते.

त्रिगमे बेठा वीरजिन, ज्ञांखे नविजन आगें ॥ त्रिकरण
 शुं त्रीहुं लोकजन, नीतुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो नलि
 नातसैं, पांचम अजुआली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, एह
 ज तीथी निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु साख्खा, जाणो
 इणो संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्यो, सिवपद सुख श्री
 कार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहीत क्रीया कही, कास कुसुम उपमान
 ॥ लोकालोक प्रकास कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी
 सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पुर्व कोमी वरसां लगे,
 अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देस आराधक क्रिया कही, सर्व आ
 राधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमें जग
 वान ॥ ६ ॥ पंचमास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥
 पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥ ए
 कावनही पंचनोए, कानसग लोगसकेरो ॥ नजमणुं करो

जावशुं, टाखे जव फेरो ॥ ८ ॥ इणी परें पंचमी आराहिए
ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविज
य लहो सार ॥ ९ ॥ इति श्री संपूर्ण ॥ ९ ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवदन लिख्यते ॥

माहा शुदि आठमनें दिनें, विजया सुत जायो ॥ तिम
फागुण शुदि आठमें, संजव चवी आयो ॥ १ ॥ चैतर वदि
नी आठमे, जनम्या रुपन्न जिणंद ॥ दीक्षा पणा ए दिन
लही, हूआ प्रथम मुनि चंड ॥ २ ॥ माघव शुदि आठम दि
नें, आठ कर्म कस्यां दूर ॥ अजिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या
सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम कुजली, जनम्या सुम
ति जिणंद ॥ आठ जाति कलसें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥
जनम्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रत स्वामि ॥ नेमि असा
डशुदि आठमें, अष्टम गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनि आ
ठमे, नमि जनम्या जग जाण ॥ तिम श्रावण शुदि आठमें,
पासजीनुं निरवाण ॥ ६ ॥ ज्ञाड्वा वदि आठम दिने, च
विया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने ॥ सेवाथी
शिव वास ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवदन लिख्यते ॥

शासन नायक वीरजी ॥ प्रभु केवल पायो ॥ संघ
चतुरविध थापवा ॥ महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माघव सी
त एकादशी ॥ सोमल घीज यज्ञ ॥ इंझूति आदे मळ्या ॥
एकादस विग्र ॥ २ ॥ एकादससें चन्नगुणा ॥ तेहनो परिवा

र ॥ वेद अरथ अवलो करे ॥ मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥
 जीवादीक संशय हरी ए ॥ एकादश गणधार ॥ वीरे आप्या
 वंदीए ॥ जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर म
 ल्ली पास ॥ वर चरण विलासी ॥ रुषन अजित सुमति
 नमी ॥ मल्लि घनघाती विनासी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभु शिववा
 स पास ॥ नव नवना तोमी ॥ एकादसी दिन आपणी ॥
 रुधि सघली जोनि ॥ ६ ॥ दस खेत्रे त्रीहुं कालनां ॥ त्रणसैं
 कळ्याण ॥ वरस इग्यार एकादशी ॥ आराधो वर नाण
 ॥ ७ ॥ इग्यार अंग लखावीए ॥ एकादस पाठां ॥ पूंजणी
 ठवणी विंटी ॥ मसी कागल कांठां ॥ ८ ॥ अगीआर अ
 वृत ठांनवा ए ॥ वहो पद्मिमा अगीआर ॥ कृमाविजय जि
 नशासने ॥ सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थकरनी राशीनुं ॥

शांति नमी मल्ली मेपेठे ॥ कुंथु अजित वृषनाति ॥
 संजव अजिनंदन मिथुन ॥ धर्म करंक सिंह सुमती ॥ १ ॥
 कन्या पद्मप्रभु नेमविर ॥ पास सुपास तुलाँए ॥ शशी वृं
 श्वर्क धन रुषनदेव ॥ सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ म
 करं सुवृत श्रेयांसने ॥ बारमा घंटमिनै लील ॥ वीमल
 अनंत अरनामथी ॥ सुखीया श्री शुभ वीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुदसैं बावन गणधरनुं लिख्यते ॥

गणधर चोरंसी कहा ॥ वज्र पंचाणु ठेक ॥ दोय
 अधीक इगसैं गणा ॥ सोल अधीक सैंत एक ॥ १ ॥ स

त सुमतिने गणधरा ॥ इगसंय अधीका सात ॥ पंचाणुं
त्राणुं तथा ॥ अमंशीइ इगंशीइ ब्रात ॥ १ ॥ ठोहोतेंर ठासैंठ
सगैंवन ॥ पंचांस त्रेतालीश ॥ ठेंतीस पणेंतीस कुंथुने ॥
अर गणधर तेत्रीसैं ॥ ३ ॥ अमैंविस अष्टादेंश सुण्या ॥ न
मी सतेंरें गणधार ॥ एकादेंश दशैं शिव गया ॥ वीरतेंणा
अगीआर ॥ ४ ॥ रुपजादीक चौवीसना ए ॥ एक सहस
सय च्यार ॥ अदीकेरा बावन कहा ॥ सर्व मली गणधार
॥ ५ ॥ अक्षय पद वरीया सवे ए ॥ सादी अनंत नीवासा ॥
करीए सुनचित वंदना ॥ जब लग घटमां सास ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ रोहिणी तपनुं लिख्यते.

रोहिणी तप आराधीए, श्री सी वासूपूज्य ॥ दुःख दो
हग दूरे टले, पूज्यक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजें वास
खेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्याने करी धोतीयां, मन वचन
काय खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीए, पूजा नृत्य वाजीत्र
॥ जावे जावना जावीए, कीजें जन्म पवीत्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं
कार्ले लेइ धूप दीप, प्रभु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नग
तीसुं, अवीचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्त
वन, जिननो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जीम ना
वें संताप ॥ ५ ॥ कोरु कोरु गुण फल दीए, उत्तर उत्तर जेद ॥
मान कहे एवीध करो, ज्युं होय जवनो ठेद ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ गौतमस्वामीनुं चैत्यवदन.

वीरुद धरी सर्वज्ञनुं, जिन पासैं आवे ॥ मधुरे वयण
 शुं वीरजी, गौतम बोलावे ॥ १ ॥ पंचभूत मांही अकी, ए
 नपजें वीणसैं ॥ वेद अरथ विपरीतथी, कहो किम नव तर
 से ॥ २ ॥ दान दया दम त्रिनु पदे ए, जाणे तेदज जीव ॥
 ज्ञानविमल धन आतमा, सुख चेतना सदैव ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ मौनैकादशीनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान जग ईश ॥ आत
 म हितने कारणे, प्रणामु परम मुनीस ॥ १ ॥ षट् परवी जि
 णे वर्णवी, तेहमां अधिकी जेह ॥ एकादशी सम को नही,
 आराधो गुण गेह ॥ २ ॥ मागशिर शुदि एकादशि, आराधो
 शिव वास ॥ कल्याणक नेत्र जिन तणां, एकसोने पंचास ॥
 ॥ ३ ॥ महायस सर्वानुभूति श्रीधर, नमि मल्लि अरनाथ ॥
 स्वयंभूत देवश्रुत उदय, मल्लियो शिवपुर वास ॥ ४ ॥ अ
 कलंक शुनंकर सतनाथ, ब्रह्मैव गुण गांगीक ॥ संप्रति
 मुनि विशिष्ट जिन, पाम्या पुन्यनी नीक ॥ ५ ॥ सुमृड
 व्यक्त कलासत, अरण योग अयोग ॥ परम सुधारति नि
 केस तेमण, पाम्या शिव संयोग. २२ ॥ ६ ॥ सर्वार्थ हरिभू
 मगधाधिप १०, प्रयत्न अद्भुत मलसिंह ११ ॥ दिन रुक्मनंद
 पौषध तथा १२, जपतां सफली जीह ॥ ७ ॥ प्रजंब चारित्र
 निधी प्रसम राजित १३, स्वामि विपरीत प्रसाद १४ ॥ अथ
 टित ब्रह्मैव रुषज चंड १५, समस्यां शिव आश्वाद ॥ ८ ॥ द
 यांत अजिनंदन रत्नेसर १६, साम कोष्ठ मरुदेक प्रतिपार्श्व
 १७ ॥ नंदिषेण व्रतधर निर्वाण तथा १८, आपे शिव सुख आ

श ॥ ए ॥ सौड्यं त्रिविक्रम नारसिंह १ ए, हेमात संतोषीत
कामनाथ २० ॥ मुनिनाथ चंडदाह विलादित्य २१, मलियो
शिवपुर साथ ॥ १० ॥ अष्टाहिक वणिक उदय ज्ञान २२, त
मोकंद सायकाह खेमंत २३ ॥ निर्वाणी रविराज प्रथम २४,
नमतां डखनो अंत ॥ ११ ॥ परुर्वास अवबोध विक्रम २५,
स्वशांतिहर देवनंदि केश २६ ॥ महामृगेंड असोचित धर्म २७
२७, सन्नारो नाम निवेश ॥ १२ ॥ अश्ववृंद कुटलिक वर्द्ध
मान २८, नंदिकेश धर्मचंड विवेक २९ ॥ कलापक विसोम
अरणनाथ ३०, समस्या गुण अनेक ॥ १३ ॥ त्रणपदे त्रण चोवि
सीत, पदेपदे कोठो जाण ॥ चोथा पदमां जावना, भाराघो
गुण खाण ॥ १४ ॥ दोढसो कढ्याणक तणो, गुणणो ए मनो
हार ॥ चित आणीने आदरो, जिम पामो जवपार ॥ १५ ॥
जिनवर गुणमाला पुण्यनी ए प्रनाला, जे शीव सुख रसा
ला पामीए शुविशाला ॥ जिन उत्तम शुणीजे पाद तेहना
नमिजे, निजरूप समरिजे शिवलक्ष्मी वरिजे ॥ १६ ॥ इति ॥

अंतरीक पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन.

प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रीलोकमां एटलुं
सार दीतुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नातुं, मन माहरे
ताहरुं ध्यान वेतुं ॥ १ ॥ मन तुम पास वसे रात दीवसे,
मुख पंकज नीरखवा हंस हीसे ॥ घन ते घमी जे घमी न
यण दीसे, जज्ञी जगति भावे करी बीनविषे ॥ २ ॥ अहो
एह संसार ठे डःख दोरी, इंडजालमां चित लागी ठगोरी ॥
प्रभु मानीए विनती एक मोरी, मुज तार तुं तार बलीहार

तोरी ॥ ३ ॥ सही सुप्र जंजालमां संग मोह्यो, धमीआल
मां काल रमतो न जोयो ॥ मुधा एम संसारमां जन्म खो
यो, अहो घृत तणे कारणे जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो भ्रम
लोके सुवा भ्रांति धायो, जइ सुकतणी तंतु मांहे नरायो ॥
सुके जंबु जाणी ग्रजे दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवमो ए
म बाह्यो ॥ ५ ॥ नम्यो भ्रम जुड्यो रम्यो कर्म ज्ञारी, द
याधर्मनी वात नवी वीचारी ॥ तोरी नम्र वाणी परम
सुखकारी, तीहुं लोकना नाथ नवी संजारी ॥ ६ ॥ विषय
बेलनी सेलनी करी जाणी, नजी मोह तृष्णा तजी तोरी
वाणी ॥ एवो ज्ञो जुंडो नीज दास जाणी, प्रभु राखीए
बांहनी ढाह प्राणी ॥ मारा विविध अपराधना कोंड सहीए,
प्रभु सरणे आव्यातणी लाज वहीए ॥ वली घणी घणी वि
नति एम कहीए, मुज मानस परमहंस रहीए ॥ ७ ॥ इति ॥

कलस.

कृपा मूर्ति पार्श्वस्वामी मुगति गामी धाइये । अति ज
क्ति जावे विपत जावे तास संपती पाइए ॥ प्रभु महिमा सा
गर गुण वैरागर पास अंतरीक जे स्तवे । तस सकल मंगल
जयजयारव आनंदवर्धन विनवे ॥ १ ॥ इति ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र.

ॐ नमः पार्श्वनाथाय । विश्व चिंतामणीयते ॥ ह्रीं धर
णं वैरोध्या । पद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥ शांति तुष्टि महा
पुष्टि । धृति कीर्ति विधायिने ॥ ॐ ह्रीं ध्वद् व्याल वैताल ।
सबाधिव्याधिनाशने ॥ २ ॥ जया जिताख्या विजया ।

रूपापरा जितयान्वित ॥ दिशापाल त्रैर्यक्षैः । विद्यादेवी
जिरन्वितः ॥ ३ ॥ उँ असिआजसायनम । स्तत्रस्त्रैलोक्य
नाथतां ॥ चतुःपष्टि सुरैश्चास्ते । नापंते ठत्र चामरैः ॥ ४ ॥
श्री संखेश्वर मंडन । पार्श्व जिन प्रणत कल्पतरु कल्प ॥
चूरय डष्ट व्रातं ॥ पुरयमे वांठितं नाथ ॥ ५ ॥ इति ॥

ग्रहशांति स्तोत्र.

जगद्गुरुं नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरु नापितं ॥ ग्रह
शांतिं प्रवक्ष्यामि । लोकानां सुख हेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्रैः खेच
रा ज्ञेयाः । पूजनीया विधि क्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेप नैर्धूपैः । नै
वेद्यैः स्तुष्टि हेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रज्ञस्य मार्तण्ड । श्वश्र्वश्च प्रज्ञस्य च ॥
वासुपूज्ये जमि पुत्रो, बुधोऽप्यष्टौ जिनेषु च ॥ ३ ॥ विम
लानंत धर्मारः ॥ शांतिर्कुश्रुर्नमिस्तथा । वर्द्धमान जिने
न्द्रस्य । पाद पद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषिनाजित सुपार्श्वी श्वा
जिनंदन शीतलौ ॥ सुमतिः संनवः स्वामी । श्रेयांसश्च बृह
स्पति ॥ ५ ॥ सुविधिः कथितः शुक्रः । सुव्रतश्च शनैश्वरः ॥
नेमिनाथो नवेन्द्राहुः । केतू श्री मङ्घ्रि पार्श्वयोः ॥ ६ ॥ ज
न्म लग्नेच राशौच । यदा पीमंति खेचरा ॥ तदा संपूजये
द्भिमान् । खेचरैः सहितान् जिनेषु ॥ ७ ॥ पुष्प गंधादि
निर्धूपैः । नैवेद्य फल संयुतैः ॥ वणं सहस्र दानैश्च । वस्त्रैश्च
दक्षिणान्विते ॥ ८ ॥ उँ आदित्य सोम मंगल । बुध गुरु
शुक्राः शनिश्चरो राहुः ॥ केतु श्री प्रमुखाः खेटा । जिनपति
पुरतोव तिष्ठन्तु ॥ ९ ॥ इति नष्टित्वा पंचवर्णैः । कुसुमाललि
क्षेपः ॥ जिनेषुनामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां तुष्टि हेतवे ॥ नम

स्कार शतं नक्त्या । जपेदष्टोत्तरं सुधी ॥ १० ॥ जप्त्वाहु
रुवाचेदं, पंचम श्रुतकेवली ॥ विद्या प्रवादतः पूर्वा । अद्दशां
ति विधि श्रुतं ॥ १४ ॥ इति ॥

परमेष्ठी स्तोत्र.

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नव पदात्मकं ॥ आत्मरक्षा
करं वज्रं, पंजरान्यस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं,
शिरस्कं शिर शिस्थितं ॥ ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुख पटंब
रं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायनी ॥ ॐ न
मो नवज्ञायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमोलोएस
वसाहुणं, मोचके पादयोः शुभ्रे ॥ एसो पंच नमुक्कारो, सिला
वज्रमयीतले ॥ सद्य पावप्पणासणो, वप्रौवज्र जयोर्वहि ॥
मंगलाणंच सवेसिं, खादि रांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहा तं
च पदं ज्ञेयं, पठमं हवइ मंगलं ॥ वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं
देह रक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रज्ञव रक्षेयं, कुक्षे पद्म नाशिनी ॥
परमेष्ठी पदोन्नुता, कथिता पूर्वसूरिभि ॥ ७ ॥ यश्चेवं कुरुते
रक्षां, परमेष्ठी पदैः सदा ॥ तस्य नस्यादृजये व्याधि, राधि
श्चापि कदाचनं ॥ ८ ॥ इति ॥

पंचषष्टि यंत्र स्तोत्र.

आदौ नेमिजिनं नौमि, संजवं सुविधिं तथा ॥ धर्मना
थं महादेवं, शांतिशांतिकरं सदा ॥ १ ॥ अनंतं सुव्रतं नक्त्या, न
मिनाथं जिनोत्तमं ॥ अजितं जितकंदर्पं, चंद्रचंद्रशमप्रभं ॥ २ ॥
अदिनाथं महादेवं, सुपाश्र्वं विमलं जिनं ॥ मल्लिनाथ गुणो

पेतं, धनुषां पंचविंशति ॥३॥ अरनाथं महावीरं, सुमार्तिच
जगद्गुरु ॥ श्रीपद्मप्रज्ञ नामानां, वासुपूज्यं सुरैर्नतं ॥४॥
शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांसं श्रेयसे स्तव ॥ कुंथुनाथं च वामेयं,
श्री अचिनंदन विष्णु ॥५॥ जिनानां नामजिर्वंदं, पंचपष्टि
समुद्रवं ॥ यंत्रोयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरंतरं ॥६॥
यस्मिन् गृहे महान्त्या, यत्रोयं पुज्यते बुधैः ॥ जूतप्रेतपी
शाचाद्यै, नयं तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुण निधानं यं
त्रमेनं विशुद्धं । हृदय कमल कोशे धीमतां ध्येय रूपं ॥
श्री जयतिलक गुरु सूरि राजस्य शिष्यो । वदति सुख
निधानं मोक्ष लक्ष्मी निवासं ॥८॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमार्थी त्रैत्यवंदन ॥

अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज न
मो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो
॥ अ० ॥१॥ प्रभु प्रारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलं
क नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशय निधि, प्रवचनजल
धिर्मयंक नमो ॥ अ० ॥२॥ तिहुयण जवियण जणमण वंठि
य, पूरण देव रत्नाल नमो ॥ ललिजलि पाय नमुं हुं जाले,
करजोमी त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥३॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगज
न सज्जन, नयनानदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर
नायक, सारे अहनिस्ति सेव नमो ॥ अ० ॥४॥ तुं तिर्यकर
सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत ज
विनें हितवत्सल ॥ तूंही कृपारस सिधु नमो ॥ अ० ॥५॥
केवलज्ञानादर्शो दर्शित, लोकालोक स्वप्नाव नमो ॥ ना

सितं सकल कलंक कलुषगण, डुरित उपश्व ज्ञाव नमो ॥
 अ० ॥ ६ ॥ जग चिंतामणी जगगुरु जग हित, कारक ज
 गजन नाथ नमो ॥ घोर अपार ज्वोदधि तारण, तूं शिव
 पुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ असरण सरण नीराग निरं
 जन, निरुपाधिक जगदीस नमो ॥ बोधि दीप्त अनोपम दा
 नेशर, ज्ञानविमल सूरिश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

गौतमाष्टक चैत्यवंदन प्रारंभ.

राग प्रज्ञाती.

मात पृथ्वी सुत प्रात ऊठी नमो, गणधर गौतम नाम
 गेले ॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय
 वंश वेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुचूति नंदन विश्व जन वंदन,
 डुरित निकंदन नाम जेनुं ॥ अज्ञेद बुद्धे करी ज्ञविजन जे
 ज्ञजे, पूर्ण पोते सही जाग्य तेनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह
 चिंतामणि सुरतरु, कामित परण कामधेनु ॥ तेह गौतमनुं
 ध्यान हृदये धरो, जेह अक्की अधिक नहि महात्म्य केनुं ॥
 ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीजे करी, स्वमुखे
 गौतम नाम ध्याये ॥ कोरु मन कामना सफल वेगे फले,
 विघन वैरी सेवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान बलने जस
 सकल सुख संपदा, गौतम नामथी सिद्धि पामे ॥ अखंरु
 प्रचंरु प्रताप होय अवनिमां, सुरनर जेहने शीश नामे ॥
 मा० ॥ ५ ॥ छष्ट दूरे टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने
 व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर ज्ञाजे बली, गौतम नाम
 जपतां उद्धासे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ,

पन्नरसे त्रणने दिस्क दीधी ॥ अठम पारणे तापस कारणे,
 क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ४ ॥ वरस पंचास
 लगे गृहवासे वस्या, वरस बली त्रीस करी वीर सेवा ॥
 बार वरसां लगे केवल जोगव्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा
 ॥ मा० ॥ ५ ॥ महियल गौतम गोत्र महिमा निधि, गुणानि
 धि रिद्धि ने सिद्धिई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला
 लहे, सुजस सोजाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री संखेश्वर पार्श्वजिननोठंद लिख्यो वे.

सेवो पास संखेश्वरो मन शुद्धे, नमो नाथ निश्चे करी
 एक बुद्धे ॥ देवी देवलां अन्यने शुं नमो ठो, अहो ज्ञव्य लो
 को जुला कां नमो ठो ॥ १ ॥ त्रीलोकना नाथने शुं तजो ठो,
 पढ्या पासमां भूतमाने कां जजो ठो ॥ सुरधेनु वंमि अ
 जाने शुं अजो ठो, महापंथ मुकी कुपंथे ब्रजो ठो ॥ २ ॥ त
 जे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण रासजने हस्ती
 साटे ॥ सुरद्रुम उपाधि आक कुण वावे, महामूढ ते आकुला
 अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरोने किहा मेरु शृंग, किहां के
 मरीने किहा ते कुरंग ॥ किहा विश्वनाथ किहां अन्य देवा,
 करो एक वित्ते प्रजु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती
 प्राणनाथ, सहु जीवने जे करे ठे सनाथ ॥ महातत्व जाणी
 सदा जेह ध्यावे, तेदना छल द रिद्धि पलावे ॥ ५ ॥ पा
 मी मानुषोने वृथा कां गमो ठो, कुतिले करी देहने का दमो
 ठो ॥ नदी मुक्ति वासं विना वीतरागं, जजो जगवंतं तजो
 दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदेरत्न जालें सदा हेत आणी, वया

ज्ञाव कीजे प्रभु दास जाणी ॥ आज माहरे मोतीमें मेह
वूठ्या, प्रभु पास संखेश्वरो आप तूठ्या ॥७॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र लिख्यते ॥

कल्याण केलि सद्नाय नमो नमस्ते, श्रीमत्सरोज
वदनाय नमो नमस्ते ॥ रागारिवार कदनाय नमो नमस्ते,
वज्रनिराम रदनाय नमो नमस्ते ॥ १ ॥ अंनोधरान्न कर
णाय न० ॥ लोकातिरिक्त चरणाय न० ॥ संसार वार्द्धि
तरणाय न० ॥ त्रैलोक्य सार शरणाय न० ॥ २ ॥ सन्निर्मि
तांहि महनाय न० ॥ रागोरु दारुदहनाय न० ॥ विघ्नस्त
कृत्स्न कुहनाय न० ॥ पुण्यडुमालि गहनाय ॥ न० ॥ ३ ॥
संसार ताप शमनाय न० ॥ निर्दाह्य दाह दमनाय न० ॥
सुव्यक्त मुक्ति गमनाय न० ॥ रूपाग्निभूत कमनाय न० ॥
॥ ४ ॥ पापौघपाशुपवनाय न० ॥ सेवा परत्रि जुवनाय
न० ॥ क्रोधांशु शुक्लणि वनाय न० ॥ संसृत्यु दन्वदवनाय
॥ न० ॥ ५ ॥ नेत्राग्निभूत कमलाय न० ॥ शक्रचिंतां ह्रिय
मलाय न० ॥ निर्नाशिता खिलमलाय न० ॥ पद्मोल्लसत्प
रिमलाय न० ॥ ६ ॥ श्रीअश्वसेन तनयाय न० ॥ सर्वाङ्गुतैक विन
याय न० ॥ विख्यात निश्चितनयाय न० ॥ निर्णीत भूर्युपन
याय न० ॥ ७ ॥ श्रीसंघ हर्ष सुविनेयक धर्मसिंह । पादारवि
दमबुलिणमुनि रत्नसिंहः ॥ पार्श्व प्रभोर्भगवतः परमं पवि
त्रं । स्तोत्रंचकार जनतान्निमतार्थ सिद्ध्यै ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री महावीरजिन वंद लिख्यते.

सेवो वीरने चित्तमां नीत्य धारो, अरि कोधने मनधी
 दूर वारो ॥ संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहि, राग द्वेषधी दूर धा
 ने उठांहि ॥१॥ पढ्या मोदना पासमां जेह प्राणी, शुध त
 त्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो ठो,
 जिनमार्ग वंझी जूला कां जमो ठो ॥२॥ अलोन्नी अमानो
 नीरागी तजो ठो, सलोन्नी समानी सरागी जजो ठो ॥ ह
 रीहरादी अन्यथी शुं रमो ठो । नदो गंग मूकी गलीमा प
 मो ठो ॥३॥ केइ देव हाथे असि चक्र धारा, केइ देव घाले
 गले रुंढमाला ॥ केइ देव उठंगे राखे ठे वामा, केइ दे
 वि साथे रमे वृंद रामा ॥४॥ केइ देव जपे लेई जपमाळा,
 केइ मांस नंही महा बीकराला ॥ केइ योगणी जोगणी जो
 ग रागे, केइ रुझणी ठागनो होम मागे ॥५॥ ईसा देव देवी
 तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुखने केम चाखे ॥ जदा
 लोजना थोकनो पार नाव्यो, तदा मघनो बीडत मन जा
 व्यो ॥६॥ जेह देवला आपणी आश राखे, तेह पीरने
 मन शुं खेय घाखे ॥ दीन हीननी जरी ते केम जाले,
 फुटो छोल होए कहो केम वाजे ॥७॥ अरे मूढ आता नजो
 मोक्ष दाता, अलोन्नी प्रजुनें नजो वीश्वख्याता ॥ रत्न चिं
 तामणी सारीखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमशुं सत
 राचो ॥८॥ मंद बुद्धिं जेह प्राणी कहे ठे, सवी धर्म एकत्व
 जूनो नमे ठे ॥ कीहा सर्पपाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा
 ने कीहां शूरवीरं ॥९॥ कीहां स्वर्णप्रांन कीहां कुंजखंरं, कीहां
 कोइवाने कीहां खीरमंरं ॥ कीहां खीर सिंधु कीहां क्षार नोरं,

कीहां कामधेनु कीहां ढाग खीरं॥१०॥ किहां सत्यवाचा कहां
 कूडवाणी, कीहां रंक नारी कीहां राय राणी ॥ कीहां नारकीने
 कीहां देव जोगी, कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥
 कीहां कर्मधाती कीहां कर्मधारी, नमो वीरस्वामी नजो
 अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नधी राज्य पामी, राचे मंद
 बुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथीर सुख संसारमां मन
 माचे, ते जना मुढमां श्रेष्ठ गुंष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया ह
 रो दंन रोसी, सजो पुन्य पोसी नजो ते अरोसी ॥ १३ ॥
 गती च्यार संसार अपार पांमी, आव्यो आशा धारी प्रभु पा
 य स्वामी ॥ तुंही तुंही तुंही प्रभु पर्म रागी, नव फेरनी शृं
 खला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीए वीरजी अर्ज ठे एक मो
 री, दीजें दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुं गुरु
 आज मेरो, वीवेके लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टकबंद लिख्यते ॥

वीर जिणेसर केरो शीष, गौतम नाम जपो निसदीसा॥
 जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर वीलसें नवें निधान ॥ १ ॥
 गौतम नामे गीरिवर चमें, मनवांछित हेला संपडे ॥ गौत
 म नामें नावें रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी
 वीरुआ वंकमा, तस न मे नावें दूकमा ॥ नूत प्रेत नवी म
 में प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें नि
 रमल दाय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन
 सीणगार, गौतम नामें जय जयकारा॥ ४ ॥ जाल दाल सुरहा
 घृत गोल, मनवांछित कापम तंबोल ॥ धरुं घरणी नीरमल

चीत, गौतम नामे पुत्र वीनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो
 अवीचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोटां मंदि
 र मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मय
 गल घोडानी जोरु, वारु पहोचे वंछित कोरु ॥ महीयल
 माने मोटा राय, जो जुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्र
 णम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे
 निरमल ज्ञान, गौतम नामे वाघे वान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अच
 धारो सहु, गुरु गौतमना गुण ठे बहु ॥ कहे जावण्यसमय
 करजोरु, गौतम जुठे संपत्ति कोरु ॥ ९ ॥ इति. ॥

अथ वीस विहरमाननुं चैत्यवंदन.

पदेला श्रीमधर नमो, बीजा जुगमंधर ॥ बाहुजिन
 त्रिजा नमो, सुबाहु सुखकर ॥ १ ॥ सुजात जीन पंचमा,
 स्वयंप्रभु जिन ठठा ॥ रूपज्ञानन जिन सातमा, अनंतवीर
 ज जिन दीठा ॥ २ ॥ सूरप्रभु नवमा नमो, दशमा देववि
 साल ॥ वज्रंधर जिन इग्यारमा, चंज्ञानन दयाल ॥ ३ ॥ चं
 डबाहु जिन तेरमा, चउदमा जुजंगनाथ ॥ इश्वरस्वामी प
 नरमा, नेमी प्रभुनो करो साथ ॥ ४ ॥ वीरसेन जिन सतरमा,
 महाजड जिनराज ॥ देवजसा उगणीसमा, अजितवीरज
 महाराज ॥ ५ ॥ जंवूदीपे च्यार जिन, धातकीखंढे आठ ॥
 पुष्कराळें थाठ जिन, नमतां दोय नित ठाठ ॥ ६ ॥ ए बीसे
 जिन वंडीए, वैरमान जगदीस ॥ पूजो प्रणमो प्रेमशुं, धरो
 ध्यान नित दीस ॥ ७ ॥ घन ते देश नगर पुरी, जिहां विच
 रे जिनराज ॥ जिवि जीवने प्रतिबोधता, सारे भातम काज

॥ ८ ॥ अनुजव रसमधि देशना, स्यादवाद समुदाय ॥ सत्ता
धर्म प्रकासता, डुरगति दुःख पलाय ॥ ९ ॥ जिन उत्तम पद
रूपनी ए, निस दीन करो सेवा ॥ अमीकुमर एणी परे ज
णे, मोक्ष तणां सुख लेवा ॥ १० ॥ इति. ॥

अथ १४ तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन.

रूपज अजित संनव नमो, अन्ननंदन जिनराज ॥
सुमंती पदम सुपास जिन, चंडप्रभु महाराज ॥ १ ॥ सुवि
धि शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य सुख वास ॥ विमल अ
नंत श्रीधर्म जिन, शांतिनाथ पूरे आश ॥ २ ॥ कुंधु अर म
ह्वि जिन, मुनीसुव्रत जगनाथ ॥ नमी नेमी पारस वीर,
ए सांचो शिवपुर सांथ ॥ ३ ॥ डव्य चावथी सेवीये, आ
णी मन उद्धास ॥ आतम नीर्मल कीजीये, जिम पामी
जे सिंवास ॥ ४ ॥ एम चौवीस जिन समरतां ए, पोचे म
ननी आश ॥ अमीकुमर एणी परे जणे, ते पामे लील
वीलांस ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन संपूर्ण. ॥

अथ श्री स्तुतियो प्रारंभः

अथ एकादशीनी स्तुति.

श्री ज्ञानेभिर्ब्रजाषे जलशयसविधे स्फूर्तिमेकादशी
यां, माद्यन्मोहाव निंद प्रशमनविशिखः पंचबाणार्चिर
र्षः ॥ मिथ्यात्वध्वांतवांतौ रविकरनिकर स्तीव्रलोन्नाड्विज्जं,
श्रेयस्तत्पर्ववःस्तात् शिवसुखमितिवा सुव्रतश्रेष्ठिनोन्नूत

॥ १ ॥ ईडैरत्रमन्निर्मुनिपगुणरसास्वादनान्दपूर्णै, दी
व्यन्निःस्फारहारैर्ललितवरवपुर्यष्टिनिःस्वर्वधून्निः ॥ साई
कट्याणकौघो जिनपतिनवतेर्विडुज्जुतेड संख्यो, घस्त्रे य
स्मिन् जगेतन्नवतुसुज्जविना पर्व सच्चर्महेतुः ॥ १ ॥ सिद्धां
ताब्धिप्रवाहः कुमत जनपदान् प्लावयन् यः प्रवृत्तः, सिद्धि
द्वीपं नयन्वी धनमुनि वणिजः सत्य पात्र प्रतिष्ठान् ॥ एका
दश्यादि पर्वे डुमणि मतिदिशन् धीवराणां महर्घ्यं, सन्यायां
न्नश्च नित्यं प्रवितरतुसनः स्वप्रतीरे निवासं ॥ २ ॥ तत्पर्वो
द्यापनार्थं समुद्रित सुधियां शंजु संख्या प्रमेया, मुत्कृष्टां व
स्तुवीथि मन्नयद सद्ने प्राञ्जती कुर्वताता ॥ तेषा सव्याह्न
पादैः प्रलपित मतिज्जिः प्रेत ज्ञूतादिनिर्वा, डुष्टैर्जन्यं त्वज
न्यं हरतु हरि तनु न्यस्त पदाविकाख्या ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीमंधरजिननी लिख्यते.

श्री सिमंधर जिनवर, सुखकर साहेव देव ॥ अरिदंत
सकलनी, ज्ञाव धरी करु सेव ॥ सकल आगम पारक, गण
घर ज्ञापीत वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुण
खाणि ॥ १ ॥ इति. ॥

अथ श्रीमंधरजिननी.

श्री सिमंधरदेव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥
कुंधु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जस परसस्याजी ॥
सुवत नमी अतर वरी दिक्षा, शिक्षा जगत नीरासेंजी ॥
उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जाम्ये शिव बहु पासेजी

॥ १ ॥ ३५ वत्तीस ६४ चउसठि ६४ चउसठि मलिया, इगस
 यसठि उक्किठाजी ॥ ४ चउ ८ अरु ८ अरु मली मध्यम का
 लें, वीस जिनेश्वर दिठाजी ॥ १ दो ४ चउ ४ ज्यार जघन्य
 दस जंबु, धाइ पुरकर मोऊरे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारां
 गें, प्रवचनसारउद्धरें जी ॥ २ ॥ सिमंधर वर केवल पामी,
 जिनपद खवण निमित्तें जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन,
 देता सुणत विनित्तें जी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां, ग
 णधर लब्धी विकसिया जी ॥ अपक्कवसिय जिनागम वं
 दो, अह्वर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित
 संगी, विविध जंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रख
 वाली, उपड्व हरनारी जी ॥ पंचांगुली सूरि शासनदेवी,
 देती तस जस रुद्धि जी ॥ श्री शुभ वीर कहे शिव साधन,
 कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ श्री आदिजिनस्तुति लिख्यते.

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी
 माया, धोरी लंठन पाया ॥ जगत स्थीती निपाया, शुद्ध चा
 रीत्र पाया ॥ केवल श्री राया, मोह नगरे सधाया ॥ १ ॥
 सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी ॥ डुरगती दुः
 ख नारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणी रूपक सुधारी, केव
 लानंत धारी ॥ नमीए नर नारी, जेह विश्वोपकारि ॥ २ ॥
 समोवसरण बेठा, लागें जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप प
 इठा, इंड चंदादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा, गुंथता टाले
 रीठा ॥ जवि जन होय हीठा, देखी पुन्ये गरीठा ॥ ३ ॥

सुर समकितवंता, जेह रुद्धे महंता ॥ जेह सज्जन संता,
टालिए मुऊ चिता ॥ जिनवर सेवंतां, विघ्न वारे डुरंता ॥
जिन उत्तम थुणंतां, पद्मने सुख दिता ॥४॥ इति. ॥

अथ ज्ञानपंचमीनीस्तुति प्रारंभ.

श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्मान्निषेक, श्रं
चत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदज्जिदा पंचवक्रोपमानः ॥ निर्मुक्तः पं
चदेह्याः परमसुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः, कल्याणं पंचमीसत्त
पसि वितनुता पंचमज्ञानवान् वः ॥ १ ॥ संप्रीणन् सच्चको
रान् शिवतिलकसमः कौशिकानंदमूर्तिः, पुण्याब्धिप्रीतिदा
यी सितरुचिरिव यः स्वीयगोत्रिस्तमासि ॥ सांज्ञणि ध्वस्त
मानः सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार, ज्ञानपुष्पाज्जिनौघः स
तपसि भविनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥ पीत्वा नानान्निधा
र्थामृतरसमसमं यांति यास्यंतिजग्मु, ज्जीवायस्मादनेके वि
धिवदमरतां प्राज्यनिर्वाण पुर्याम् ॥ यात्वा देवाधिदेवागम
दशमसुधाकुंरुमानंदहेतु, स्तत्पंचम्यास्तपस्युद्यतशिदधियां
चाविनामस्तु नित्य ॥ ३ ॥ स्वर्णालंकारवल्गन्मणिकिरण
गणध्वस्तनित्याधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसुकृतजनव्रातवि
घ्नप्रचारा ॥ देवीश्रीअंविकाख्या जिनवरचरणांनोजजृंगी
समाना, पंचम्यन्हस्तपोर्थे वितरतु कुशल धीमतां साव
धाना ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थनी थोयो ॥

श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थ तिलकं श्रीनाजिराजांगजं, वंदे

रैवतशैलमौलिमुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगेप्यजितं जि
नं जगुपुरे श्रीसुव्रत स्तंजने, श्रीपार्श्वप्रणमामि सत्यनगरे
श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प जुवने ग्रैवे
यकव्यंतरा, ज्योतिष्यामरमंदराद्विसर्तीं स्तीर्थकरानादरा
न् ॥ जंबुपुष्करधातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुंभले, ये चान्येऽ
पि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥
श्रीमद्दीरजिनास्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतम, गंगावर्तनमे
त्य या प्रविन्निदे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंह
तित्रिपथगा ज्ञानांबुधि वृद्धिगा, सामे कर्ममलं हरत्वविकलं
श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्रश्वंश्चरविग्रहाश्वधरण ब्रह्मंश्च
शांत्यंबिका, दिक्पाला सकपट्टिगोमुखगणिश्चेश्वरी नार
ती ॥ येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रति विधिश्चीतीर्थयात्रादिषु,
श्रीसंघस्य तुरा चतुर्विध सुरास्ते संतु नमंकराः ॥४॥ इति॥

अथ दशत्रिकनी स्तुति लिख्यते.

निसिही त्रण प्रदक्षिणा त्रिणे प्रणाम त्रिण करीजे जी,
त्रण प्रकारी पूजा करीने अवस्था त्रिण धरीजे जी ॥ त्रण
दिशि वर्जि जिन जोवो जूमि त्रण पूजीजे जी, आलंबन मु
खा त्रण प्रणिधान चैत्यवंदन त्रण कीजेजी ॥१॥ पहेले ना
वजिन बीजे ड्वयजिन त्रीजे एक चैत्य धारो जी, चोथे ना
मजिन पांचमे सर्वलोक चैत्य जूहारो जी ॥ विहरमान ठे
जिन वंदो सातमे नाण निहालो जी, सिद्ध वीर उज्जित अष्टा
पद शासन सुर संजालो जी ॥ २ ॥ शक्रस्तवमां दोय प्रका
र अरिहंत चेइआणुं त्रीजे जी, चोविसत्तामां दोय प्रकार

सुतेस्तव दोयं लीजे जी ॥ सिद्धस्तवमां पांच प्रकार ए वारे
अधिकारो जी, जित निर्युक्ति मांहे जांख्यां तेहमां ए विस्तां
रो जी ॥ ३ ॥ तंबोले पाणं ज्ञायणं वोहणं मेहुणं एकं चित्तं
धारो जी, थुंकं सलेपमं वस्त्री लघुनिर्ता जुवटे रमवु वारो
जी ॥ ए दश आशातनां महोटी वर्जो जिनवर द्वारो जी,
ह्रमाविजयं जिनं एणी परे जंपे शांसिन सुर संचालो
जी ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण ॥

अथ श्री पार्श्वनाथनी स्तुति.

(झुतविलंबितवृत्तम्)

समदमुत्तम वस्तु महापणं, सकल केवलं निर्मल सद्
गुणं ॥ नगर जेसलमेर विभूषणं, नजत पार्श्वजिनं गतं दू
पणं ॥ १ ॥ सुर नरेसर नम्र पदांबुजं, समर महिरुहं जंग
मंतांगजं ॥ सकल तीर्थकरा सुखकारकां, एह जयंतुं जंग
जान तारका ॥ २ ॥ स्रय त्रिय सुकृत जिनशासनं, विपुलं
मंगल केली विनासनं ॥ प्रबल पुन्य रमोदय धारिकां, फलं
ति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकटं कोटी वि
नाशिनं, जिनमताश्रित सौख्य विकाशनं ॥ सुर नरेश्वर किन्नर
सेवता, जयतु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री मंधरस्वामीनी स्तुति.

महिमंभणं पुत्र सोवन्न देहं, जनानंदनं केवलनाण
गेहं ॥ महानंद लब्धी वडु बुद्धिरायं, सुं सेवामि श्री मंधरं
तिष्ठरायं ॥ १ ॥ पुरा तारका जेह जीवाण जाया, नव संतति

ते सब नवाणताया ॥ ते संपइ जे जीणा वट्टमाणा, सुहं
 दितु ते मे तीजोए पहाणा ॥२॥ डुरुत्तार संसार कुवार पो
 यं, कलंकवली पंक पंखाल तोयं ॥ मणुवंठी अठेसु मंदार
 कप्पं, जीएंदागमे वंदिमो सु महप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणा
 नंदणां नोज लीणा, कला रूव लावणा सोदग्ग पीना ॥ व
 हं तस चिंतं पि निच्चं पि नाणं, सुरि नारही देही मे सुद्ध
 नाणं ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ सास्वताजिननी स्तुति लिख्यते.

१ रूपभ २ चंझानन वंदन कीजे, ३ वारीपेण डुख वारे
 जी ॥ ४ वर्द्धमान जिनवर वलि प्रणमो, शाश्वत नाम ए
 व्यारे जी ॥ नरतादिक खेत्रे मीलि होवे, च्यार नाम चित
 धारें जी ॥ तिणे चारे ए साश्वत जिनवर, नमीए नीत्य स
 वारे जी ॥ १ ॥ ऊर्द्ध अधो त्रीहें लोके थई, कोमी पन्नरसें
 जाणो जी ॥ उपर कोमि वेतालीस प्रणमो, अरुवन लख म
 न आणो जी ॥ ठत्रीस सहस असीते ऊपर, विंव तणो प
 रिमाणो जी ॥ असंख्यांत व्यंतर जोतिषीमां, प्रणमुं ते सु
 विहाणो जी ॥ २ ॥ रायपसेणी जीवानीगमे, भगवती सू
 त्रे न्नांखी जी ॥ जंबूद्वीपपन्नती गाणांगे, विवरीने घणुं दा
 खी जी ॥ वलिय अशाश्वती ज्ञाताकल्पमां, व्यवहार प्रमु
 खे आखी जी ॥ ते जिनप्रतिमा लोपे पापी, जीहां बहु सू
 त्र ठे साखी जी ॥ ३ ॥ ए जिनपूजाथी आराधक, ईशान इं
 ड कहाया जी ॥ तिम सूरीआन प्रमुख बहु सुर वर, देवी
 तणो समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइमहोत्सव, करे अति ह

पे नराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसे, पद्मविजय
नमे पाया जी ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ श्री सिद्धचक्रजीनी स्तुति.

जिनशासन वंछित पुरण देव रसाल, नावे नवि न
णिए सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुंकाले एहनी पूजा करे न
जमाल, ते अमर अमर पद सुख पामे सुविसाल ॥ १ ॥
१ अरिहंत २ सिद्ध वंदो ३ आचारज ४ नवप्राय, ५ मुनि ६ द
स्तिण ७ नाण ८ चरण ९ तप १० ए समुदाय ॥ ए नवपद स
मुदीत सिद्धचक्र सुखदाय, ए ध्याने नविनां नव कोटी छ
ख जाय ॥ २ ॥ आसो चेत्रीमां सुद सातमथी सार, पुनम
लंगे किजे नव आंघिल निरधार ॥ दोय सहस गणेंबुं पद स
म साढाव्यार, एकासि आंघिल तप आगम अनुसार ॥ ३ ॥
श्री सिद्धचक्र सेवक श्री विमलेसर देव, श्रीपाल तणी परे
सुख पुरे स्वयमेव ॥ छुख दोहग नावे जे करें एहनी सेव,
श्री सुमति सुगुरुनो राम कहे नितमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री सिद्धचक्रजीनी स्तुति.

१ अरिहंत नमो बलि २ सिद्ध नमो, ३ आचारज ४ वाचक
५ साहु नमो ॥ ६ दर्शन ज्ञान ७ चारीत्र नमो, ८ तप ९ सिद्ध
चक्र सदा प्रणामो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया धाशे, बलि
नाव नीखेपे गुण गाशे ॥ पम्किमणा देव वदन विधिंशुं,
आघिल तप गणणुं गणो विधिंशु ॥ २ ॥ ठरि पाली जे तप
करशे, श्रीपाल तणी परें नव तरशे ॥ सिद्धचक्रने कुण

आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोलें ॥ ३ ॥ साढा
चारे वरसें तप पूरो, ए कर्म विदारण तप सूरु ॥ सिद्ध
क मन मंदीर थापो ॥ नयविमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतीथीनी स्तुति लिख्यते ॥

दिन सकल मनोहर, बिज दिवस सु विशेष ॥ राय
राणा प्रणमे, चंड तणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमाने,
शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बिज तणें दिन, प्रणमुं आणी
नेह ॥ १ ॥ अनीनंदन चंदन, शीतल शीतलनाथ ॥
अरनाथ सुमती जिन, वासुपुज्य शिव साथ ॥ इत्या
दिक जिनवर, जनम ज्ञान नीरवाण ॥ हुं बिज तणे दिन,
प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो विजें, डविध धरम
जगवंत ॥ जिम विमल कमल दोय, विपुल नयन विक संत ॥
आगम अति अनोपम, जिहां निश्चें व्यवहार ॥ बीजें सवि
कीजे, पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामनी कामनी,
कमल सुकोमल चीर ॥ चकेसरी केसरी, सरस सुधंध शरीर ॥
करजोमि विजें, हुं परणमुं तस पाय ॥ इम लब्धीविजय
कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति लिख्यते ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिएंद तो ॥
स्याम वरण तन सोजतुं ए, मुख शरदको चंद तो ॥ सहस
वरस प्रभु आनखुं ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें
हणि ये, पहोता सुगति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टापद पर आदि

जिन ए, पहोता मुगति मजार तो ॥ वासुपुज्य चपापुरी ए,
 नेम मुगती गीरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए,
 श्री वीर तणु नीरवाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ
 ए, सीर वहु तेदनी आण्य तो ॥१॥ नेमनाथ झानी हुआ ए,
 ज्ञाखें सार वचन तो ॥ जीवदया गुण वेलमी ए, किजे तास
 जतन तो ॥ मृपान बोखो मानविए, चोरी चीत निवारतो ॥
 अनंत तीरथंकर इम कहे ए, परहरीए पर नार तो ॥ ३ ॥
 गोमेध नामें जह्म जलो ए, देवी श्री अवीका नामतो ॥ सासन
 सानीध्य जे करे ए, करे वली धर्मना काम तो ॥ तपगुह
 नायक गुण निखो ए, श्री विजयसेन सूरि राय तो ॥ रीख
 वदास पाय सेवता ए, सफल करो अवतार तो ॥४॥ इति ॥

अथ अष्टमीनी स्तुति लिख्यते.

मंगल आठ करी जस आगल, ज्ञाव धरी सुर राज
 जी ॥ आठ जातना कलस जरीने, नवहरावे जिनराज जी ॥
 वीर जिनेश्वर जनम महोद्यव, करता शिवसुख साधें जी ॥
 आठमनो तप करतां अम घर, मंगल कमला बाधे जी ॥१॥
 अष्ट करम वैरी गज गंजन, अष्टापद परें बसीया जी ॥
 आठमे आठ सरूप वीचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥
 अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरश आठ नही अंग जी
 ॥ आठमनो तप करतां अम घर, नित्य नित्य बाधे रंगजी
 ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजे जी ॥
 आठमें आठसो आगम ज्ञाखी, जवि मन संसय जाजे जी
 ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले नीरतीचारो जी ॥ आठ

मने दिन अष्ट प्रकारी, जीवदया चीत धारो जी ॥३॥ अष्ट
प्रकारी पूजा करीने, मानव जव फल लीजे जी ॥ सिद्धा
देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजे जी ॥ आत्मनो त
प करतां लीजे, नीरमल केवलज्ञान जी ॥ धीरवीमल क
वि सेवक नय कहे, तपथी कोरु कळयाणजी ॥४॥ इति. ॥

अथ एकादशीनी स्तुति लिख्यते.

एकादसि अति रुच्यमि, गोविंद पुढे नेम ॥ किण कार
ण ए परव मोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जिनवर कळयाणक
अति घणां, एकसोने पंचास ॥ तेणे कारण परव मोटुं, करो
मौन उपवास ॥ १ ॥ अग्निआर श्रावक तणी प्रतीमा, कहि
ते जिनवर देव ॥ एकादसि इम अधिक सेवो, वन गजा जी
म रेव ॥ चोवीस जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुर तरु
चंग ॥ जिम गंग निरमल नीर जेहवो, करो जिन सुरंग ॥१॥
अग्निआर अंग लिखावीए, अग्निआर पाठां सार ॥ अग्निआर
केवली वीढणां, ठवणी पुंजणी सार ॥ चावखी चंगी वि
वीध रंगी, शास्त्र तणें अनुसार ॥ एकादसि एम ऊजवो, जी
म पामीए जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वय
णी, कमल सुकोमल काय ॥ जुज मंरु चंरु अखंरु जेह
ने, समरतां सुख आय ॥ एकादशी इम मन वसि, गणी हर्ष
पंढित शिष्य ॥ सासना देवी विघन नीवारो, संघ तणां निश
दीश ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ वीसस्थानक तपनी लिख्यते.

पूठे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण वेठा सुखकंदा ॥
 पुजित अमर सुरेंदा, केम नीकाचें पद जिन चंदा ॥ किण
 विध तप करता जव फंदा, टाले डुरीतह दंदा ॥ तव जांखे
 प्रभुजी गतनिंदा, सुण गौतम वसुधुति नदा ॥ निरमल तप
 अरविंदा, वीस थानक तप करत महिंदा ॥ जिम तारक समु
 दाइ चंदा, तिम ए सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदे १ अ
 रिहंत नमीजे, बीजे २ सिद्ध ३ पवयण पद तीजे ॥ ४ अथा
 चारय ५ धेर ठवीजे, ६ उपाध्यायने ७ साधु ग्रहीजे ॥ ८ ना
 ए एवंसण पद १० विनय वहीजे, इग्यारमे ११ चारीत्र
 लीजे ॥ १२ वज्रयधारीणं गणीजे, १३ कीरीयाणं १४
 तवस्त करीजे ॥ गोयम १५ जिणाणं लहीजे, १६ चारीत्र
 १७ नाण १८ सुअ २० तीवस्त कीजे ॥ त्रीजे जव तप करत
 सुणीजे, ए सवि जिन तप लीजे ॥ २ ॥ आदि नमो पद
 सयलें ठवीस, १ वार २ पन्नर ३ वार वली ४ ठत्रीस ॥ ५ दस
 ६ पणवीस ७ सगवीस, ८ पांच ने एससुसठ १० तेर गणीश ॥
 ११ सत्तर १२ नवकिरीया १३ पचवीस, १४ वार १५ अठावी
 श १६ चौवीस १७ शीतेर १८ इगवन्न १९ पिस्तालीस ॥
 २० पांच लोगस काजसग रहोश, नोकारवाली बीश, एक
 एक पदे उपवासज बीस ॥ मास पटे एक उलि करीस, इम
 सिद्धांत जगीस ॥ ३ ॥ सकति एकासणुं तेवीहार, ठठ अठ
 म मासखमण उदा ॥ पम्किमणा दोय वार, इत्यादिक वि
 धि गुरुगम धार ॥ एक पद आराधन जवपार, उजमणुं वि
 धि प्रकार ॥ मातंग जहू करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शा

सन रखवाल ॥ संघ विघन अपहार, खेमाविजय जस न
पर प्यार ॥ शुभ्र नवियण धरमी आधार, विरविजय जय
कार ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ पजुसणनी स्तुति लिख्यते.

सत्तर जेद जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे
जी ॥ ढोल ददामा जेरीने फेरी, ऊद्धरी नाद सुणीजे जी ॥
वीरजिन आगल जावना जावी, मानव नव जल लीजे जी
॥ परव पजुसण पूरव पुन्ये, आव्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥
मास पास वली दसम दूवावस, चत्तारी अठ कीजे जी ॥
उपर वलि दस दोय करीने, जिन चोमिसे पूजीजे जी ॥ व
मा कलपनो ठठ करीने, वीर वखाण सुणिजे जी ॥ पम्बे
ने दीन जनम महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥ २ ॥
आठ दिवस लगे अमर पलावी, अठमनो तप कीजे जी ॥
नागकेतूनी परें केवल लहीए, जो शुभ्र नावे रहीए जी ॥ ते
लाधर दीन त्रएय वढ्याणक, गणधर वादवदीजे जी ॥ पा
स नेमीसर अंतर बीजे, रुषज चरीत्र सुणीजे जी ॥ ३ ॥
बारसैं सूत्रने समाचारी, संवत्सरी पम्किमीए जी ॥ चैत्य
प्रवामी विधिशुं कीजे, सकल जंतुने खामीजे जी ॥ पार
णाने दीन सामीवत्सल, किजे अधीक वमाई जी ॥ मान
विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ रोहणितपनी स्तुति लिख्यते.

नक्षत्र रोहीणी जे दीन आवे, अहोरत पोसध करी

शुभ नावे ॥ चो वीहार मन लावे, वासुपूज्यनी जगती की
जे ॥ गरणं पण तस नाम जपीजे, वरस सतावीस लीजे ॥
थोमि सक्ते वरस ते सात, जावजीव अथवा वीख्यात ॥ त
प करी करो कर्म घात, नीज सक्ती नजमणुं आवे ॥ वासु
पूज्यनो विंव जरावे, लाल मणीमय ठावे ॥ १ ॥ इम अती
त अने वर्तमान, अनागत वंदो जिन बहुमान ॥ कीजे तस
गुण गान, तप कारकनी जगती आदरी ए ॥ साधरमीक व
ली संघनी करी ए, धर्म करी नव तरीए ॥ रोग सोग रोही
णी तपे जाए, संकट टले तसु जस बहु थाए ॥ तस सुर नर
गुण गाए, नीरासंसपणे तप एह ॥ संका रही तपणे करो ते
ह, नीधी नव होए जीम गेह ॥ २ ॥ उपधान धानक जि
न कढ्याण, सिद्धचक्र सत्रुंजय जाण ॥ पचमी तप मन आ
ण, पंमीमा तप रोहीणी सुखकार ॥ कनकावली रत्नावली
सार, मुक्तावली मनोहार ॥ आवम चन्द्रसने ब्रधमान, इ
त्यादीक तप माहें प्रधान ॥ रोहीणी तप बहुमान, इणी प
रें जांखे जिनवर वाणी ॥ देशना मीठी अमीअ समाणी,
सूत्रें तेह गुथांणी ॥ ३ ॥ चंदा यक्षणी यक्ष कुमार, वासुपु
ज्य सासन सुखकार ॥ वीधन मीटावण हार, रोहीणी तप
करता जन जेह ॥ इह नव परनव सुख लहे तेह, अनुक्रमे
नवनो ठेह ॥ आचारी पंमीत उपगारी, सत्य वचन जांखे
सुखकारी ॥ कपुरविजय व्रतधारी, खीमाविजय शीस्य
जिन गुरु राय ॥ तस शीस्य मुज गुरु उत्तम थाय, पद्मवि
जय गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ श्री वीरजिन स्तुति.

शासन नायक वीरजी ए, पामी परम आधार तो ॥
 रात्रे टीमण मत करो ए, जाणी पाप अपार तो ॥ घूअड
 कागने नागना ए, ते पामे अवतार तो ॥ नियम नोकारशी
 नित करो ए, सांजे करो चौविहार तो ॥ १ ॥ वासी वोढो
 रींगणां ए, कंदमूल तुं टाल तो ॥ खातां खोट घणी कही
 ए, ते माटे मन वार तो ॥ काचुं दूध ने ठाशमां ए, कठोल
 जमवुं वार तो ॥ रुपभादिक पाय सैवतां ए, राग धरे शि
 व नार तो ॥ २ ॥ होली बलेवने नोरतां ए, पींपल पाणी
 म रेड तो ॥ शियलसातमनां वासी वडां ए, खातां म्होटी
 खोड तो ॥ सांजली समकित दृढ करो ए, मिथ्यापर्व नि
 वार तो ॥ सामायिक पडिकमणुं नित्य करो ए, जिन वा
 णी जग सार तो ॥ ३ ॥ रूतुवंती अडके नही ए, न करे
 घरनां काम तो ॥ तेहनां वंठित पूरशे ए, देवि सिद्धा
 नाम तो ॥ हित उपदेशे हरख धरो ए, कोई म करो रीस
 तो ॥ कीर्त्ति कमला एहनी ए, जीव कहे तस शिष्य तो ॥ ४ ॥

अथ श्री विरजिन स्तुति.

ऊगी सवारे सामायिक लीधुं, पण वारणुं नवि दीधुं
 जी ॥ कालो कूतरो घरमां पेगे, घी सघलुं तेणे पीधुं जी ॥
 ऊगे बहुअर आलस मूकी, ए घर आप संजालो जी ॥ नि
 ज पतिने कही वीरजिन पूजी, समकितने अजुवालो जी
 ॥ १ ॥ बडे बिलाडे जल जंपावी, नत्रेवड सवि फोडी जी ॥
 चंचल ठैयां वाखुं न करे, त्राक जांगीने माल त्रोडी जी ॥

तेह बिना रेंटीन नवि चाजे, मौन नलु कोने कहीए जी ॥
 रूपनादिक चोवीश तीर्थकर, जपीए तो सुख लहीए जी
 ॥ १ ॥ घर वासीडुं करोने बहुअर, टालो नुजीतालो जी
 ॥ चोरटो एक करे ठे हेरी, नुखे द्योने तालुं जी ॥ लवक्या
 परोणा चार आवे ठे, तेने उजा मत राखो जी ॥ शिवपद
 सुख अनंतु लहीए, जो जिन वाणी चाखो जी ॥ ३ ॥ घ
 रनो खूणो कोल खणे ठे, बहु तुमे चित्तमां लावो जी ॥
 प्रौढ पलंगे प्रीतम पोढयो, प्रेम धरीने जगावो जी ॥ जाव
 प्रनसूरी कहे नहि ए कथलो, अध्यातम उपयोगी जी ॥
 सिद्धायिका देवी सान्निध्ये, थइए शिवपद जोगी जी ॥ ४ ॥

अथ स्तवननो समुदाय लिख्यते.

श्री मंघरजिननुं.

॥ इमर थांवा थांवली रे ॥ ए देशी. ॥

पुस्कलवइ विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणि सार ॥
 श्री सिमंघर साहेवा रे, राय श्रेयास कुमार ॥ जिणंद राय
 घरज्यो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए भांकणी ॥ मोटा नाहाना
 थंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिस्तण सायर वघे
 रे, कैरव यन विकसंत ॥ जिण ॥ २ ॥ गम कुगम न ले
 खवे रे, जग वरसंत जजधार ॥ कर दोय कुसुमें वासीए
 रे, ठाया सवि आघार ॥ जिण ॥ ३ ॥ रायने रंक सरीखा
 गणे रे, उदयो ते शशि सूर ॥ गंगा जल ते बिहुं तणा रे,
 ताप करे मवी छर ॥ जिण ॥ ४ ॥ सरिखा सहने तारवा रे,
 तीम तुमे ठो मद्धाराज ॥ मुजशुं थंतर किम करो रे, बांहि

ग्रह्यानी लाज ॥ जिण ॥ ५ ॥ मुह देखि टीलुं करे रे, ते न
वी होय परमाण ॥ मुजरो माने सवी तणो रे, साहिव तेह
सुजाण ॥ जिण ॥ ६ ॥ वृषन्न लंठन माता सत्यकी रे, नंद
न रुखमणी कंत ॥ वाचक जस इम विनवे रे, ज्ञयज्जन
जगवंत ॥ ७ ॥ इति. ॥

अथ श्रीमंधरजिननुं स्तवन लिख्यते.

सुणो चंदाजी श्रीमंधर परमात्म पासं जाण्यो मुज
वीनतनी प्रेम धरीने एणि परे तुमे संजलावजो ॥ जे त्रण्य
जुवननो नायक ठे, जस चोसठ इंड पायक ठे ॥ नाण दरि
शण जेहने खायक ठे ॥ सुण ॥ १ ॥ जस कंचन वरणी का
या ठे, जस धोरी लंठन पाया ठे ॥ पुंमरि किणि नगरीनो रा
या ठे ॥ सुण ॥ २ ॥ वार प्रखदा मांहि विराजे ठे, जस चो
त्रीस अतिशय ठाजे ठे ॥ गुण पांत्रीस वाणीए गाजे ठे ॥ सुण
॥ ३ ॥ जविजनने ते पनीबोहे ठे, तुम अधिक सितल गुण
सोहे ठे ॥ रूप देखी जवीजन मोहे ठे ॥ सुण ॥ ४ ॥ तुम से
वा करवा रसीनं ठुं, पण जरतमां डुरे वसीनं ठुं ॥ महा मोह
राय कर फसीनं ठुं ॥ सुण ॥ ५ ॥ पण साहिव चीतमां धरीयो
ठे, तुम आणा खरुग कर ग्रहीनं ठे ॥ नेणे कांश्क मुजथी म
रीयो ठे ॥ सुण ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पुरो, कहे पद्म
विजय आठं सूरु ॥ तो वार्धे मुज मन अति नूरो ॥ सुण ॥ ७ ॥

अथ श्री तिर्थमाला स्तवन लिख्यते.

सेतुंजे रुषन्न समोसख्या, जला गुण नखा रे ॥ सिध्या

साधु अनंत, तिरथ ते नमुं रे ॥ तिन कळ्याणक तिहां थयां, मु
गते गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ तिण ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,
गिरि सेहरो रे ॥ ज़रते ज़राव्या बिंव ॥ तिण ॥ आवु चोमुख
अति जलो, त्रिचुवन तिलो रे, वीमल वसे वस्तुपाल ॥ तिण
॥ २ ॥ समेतशीखर सोहामणो ॥ रलीयामणो रे ॥ सिध्या
तिर्थंकर विस ॥ तिण ॥ नयरी चंपा नीरखीए, हइए हरखी
ए रे, सिध्या श्री वासुपूज्य ॥ तिण ॥ ३ ॥ पुरव दिश पावा
पुरि ॥ रीधे ज़रिरे ॥ मुगति गया महावीर ॥ तिण ॥ जेसल
मेर जुहारीए, छख वारीए रे ॥ अरिहंत वींव अनेक ॥ तिण
॥ ४ ॥ वींकानेरज वंदीए, चीर नंदीए रे; अरिहंत देहरां आ
ठ ॥ तिण ॥ सोरिसरो सखेतरो, पंचासरो रे, फलोधी थन्न
ए पास ॥ तिण ॥ ५ ॥ अंतरीक अऊावरो, अमीऊरो रे;
जीरावलो जगनाथ ॥ तिण ॥ त्रिलोक्य दिपक देहरो, जा
त्रा करो रे ॥ राणपुरो रिसदेस ॥ तिण ॥ ६ ॥ नाडुलाइ
जादवो, गोमि स्तवो रे ॥ श्री वरकाणो पास ॥ तिण ॥ नंदि
सरनां देहरां, वाचन ज्ञां रे ॥ रूचक कुंमले च्यार च्यार ॥
तिण ॥ ७ ॥ सास्वती असास्वती, प्रतीमा ठती रे ॥ स्वर्ग
मृत्यु पाताळ ॥ तिण ॥ तिरथ जात्रा फल तिहा, होज्यो मु
ज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ तिण ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ पंचतिर्थ स्तवन लिख्यते.

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं ॥ देशी लालननी. ॥

सिद्धगिरि ध्यावो ज़बिका सिद्धगिरि ध्यावो, घेर वेठां
पण बहु फल पावो ॥ ज़बीका बहु फल पावो ॥ ए आंक

णी ॥ नंदीसर जात्रा जे फल होवे, तेथी बमणेरु फल कुंभ
 रगिरि होवे ॥ ज्ञ० ॥ कुं० ॥ १ ॥ तीगणुं रुचकगिरि चोगणुं
 गजदंता, तेथी बमणेरु फल जंबु महंता ॥ ज्ञ० ॥ जं० ॥
 खटगणुं धातकी चैत जुहारे, ठत्रीसगणुं फल पुस्कल वीहा
 रे ॥ ज्ञ० ॥ पुं० ॥ २ ॥ तेथी तेरसगणुं फल मेरु चैत जुहारे,
 सहस गणेरुं फल समेतसिखरे ॥ ज्ञ० ॥ स० ॥ लाखगणेरुं
 फल अंजनगिरि जुहारे, दशलाख गणेरुं फल अष्टापद गि
 रनारे ॥ ज्ञ० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोरुगणेरुं फल श्री सिद्धाचल
 जेटें, जेम रे अनादीनां छरीत उमेटे ॥ ज्ञ० ॥ छ० ॥ नाव अ
 नंते अनंत फल पावे, श्री ज्ञानविमलसूरि इम गुण गावे ॥
 ज्ञ० ॥ ६० ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते.

आंखमीए रे में आज सत्रुंजय दिगो रे, सवालाख ट
 कानो दाहामो रे ॥ लागे मनैं भीगो रे, सफल थयो रे मा
 हारा मननो उमाहो ॥ वाहला मारा ॥ जवनो संसय ना स
 ग्यो रे, नरक तिर्यंच गति छर नीवारी ॥ चरणे प्रभुजी मोह
 लाग्यो रे, सत्रुंजय दिगो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मानव रीयो
 वनो लाहो जीजें ॥ वा० ॥ देहमी पावन कीजे रे, सोना री
 पाने फुलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दिजे रे ॥ स० ॥ २ ॥ ड
 धमे पखालीने केसर घोली ॥ वा० ॥ श्री आदेसर पुज्या रे,
 श्री सिद्धाचल नयणे जोतां; पाप मेवासी धुज्या रे ॥ स०
 ॥ ३ ॥ श्रीमुख सुधरमा सुरपती आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणं
 द इम बोले रे, त्रण्य ज़वनमां तिरथ म्होटुं; नही कोइ सत्रुं

जय तोले रे ॥ सण ॥ ४ ॥ इंड सरीखा एह तीरथनी ॥ वाण ॥
चाकरी चीतमां चाहे रे, कायानी तां काह्यार काढी; सुरज
कुंममां नाह्यारे ॥ सण ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्धखेत्रे
॥ वाण ॥ साधु अनंता सिद्धा रे, ते माटे ए तिरथ म्होदुं; उ
क्षार अनंता कीधारे ॥ सण ॥ ६ ॥ नाजीराया सुत नजरे
जोतां ॥ वाण ॥ मेह अमीरस वुग रे, उदयरतन कहे आ
ज म्हारे पोते, श्री आवेसर तुग रे ॥ सण ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते.

विमलाचल नीतु वंदीए, कीजे एहनी सेवा ॥ मानु
हाथ ए धर्मनो, शिव तरु फल लेवा ॥ विण ॥ १ ॥ उज्ज्वल
जिनगृह मंरुलि, तिहां दिपें उत्तंगा ॥ मानु हिमगिरि विघ्न
मे, आइ अंबर गंगा ॥ विण ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए
तिरथ तोले ॥ उम श्री मुख हरि आगले, श्री सिमंधर बोले
॥ विण ॥ ३ ॥ जे सघला तिरथ कस्यां, जात्रा फल कहीए ॥
तेहथी ए गिरि जेटतां, शत गणुं फल लहिए ॥ विण ॥ ४ ॥
जिनम सफज होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय
संपद लेहे, ते नर विरनंदे ॥ विण ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री समेतशिखरगिरिनुं लिख्यते.

॥ क्रिडा करी घेर आविड ॥ ए देशी ॥

समेतशिखर जिन वंदिए, मोदुं तिरथ एह रे ॥ पार
पमामे जव तणो, तीरथ कहिए तेह रे ॥ सण ॥ १ ॥ अजितथी

सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवाररे ॥ पद्मप्रभु सिव
 सुख वस्त्रा, त्रणस्ये अम अणगाररे ॥ सण ॥ १ ॥ पांचसें मु
 नि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंडप्रभु श्रेयांस ल
 गे, साथे सहस मुणिंद रे ॥ सण ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराज
 शुं, विमल जिनेश्वर सिद्धारे ॥ सात सहसशुं चउदमा, नि
 ज कारज वर किधां रे ॥ सण ॥ ४ ॥ एकसो आठशुं धर्म
 जी, नवसेंशुं शातिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, सा
 चो सिवपुर साथरे ॥ सण ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शन पंचशुं,
 मुनि नमि एक हजाररे ॥ तेव्रीस मुनि युत पासजी, वरि
 या शि सुख सार रे ॥ सण ॥ ६ ॥ सताविस सहस त्रणसें,
 उपर उंगणपंचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या सि
 वपुर वास रे ॥ सण ॥ ७ ॥ ए विसे जिन इणगिरि, सिद्धा अ
 णसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीए, पास सामलनुं
 चेइ रे ॥ सण ॥ ८ ॥ इति. ॥

अथ श्री समेतसिखरगिरिनुं स्तवन.

जइ पूजो लाल समेतसिखर गिरि उपर पासजी साम
 ला, जिन जगते लाल करतां जिनपद पावें टले जव आंवला
 ॥ ए आंकणी ॥ ठरि पाली दरशन करीए, जव जव संचित पा
 तिक हरीए; नीज आतम पुन्य रसे नरीए ॥ जण ॥ १ ॥ ए
 गिरिवर नित्य सेवा कीजे, जिम सिवसुखमां करमां बीजे ॥
 चीदानंद सुधारस नित्य पीजें ॥ जण ॥ २ ॥ जिहां सिवर
 मणी वरवा आव्या, अजीतादीक विसे जिनराया; बहु मुनि
 वर युत सिववधु पाया ॥ जण ॥ ३ ॥ तेणें ए उत्तम गिरि

जाणो, करो सेवा आतम करी स्याणो; ए फरी फरी नही
 आवे टाणो ॥ ज० ॥ ४ ॥ तुमे धन कण कंचननी माया, क
 रतां अशुचो किनि काया; किम तरस्यो विण ए गिरिराया
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ इम शुचमति वचन सुणी ताजा, ए नजो जग
 गुरु आतम राजा, गिरि फरसे धरी मन शुची माजा ॥ ज०
 ॥ ६ ॥ सवत ५ सर ७ रुपी ८ गज १ चंद समें, फागण शुद
 तीज बुधवार गमे, गिरि दरिद्राण करनां चित रमे ॥ ज०
 ॥ ७ ॥ प्रजु पद पद्म तणी सेवा, करता नीत्य लहीए सिव
 मेवा; कहे रूपविजय मुज तेहेवा ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री गिरिनारनूषण नेमनाथजीनं स्तवन.

(गो वाढरवां चारवा आहिरनो अवतार रुढु गोकलीनं)

॥ ए देशी. ॥

राजुल उनी मालीए, जंपे जोम्नी हाथ ॥ साहेव सा
 मलीया, कामणगारा कंथजी ॥ उरा आवो नाथ, साहेव
 सामलीया ॥ १ ॥ मुख मटकालुं ताहरु, अणिआजां लोचन
 ॥ सा० ॥ मोहनगारी मुरते, मोहुं माहरुं मन ॥ सा० ॥ २ ॥
 वाहला किम रक्षा वेगला, तोरण उजा आय ॥ सा० ॥ पूरव
 पुन्ये में लह्यो, एहवो आज वनाव ॥ सा० ॥ ३ ॥ एहवे सह प
 गुए मलि, किधो सबलो सोर ॥ सा० ॥ गोडावि पाठा बढ्या,
 राजुल चितडु चोर ॥ सा० ॥ ४ ॥ सहसावन माहे जइ, स
 इस पुरुष संघात ॥ सा० ॥ सर्वधिरती नारी वरी, आपण
 सरखी जात ॥ सा० ॥ ५ ॥ पंचावनमें दादामजें, पास्या केव
 ल नाण ॥ सा० ॥ लोकालोक प्रकासतुं, जाणे उग्यो नाण

॥ सा० ॥ ६ ॥ राजुल आवी रंगहुं, लागी प्रजुने पाय ॥ सा० ॥
 मुजने मुकी एकली, किम शिवमंदिर जाय ॥ सा० ॥ ७ ॥
 वीतराग जावे वस्था, संजम ले जिन हाथ ॥ सा० ॥ शिवमं
 दर जेलां थयां, अविचज वेहुनो साथ ॥ सा० ॥ ८ ॥ वाचक
 रामविजय कहे, सुण स्वामी अरदास ॥ सा० ॥ राजुल जि
 म तारी तुमे, तीम तारो हुं दास ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति. ॥

अथ श्री गिरनारजूषण नेमजिन स्तवन.

(राग रामगिरि ॥ राय कहे राणी प्रती एदेशी.)

महिर करो मन मोहन, डख वारण जी ॥ आवो आणे
 गेहि, चित ठारण जी ॥ रोस न कीजें राजीया ॥ ६० ॥ आणो
 हड्डे नेह ॥ चि० ॥ १ ॥ काल जशे काहाणी रहेशे ॥ ६० ॥
 जग विस्तरसें वात ॥ चि० ॥ कोइ मुजने नरती कहेशे ॥ ६० ॥
 कोइ वली तुम्हने कुजाति ॥ चि० ॥ २ ॥ पहेली वात विमा
 सीए ॥ ६० ॥ तो नहि उपहास ॥ चि० ॥ जो होए घेर आप
 वा ॥ ६० ॥ तोहीज दिजे आस ॥ चि० ॥ ३ ॥ विण तरुअर
 वन वेदिनी ॥ ६० ॥ कुण राखे निज ठांही ॥ चि० ॥ कंत वि
 ना तिम नारिनी ॥ ६० ॥ कुण अवलंवे बांहि ॥ चि० ॥ ४ ॥ नेह
 नथी मुज कारीमो ॥ ६० ॥ निश्वे जाणो नाथ ॥ चि० ॥ देह
 तणी जीम ठांढि ॥ ६० ॥ नही ठांडुं तिम साथ ॥ चि० ॥ ५ ॥
 डखीआनां डख टाळवा ॥ ६० ॥ स्युं स्युं न करे संत ॥ चि० ॥
 तो मुज आप उत्तम थइ ॥ ६० ॥ कां उवेखो कंत ॥ चि० ॥ ६ ॥
 इम कहेती राजीमती ॥ ६० ॥ पोहती गढ गिरनार ॥ चि० ॥
 विनय कहे जइ मुगतिमां ॥ ६० ॥ जेव्यो नीज जरतार ॥

॥ चि० ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ श्री अष्टापदजीनुं स्तवन.

अष्टापद गिरिजात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥
 पुष्पक नाम विमानमां बेसी, मंदोदरी सुहाया ॥ श्री जिन
 पूजा लाल, समकित नीरमल कीजे ॥ नयणे नीरखी छाव,
 नरनव सफलो कीजें ॥ दृश्मे हरखी लाल, समता संग
 करीजे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चणमुख चणगती हरण प्रसा
 दे, चणविसैं जिन वेग ॥ चणदिशि सिंघासन सम नासा,
 पुरव दिशि दोय जीछा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संजव आदे दक्षिण च्या
 रे, पश्चीमें आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तर दस जाणो;
 एवं जिन चणविता ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वेग सिंह तणे आकारे;
 जिणहर नरते किधो ॥ रयणविंव मुरति थापीने; जग ज
 स वाद प्रसिद्धो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, राव
 ण तंती बजावे ॥ मादल विण ताल तंबुरो, पगरव ठम ठम
 कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नक्ति जावे एम नाटीक करतां, त्रुटि तंती
 वीच्यालें ॥ सांधी आप नसा नीज करनी, लघु कलास्युं
 ततकाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इण्य जावगूं नक्ति न खंमी, तो अ
 क्य पद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने, तीर्थकर
 पद वांध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणीपरे नवीजन जइ जिन आगें, व
 हुपरे जावना जावे ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अह नीस,
 सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री अष्टापदजीनं स्तवन.

(कुंअर गन्नारो नजरे देखतां जी ॥ ए देशी.)

चउ अठदस दोय वंदिए जी, वर्तमान जगदीश रे ॥
 अष्टापद गिरि उपरे जी, नमतां बाधे जगीस रे ॥ च० ॥ १ ॥
 नरत नरतपति जिन मुखे जी, उचरियां व्रत बार रे ॥ कर्श
 नशुद्धिने कारणे जी, चोविस प्रभुनो विहाररे ॥ च० ॥ २ ॥
 उंचपणे कोश तिग कहूं जी, योजन एक विस्ताररे ॥ निज
 निज मान प्रमाण नराविया जी, बींव स्व पर उपगार रे
 ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणे जी, पछिमें पउमाइ
 आठ रे ॥ अनंत आदे दश उत्तरे जी, पूर्वे रुपन वीर पाठ रे
 ॥ च० ॥ ४ ॥ रुपन अजित पूर्वे रह्या जी, ए पण आंगम पाठ
 रे ॥ आत्म शक्ति करे जातरा जी, ते नव मुक्ति वरे इणी
 आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंनो श्री सिंहाचले जी, हुआ
 असंख्य उदार रे ॥ आज दिनें पण इणे गिरे जी, जगमम
 चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्तरपिणी तगे जी, देव
 महिमा गुण दाखि रे ॥ सिंह नीषद्यादिक धिरपणे जी, वसु
 देवहिंमनी साख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिनमुख में सुण्युं जी,
 इण विधे पाठ पठाय रे ॥ श्री शुन वीर वचन रसे जी, गा
 यो रुपन शिव गाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति. ॥

अथ श्री आबुजीनं स्तवन.

(चित चेतो रे ॥ ए देशी.)

आदि जिणेसर पूजतां डख मेढो रे, आबु गढ दढ चि
 त ॥ नवि जइ नेढो रे, देलवामे देहरां नमी ॥ ९ ॥ च्यार प

रीमीत नित्य ॥ ज० ॥ १ ॥ वीस गज बल पदमावती ॥ ३० ॥
 अकेसरी इव्य आण ॥ ज० ॥ २ ॥ इंध देइ अंबी सूरि ॥ ३० ॥ पंच
 कोश वेदे वाण ॥ ज० ॥ ३ ॥ धार पातसा जीतीने ॥ ३० ॥ वी
 मल मंत्री आबहाद ॥ ज० ॥ ४ ॥ इव्य जरी घरती कीयो ॥ ३० ॥
 रूपजदेव प्रासाद ॥ ज० ॥ ५ ॥ बहोतर अघीका आठसें ॥ ३० ॥
 ३० ॥ विंव प्रमाण कहाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ पन्नरसें कारीगरे ॥ ३० ॥
 वर्ष त्रिकें ते थाय ॥ ज० ॥ ७ ॥ इव्य अनोपम खरचियो ॥ ३० ॥
 लाख त्रेपन्न वारकोमि ॥ ज० ॥ ८ ॥ संवत दश अठ्यासीए ॥ ३० ॥
 प्रतिष्ठा करी मन होनि ॥ ज० ॥ ९ ॥ देराणी जेठाणीना गोख
 ला ॥ ३० ॥ लाख अठार प्रमाण ॥ ज० ॥ १० ॥ वस्तुपाल तेजपाल
 नी ॥ ३० ॥ ए दोइ कांता जाण ॥ ज० ॥ ११ ॥ मूल नायक नेमी
 सरू ॥ ३० ॥ चारसें अमलठ विंव ॥ ज० ॥ १२ ॥ रूपज धातुमई
 वेहरे ॥ ३० ॥ एकसो पीस्तादीस विंव ॥ ज० ॥ १३ ॥ चौमुख चै
 त्य जूहारिए ॥ ३० ॥ कानसगीया गुणवंत ॥ ज० ॥ १४ ॥ बाण मीत
 तेहमां कहुं ॥ ३० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ज० ॥ १५ ॥ अचल ग
 ठे प्रभुजी घणा ॥ ३० ॥ जात्रा करो इंधियार ॥ ज० ॥ १६ ॥ कोमि
 तपे फल जे जेहे ॥ ३० ॥ ते प्रभु नक्ति विचार ॥ ज० ॥ १७ ॥
 सालंवन निराखवने ॥ ३० ॥ प्रभु ध्याने जव पार ॥ ज० ॥ १८ ॥ मंग
 ल लिला पासिए ॥ ३० ॥ वीरविजय जयकार ॥ ज० ॥ १९ ॥

अथ श्री आवुगिरि स्तवन,

(चालो चालोने राज गिरिघर रमवा जइए; ए देदी)

आवो आवोने राज श्री अर्बुदगिरि जइए ॥ श्री जिनवर
 नी प्रक्ति करीने, मातम निरमल थइए ॥ ए आंकणी ॥

विमल वसहीना प्रथम जिणेश्वर, मुख निरखे सुख पड़े ॥
 चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर, कंठे टोड ५ ठवीए ॥ आ०
 ॥१॥ जिमणे पासे लुणग वसही, श्री नेमीसर नमीए ॥ रा
 जीमति वर नयणे नीरखी, डख दोहग सवी गमीए ॥ आ०
 ॥२॥ सिद्धाचल श्री रुषन जिनेश्वर, रैवत नेम समरीए ॥
 अर्बुदगिरिनि यात्रा करंतां, चिहुं तिरथ चित धरीए ॥ आ० ३॥
 मंरुप मंरुप विविध कोरणी, निरखी हड्डे ठरीए ॥ श्रीजि
 नवरनां बिंब नीहाली, नरन्नव सफलौ करीए ॥ आ० ॥ ४॥
 अविचल गढ आदेश्वर प्रणमी, अशुन करम सवि हरीए ॥
 पास शांति निरखी जब नयणे, मन मोह्यो मुंगरीए ॥ आ०
 ॥५॥ पाजे चडतां नजम बाधे, जिम घोमे पाखरीए ॥ सक
 ल जिनेश्वर पूजी केसर, पाप पमल सवि हरीए ॥ आ० ॥ ६॥
 एकज ध्याने प्रभुने ध्यातां, मन मांही नवी मरीए ॥ ज्ञानवि
 मल केहे प्रभु सुपसाये, सकल संघ सुख करीए ॥ आ० ७॥

अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन.

श्री राणकपुर रत्नीयामणुं रेलाल, श्री आदिसर देव ॥
 मन मोह्युं रे, उत्तंग तोरण देहरू रे ॥ जाण ॥ निरखीजे नीत्य
 मेव ॥ मण ॥ श्री ० ॥ १ ॥ चनुवीस मंरुप चिहुं दिशे रे ॥ जाण ॥
 चनुमुख प्रतीमा ब्यार ॥ मण ॥ त्रिभुवन दिपक देहरू रे जाण ॥
 समोवड नही संसार ॥ मण ॥ श्री ० ॥ ३ ॥ देहरी चनरासी दीप
 ती रे ॥ जाण ॥ मांड्या अष्टापद मेर ॥ मण ॥ जले जुहास्यां नुं
 इरां रे ॥ जाण ॥ सुतां नवी सेवर ॥ मण ॥ श्री ० ॥ ३ ॥ देस जाणी
 सो देहरो रे ॥ जाण ॥ मोटो देस मेवाम ॥ मण ॥ लख नवाणुं

लगावीया रे ॥ला०॥ धन धरणे पोरवाम ॥ मण॥ श्रीण॥४॥
 खरतर वसही खांति सूर ॥लाण॥ निरखंतां सुख थाय ॥ मण
 पांच प्रासाद बीजा बली रे ॥लाण॥ जोतां पातिक जाय ॥
 मण॥श्रीण॥५॥ आज कृतारथ हुं थयो रे ॥लाण॥ आज थयो
 आणंद ॥म०॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे ॥लाण॥ डुर ग
 युं डुख दंद ॥मण॥श्रीण॥६॥ संवत सोलने ठहोतरे रे ॥ला०
 मागडार मास मज्जारि ॥ मण॥ राणकपूरे यात्रा करी रे ॥
 लाण॥ समयसुंदर सुखकार ॥ मण॥श्रीण॥७॥ इति॥

अथ श्री सिद्धचक्रजीनं स्तवन.

(देशी आठेजालनी.)

समरी सारदा माय, प्रणमि निज गुरु पाय॥आठेजालण॥
 सिद्धचक्र गुण गाईशुं जी, ए सिद्धचक्र आधार, जवि उतरे जव
 पार ॥आण॥ ते जणी नवपद घाईशुं जी॥१॥सिद्धचक्र गुण गेह,
 जस गुण अनंत अछेह ॥आण॥ समखां संकट उपसमे जी,
 जहिए वंछित जोग, पामि सविसंजोग ॥आण॥ सुर नर आवी
 बहु नमे जी ॥२॥ कष्ट नीवारे एह, रोग रहीत करे देह ॥
 ॥आण॥ मयणांसुंदरी श्रीपालने जी, ए सिद्धचक्र पसाय ॥
 आपदा छे जाय ॥आण॥ आपे मंगल मालने जी ॥३॥ ए
 सम अवर नहि कोय, सेवे ते सुखीनु होय ॥आण॥ मन वच
 काया वश करी जी, नव आंवल तप सार; पढीकमणुं दोय
 वार ॥आण॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥४॥ देव पूजो त्रण
 वार, गरणुं ते दोय हजार ॥आण॥ स्नान करी नीरमलपणे
 जी, भारावे सिद्धचक्र, सानिध करे तेनी शक्र ॥आण॥ जि

नवर जन आगे भणो जी ॥ ५ ॥ ए सेवो नीस दीस, कहीए
 वीसवा वीस ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवी परीहरो जी, ए
 चिंतामणी रत्न; एहनां किजे जत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही एहउ
 परे जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेश्वर जहू, होज्यो मुज परतहू ॥
 ॥ आ० ॥ हुं किंकर हुं ताहरो जी, पाम्यो तुंहिज देव; निरंतर
 करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस बढ्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥
 विनती करुं हुं एह, धरज्यो मुजसुं नेह ॥ आ० ॥ तुमने शुं क
 हीए बली बली जी, श्री लक्ष्मीविजय गुरु राय; शीस केश
 र गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज बली बली जी ॥ ८ ॥

अथ श्री कृष्णदेवजीनं स्तवन.

(कर्म परीक्षा करण कुमर चढ्यो रे ॥ ए देशी.)

कृष्ण जिणेश्वर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहुं रे कं
 त ॥ रीझ्यो साहिव संग न परिहरे रे, आगे सादि अनंत ॥ कृ०
 ॥ १ ॥ प्रीत सगाइ रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाइ न
 कोई ॥ प्रीत सगाइ रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधीक धन खो
 इ ॥ कृ० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण काष्ट नक्षण करे रे, मिलहुं
 कंतने धाय ॥ ए मेखो नवि कहीये संजवे रे, मेखो गम न वा
 य ॥ कृ० ॥ ३ ॥ कोई प्रति रंजन अति धणो तय करे रे, पति रं
 जन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धख्यो रे, रंजन आ
 तु मेलाप ॥ कृ० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीला रे लख अलख त
 णी रे, लख पूरे मन आश ॥ दोष रहीतने लीला नवि घटे रे,
 लीला दोष विलास ॥ कृ० ॥ ५ ॥ चित प्रसन्ने रे पूजन फल क
 हुं रे, पूज अखंरित एह ॥ कपट रहित थइ आतम अरपणो

रे, आनंदधन पद रेह ॥ अ० ॥६॥ इति॥

अथ श्री अजितनाथजीनं स्तवन.

(अनंतजिन आपजो रे ॥ एदेशी.)

ज्ञानादिक गुण संपदारे, तुज अनंत अपार ॥ ते सां
 नलतां उपनी रे, रुचि तिणे पार उतार ॥१॥ अजित जिन
 तारज्यो रे, तारज्यो दीन दयाल ॥ अजित० ॥ ए आंकणी ॥
 जे जे कारण जेहनां रे, सामग्री संजोग ॥ मिलतां कारज
 निपजे रे, कर्ता तणे प्रयोग ॥ अ० ॥ १ ॥ कार्य सिद्ध कर्ता
 वसु रे, लदी कारण संजोग ॥ निज पद कारक प्रभु मिळ्या
 रे, होय निमित्तह जोग ॥ अ० ॥ ३ ॥ अज कुल गति केशरी ल
 हे रे, निज पद सिंह नीहाल ॥ तिम प्रभु जक्ति नवि लहे रे,
 आत्म शक्ति संजाल ॥ अ० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणे रे, क
 री आरोप अनेद ॥ निजपद अर्थि प्रभु थकी रे, करे अनेक
 उमेद ॥ अ० ॥ ५ ॥ अहवा परमात्म प्रभु रे, परमानंद स्वरू
 प ॥ स्यादवाद सत्तारसी रे, अमल अखंड अनूप ॥ अ०
 ॥ ६ ॥ आरोपीत सुख अम टळ्यो रे, नास्यो अव्याबाध ॥
 समस्तो अजिवाखी पणो रे, कर्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ७ ॥
 ग्राहकता स्वामीत्वता रे, व्यापक ज्ञोक्तानाव ॥ कारणनां
 कारजदशा रे, सकल ग्रहं निज जाव ॥ अ० ॥ ८ ॥ अक्ष ज्ञा
 सन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल धया सत्ता र
 सी रे, जिनवर दर्शन पामि ॥ अ० ॥ ९ ॥ तिणे निर्यामक माह
 णो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड सुख सागरू रे, जाव धर्म
 दातार ॥ अ० ॥ १० ॥ इति. ॥

अथ श्री संभवनाथजीनું स्तवन.

साहिब सांजलो रे, संजव अर्ज हमारी ॥ जवो जव हुं
 जम्यो रे ॥ न लहि सेवा तुमारी, नरय निगोदमां रे, तिहां
 हुं बहु जव जमीन ॥ तुम विना डुख सहां रे, अहनिस को
 धे धमधमियो ॥ साण ॥ १ ॥ इंडीवश परयो रे, पाढ्यां व्रत
 नवि सुंसें ॥ त्रस पण नवी गण्या रे, हणीया थावर हुंसें ॥
 व्रत पण चीत नवि धस्यां रे, बीजुं साचुं न वोळ्युं ॥ पाषनी
 गोठमि रे, तिहां में हईमलुं खोळ्युं ॥ साण ॥ २ ॥ चोरी में करी रे,
 चजविह अदत्त न टाळ्युं ॥ श्री जिन आणसुं रे, में नवि संज
 म पाळ्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, सुध न आहार गवेख्यो ॥ र
 सना लालचे रे, नीरस पिंरु जवेख्यो ॥ साण ॥ ३ ॥ नरजव दो
 हिलो रे, पामी मोह वश पमीयो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज
 मन तिहां जई अडिज ॥ काम न को सख्यां रे, पाषे पीम में
 जरीज ॥ सुद्ध बुध नवि रहि रे, तेणे नवि आत्म तरियो ॥
 ॥ साण ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनि लालचें रे, में बहु दिनता दाखी ॥ तो
 पण नवि मली रे, मली तो नवी रही राखी ॥ जे जन अज्जी
 लखे रे, ते तो तेहथी नासें ॥ तृण सम जे मणे रे, तेहने नित
 रहे पासे ॥ साण ॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विगोमि ॥
 विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोडि ॥ अजह ते में ज
 ख्यां रे, रात्रिजोजन किधां ॥ व्रत ठ नवि पालियां रे, जेहवां
 सुलथी लिधां ॥ साण ॥ ६ ॥ एम अनंत जव हुं जम्यो रे, जम
 तां साहिब मलियो ॥ तुम विण कुण दिये रे, बोधिरयण मु
 ज बलियो ॥ संभव आपज्यो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥
 नय ईम विनवे रे, सुणज्यो देवाधिदेवा ॥ साण ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री संखेश्वरजीनं स्तवन.

सहजानंदी शितल सुख जोगी तो, हरि छुख हरि इस
 तावरी ॥ केशर चंदन घोली पूजो रे कुसुमे, अमृत वेलि
 ना वैरीनी वेटी तो ॥ कंतहार तेहनो अरी ॥ के० ॥ १ ॥ तेह
 ना स्वामिनी कांतानु नाम तो, एक वरणें लक्ष्मण जरी ॥ के०
 ॥ ते धुर थापीने आगल ठविए तो, उष्माण चंस्क खंधरी
 ॥ के० ॥ २ ॥ फरसनो वरण ते नयन प्रमाणे तो, मात्रा सुंदर
 शिर धरी ॥ के० ॥ वीसराज सुत दाहक नामे तो, तिग वर
 णादि दूरे करी ॥ के० ॥ ३ ॥ एकवीसमें फरसे धरी करण तो,
 अर्धानिध ते समहरी ॥ के० ॥ अंतस्थें बीजो स्वर टाली तो,
 शिवगामी गति आचरी ॥ के० ॥ ४ ॥ वीस फरस बलि संयम मान
 तो, आदि करण दिल धरी दिल धरी ॥ के० ॥ इषे नामे जिनवर
 नितु ध्यानं तो, जिनहर जिनकुं परिहरी ॥ के० ॥ ५ ॥ त्र्यंबके दा
 ह्यो वृषजन बोले तो, वात ए दिलमां न उतरी ॥ के० ॥ अज
 इश्वरपण सितानी आगे तो, जास विवस नटता दरी ॥ के०
 ॥ ६ ॥ ते जिन तस्करतुं जिनराज तो, हरि प्रणमें तुज पात्रं
 परी ॥ के० ॥ बालपणे उपगारे हरिप्रति, सेवन बल लंठन ह
 री ॥ के० ॥ ७ ॥ प्रभु प्रत्यपंकज शलीहोत रहिए तो, जब न
 वमा नहि शली कली ॥ के० ॥ मन मंदिर महाराज पधारे
 तो, हरि उदये न विजावरी ॥ के० ॥ ८ ॥ सारंगमां शंपाजिनं
 ऊरकत, ध्यान अनुभव लेंहरी ॥ के० ॥ श्री शुभ वीरविज
 य शिव बहुने तो, घर तेमंतां दोय धरी ॥ के० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री संखेश्वरजीनું स्तवन.

अंतरजामि सुणा अजवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो॥
 सांजलीने आव्यो हुं तीरे, जनम मरण दुख वारो ॥१॥ से
 वक अरज करे ठे राज, अमने शिवसूख आपो ॥ ए आंक
 णी ॥ सहु कोनां मनबंधीत पुरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ ए
 हवुं बीरुद ठे राज तुमारुं, किम राखो ठो डुरो ॥ सेण॥१॥ से
 वकने वजवलतो देखी, मनमां महेर न धरस्यो ॥ करुणा
 सागर केम कहेवास्यो, जो उपगार न करस्यो ॥ सेण॥३॥ ल
 टपटनुं हवे काम नही ठे, परतक्क दरिसण दिजे ॥ धुंआमे धी
 जुं नही साहेब, पेट पड्यां पतिजे ॥ सेण॥४॥ श्री संखेश्वर
 मंमण साहिब, वीनतमी अवधारो ॥ कहे जिनदर्ष मया क
 री मुजने, जव सायरथी तारो ॥ सेण॥५॥ इति.॥

अथ श्री पार्श्वनाथजीनું स्तवन.

सजनी मोरी पास जिणेशर पृजोरे ॥ स० ॥ जगमां
 देव न डुजोरे ॥ सण॥ सारंगपुर सणगार रे ॥ सण॥ पूजा दोय
 प्रकारे ॥ १ ॥ सण॥ जिनपद्मिमा जयकारी रे ॥ सण॥ वारी
 जातं वार हजारि रे ॥ ए आंकणी ॥ सण ॥ गणधर सूत्रे
 वखाणी रे ॥ सण॥ सिद्धनी उपमा आणी रे ॥ सण॥ समकि
 तनी वृद्धिकारी रे ॥ सण॥ ते किम जाशे निवारी रे ॥ १॥ सण
 जगवड अंगे धारो रे ॥ सण॥ चारण मुनि अधीकारो रे ॥ सण
 जिनपद्मिमा जिन सरखी रे ॥ सण॥ सूत्र उवाड नरखी रे
 ॥ ३॥ सण ॥ रायपसेणी ज्ञांखी रे ॥ सण॥ जीवाज्जीगमे दाखी
 रे ॥ सण ॥ व्यवहारे पण आखी रे ॥ सण॥ सुद्धी पद्मिमा सा

खीरे ॥४॥स०॥ जंबूपन्नती गणंग रे ॥स०॥ बोले दशमुं अं
ग रे ॥स०॥ माहानिस्थि विचारोरे ॥स०॥ पूजानो अधिका
रोरे ॥५॥स०॥ सातमें अंग विख्यात रे ॥स०॥ आणंद आ
वक वात रे ॥स०॥ अनज्झी पहिमा वारी रे ॥स०॥ सूक्ष्म
मकीतधारी रे ॥६॥ स०॥ ज्ञाता पाठ देखावे रे ॥स०॥ कुम
ति नरम न जावे रे ॥स०॥ इम अनेक सुत्र साख रे ॥स०॥
कहो हवे केहनो वांकरे ॥७॥स०॥ अरधा अरोचक आस्ये रे,
॥स०॥ नव दंभकमां जास्ये रे ॥स०॥ जीव करम वडा जा
णो रे ॥स०॥ कुण डुमक कुण राणो रे ॥८॥ स०॥ जिनवर
सेवा सारो रे ॥स०॥ विषय करो परीहारो रे ॥स०॥ सेवा अ
बंधक नाव रे ॥स०॥ जवजल तरवा नाव रे ॥ ९ ॥स०॥ म
णि उद्योत प्रभु साचो रे ॥स०॥ जेहवो हिरो जाचो रे ॥स०॥
संका मन नवी लावो रे ॥स०॥ गुं जाकुं कहेवरावो रे ॥१०॥

॥ अथ श्री दीवाजीनुं स्तवन ॥

॥ बाजाजीनी वाटनी अमे जोता रे ॥ ए देही ॥

जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी
रे ॥ गौतम पमुहा गणधारी, सनेही वीरजी जयकारी रे ॥१॥
अंतरंग रिपुने आसे रे, तप कोपाटोपे वासे रे ॥ लहुं
केवलनाण जलासे ॥ स० ॥ १ ॥ कटी लंके वाद वदाय
रे, पण जिन साथे न घटाय रे ॥ तिणे हरि लंछन प्रभु पा
य ॥ स० ॥ २ ॥ सवि सुर बहु थेई १ कारा रे, जल पं
कजनी परे न्यारा रे ॥ तजी तृष्णा जोगविकारा ॥स० ॥३॥
प्रभु देहाना अमृतधारा रे, जिनधर्म विषे रथकारा रे ॥ जि

ऐ ताखा मेघकुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल आली
रे, वखा स्वांतिए शिव वरमाली रे ॥ करे उत्तम लोक दीवा
ली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलख निवारी रे, शुभ सज्जनने
उपगारी रे ॥ कहे वीर विष्णु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्तमान शासननायक श्री महावीर
स्वामीनी जन्मकुंमलीनुं स्तवन. ॥

जन्मकुंमली. ॥ देशी केरवानी. ॥

| | | |
|------|-------|------|
| ११ | १० | ए |
| १२ | मं के | ८ |
| १ | उ श | |
| २ बु | ४ | ६ चं |
| ३ | वृ रा | ५ |
| ७ शु | | |

सेवधिसंच नधेरियां, अलबेले
सांइ क्युं रे लगानु अतिबेरियां
॥ एआंकणी ॥ दीए बिना न
चले, बोरु न पिठे वले ॥ बाबत
आप नधेरियां ॥ अलबेण क्युं
जाग्य अतुलबली, मागत
अटकली, जन्म बली ग्रह
चारीयां ॥ अ० ॥ क्युं ॥

॥ १ ॥ संवत पासइश, दो शत अमतालीश ॥ उज्जल चैतर तेर
से ॥ अ० ॥ क्युं ॥ साठिधमीनउंणी, उत्तराफालगुणी ॥ मंग
लवार निशावसे ॥ अ० ॥ क्युं ॥ २ ॥ सिद्धीयोग धमी,
पन्नर चारेचरी ॥ वेला मुहुरत त्रेवीसमें ॥ अ० ॥ लग्न मकर
वदे ॥ स्वामी जनम लहे ॥ जीव सुखी सहु ते समे ॥ अ० ॥
॥ क्युं ॥ ३ ॥ त्रिशला राणीए जायो, देव देवीए गायो ॥ सु
त सिद्धारथ नूपको ॥ अ० ॥ मंगल केतु लगने, रवि बुध

चोपे जवने, दशमे शनीशर जंचको ॥ अ० ॥ क्युं ॥ ४ ॥
 पंथमे जीवराहु, सातमे वेद साहुं ॥ केंड जुवन ग्रह मंजली
 ॥ अ० ॥ प्राग्य जुवन शशी, शुक्र संतान वसी ॥ मेघ धु
 आ एक बीजली ॥ अ० ॥ क्युं ॥ ५ ॥ चंडदशा विपाकी,
 मास जुवन चाकी ॥ जन्म दिशा शनी संजमी ॥ अ० ॥ गु
 रु महा दिशामे, केवज्ज्ञान पामे ॥ ता मुख बानी मेरे दि
 ल रमी ॥ अ० ॥ क्युं ॥ ६ ॥ आवर विगलमे, काल अनंत
 जमे ॥ मेंवी निकलीया साथमें ॥ अ० ॥ नागक तिरी गति,
 सुख न एक रती, काल निगमीयो अनथमे ॥ अ० ॥ क्युं ॥
 ७ ॥ बहोत में नाच नचे, चिहुं गति चोक बिचे ॥ नेकि
 न मिलिए नाथजी ॥ अ० ॥ पोत प्रकाश दीए, आश नि
 राश कीये ॥ अलग किया में आजथी ॥ अ० ॥ क्युं ॥ ८ ॥
 मानव गण लही, तुम सनमुख रही ॥ बेरेवेर शिव मागते
 ॥ अ० ॥ बात न उर कहूं, लीये बीना न रहूं ॥ बाल ह
 ड्यो रस लागते ॥ अ० ॥ क्युं ॥ ९ ॥ नाथ नजर करी, बेर न
 एक घमी ॥ सदा मगन सुख लहेरसे ॥ अ० ॥ मंगल तुर
 वरा, गावत अपहरा ॥ श्री शुज वीर प्रभु महेरसे ॥ अ० ॥
 १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धजगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोभा रे शी कहूं ॥ एआंकणी ॥ सिद्ध ज
 गत शिर शोभता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी
 लहेरमां, सुखिया ठे शिव राम ॥ सि० ॥ १ ॥ महानंद अमृ
 त पद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम ॥ अपुनर्जव ब्रह्म पदवली,

अक्षय सुख विसराम ॥ सिण ॥ १ ॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा,
 दुख समस्तनी हाण ॥ निर्वृत्ती अपवर्गता, मोक्ष मुगति नी
 रवाण ॥ सिण ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लह्युं, जोता जग
 तना ठाठ ॥ निज निज रूपे रे जूजूआ, वीत्यां कर्म ते आ
 ठ ॥ सिण ॥ ४ ॥ अगुरु लघु अवगाहना, नामे विकसे वद
 न्न ॥ श्री शुभ वीरने वंदतां, रहिए सुखमां मगन्न ॥ सण ॥ ५ ॥

अथ श्री वीतरागाष्टक स्तवन.

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधू न कर्म न
 कर्त्ता ॥ न चंगं न संगं न चेष्टा न कामं, चिदानंद रूपं नमो वीत
 रागं ॥ १ ॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न जोगं
 न व्याधिर्नशोकं, न क्रोधं न मानं न माया न लोभं ॥ चिण
 ॥ २ ॥ न हस्तो न पादौ न घ्राण न जिह्वा, न चक्षुर्नकर्णं न व
 क्रं न निद्रा ॥ न स्वामि न भृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चिण
 ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्नमोदं न चिंता, न कुशे न चीतो
 न कृष्यं न तुंग्मा ॥ न स्वामि न खेदं न वर्णं न मुद्रा ॥ चिण
 ॥ ४ ॥ त्रिदंष्ट्रे त्रिखंष्ट्रे हरेविश्वनाथं, हृषिकेश विद्वस्त क
 र्मारिजालं ॥ न पुण्यं न पादं न चाक्षादिप्रायं ॥ चिण ॥ ५ ॥
 न बाह्यं न चाध्यं न तुंबो न मुढं, न द्वेयं न त्रेयं न मुक्तिर्नमंदं ॥
 न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंदा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न
 चित्यं न मन्या ॥ न दृक् न द्वेष्टं न दृष्टो न ज्ञावा ॥ न गुर्वो न शि
 ष्यो न आद्यो न दिनं ॥ चिण ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी,
 न पूर्णं न शून्यं न चैत्य स्वरूपी ॥ नवान्योन्यं ज्ञीनं न परमार्थ
 मेकं ॥ चिण ॥ ८ ॥ आत्माराम गुणाकरं गुणनिधी चैतन्य र

त्नाकरं, सर्वेभूत गतागते सुख दुःख ज्ञात्वात्वयासर्वगं ॥ त्रै
लोक्याधिपते स्वयंस्व मनसाध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरि
वंश हर्षहृदयं श्री मानज्युदज्युत ॥ ए ॥ इति. ॥

अथ श्री गौतमस्वामीनो रास लिख्यते.

वीर जिहोसर चरण कमल, कमला कय वासो ॥ पणम
वि पन्नणिशुं सामिसाल, गायम गुरु रासो ॥ मण तण वयण
एकंत करवी, निसुणो जोन्नवियां ॥ जिमनीवसें तुम्ह देह गेह,
गुण गण गहगहियां ॥ १ ॥ जंजुदीव तिरि ज़रहखित्त, खोणीत
ल मंरुण ॥ मगधदेस सेणीय नरेसर, रिठ दलवल खंरुण ॥ ध
एवर गुच्चर गाम नाम, जिहां जण गुण सज्जा ॥ विप्पवसे व
सुज्जूइ, तव जस पुहवीज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त तिरि इंदज्जूइ,
ज्वलय पसिइ ॥ चक्रदह विज्जा विविह रूव, नारीरस विंध्यो ॥
विनय विवेक विचारसार, गुण गणह मणोहर ॥ सातहाथ
सुपमाण, देहरूवे रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयणकर चरण जइ
वि, पंकज जल पामिय ॥ तेजेहिं ताराचंद सूर, आकास ज
मामिय ॥ रूवेहि मयण अणंग करवि, मेढ्यो निरघामीय ॥
धीरमें मेरु गंजीर सिंधु, चंगम चयचामीय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु
वमरूव जास, जण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किलनीतइठ, गुण
मेढहा संचिय ॥ अहवा निठे पुवजम्म, जिणवर इण अंचि
य ॥ रंजा पनुमागन्नरि गंग, रतिहा विहि वंचिय ॥ ५ ॥ नयबुद्ध
नय गुरु कविण कोइ, जस आगल रहिनु ॥ पंचसया गुण पा
त्त वात्त हिंने परिवरित्त ॥ करे निरंतर यन्न कम्म, मिच्छाम
त मोहिया ॥ इणि ठले होसे चरम नाण, दंसणह विसोहीय

॥६॥ बहु ॥ जंबुदीवह जंबुदीवह नरहवासंमि, खोणितल
मंडणो ॥ मगध देस सेणीय नरेसर, वरगुधरगामतिहां वि
प्पवसे वसुज्जूइ सुंदर ॥ तसु नज्जा पुहवी सयल गुण गण
रूव निहाण, ताण पुत्त विद्वानिलन ॥ गोयम अतिहि सुजाण
॥७॥ न्नास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चनविह संघ पइ
ग जाणी ॥ पावापुरि सामी संपत्तो, चनविह देवनिकाइ
जुत्तो ॥ ८ ॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जिण दिठे मि
क्यामति खीजे ॥ त्रिजुवन गुरु सिंहासण वेगो, तत
खिण मोह दिगंतज पेवो ॥ ९ ॥ क्रोधमान माया मदपूरा, जा
ए नाठा जीम दिन चोरा ॥ देवइंइहि आकाशेवाजी, ध
र्म नरेसर आविजुं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां
देवा, चनसठ इंड जसु मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि
सोहे, रूवेहि जिणवर जग सह मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसन
र जरि वरसंता, जोजन वाणि वखाण करंता ॥ जाणवि व
श्माण जिन पाया, सुरनर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंति
समूहे ऊलऊल कंता, गयण विमाणे रणरण कंता ॥ पेख
वि इंदज्जूइ मन चिंते, सूर आवे अम्ह जइ हुअंते ॥ १३ ॥
तीर तरंडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता महगहता
॥ तउ अनिमाने गोयम जंपे, इण अवसर कोपेतणु कं
पे ॥ १४ ॥ मुढा लोक अजाणिनं वोले, सुर जाणंतां इम
कांइ मोले ॥ मू आगति को जाण नणीजे, मेरू अवर किम
ऊपम दीजे ॥ १५ ॥ बहु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर,
नाण संपन्न पावापुरि सुरमहिय ॥ पत्तनाह संसार तारण,
तेहि देवेहि निमविअ ॥ समवसरण बहु सुख करण, जि

एवर जग उज्जोअ करे ॥ तेजे करि दिणकार, सिंहासण
सामी विठ्ठ; हुठ सु जय जयकार ॥१६॥ ज्ञास ॥ तो चडिठ
घण माण गजे, इंदूझूझू देव तो ॥ हुंकारो करि संचरिठ, क
वण सु जिणवर देव तो ॥ जोजन झूमि समोसरण, पेखवि प्र
थमारज तो ॥ दह दिसि देखे विबुध वधु, आवंती सूररंज तो १७
मणिमय तोरण दंड धजा, कोसीसैं नव घाट तो ॥ वयर विव
र्जित जंतु गण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुरनर किन्नर असुरवर,
इइ इंझाणी राय तो ॥ चित्त चमकिठ चीतवेए, सेवंता प्रभु
पाय तो ॥१८॥ सहस किरण सम वीर जिण, पेखवि रूप वि
शाल तो ॥ एह असंजम संजवए, साचो ए इंझाल तो ॥ तो
बोलावे त्रिजग गुरु, इंदूझूझू नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय
सामि सवें, फेरे वेद पण तो ॥१९॥ मान मेळिह मद ठेलि
करे, जगते नामे सीस तो ॥ पंचसयांशु व्रत लीनए, गोयम पहि
लो सीस तो, बंधव सयम सुणवि करी ॥ अगनिझूझू आवेश तो,
नाम लेई आज्ञास करे ॥ ते पण प्रतिबोधे तो ॥२०॥ इण
अनुक्रमे गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे
भुवनगुरु, संजमशुं व्रतवार तो ॥ विहुं उपवासे पारणुए,
आपणपे विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जयजय
कार करंत तो ॥२१॥ वस्तुण ॥ इंदूझूझू इंदूझूझू चडिय बहुमा
न, हुंकारो करि संचरिठ ॥ समवसरण पुहुतो तुरंततो, इ
ह संसा सामिसवे ॥ चरमनाह फेरे तुरंत तो, बोधिवीज
सजायमनि ॥ गोयम नवह विरत्त, दिस्क लेई सिस्का सहिया ॥
गणहर पय संपत्त ॥२२॥ ज्ञास ॥ आजहुठ सुविहाण, आज
पळे लिम पुत्रजरो ॥ दिठा गोयम सामि, जो नियनयणे अ

मियन्नरो ॥ सिरि गोयम गणहार, पंचसया मुनि परिवरिया ॥
 नूमिय करय विहार, नवियां जन पम्बोह करे ॥ २९ ॥
 समवसरण मण्णार, जेजे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर न
 पगार, कारण पूठे मुनि पवरो ॥ ३० ॥ जिहां जिहां दि
 जे दीरु, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आपकने अणहुं
 ति, गोयम दीजे दानइम ॥ गुरु उपर गुरु नक्ति, सामि
 गोयम ऊपनिय ॥ इण ठ्वे केवलनाण, रागज राखे रंग
 नरे ॥ ३१ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चडि चउवीस जिण ॥
 आतम लवधि वसेण, चरम सरीरीसोय मुनि ॥ ईय देसण
 निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥ तापस पनरसें एह, त
 नमुनि दीठो आवतोए ॥ ३२ ॥ तव सोसीय नियअंग, अ
 म्हशकति नवि ऊपजेए ॥ किम चढे दृढकाय, गज जिम
 दिसे गाजतो ए ॥ गिरुन इणे अजिमान, तापस जोमन
 चितवे ए ॥ तोमुनि चमीउ वेग, आलंबवि दिनकर किर
 ण ॥ ३३ ॥ कंचणमणि निप्पन्न, दंरु कलस धज वरु सहिय ॥
 पेखवि परमाणंद, जिणहर नरतेसर महिअ ॥ निय निय का
 य प्रमाण, चउदिसि संठिय जिणह विंव ॥ पणमवि मण
 उढहास, गोयम गणहर तिहां वसिअ ॥ ३४ ॥ वयरसामिनो
 जीव, तीर्यगजंजग देवतिहां ॥ प्रतिबोधे पुंडरीक, कंडरीक
 अध्ययन नणी ॥ वलता गोयमसामि, सवि तापस प्रतिबोध
 करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ ३५ ॥
 खीर खांड घृत आणि, अमिअ वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एक
 ण पात्र, करावे पारणुं सवें ॥ पंचसयां सुन्न जाव, उज्जल
 नरियो खीरमीसे ॥ साचागुरु संजोग, कवल ते केवलरूप

हुआ॥१॥पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पे
 खवि केवलनाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पियूष,
 गाजंती घणमेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणोइ, नाणिहुआ
 पंचसय ॥ ३० ॥ वस्तुण ॥ ईणे अनुक्रमे ईणे अनुक्रमे
 नाण संपन्न, पन्नरहसय परिवरीय ॥ हरिय डुरिय जिण
 नाह, वंदे जाणवि जगगुरु वयण ॥ तीहनाण अप्पाण नि
 दे, चरम जिणोसर इम ज्ञणे ॥ गोयम मकरीसखेअ, ठेहशुं
 जइ आपण सही ॥ होशुं तुद्धा वेण ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामीज
 ए वीरजिणंद, पूनम चंद जिम उल्लहसिय ॥ विहरिउ ए जर
 हवासंमि, वरस बहुत्तरि संवसिअ ॥ ठवतो ए कणयपन्नमे,
 पाय कमल संघे सहिय ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर
 पावापुरि सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखिउ ए गोयमसामि, देवश
 र्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिसलादेवि, नंदन पुहतो
 परमपए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिण
 समेए ॥ तो मुनिए मन विखवाड, नाड जेड जिम ऊप
 नोए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप कने हुं टा
 लीउए ॥ जाणतोए तिहुअणनाह, लोक विवहार न पालि
 उए ॥ अति जलुं ए कीथुं सामि, जाण्यु केवल मागशे ए ॥
 चीतविउ ए बालक जेम, अथवा केडे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं
 किम ए वीरजिणंद, जगते जोलो जोलव्यो ए ॥ आपणो
 ए उचियनेह, नाह न संपे सुचव्यो ए ॥ साचो ए एह वीतरा
 ग, नेह नजेणे लालिउए ॥ इणेंसमे ए गोयमचित्त, राग
 विरागे वालीउए ॥ ३५ ॥ आवतोए जो ऊजट, रहेतो रागे
 साहिउए ॥ केवल ए नाण उपन्न, गोयम हेजे उमाहिउए ॥

तिहुअणए जय जयकार, केवल महिमा सुरकरेए ॥ गणह
 रूए करे वखाण, नवियां नव इम निस्तरे ए ॥३६॥वस्तु ॥
 पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास, गिहिवासे संव
 सीय ॥ तीसवरिस संयम विनूसीय, सिरी केवलनाण पु
 ण ॥ बार वरिस तिहुअण नमंसिअ, रायगिहि नयरिहिं ठ
 विय ॥ वाणवइं वरिसानु, सामी गोयम गुणनिदो ॥ होशे
 सिवपुरिगानु ॥३७॥ नास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके,
 जिम कुसुमहवने परिमल महके ॥ जिम चंदन सुगंध
 निधि, जिम गंगाजल लहेरे लहके, जिम कणयाचल तेजे
 जलके ॥ तिम गोयम सोजाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मा
 नसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरिकणय वतंसा ॥
 जिम महुयर राजीववने, जिम रयणायरू रयणे विलसे ॥
 जिम अंबर तारागणा विकसे, तिम गोयम गुण केलिवने
 ॥ ३९ ॥ पुनमनिसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा
 जिम जग मोहे ॥ पुरवादिसि जिम सहस करो, पंचानन
 जिम गिरिवरराजे ॥ नरवर घर जिम मयगल गाजे, ति
 म जिनसासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरु वरसोहे
 शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाखा ॥ जिम वन केत
 कि महमहेए, जिम न्यूमीपति न्यूबल चमके ॥ जिम
 जिनमंदिर घंटारणके, तिम गोयम लबधे गहगहेए ॥४१॥ चिं
 तामणि कर चमिनु आज, सुरतरु सारे वंछिअकाज ॥ का
 मकुंन सो वसिहूने ॥ कामगवीपूरे मन कामीय, अष्ट
 महासिद्धि आवे धामिय ॥ सामिय गोयम अणुसरोए ॥
 ॥ ४२ ॥ प्रणवकर पहिलो पन्नणीजे, मायाविजे श्रवणनि

सुणीजे ॥ श्रीमति सोना संजवेए, देवह धुर अरिहंत
नमीजे ॥ विनय पहुँचवजाय जणीजे, इण मंत्रे गोयम
नमुए ॥४३॥ पुरपुर वसतां कांइ करीजे, देश देशांतर कांइ
नमीजे ॥ कवण काज आयास करो, प्रदुवठी गोयम सम
रीजे ॥ काज समग्रह ततखिण सीजे, नवनिधि विलसे
तास घरे ॥४४॥ चक्रदहसेवारोतर वरसें, गोयम गणहर के
वल दिवसे ॥ कियो कवित उपगार करो, आदिह मंगल एह
जणीजे ॥ परब महोत्सव पहिलो लीजे, रुखिबृद्धि कळ्या
ण करो ॥४५॥ धन्य माता जिणे उदरेधरियो, धन्य पिता
जशकुल अवतरिनु ॥ धन्य सहगुरु जेणे दीखीनुए ॥४६॥
विनयवंत विद्या जंमार, जसगुण कोइ नलप्रे पार ॥ विद्या
वत गुरु विनवेए ॥ ४७ ॥ गोयमसामिनो रास जणीजे, च
उविह संघ रलीआयत कीजे ॥ रुद्धि वृद्धि कळ्याण क
रो ॥४८॥ इति. ॥

अथ श्री समकितनुं स्तवन.

(ते मुज मिष्ठामिडुकरुं ॥ ए देशी.)

सांजल रे तुं प्राणीया, सदगुरु उपदेशो ॥ मानव नव
दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एसो ॥सा०॥१॥ देवतत्व नवि न
लख्यो, गुरु तत्व न जाण्यो ॥ धर्मतत्व नवि सदह्यो, हियमे
ज्ञान न आय्यो ॥सां०॥॥२॥ मिळ्यात्वी सुर जन प्रति, सरि
खा करी जाण्या॥गुण अवगुण नवि उजळ्या, वली वयणे व
खाण्या ॥सा० ॥३॥ देव धया मोहें ग्रह्या, पासें रहे नारी ॥
काम तणें वश ले पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सां० ॥ ४ ॥

केइ क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोइथी बीहता,
हथीयार सवाह्या ॥ सांण॥५॥ क्रूर नजर जेहनी घणुं, देखं
तां हरिये॥मुझ जेहनी एहवी, तेहथीशुं तरिये ॥सांण॥६॥
आठ करम सांकल जड्या, जमे जवही मऊारौ ॥ जनम
मरण जव देखीये, पाम्या नही पारो ॥सांण॥ ७ ॥ देव थइ
नाटक करे, नाचे जण ९ आगे ॥ वेष करी राधाकृश्नो, व
ली निहा मागे ॥सां॥७॥ मुखे करी वायें वांसली, पहेरे त
न वाधा ॥ जावंतां नोजन करे, एहवा त्रम लागी ॥सांण॥
देखो दैत्य संहारवा, थया नद्यमवंतो ॥ हरि हरिणांकुस मा
रीयो, नरसिंघ बलवंतो ॥सांण॥१०॥ मञ्ज कञ्ज अवतार ले,
सहु असूर विदास्या ॥ दश अवतार जूजूया, दश दैत्य संहार
स्या ॥सांण॥११॥ मानें मूढ मिथ्यामती, एहवा पिए देवो॥
फरी ९ अवतार लें, देखो कर्मनी टेवो ॥सां॥१२॥ स्वामी
सोहे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परीहरो, जि
नहर्ष विचारो ॥सांण॥१३॥ इति॥

॥ ठाल ९ जी. ॥

(नुधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी.)

जगनायक जिनराजने, दाखविये सही देव ॥ मुकाणा
जे कर्मथी, सारे सुरपती सेव ॥१॥जण॥ क्रोध मान माया
नही, नही लोभ अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहीं, ठांड्यां म
द थान ॥ २ ॥ जण॥ निज शोक चोरी नहीं, नही वयण अ
लीक ॥ मञ्जर जयवध प्राणनो, न करे तहकीक ॥३॥ जण॥
प्रेम कीर्ता न करे कदी, नहीं नारि प्रसंग ॥ हास्यादिक अ

ढारए, नहीं जेहने अंग ॥४॥ज०॥ पदमासन पूरी करी, वे
ठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण तेहना, नासाग्र रहंत ॥५॥
ज०॥ जिनमुझ जिनराजनी, दीठां परम उल्लास ॥ समकि
त थाए निरमलुं, तपे ज्ञान उजास ॥६॥ज०॥ गति आगति
सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ मनपरजाय सवि तणा,
केवलज्ञान आलोक ॥७॥ ज० ॥ मूरति श्री जिनराजनी, स
मता नमार ॥ सीतल नयण सुहामणां, नही वांक लिंगार
॥८॥ ज० ॥ हस्त वदन हरखे हिउं, देखी श्री जिनराय ॥
सुंदर बवि प्रजु देहनी, शोना वरणी न जाय ॥९॥ज०॥ अ
वर तणी एहवी बवी, किहां इम दीसंत ॥ देवतत्व ए जा
णीये, जिनदर्प कहत ॥१०॥ इति. ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(जतणीनी देशी.)

श्री जिनवर प्रवचन ज्ञाख्या, जे कुगुरु तणा गुण दा
ख्या ॥ पासवादिक पांचेई, पापश्रमण कहा सांचेई ॥१॥
गृहीना मदीरथी आणी, आहार करे ज्ञात पाणी ॥ सूए उं
घे नीस दीस, परमादी विसवावीस ॥ २ ॥ किरीया न करे
किणीवार, पम्किमणुं सांऊ सवार ॥ न करे पचखाण स
जाय, विकथा करतां दिन जाय ॥३॥ घृत दूध दही अप्रमा
ण, खाइ न करे पचखाण ॥ ज्ञान दरशनने चारित्र, मुकी
दीधां सुपवीत्र ॥४॥ सुविहित मुनि सामाचारी, पाले नही
ते अणगारी ॥ आहारना दोष वायाल, टाले नहीं किणहीं
काल ॥५॥ धव १ धसमसतो चाले, काचे जल देह पखावे ॥

अरचा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शौच बनावे ॥६॥ परिग्रह
वली ऊजो राखे, वली९ अधिकाने धाखे ॥ माठी करणी
जे कहियें, ते सघली जिणामें लहीयें ॥७॥ एहवा जे कुगुरु
आरंजी, मुनी साधु कहेवाए दंजी ॥ किङ्कम्म प्रसंसा करी
ए, नवन्नव ग्रहमां अवतरिए ॥८॥ लोहानी नावा तोलें, न
व सायरमां जे बोले ॥ जिनहर्ष नलो अहिकालो, पिण कु
गुरुनी संगति टालो ॥९॥ इति. ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

(करजोमी आगल रही ॥ ए देशी.)

गुणगिरुआ गुरु नलखो, हियमे सुमति वीचारी रे ॥
गुरु सुपरीक्षा दोहिली, नूल पडे नरनारी रे ॥१॥ गुण॥ पां
चे इंडी वश करे, पांच महाव्रत पाखे रे ॥ चार कषाय तज्या
जिणे, पांचे किरिया टाले रे ॥२॥ गुण॥ पांच सुमति सुमता
रहे, तीन गुपती जे धारे रे ॥ दोष बेतालीस टालीने, पाणी
जात आहारे रे ॥३॥ गुण॥ ममता ठांमी देहनी, निरलोनी निर
माई रे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चितें न कांई रे ॥
॥४॥ गुण॥ धरम तणां उपगरण धरे, संजम पाखवा काजें रे ॥
नूमि जोई पगलां नरे, लोक विरोधधी लाजे रे ॥५॥ गुण॥
पमिलेहण निरती विधे, करे प्रमाद निवारी रे ॥ काले सुध
किरिया करे, इच्छा जोग निवारी रे ॥६॥ गुण॥ वस्त्रादि सुध ए
खणी, ले देखी सुविशेषे रे ॥ काल प्रमाणे खप करे, दूषण
टलतां देखे रे ॥७॥ गुण॥ कुस्कीसंबल जे कह्या, संनिध कि
मही न राखे रे ॥ ये उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख

चाखे रे ॥७॥गुण॥ तन मेला मन ऊजला, तप करी खीणी
देही रे ॥ बंधन वे ढेदी करी, विचरे जन नीसनेही रे ॥८॥
गुण॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरीये शुभ्र जावे रे ॥ बी
जो तत्व सुगुरु तणो, ए जिनहर्ष कहावे रे ॥९॥गुण॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

(कर्म न बूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी.)

जवसायर तरवा जणी, धर्म करे हो सारंज ॥ पंढर
नावे रे वेसीने, तरवो समुझ डर्जन ॥१॥जण॥ आपे गोकुल
गायनां, आपे कन्या रे दान ॥ आपे खेत्र पुन्यारथे, ब्राह्मण
ने देई मान ॥२॥जण॥ लूटावे घाणी बली, पृथ्वी दान सु
प्रेम ॥ गोलाकल सारे मोरीया, आपे हल तिल हेम ॥३॥
जण॥ बली खणावे रे खांतिशु, कुआ सुंदर वाव ॥ पुष्करणी
करणी जली, सरवर सखर तलाव ॥४॥जण॥ कंदमूल मुके
नही, जग्यारसने हो दीस ॥ आरंजते दिन अति घणो, धर
म किहां जगदीस ॥५॥जण॥ याग करे होमे तिहा, धोमन
रते रे वाग ॥ होमे जलचर मिम्का, धरम किहां बीतराग
॥६॥जण॥ करे सदाए रे नोरतां, जीव तणा आरंज ॥ हणो
महिषने वोक्का, जेहथी नरग सुलज ॥७॥जण॥ सारे संरा
वे ब्राह्मण कने, पुरवेजनां रे आध ॥ तेडी पोखे रे कागडां,
देखो एह उपाधि ॥८॥जण॥ तीरथ जाय गोदावरी, गंगां ग
या प्रयाग ॥ नाहवे अणगल नीरमे, धरम तणो नही लाग
॥९॥जण॥ इत्यादिक करणी करे, परजव सुखने काज ॥
कहे जिनहर्ष मिले नही, एहथी शिवपुर राज ॥१०॥जण॥

॥ ढाल ६ ठी. ॥

(रे जाया तुज विण घमी रे ठ मास ॥ ए देशी.)

धरम खरो जिनवर तणो जी; सिवसुखनो दातार ॥
 श्री जिनराजे प्रकासीयो जी, जेहना च्यार प्रकार ॥१॥ न
 विक जन ॥ ज्ञान विचारी रे जोय ॥ डुरगति पडतां जीवने
 जी, धारे ते धर्म होय ॥ न० ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी;
 दशविध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवरे कहां जी, श्रा
 वकनां व्रत बार ॥ २ ॥ न० ॥ पंचुंबर चारे विगें जी, विष सह
 माटी रे हीम ॥ रात्रिनोजनने कहां जी, बहु बीजानो नीम
 ॥३॥ न० ॥ घोखवडां वली रींगणां जी, अनंतकाय वत्रीस ॥
 अणजाण्यां फल फूलडां जी, संघाणा निस दीस ॥४॥ न० ॥
 चक्षित अन्न वासी थयो जी, तुळ सह फल दक्ष ॥ धरमी न
 र खावे नही जी, ए बावीस अन्नक्ष ॥५॥ न० ॥ न करे निहं
 धसपणो जी, घरनो पिण आरंज ॥ जीव तणी जयणा घणी
 जी, न पीये अणगल नीर ॥६॥ न० ॥ घृत परे पाणी वावरे
 जी, बीहे करतां पाप ॥ सामायक व्रत पोषधे जी, टाले
 नवना ताप ॥ ७ ॥ न० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी जी, सेवा न
 गति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकां जी, समजे कोमल
 जीव ॥ ८ ॥ न० ॥ मास मासनें अंतरे जी, कुश अग्र जुंजें
 वाल ॥ कला न पोहचें सोलमी जी, श्री जिनधर्म विशाल
 ॥ ९ ॥ न० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरी दीये जी, चउगति अमण
 मिळ्यात्व ॥ इम जिनहर्ष प्रकासीये जी, त्रीजो तत्व वि
 ख्यात ॥ १० ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल ७ मी. ॥

(मधुकर आज रहो रे मत चलो ॥ ए देशी)

श्री जिनधरम आराधिए जी, करि निज समकित शु
६ ॥ जवियण ॥ तप जप किरीया कीधली, लेखें परे विसु
६ ॥ जण॥ १ ॥ कंचन कसीए लीजीये जी, नाणुं लीजे परी
ख ॥ भ० ॥ देव धर्म गुरु जोयिने जी, आढरिये सुणी सीख
॥ १ ॥ जण॥ श्री ण्कुरु कुदेव कुधर्मने, परिहरिये विप जेम॥ जण॥
सुगुरु सुदेव सुधर्मने, ग्रहीये अमृत तेम ॥ ३ ॥ जण॥ श्री ण॥
मूल धर्म तो जिने कह्यो जी, समकित सुरतरु एह ॥ जण॥ जव
३ सुख संपति थकी, समकितशुं धरीनेह ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ण॥
सत्तरे ठत्रीस समे जी, नज शुद्धि दशमी दीस ॥ भ० ॥ सम
कित सीत्तरी एरची, पुर पाटण सुजगीस ॥ जण॥ ५ ॥ श्री ण॥
जणजो गुणजो जावस्युं जी, लहेस्यो अविचल श्रेय ॥ भ० ॥
शांतिदर्प वाचक तणो जी, कहें जिनहर्प विनेय ॥ जण॥
॥ ६ ॥ श्री ण॥ इति ॥

अथ श्री आराधनानुं स्तवन.

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोविसैं जिनराय ॥ सहगु
रु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभूवन पति
त्रिशला तणो, नंदन गुणगंजीर ॥ शासन नायक जग ज
यो, वर्द्धमान वरुवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे
करी परिणाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पुढे गौतम
स्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मारग आराधिए, कहो किणि परे अरि

हंत ॥ सुधा सरस वचन रसे, ज्ञांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥
 अतिचार १ आलोईए, व्रत धरीए गुरु शाख २ ॥ जीव खमा
 वो सयल जे, योनि चोरासी लाख ३ ॥ ५ ॥ विधिसुं वली
 वोसीराविए, पापस्थान अठार ॥ च्यार सरण नित अनुस
 रोए, निंदो डुरित आचार ६ ॥ ६ ॥ शुन करणी अनुमोदिए ७,
 ज्ञाव जलो मन आनि ८ ॥ अणसण अवसर आदरी ए,
 नवपद जपो सुंजाण १० ॥ ७ ॥ शुन गति आरधन तणा,
 एठे दश अधिकार ॥ चित्त आशिने आदरो, जिम पामो
 जव पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ली. ॥

(ए ठींडी किहां राखी ॥ ए देशी.)

१ ज्ञान २ दरिसण ३ चारित्र ४ तप ५ वीरज, ए पांचे
 आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइयें अतीचा
 ररे ॥ १ ॥ प्राणी, ज्ञान जणो गुण खाणी, वीर वदे इम वा
 णिरे ॥ प्रा० ॥ गुरु जलवीए नही गुरु विनये, काले धरि बहु
 मान ॥ सूत्र अर्थ तडजय करी सूधां, जणीए वही उप
 धान रे ॥ २ ॥ प्राण ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोका
 रवाली ॥ तेह तणी किधी आशातना, ज्ञान जगति न सं
 जाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, ज्ञान विरा
 ध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलि य जवोजव, मिच्छामिडकड
 तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणि, समकित ड्यो शुद्ध जाणी ॥ जिन वचने शं
 का नवि कीजें, नवि परमत अनिलाख ॥ साधु तणी निंदा
 परिहरज्यो, फल संदेहम राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ सण ॥ मुढपणुं
 बंमो परसंसा, गुणवंतने आदरीए ॥ साहमीने धरमें करी

धीरता, जगति प्रजावना करीए रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ स० ॥ संघ चै
 त्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ इव्य देवको जे
 विणसाड्यो, विणसता उवेख्यो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ स० ॥ इत्यादि
 क विपरीतपणार्थी, समकित खंड्युं जेह ॥ आ जव० ॥ प्रा०
 ॥ ८ ॥ चारित्र द्यो चित्त ग्राणि ॥ पांच सुमति त्रिण गुपति वी
 रावी, आठे प्रवचन माय ॥ साधु तणे धरमें प्रमोदे, अ
 सुध वचन मन काय रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्म सा
 मायक, पोसहमा मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आठे, प्र
 वचन माय न पाली रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरी
 तपणार्थी, चारित्र मोहद्व्युं जेह ॥ आ जव० ॥ मिष्ठामि० ॥
 प्रा० ॥ ११ ॥ चा० ॥ वारे जेठे तप नवि कीधो, ठतें योगे निज
 सकते ॥ धर्म मन वच काया वीरज; नवि फोरविठ नगते रे
 ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज आचार इणिपरे, विविध वि
 राध्या जेह ॥ आ जव० ॥ मिष्ठामि० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ चा० ॥ वलिय
 विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोड्ये ॥ वीर जिलेसर व
 यण सुणीने, पाप मेल सवि धोइए रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ चा० ॥

ढाल ९ जी.

१ पृथ्वी २ पाणी ३ तेज, ४ वायु वनस्पति ॥ ए पां
 चे थावर कहा ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे खेमीयां ॥
 कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंज अनेक; टांकां
 झूंझां ॥ मेमी माल चणावीया ए ॥ लिपण गुंण काज,
 इणि परे पर परे ॥ पृथविकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ घोंयण
 नाहण पाणी, जीअण अपकाय ॥ बोती धोती करि दूह
 व्या ए ॥ ज्ञाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ ज्ञामनुंजा

लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काज, वस्त्र नीखार
 ए ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ इणि परे कर्मादान, प
 रे ९ केलवी ॥ तेऊ वाऊ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वामी वन
 आराम, वावी वनस्पती ॥ पान फूल फल चूटीयां ए॥ पोंक
 पापमी शाक, सेक्यां सुकव्यां ॥ ठेद्यां तुंद्यां आश्रीयां ए
 ॥ ५ ॥ अलसीने एरंम, घाणी घालीने ॥ घणा तिलादिक
 पीलीया ए ॥ घाली कोलु मांही, पीली सेलमी ॥ कंदमूल
 फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ इम एकेंडी जीव, हणया हणावीया॥
 हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आ जव परजव जेह, वलियण
 ॥ ते मुऊण ॥ ७ ॥ करम सरमीया कीडा, गाडर गंमोला ॥
 इअल पूरा अलसियां ए॥ वालो जलो चूमेल, विचलीत रस
 तणा॥ वलि अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ इम वेंडेंडी जीव, जे
 में डूहव्या ॥ ते मुजण॥ ऊदेही जू लीख, माकण मंकोमा ॥
 चांचण किमी कुंथुआ ए ॥ ९ ॥ गदहीयां घीमेल, कानख
 जुरमा ॥ गींगोमा धनेरीयां ए ॥ इम तेंडेंडी जीव, जे में दू
 हव्यां ॥ ते मुऊण ॥ १० ॥ माखी मन्नर मांसे, मसा पतं
 गीया ॥ कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण बीहुं तीर, न
 मरा नमरीय ॥ कौता बग खममांकमी ए ॥ ११ ॥ इम चौरें
 डी जीव, जे में दूण ॥ ते मुऊण ॥ जलमां नांखी जाल,
 जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या
 पंखी जीव, पानी पासमां ॥ पोपट घाड्या पांजरे ए॥ इम
 पंचेंडी जीव, जे में दूण ॥ ते मुऊण ॥ १३ ॥

ढाल ३ जी.

॥ वाणी वाणी हित करीजी० ॥ देशी. ॥

क्रोध लोभ जय हास्यथी जी, बोल्या वचन असत्य ॥
 कुरु करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥
 ॥ १ ॥ मिच्छादुष्कर्म आज ॥ तुम साखे महाराज रे ॥ जिन
 जी ॥ देई सारुं काज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥
 वेव मनुज तिर्यचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लं
 पटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परि
 ग्रहनी ममता करी जी, भव २ मेली आव ॥ जेह जीहां
 ते तिहां रहीजी, कोई न आवे साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥
 रयणीभोजन जे कस्यां जी, किधां जक अजक ॥ रस
 ना रसनी लालचे जी, पाप कस्यां परतक रे ॥ जि० ॥ ४ ॥
 ॥ मि० ॥ व्रत लेई बीसारीयां जी, वली जाग्यां पचखाण ॥
 कपट हेतु किरिया करी जी, किधां आप वखाण रे ॥ जि०
 ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रिण ढाल आवे डहेजी, आलोया अतिचा
 र ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पद्विखो अधिकार रे ॥
 जि० ॥ ६ ॥ मि० ॥

ढाल चौथी.

॥ साहेलमीनी देशी. ॥

पंच महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा द्यो व्रत
 वार तो, यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरती
 चार तो, व्रत लीधा संनारीए ॥ सा० ॥ हियमे धरीय वि
 चार तो, शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अवि
 कार तो, जीव सवे खमाविए ॥ सा० ॥ योनी चोरासी ला

ख तो, मन सुधें करो खासणां ॥ साण ॥ कोइशुं रोश न राख
तो, सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ साण ॥ कोइ न जाणो शत्रु
तो, राग द्वेष इम परिहरो ॥ साण ॥ किजे जन्म पवित्र तो,
साहमी संघ खमावीये ॥ साण ॥ जे उपनी अप्रिती तो, स
ज्जन कुटुंब करी खासणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति
तो ॥ १ ॥ साण खमीये अने खमावीए ॥ साण ॥ एहज धर्मनो
सार तो, शिवगति आराधन तणो ॥ साण ॥ ए त्रीजो अ
धिकार तो, मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मुर्छा मेहु
ए तो, क्रोध मान माया तृष्णा ॥ साण ॥ प्रेम द्वेष पैसुन्न तो
॥ ३ ॥ निंदा कलह न किजीए ॥ साण ॥ कुसां न दीजे आ
ज तो, रति अरति मिथ्या तजो ॥ साण ॥ मायामोस जं
जाल तो, त्रिविधे ९ वोसिरावीए ॥ सा० ॥ पापस्थान अ
ठार तो, शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अ
धिकार तो ॥ ४ ॥

ढाल ५ मी.

॥ हवे निसुणा इहां आवीया ॥ ए देशी ॥

जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां
कर्म सहु अनुजवे ए; कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ सरण
एक १ अरिहंतनुं ए; सरण सिद्ध २ जगवंत तो ॥ सरण
धर्म श्री जैननो ३ ए; साधु सरण गुणवंत तो ४ ॥ १ ॥ अवर
मोह सवि परिहरी ए; च्यार सरण चित्त धार तो ॥ शिवग
ति आराधनतणो; ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ भव
परभव जे कस्यां ए; पाप कर्म केई लाख तो ॥ आत्म साखे
ते निंदीए ए; पम्किमीए गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्या मति

વર્ત્તાવિગ્રાં એ; જે માંખ્યાં ઝત્સૂત્ર તો ॥ કુમતિ કદાગ્રહને વસે
 એ, વલી ઝથાપ્યાં સૂત્ર તો ॥ ૫ ॥ ઘડ્યાં ઘમાવ્યાં જે ઘણાં
 એ, ઘરટી હલ હથીઆર તો ॥ નવ ૧ મેલી મુકીઆં એ,
 કરતાં જીવ સંહાર તો ॥ ૬ ॥ પાપ કરીને પોસીયા એ; જ
 નમ ૧ પરિવાર તો ॥ જનમાંતર પહોત્યા પઠી એ, કોઈ ન કી
 ધી સાર તો ॥ ૭ ॥ આ ભવ પરભવ જે કસ્યાં એ; ડમ અધિક
 રણ અનેક તો ॥ ત્રીવિધે ત્રીવિધે વોસરાવીએ એ; આણી હૃદ
 ય વિવેક તો ॥ ૮ ॥ હઃકૃત નિંદા ડમ કરી એ; પાપ કરો
 પરિહાર તો ॥ શિવગતિ આરાધન તણો એ; એ ઠઠો અધિ
 કાર તો ॥ ૯ ॥

॥ ઢાલ ૬ ઠી. ॥

(આદિ તું જોને આપણી ॥ એ વેઠી.)

ધન ૧ તે દિન માહરો; જિહાં કિયો ધર્મ ॥ દાન ઠી
 યજ્ઞ તપ આદરી; ટાલ્યાં હુત્કર્મ ॥ ધ૦ ॥ ૧ ॥ ઝેરુંજાદિક
 તીર્થની; જે કીધી યાત્ર ॥ યૂગતે જિનવર પૂજીયા; વલી પો
 ર્યાં પાત્ર ॥ ધ૦ ॥ ૨ ॥ પુસ્તક જ્ઞાન લિખાવીયાં; જિણહ
 ર જિણ ચેત્ય ॥ સંઘ ચતુર્વિધ સાચવ્યા, એ સાતે રોત્ર ॥
 ધ૦ ॥ ૩ ॥ યમિક્રમણાં સુપેરે કસ્યાં; અનુકંપા દાન ॥ સા
 ધુ સૂરી ઠવગ્રાયને, દીધાં વહુમાન ॥ ધ૦ ॥ ૪ ॥ ધર્મ કા
 જ અનુમોદિયે, ડમ વારો વાર ॥ શિવગતિ આરાધન ત
 ણો, એ માતમો અધિકાર ॥ ધ૦ ॥ ૫ ॥ જ્ઞાવ જ્ઞાનો મન
 આણીયે, ચિત્ત આણિ ઘામ ॥ સમતા જાવે જ્ઞાવીયે, એ આ
 તમરામ ॥ ધ૦ ॥ ૬ ॥ સુગ્ધ હલ્લ કારણ જીવને, કોઈ અ
 વર ન હોય ॥ કર્મ આપ જે આચર્યાં, ભોગવીએ રોયા ॥ ધ૦

॥ ७ ॥ समता विण जे अणुसरे; प्राणी पुन्य काम ॥ ठार
उपर जेम लीपणुं, ऊंखर चित्राम ॥ धण ॥ ८ ॥ नाव भ
दी परे भावीए, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,
ए आठमो अधिकार ॥ धण ॥ ए ॥

ढाल ७ मी.

॥ रैवत गिरी उपर ॥ ए देशी. ॥

हवे अवसर जाणी, करीय संलेषण सार ॥ अणसण
आदरीए, पचखी च्यारे आहार ॥ ललुता सवि मुकी, ठांमी
ममता अंग ॥ ए आतम खेले; समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥
गति च्यारे किधा; आहार अनंत निसंक ॥ पण तृपति न
पाम्यो; जीव लालचीनु रंक ॥ दूखहो ए वली वली; अण
सणनो परिणाम ॥ एहथी पामीजे; शिवपद सुर पद ठा
म ॥ २ ॥ धन धनो जालिन्नइ, खंधो मेघ कुमार ॥ अण
सण आराधी, पाम्या जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्ये, क
री एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥
दशमे अधिकारे, महा मंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मुको,
शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, डुर्गति दोष वि
कार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पूरवतुं सार ॥ ४ ॥ जनमंत
रे जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातिक गाली, पामे सु
र अवतार ॥ ए नवपद सरिखो, मंत्र न कोइ सार ॥ इह
जवने परजवे, सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जूनु ज्रीव जी
लडी, राजा राणि आय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महा
राय ॥ राणी रतनवती, बेहु पाम्या सुर जोग ॥ इक न
वथी जेहेस्ये, सिद्ध वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वलि,

मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणीधर फीटीने, प्रगट थंड फूल
माल ॥ शिवकुमरे योगी, सोवनपुरसो कीध ॥ इम इणो
मंत्रे, काज घणाना सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर
जिणेंसरे ज्ञाप्यो ॥ आराधन केरो, विधि जिणे चित्तमां रा
ख्यो ॥ तिणे पाप पखालि, जव जय डेरे नाख्यो ॥ जिन
विनय करंतां, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥

ढाल ८ मी.

॥ नमो जवि भावशुं ए ॥ ए देशी. ॥

सिद्धारथ राय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मढ्हार तो ॥
अवनी तल तुहें अवतस्था ए, करवा अम्ह उपगार ॥ १ ॥
जयो जिन वीरजी ए ॥ में अपराध कथा घणा ए, कहेतां
न जहुं पार तो ॥ तुह चरणो आव्या भणी ए, जो तारे तो
तार ॥ २ ॥ जण ॥ आश करीने आवीज ए, तुम्ह चरणे
महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहेस्ये ला
ज ॥ ३ ॥ जण ॥ करम अलुजण आकरां ए, जनम मरण
जंजाल तो ॥ हुं वुं एहथी उभगो ए, ठोमाव देव दयाल ॥ ४ ॥
जण ॥ आज मनोरथ मुज फल्यो ए, नागां दुःख दंदोल
तो ॥ तूगे जिन चोवीसमो ए, प्रगट्या पुण्य कलोल ॥ ५ ॥
जण ॥ जव ७ विनय तुम्हारमो ए, जाव जगति तुम्ह पाय
तो ॥ देव दया करी दीजी ए, बोधवीज सुपसाय ॥ ६ ॥ जण ॥

कलस.

इय तरण तारण सुगति कारण, दुख निवारण जग ज
यो ॥ श्री वीर जिनवर चरण शुणता, अधिक मन उजट

अथो॥ श्री विजयदेव सूरिंद पटोघर, तीरथ जंगम इण ज
गे ॥ तपगच्छ पति श्री विजयप्रज्ञसूरी, सूरी तेजे ऊगमगे॥
श्री हीरविजयसूरी सीस वाचक, कीर्तिविजय सुर गुरु समो॥
तस सीश वाचक विनयविजये, शुण्यो जिन चोवीसमो ॥
सई सत्तर संवत उगणात्रीसैं, रही रानेर चौमास ए॥ विजय द
शमी विजय कारण, किन्तु गुण अभ्यास ए ॥ नर जव आ
राधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए ॥ निर्जरा हेते
तवन रचिन्त, नामे पुण्यप्रकास ए ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री आदेशरजीनी विनती लिख्यते.

पामी सुगुरु पसाय रे, सेत्रुंजय धणी॥ श्री रिसहेसर वि
नवुं ए ॥ १ ॥ त्रिभुवन नायक देव रे, सेवक विनती; आदी
श्वर अवधारी ए ॥ २ ॥ सरणे आव्यो स्वामी रे, हुं संसार
मां; विरूए वयरी ए नब्बो ए ॥ ३ ॥ तार तार मुऊ तात रे,
वात किसि कहुं; नव नव ए ज्ञावटतणी ए ॥ ४ ॥ जनम
मरण जंजाल रे, बाल तरूण पणुं; बलि बलि जरा देह घणुं
ए ॥ ५ ॥ किमें न आव्यो पार रे, सार हवे स्वामी; सेन करो
एक माहरी ए ॥ ६ ॥ ताख्या तुझे अनंत रे, संत सुगुण बलि;
अपराधि पिण उद्धर्या ए ॥ ७ ॥ तो एक दीन दयाल रे, बा
ल दयामणो; हुं शा माटे वीसखो ए ॥ ८ ॥ जे गीरुआ गुण
वंत रे, ताख्या तेहने; ते मांहि अचरिज किशुं ए ॥ ९ ॥ जे मु
ज सरिखो दिन रे, तेहने तारतां; जग विस्तरस्ये जस घणो
ए ॥ १० ॥ आपद पमिन्त आज रे, राज्य तुमारडे; चरणे हुं
आव्यो वही ए ॥ ११ ॥ मुज सरीखो कोई दिन रे, तुज सरि
खो प्रनु; जोतां जग लाजे नहीं ए ॥ १२ ॥ तुहि करुणासिं

धुरे, वधु जुवन तणो; न घटे तुम जवेखवुं ए ॥१३॥ तारण
 हारो कोइ रे, जो बीजो होवे; तो तुहने स्याने कहुं ए ॥१४॥
 तुंहिज तारीस नेट रे, पहिलानें पढे, तो एवमि गाढीम कि
 सी ए ॥१५॥ आवि लाग्यो पाय रे, ते किम ठोमस्ये; मन म
 नाव्या विण हवे ए ॥१६॥ सेवक करेय पुकार रे, बाहिर र
 ह्यो जस, ते साहिव गोप्ता किसी ए ॥१७॥ अतुलीवल अ
 रिहंत रे, जगनें तारवा, समरथठो स्वामि तुमे ए ॥१८॥ शुं
 आवेठे जोर रे, मुजने तारतां, केंघन वेसेठे किस्युं ए ॥१९॥
 कहेस्यो तुमे जिणंद रे, जगती नथी तेहवी, तो ते जगती
 मुजने दीजिए ॥ २० ॥ बली कदेशो जगवंत रे, नही तुज
 जोग्यता; हमणा मुगति जावा तणी ए ॥२१॥ जोगता ते पि
 ए नाथ रे, तुमेहिज आपस्यो; तो ते मुजने दीजीए ए ॥२१॥
 बलि कदेशो जगदीस रे, करम घणा ताहरे; तो तेहज टालो
 परां ए ॥२३॥ कर्म अमारां आज रे, जगपति बारवा, बलि
 कुण बीजो आवडो ए ॥२४॥ बलि जाणो अरीहंत रे, एहने
 वीनती, करता आवडती नथी ए ॥२५॥ तो तेहज महारा
 ज रे, मुजने शीखवो, जिम ते विधिस्सुं वीनवुं ए ॥२६॥ मा
 य ताय विण कुण रे, प्रेमे शीखवे, बालकने कहों बोलवुं ए
 ॥२७॥ जो मुज जाणो देव रे, एह अपवान, खरड्योठे कलि
 काढवे ए ॥२८॥ किम लेउं ऊंग रे, अंग नस्यु एहनुं, विप
 य कपाय असोचस्युं ए ॥२९॥ तो मुज करो पवित्र रे, क
 हो कुण पुत्रने; विण मावित्र पखालस्ये ए ॥३०॥ कृपा करी
 मुज देव रे, इहां लगे आणीउं; नरक निगोद्यादिक थकि ए
 ॥३१॥ आव्यो हवे दजुर रे, उनो थइ रह्यो; सामु शु जूत

नहि ए ॥३१॥ आमो मांमी आज रे, वेगो वारणो; मावित्र
 तुमे मनावस्यो ए ॥ ३३ ॥ तुमे ठो दया समुझ रे, तो मुजने
 देखी; दया नथी शे आणता ए ॥३४॥ नवेखस्यो अरिहंत रे,
 जो आणी वेला; तो माहरी सि परि थस्ये ए ॥३५॥ नज्जा ठे
 अनेकरे, मोहादिक वयरी; ठल जुए ठे माहरां ए ॥३६॥ ते
 हने वारो वेगे रे, देव दया करी; वलि वली शुं वीनवुं ए ॥३७॥
 मरूदेवी निज माय रे, वेगे मोकली; गज वेसारी मुगतिमां
 ए ॥३८॥ नरतेसर निज नंद रे, किधो केवली; आरीसो
 अवलोकतां ए ॥३९॥ अठाणं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमे;
 जूऊ करंतां वारीआ ए ॥४०॥ बाहुवलने नेट रे, नाण केव
 ल तुमे; स्वामी साहमुं मोकळ्युं ए ॥४१॥ इत्यादिक अवदात
 रे, सघला तुह्य तणा; हुं जाणुं वुं मूलगा ए ॥४२॥ माहरी वे
 ला आज रे, मौन करी वेठा; उत्तर शे आपो नही ए ॥४३॥
 वीतराग अरीहंत रे, समता सागरु; माहरां ताहरां स्युं करो
 ए ॥४४॥ एक वार माहाराज रे, मुजने श्री मुखे; बोलावो
 सेवक कही ए ॥४५॥ एटले सीधां काज रे, सघलां माहरां;
 मनना मनोरथ सवि फळ्या ए ॥४६॥ खमजो मुज अपराध
 रे, आसंगो करी; असमंजस जे वीनव्युं ए ॥ ४७ ॥ अवसर
 पामी आज रें, जो नवि वीनवुं; तो पस्तावो मन रहे ए
 ॥ ४८ ॥ त्रिजुवन तारणाहार रे, पुण्ये माहरे; आवी एकांते
 मिळ्या ए ॥४९॥ बालक बोले बोल रे, जे अविगतपणे; मा
 य तायने ते रूचे ए ॥५०॥ नयणे निरख्यो नाथ रे; नाज्जी न
 रिंदनो; नंदन नंदन वन जिस्यो ए ॥५१॥ मरूदेवी उर हंस रे,
 वंस ईस्कागनो; सोहाकर सोहामणो ए ॥५२॥ माय ताय प्र

नु मित्र रे; बंधव माहरो; जीव जीवन तुं वालहो ए ॥५३॥
 अवरन को आधार रे; इण जग तुऊ विना; त्राण शरण तुं
 मुऊ धणी ए ॥५४॥ वलि वलि करुं प्रणाम रे, चरणे तुम्ह
 तणे; परमेश्वर सनमुख जूठ ए ॥५५॥ जव जव तुह पाय
 सेव रे; सेवकने देजो, हुं मागु दु एटलुं ए ॥५६॥ श्री क्रीति
 विजय उवजाय रे, सेवक ईणिपरे; विनय विनय करी वि
 नवे ए ॥५७॥ इति. ॥

अथ श्री निगोद दुःखगर्जित श्रीमंधरजिननुं
 स्तवन लिख्यते.

॥ उहा. ॥

अनंत चोवीशी जिन नमुं; सिद्ध अनंती कोम ॥ केव
 लनाणिथी वीरसवि, बंडवे करजोड ॥ १ ॥ वे कोमि केव
 ल धरा; विहरमान जिन वीस ॥ सहस कोटि युगल नमुं;
 साधु सवे निसि दिश ॥ २ ॥ आर्या ॥ सकल समिहित कर
 णी; सही वयणी राय हंस गयगमणी ॥ कवि जणणी ब्रह्मा
 णी; वयण रसं दिसत मे देवी ॥ ३ ॥

॥ उहा. ॥

श्री ब्रह्माणी सारदा, सरसति द्यो सुपसाय ॥ सिमंध
 र जिन विनवुं, सानिध करज्यो माय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली. ॥

(राग आशाउरी.)

॥ नंदनकुं त्रिशला हुलरावे ए देशी. ॥

श्री सिमंधर साहिव मेरा, चाहुं दरीशण तेरा रे ॥ ते

रे हे फरजन वहूतेरा, तुं प्रभु सांइ हमेरा रे ॥ ५ ॥ श्री सिमंधर
 साहिब मेरा ॥ ए आंकणी ॥ श्री श्रेयांस नरिंद विराजे,
 जस महिमा जग गाजे रे ॥ तस कुल कमल दिणंद समो
 वरु, सत्यकि नंदन ठाजे रे ॥ ६ ॥ श्री ७ ॥ पुष्कलवई विज
 या विचिं नयरी, अमरावई सम जाणि रे ॥ महाविदेहे तूं उ
 पन्यो, पुंमरीकिणी अहिठाण रे ॥ ७ ॥ श्री ८ ॥ डर देशंतर तूं
 प्रभु वसिनु, राणी रूकमणी कंत रे ॥ मुज संदेह तणा सं
 दोहा, कुण ज्ञाजे जगवंत रे ॥ ८ ॥ श्री ९ ॥ जेचउ गई गति आ
 गति जेया, जीवाजीव विज्यार रे ॥ केवलनाणी विण कुण
 ज्ञासे, बहुला ते अधिकार रे ॥ ९ ॥ श्री १० ॥ जवसमुइ तारण तूं
 प्रगढ्यो, तुं जग बंधव वाप रे ॥ जव जे में पातिक क्रियां, ते
 आलोउं आप रे ॥ १० ॥ श्री ११ ॥ हुं मूरख मति हिन म जाणुं,
 ज्ञान तणो लवलेश रे ॥ गुरु जवएस लहिकहुं साचुं, निसु
 णो राव जिणेश रे ॥ ११ ॥ श्री १२ ॥

॥ उहा. ॥

रांक तणि परे रडवड्यो, निधणिउ निरधार ॥ श्री सि
 मंधर सामीया, तुम विण इण संसार ॥ १२ ॥ आदि निगो
 द मांहि रूढ्यो, अव्यवहारी जीव ॥ काल अनंत तिहां रह्यो,
 जव अनंत सदैव ॥ १३ ॥

॥ ढाल ९ जी. ॥

(राग धन्याश्री.)

॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरो, ए देशी. ॥

श्री सिमंधर साहिब मेरा, विनतमी अवधारो जी ॥
 नरय निगोद तणां दुःख विरुआं, गिरूवा हृदय विचारो जी

॥१४॥ श्री० ॥ दीन दयाल कृपाल कृपानिधि, करिए ए उप
 गारो जी ॥ नीम नवोदधि उत्तर तारो, मुजने आप उपगा
 रो जी ॥१५॥ श्री० ॥ पोइणि पान सकोमल मेजे, वत्रिस स
 ख्या सोइ जी ॥ बलवंत नर सोए करिने, मनस्युं वींधे को
 ई जी ॥१६॥ श्री० ॥ एक पान जेदीने वीजे, जेहवे ते सूइ
 जाए जी ॥ वर्द्धमान जिन गोयमने कहे, असंख्य समय ति
 हां थाए जी ॥१७॥ श्री० ॥ असंख्य समय एक आवली जा
 णो, कुल्लक जवे हवे तेह जी ॥ जे दो सत ठपन आवलिनूं,
 जीवीत जीवे तेह जी ॥१८॥ श्री० ॥ अटप आठ एहवां अनु
 जवता, नाथ निगोद मजार जी ॥ जनम मरणानां डख अनं
 ता, मे सह्या वारंवार जी ॥१९॥ श्री० ॥ चुंआजिइसैं आ
 वलि साढि, ठेतालिस जाऊरी जी ॥ सासोश्वास एटजे एक
 थाए, आधी वात घणेरि जी ॥२०॥ श्री० ॥ सासोश्वासमां
 जीव निगोदे, करे सत्तर जव पूरा जी ॥ साढी चोराणु आव
 ली उपरे, अधिका जाणो सूरा जी ॥२१॥ श्री० ॥ महुरत ए
 कनी वे घम्मी काची, शास्त्र तणे परमाणि जी ॥ सांत्रिससैं
 त्रिहोत्तर तेहना, श्वासोश्वास बखाणि जी ॥२२॥ श्री० ॥
 ते मांदि हवे जीव निगोदे, जव करे केती वार जी ॥ पांसव
 सहसने पांचसयां बलि, ठत्रिस वार विचार जी ॥२३॥ श्री०
 एक लाखने तेर हजार, एकसोने नेऊ वार जी ॥ एक दीवस
 ना सासोश्वासा, केवलीने अधिकार जी ॥२४॥ श्री० ॥ ठास
 ठ सदस असी अधिकेरा, उगणीस लाख जलेरा जी ॥
 कर्म प्रपंचे एक दिवसमां, जीव करे जव फेरा जी ॥२५॥
 श्री० ॥ तेजीस लाख पंचाणुं महसा, सात सतक थव

धारि जी ॥ एक मासना एह नसासा, गणित तणे अणु
 हारी जी ॥ २६ ॥ श्री० ॥ पांच कोमि नव्यासी लस्का,
 चारसे व्यासि हजार जी ॥ एतलि वार ए मेरे निगोदिउ,
 एकण मास मजारजी ॥ २७ ॥ श्री० ॥ च्यार कोमिने
 सातज लस्का, वलि सहस अमिआल जी ॥ च्यार सतक अ
 धिका संख्याए, सासोश्वास विशाल जी ॥ २८ ॥ श्री० ॥ एक
 वरसमां सित्तर कोमि, लाख सत्योतेर वार जी ॥ सहस
 अठ्यासी आवसे अंकें, एह जीए अवतार जी ॥ २९ ॥ श्री० ॥
 ॥ उहा. ॥

मरणां अवतरणां करी, स्वामी काल अनंत ॥ पराव
 र्त पुजल कियां, तेहनो कहूं विरतंत ॥ ३० ॥ जिम केकि गिरि
 वर रहे, मेहा डेरे वास ॥ तिम जिनजी तुम नलगुं, निसुणो
 ए अरदास ॥ ३० ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(राग सारंग.)

॥ चतुर चोमासु पम्किमी. ए देशी. ॥

दश कोमाकोमि सागरे, उत्सर्पिणी एक रे ॥ तिम
 गणो एह अवसर्पिणी, मनें धरीअ विवेक रे ॥ ३१ ॥ सुण
 स्वामी सिमंधरा, धरा नूषण इसरे ॥ चउत्रिंश अतिसय प
 रगमा, वाणि गुण ठे पांत्रिसरे ॥ ३२ ॥ सु० ॥ विस कोमाकोमि
 बे मिली, कालचक्र एक थाय रे ॥ एक पुजल परावर्तमां, नव
 अनंत ते जाय रे ॥ ३३ ॥ सु० ॥ एह निगोदमां हुं वसिउ, प्रभु
 काल अनंत रे ॥ ते पुजल परावर्तका, कस्यां वार अनंत रे
 ॥ ३४ ॥ सु० ॥ खेपवी अकाम निर्जरा, कर्म चिकणां जेहरे ॥

पुढवी जल जलण वायु थयो, पाम्यो तेहनां देह रे ॥ ३५ ॥
 सुण॥ तेह एकेकी कायमां, जोणी सातलाख संख्य रे ॥ शी
 त तापादिक में सहां, कालचक्र असंख रे ॥ ३६ ॥ सुण॥ अनुक
 मे तिहां थकी निसरी, थयो काय अनतरे ॥ वत्रीस नाम
 ठे तेहनां, लह्यां ग्रंथ सिद्धांतरे ॥ ३७ ॥ सुण॥ १ सूरण कंद प
 हिलुं गणुं, २ वज्रकंद ३ हलड रे ॥ ४ अरडक आड ५ कचूर
 को, ६ सत्तावरी तजो नड रे ॥ ३८ ॥ सुण॥ ७ निलीवरीयालो
 ८ कुमारिका, ९ स्तुहि अमृता १० जाणि रे ॥ ११ लसणने
 १२ वंस करेलडां, १३ गाऊर लूणो १४ वखाणि रे ॥ ३९ ॥
 सुण॥ जोटा ते १५ कमलकद निव, गिरि १६ कर्णका जाल रे ॥
 १७ कोमल पत्रने १८ खरसूआ, १९ लूणा वृक्षनि ढाल रे
 ॥ ४० ॥ सुण ॥ थेग ते २० मोगर जाणज्यो, २१ नीली मोथ
 २२ जूई फोम रे ॥ पट्यक २३ शाक विशेष ठे, खातां अति घ
 णी खोड रे ॥ ४१ ॥ सुण ॥ २४ पीलूमा २५ अमृत बेलडी,
 २६ मुला म कर अजिलाख रे ॥ उगता विदल २७ अंकुरमा,
 विरूहा इति जाख रे ॥ ४२ ॥ सुण॥ प्रथम समयनो २८ बाहु
 लो, गणुं तेह सदोप रे ॥ सूरी २९ वाढ्ढोली ने ३० आंवली,
 कुणी करजो संतोप रे ॥ ४३ ॥ सुण॥ ३१ आलूय ३२ पिडालु
 वली, घणा जीवनो पिम रे ॥ अनंतकाय वत्रीसनां, कहां
 नाम प्रचंम रे ॥ ४४ ॥ सुण॥ इति. ॥

उहा.

इत्यादिक अनेक ठे, अनंतकायना भेद ॥ बादर ए
 द निगोदमां, हुं पाम्यो निर्वेद ॥ ४५ ॥ सई अग्र अनंतमें,
 जोगे हुं बहु वार ॥ वेचाणो निसंवल्लो, किएहि न कीधी

सार ॥ ४६ ॥ काल असंख तिहां रह्यो, साधारण स्वरूप ॥
चउद लाखे योनि जन्म्यो, अई २ कर्म विरूप ॥ ४७ ॥

ढाल ४ थी.

राग सामेरी.

॥ वंछित पूरण सुरतरु ॥ ए देशी. ॥

श्री सिमंधर स्वामी ए, तिहुअण अंतरयांमी ए ॥ पा
मी ए जे गति कहुं ते आपणी ए ॥ ४८ ॥ एक शरीरे एक
ए, जीव थयो प्रत्येक ए ॥ ठेक ए दुखनो नवि आव्यो प्रभो
ए ॥ ४९ ॥ ठेदन भेदन जे सह्यां, ते में नवि जाइ कह्यां ॥
निरवह्यां काल असंख्य तिहां वशी ए ॥ ५० ॥ योनि दश
लाख फरसी ए, तेह वणसई सीरसी ए ॥ निरसी ए पुष्प
पत्र फल वेयणा ए ॥ ५१ ॥ बलि विगलेंदि हुं थयो, काल
संख्यांतो तिहां रह्यो ॥ सांसह्यो दुख उपजतुं परवशे ए
॥ ५२ ॥ बि ति चउ विगलेंदि तणी, योनि लाखे वे वे भणी ॥
जगधणी ते पिण में सह्य अणुसरी ए ॥ ५३ ॥ पुरी पर्याप्ति
पखे, अंतर मुहुर्त्तने आजखे ॥ सौ दुःखि बहु वार असंनिउ
ए ॥ ५४ ॥ कुञ्चित योनि उंपनो, चउद ठाणमां निपनो ॥ सं
पन्नो अनुक्रमे हुं दश प्राणनो ए ॥ ५५ ॥ त्रिहुं जेद तिर्थ
च ए, जल थल खेचर प्रपंच ए ॥ संच ए मांड्यो तिहां वली
पापनो ए ॥ ५६ ॥ मन्त्र गलांगल किधां ए, जलचारि पद
लीधां ए, सिद्धा ए एकेका जन आपणा ए ॥ ५७ ॥ वृश्चि
क सर्प नकुल हवे, बाघ सिंह चित्तर जवे ॥ तिहां सवे सं
वल मेढ्यां डुरितनां ए ॥ ५८ ॥ सींचाणादिक हुं थयो, नर
ने जावो अलज्ज ॥ नवि लह्यो पाप पुन्यनो आंतरो ए

॥ ५९ ॥ पशुअ पणे इम जमीन ए, योनी लाख चठ रमी
 न ए ॥ दमीन ए वध वंधे करी मुजने ए ॥ ६० ॥ सात जे
 व थयो नारकी, निर्विवेक तिर्यक थकी; पातकि हुं अपराधि
 ताहरो ए ॥ ६१ ॥ दोहलि दश वेयण सही, काल असंख
 तिहां रहि ॥ हुं सहि च्यार लाख योनी जम्यो ए ॥ ६२ ॥
 जगजीवन जिनजी सांजळ्यो, दश दृष्टांते दोहिलो ॥ अ
 ति जलो नरजव काल घणे लह्यो ए ॥ ६३ ॥ उंचे सीर टं
 गाणो ए, कर्मबंध वंधाणो ए ॥ टंगाणो ए गर्जावासनो
 नहि जलो ए ॥ ६४ ॥ कोमि सूई तापवी, विधे तनु को मान
 वी ॥ अनुजवि एहथी आठ गुणी व्यथा ए ॥ ६५ ॥ डस्सह
 वेअण वेहे ए, घर्म करुं सहि वेहे ए ॥ गेहे ए जो जणस्ये
 मुऊ मामली ए ॥ ६६ ॥ निच गोत्र अवतार ए, न सुण्यो ध
 र्म लगार ए ॥ त्यारे ए सदगुरु सेवा नवि लहि ए ॥ ६७ ॥
 वेश अनारज वशियो ए, पाप तणे रस रसीन ए ॥ घसिन
 ए विरूआ कर्म जणी घणुं ए ॥ ६८ ॥ कर्म वले पाठो वली
 न ए, चनविठा वंम्के वलि रूलित्त ए ॥ नवि मढ्यो स्वामी
 को मुऊ तारको ए ॥ ६९ ॥

उहा.

उंच निच कुले अवतस्यो, किधां मध्यम काम ॥
 विरती पाखे दु थयो, न लह्यो जव विश्राम ॥ ७० ॥ मा
 नव जव अति दोहिलो, दोहिलो आरज देश ॥ सदहणा
 वलि दोहिजी, दोहिलो गुरु उवएस ॥ ७१ ॥ मनुष्य तिरी
 जव अंतरी, साते नरग मजार ॥ गणतां काल असंख दुए,
 हुं गयो एति वार ॥ ७२ ॥

ढाल ५ मी.

राग केदारो ॥ अद्विआनी देशी. ॥

सिमंधर जगदीश, पूरो मनह जगीश ॥ शिश नमी
 रहुं ए, आणा नित वहुं ए ॥ ७३ ॥ मेरु महिधर धीर, जल
 नीधी जेम गंजीर ॥ वीर वमो सुणो ए, मयण सुनट ह
 एयो ए ॥ ७४ ॥ तुं सेवक साधार, गुणगण रयण जंमा
 र ॥ तारक अवतख्यो ए, जय लछि वख्यो ए ॥ ७५ ॥ तुं
 मुऊ मन तरु कीर, तुं हइमानो हीर ॥ कीर्त्ति तुम तणी ए,
 त्रिजुवन अति घणी ए ॥ ७६ ॥ जिनजी जग विख्यात,
 सांजल मुऊ अवदात ॥ जव २ जे हुआ ए, विवरी जूजु
 आ ए ॥ ७७ ॥ पाम्यो आरज देश, उंच गोत्र सुविशेष,
 लेश्या नवि रहिए ॥ सामग्रि नही ए ॥ ७८ ॥ सामग्री वलि
 लह, सदहणा मन बह ॥ बुद्धिनो दरियो ए, आदर नवि क
 ख्यो ए ॥ ७९ ॥ न करि त्रिकरण शुद्धि, परमादे मन बुद्धि ॥
 सिद्धि न को लहिए, हाख्यो जव सही ए ॥ ८० ॥ जणी ज
 णी पण अंग, करी प्रमाद प्रसंग ॥ ब्रत भंगे हुयो ए; नर
 य निगोदिन ए ॥ ८१ ॥ में लाध्युं बहु वार; समकित रयण
 उदार ॥ हारविज शसिन ए; छषण पांचसिन ए ॥ ८२ ॥ कु
 गुरु कुदेव कुधर्म; उदालें सिव सम्म ॥ कर्म सांकल्यो ए, तेह
 शुं जइ मल्युं ए ॥ ८३ ॥ अतिशयवंत महंत ॥ दोष रहि
 त भगवंत ॥ चित्त न सदह्यो ए; आले भव गयो ए ॥ ८४ ॥ पा
 ले पंचाचार, टाले कुव्यापार ॥ सुगुरु न उजख्या ए, सूत्रे
 जे लिख्या ए ॥ ८५ ॥ दयामूल जिनधर्म, नवि जाण्या
 सवि मर्म ॥ नवतत्वादिका ए, हेयादिक त्रिका ए ॥ ८६ ॥

गामुरिए परवाहि, धर्म करि उच्चाहि ॥ बलि बृंदारको ए,
परमाधामिको ए ॥ ८४ ॥ नारकिया छुख देई, पापे पिंम
जरेई ॥ जल माणस थयो ए, जाल अंतर रह्यो ए ॥ ८५ ॥
पीलाणो तिणि ठाम, अंम गोकलने काम ॥ घरटा मध्य
करी ए, नर द्विपांतरि ए ॥ ८६ ॥ छुःख पाम्यो तिहां ज्ञीम,
काल संवत्सर सिम ॥ परवश माठले ए, जव इम पाठले ए
॥ ८७ ॥ हवे वैमानिक देव, करतो परस्त्रि सेव ॥ देव वि
पय तणि ए, तृष्णा मुऊ घणी ए ॥ ८८ ॥ तिव्र मोह परि
णाम, बलि एकेडि ठाम ॥ आज असंख्यनो ए, ते हुं उपनो
ए ॥ ८९ ॥ तुं अपराधि देव, ताहरो हुं नितमेव ॥ सेवक
चित्त धरो ए, पस्तो उढरो ए ॥ ९० ॥

॥ ढाल ६ ठी.

(राग धन्यासिरी.)

॥ पीयूषो परधर आवे. ए देशी. ॥

ज्यार लाख योनि जन्म्यो, लह्यो सूर अवतार ॥ श्री
सिमंधर ठाकुर, तिहां विलश्यां रेमें सुख अपार ॥ ९१ ॥ ठा
कुरीया रे अम तारो, जवसायर रे ॥ बाढ्हा पार उतारो,
॥ ए आंकणी ॥ चउद लाख मनुष्यना, जोगव्या जेद अशेश
॥ लाख चौराशी हुं जन्म्यो, में काढ्यो रे नव नव तिहा वेश
॥ ९२ ॥ ठाण ॥ दिन जाते रे जोवन गढ्युं, न गढ्यो ते मनमथ
पूर ॥ महिलाने रूपे रे मोहिज, देखि रातो रहिज हुं जूरि
॥ ९३ ॥ ठाण ॥ अशुन ध्यान अंतर चिंतव्यां, युवतिना, जो
ग विलास ॥ अमृत फिटि विप थयुं, श्रीफल जल रे घनसार
ज तास ॥ ९४ ॥ ठाण ॥ क्रोध मान माया तजी, समजावे जा

वे मन ॥ तजी कंचन कामिनि, महिमंमल रे सुनी ते धन
 धन्य ॥१७॥गण॥ इम अनंता जव कख्या, चविन वार अनं
 त ॥ सुख दुःख सघलां जोगव्यां, जव गणतां रे थाक्यो जग
 वंत ॥१८॥गण॥ देव धर्म गुरु नलख्या, में सुण्यो प्रवचन
 सार ॥ वकायना जीव नलख्या, वलि डुरितना रे अहिगण
 अठार ॥१९॥गण॥ सामाचारि संग्रहि, सिद्धांतने अनुहा
 र ॥ तपगठनि क्रिया करूं, हुं जोमातुर पंचांग विचार ॥
 ॥२०॥गण॥ गुण सताविश साधुना, श्रावकना एकवीश ॥
 ते सघला में नलख्या, अंगें आणवारे खप करूं निश दिश
 ॥२१॥गण॥ आणे आरे जरतमां, वर नहि केवलनाण ॥
 पूर्वाचार्य वयणडां, हुं तो मानुरे ते अमीय समान ॥२२॥
 ॥गण॥ मिळ्यात सघलुं परिहरूं, हुं धरूं समकित जाण ॥
 तप जप किरीया आदरूं, तारे लेखे रे माहारे ते परमाण ॥
 ॥२३॥गण॥ इणिपरे इण जवे पर जवे, जिनजी विराधी
 आण ॥ ते सवि मिच्छा डुक्कमं, सांसहजो रे अपराध सुजा
 ण ॥२४॥गण॥ हित न कख्यां केहनां कदा, न कख्यो ते दि
 नोहार ॥ दान पुन्य जेणे नवि कख्यां, वन मालतिरे जिम
 तस अवतार ॥२५॥गण॥ धण कण कंचन कामनी, वलि
 राज्य रुधि अनेक ॥ हुं नवि इहुं राजिया, तूगे आपे रे अवि
 चल पद एक ॥२६॥गण॥ इति ॥

॥ ठाल ७ मी ॥

(राग धन्याश्री.)

॥ माइ धन्य एदेशी. ॥

धन २ ए संप्रति सिमंधर जगदेव, सुर नरने किंनर अ

हनिशि सारे सेव ॥ गढ त्रिण विचालि समोसरण सुख मे
ह, ठत्र त्रय शोचिंत चामर अंकित देह ॥ १०८ ॥ अकलंक
महावल कलिमल तरु जलपुर, जग नायक जग गुरु जग व
ञ्जल वमनूर ॥ जग लोचन उदयो जग दीपक जगनाथ, ज
ग तिलक समोवरु ए सीवपुरनो साथ ॥ १०९ ॥ धन २ नर
नारि जे प्रणमें तुम पाय, धन ३ जे दिहा जिण तूम समरण
थाय ॥ धन ३ ते जिहा जे तुम गुण नीत गाय, जस कुल अजु
आख्युं धन ते मायने ताय ॥ ११० ॥ वमलिनो वासी ववहारि
शुन चित्त, गेळहु कुल दीवो अमिचंद सुपवित्त ॥ संवेगी सु
घो किघो त्याग सचित्त, एहतवन रचियुमें जणवा तेह नि
मित्त ॥ १११ ॥ संवत् सत्तरसे तेरोत्तर शुचि मास, शुद्धि शात
म शुक्ले ॥ स्वाति योग शुभ तास, श्री विजयप्रज्ञसूरि रा
ज्ये चित्त उल्लास, तयरवाडा माहें शुणित रहि चउमास ॥

॥ कलश. ॥

तपगन्ध अंबर अरुण उदयो, श्री हीरविजय सूरेश्वरो
॥ निज हस्त दिक्षित सुपरिक्षित, श्री शुभविजय कविश्व
रो ॥ तस चरण पंकज प्रवर मधुकर, नावविजय बुध शुद्ध
रो ॥ सिद्धिविजय कहे स्वामि संपत्ति, नविक जन मंगल क
रो ॥ ११३ ॥ इति. ॥

अथ श्री बीजतीर्थी तपनुं स्तवन.

(फतमल पाणीमाने जाय ॥ ए देशी)

प्रणामी सारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी ॥ बीज
तिथी गुणगेह, आदरो नवियण सुदरुं जी ॥ १ ॥ एह दिन

पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ महा शुद्धि बीजे
 जाण, जन्म अग्निनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुद्धि हो
 बीज, सुमती चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदहि तेह,
 तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर सुन्न ठां
 ण, दशमा शितल जिन गणो जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज,
 वरिया मुक्ति तस सुख घणो जी ॥ ४ ॥ फागुण मासनी बी
 ज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस चवन, कर्म ख
 र्यें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुद्धि बीज वा
 सुपुज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, सरण करो जिन
 राजनो जी ॥ ६ ॥ करणी रूप करो खेत, समकित रूप रोपो
 तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेम समता करी जी
 हां जी ॥ ७ ॥ उपसम तद रूप निर, समकित ठोम प्रगट होवे
 जी ॥ संतोष करी अहो वाम, पञ्चखाण व्रत चोकि सोहे जी
 ॥ ८ ॥ नासे कर्म रीपू चोर, समकित वृद्ध फळ्यो तिहां जी ॥
 मांजर अनुन्नवरूप, उत्तरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शां
 ति सुधारस वारी, पान करी सुख लिजीए जी ॥ तंबोल स
 म ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीए जी ॥ १० ॥ बीज
 करो बावीस मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी ॥ चोवी
 हार उपवास; पालीए सील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्य
 क दोय वार, पडिलेहण दोय लिजीए जी ॥ देव वंदण त्रण
 काल, मन वचन कायाए किजीए जी ॥ १२ ॥ नजमणुं सुन
 चित्त, करी धरीये संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पी
 जीए सुन्न उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ इणि विध करीए हो बीज,
 रागने द्वेष डुरे करी जी ॥ केवल पद दहितास, वर मुक्ति न

लट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपुजा गुरु नक्ति, विनय करी से
वो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, नक्ति पामे सुख संप
दा जी ॥ १५ ॥ इति. ॥

अथ ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.

॥ पुन्य प्रसंसीए ॥ ए देशी ॥

सुत सिद्धारथ जुपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह
परखदा आगले रे, नांखे श्री वर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ भवियण
चित्त धरो, मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान जगति करो ॥
ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा रे, मुख्यपणो तिहां
दोय ॥ तेहमां पण ज्ञानज वमो रे, जिणथी दंसण होय
रे ॥ २ ॥ भण ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत
सहाय ॥ ज्ञाने थीवरपणो लहे रे, आचारज उवजायो रे ॥ ३ ॥
जण ॥ ज्ञानी सासोस्वासमां रे, कठिन करम करे नाश ॥
बन्धि जिम इंधण देहे रे, क्षणमा योति प्रकासो रे ॥ ४ ॥
॥ भण ॥ प्रथम ज्ञान पठे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गु
णठाणग पग थालीए रे, जिम चढे मोक्ष आवासो रे
॥ ५ ॥ जण ॥ मइ सुअ उहि मनपझवा रे, पांचमुं केवलज्ञा
न ॥ चौमुगा श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥
॥ जण ॥ तेहनां साधन ले कह्यारे, पाटि पुस्तक आदि ॥ लखे
लखावे साचवे रे, घरमी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ जण ॥ त्रिवि
धे आशातन जे करे रे, जणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहिरा
वोवमा रे, मुगा पांगुला थाय रे ॥ ८ ॥ जण ॥ जणता गुणतां न
आवमे रे, न मले वल्लज चिज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे,

ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए॥ न०॥ प्रेमे पूठे परखदा रे, प्रण
मी जगगुरु राय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार
पसायो रे ॥ १०॥ न०॥ इति. ॥

॥ ढाल ९ जी. ॥

(कपूर हुए अति नजलुं रे. ए देशी.)

जंबूद्वीपना नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजि
तसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमति तास रे ॥ १ ॥ प्राणी,
आराधो वर ज्ञान, एहज सुगति निदान रे ॥ आंकणी ॥ वर
दत्त कुमर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे नणवा
मुकिन्न रे, आठ वरस जब हुत रे ॥ १॥ प्रा०॥ पंक्ति यत्न करे
घणो रे, शास्त्र नणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रं
थ तणी शी चेत रे ॥ ३॥ प्रा०॥ कोठे व्यापी देहमी रे, राजा
राणी संचित ॥ श्रेष्ठि तिणहीज नयरमां रे, सिंहदास धन
वंत रे ॥ ४॥ प्रा०॥ कपूरतिलका गेहनी रे; शीलें सोचीत अं
ग ॥ गुणमंजरी तस वेढडी रे, मुगी रोगे व्यंग रे ॥ ५॥ प्रा०॥
सोल वरसनी सा थडरे, पामी जोवनवेश ॥ दूरनग पण प
रणे नही रे, मात पीता धरे खेद रे ॥ ६॥ प्रा०॥ तिण अवसेरे
उद्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरु
रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७॥ प्रा०॥ वनपालक नूपालने
रे, दीध वघाई जाम ॥ चतुरंगी सेन्या सजी रे, वंदन जावे
ताम रे ॥ ८॥ प्रा०॥ धरमदेशना सांजले रे; पूरजन सहित न
रेस ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहि प्रमाद प्रवेश रे
॥ ९॥ प्रा०॥ ज्ञान विराधन परनवे रे, मुख पर आधीन ॥ रो
गे पिड्या टलवले रे, दीसे डखीया दीन रे ॥ १०॥ प्रा०॥ ज्ञान

सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जग
जीवडा रे; न लहे तत्व संकेत रे ॥११॥ प्राण ॥ श्रेष्ठि पुढे मुणि
दने रे; नांखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अगजा रे; कव
ण करम विरतंत रे ॥१२॥ प्राण ॥ इति ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(फागनी देशी.)

धातकीखंरुना नरतमां, खेटक नयर सुगम ॥ व्यव
हारी जिनदेव ठे, घरणी सुंदरी नाम ॥१॥ अंगज पांच सो
हामणा, पुत्री चतुरा न्यार ॥ पंढित पासे शीखवा, ताते मु
क्या कुमार ॥ २॥ बाल स्वजावे रामत, करतां दाहडा जा
ए ॥ पंढित मारे त्यारे, मा आगल कहे आय ॥ ३॥ सुंदरी
शुं खणी सीखवे, नणवानो नही काम ॥ पंढयो आवे तेढवा,
तो तस हणज्यो ताम ॥ ४॥ पाटि खमिया लेखण, वाली
कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जिम करहाने डाख ॥ ५॥
पामा परे मोटा थया, कन्या नटीए कोय ॥ शेठ कहे सुण
सुंदरी, एतुज करणी जोय ॥ ६॥ त्रटकी नासे नामिनी, वे
टा वापना होय ॥ पुत्री होए मातनी, जाणे ठे सह कोय
॥ ७॥ रे रे पापणि सापणि, साहमा बोल म बोल ॥ रीसा
लि कहे ताहरो, पापि वापनी टोल ॥ ८॥ शेठे मारी सुंदरी,
काल करी ततखेव ॥ एतुज वेटी नपनी, ज्ञान विराधन हे
व ॥ ९॥ मुरबांगत गुणमंजरी, जातिस्मरण पामि ॥ ज्ञा
न दिवाकर साचो, गुरुने कहे सिर नाम ॥ १०॥ शेठ कहे सु
णो स्वामी, किम जाए ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो;
साधो वंढीत योग ॥ ११॥ नज्बल पंचमी सेवो; पंच वरस

पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गणो, चोवीहार उपवास
॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सनमुखे; जपिए दोय हजार ॥ पुस्तक
आगल ठोइए; धान्य फलादि नदर ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीव
ट तणो; साधिउ मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके; ति
णी विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सोजाग्यपंचमी; उऊ
ल कार्तिक मास ॥ जावजीव लगें सेवीए; उजमणां विधि
खास ॥ १५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

(एकवीसानी देशी.)

पांच पोथी रे ठवणी पाठां विटां गणां चावखी दोरा
रे, पाटि पाटला वर तणा ॥ मिसि कागल रे, कांवि खमिया
लेखणी ॥ कवली मावडी रे, चंडुआ फिरमर पुंजणी ॥ १ ॥
॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नूषण, केसर चंदन माज
डी ॥ वासकुं पि वालाकुंची, अंगलुहणां ठावमी ॥ कलश था
लि मंगल दिवो, आरतिने धुपणां ॥ चरवला मुहपति साह
मीवञ्जल, नोकरवाली आपना ॥ २ ॥

॥ ढाल. ॥

ज्ञान दशरण रे, चरणनां साधन जे कहां ॥ तप संयु
त रे, गुणमंजरीए सदह्यां ॥ नृप पूठे रे वरदत्त कुमरने अं
ग रे, रोग उपनो रे कवण कर्मनो जंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥
मुनीराज ज्ञासे जंबुद्वीपे, जरत सहिपुर गाम ए ॥ व्यवहा
री वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मां
हे रमतां दोय बंधव, पुन्य योगे गुरु मढ्या ॥ वैराग्य पामी
जोम वामी, धर्म धाने संवख्या ॥ ४ ॥

॥ ढाल. ॥

लघु बांधव रे गुणवंत गुरु पदवी लहे, पण सय मुनि
नि रे ॥ सारण वारण नित दिए, कर्मयोगे रे अशुभ उदय
थयो अन्यदा, संथारे रे पारसी जणी पोढ्यो जदा ॥ ५ ॥

॥ त्रुटक ॥ सर्व घाति निंद व्यापि, साधु मार्गे वायणा ॥
बंधमां अंतराय थातां, सूरि हुआ डुमणा ॥ ज्ञान उपर द्वेष
जाग्यो, लाग्यो मिथ्या झूतडो; पुन्य अमृत ढोली नाख्यो ॥
भक्ष्यो पाप तणो घमो ॥ ६ ॥

॥ ढाल. ॥

मन चितवें रे कां मुज लाग्यो पाप रे, श्रुत अज्ञास्यो रे
तो एवमो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, ज्ञेयण सयण सुखे क
रे ॥ मुरखनारे आठ गुण मुख उचरे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ बार
वासर कोय मुनीने, वायणा दिधी नही ॥ अशुभ ध्याने
आयु पुरी, झूप तुज नंदन सहि; ज्ञान विराधन मुढ जड
पणुं ॥ कोढ नीवेदन लहि, वृद्ध बांधव मान सरवर ॥ हंस ग
ति पाम्यो सही ॥ ८ ॥

॥ ढाल. ॥

वरदत्तने रे जातिसमरण उपनो, जव दीतो रे गुरु प्र
णामी कहे सुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे ज्ञान जगत्रय दीवडो,
गुण अवगुण रे ॥ नासन जे जग परवमो ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥
ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवमो ॥ गुरु
कहे तपथी पाप नासे, ताढ जिम घन तावडे ॥ झूप पन्नणे
पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवरि ॥ गुरु कहे पंचमी तप
आराधो, संपदा ल्यो वेवमी ॥ १० ॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

(मेंदी रंग लागो. ए देशी.)

सदगुरु वयण सुधारसे रे, जेदी सात घात ॥ तपशुं
 रंग लाग्यो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे ॥ नातो रोग मिथ्यात्व
 ॥१॥तण॥ पंचमी तप महीमा घणो रे, पसख्यो महियज मां
 हि ॥तण॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो तांहि।१।
 ॥तण॥ जूपे कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि जूप ॥तण॥
 ज्ञीम कांत गुणो करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥३॥ तण॥ रा
 ज रमा रमणी तणा रे, जोगवे जोग अखंड ॥तण॥ वरसे
 नजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥४॥तण॥ जुक्तजोगी थयो सं
 यमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥तण॥ गुणमंजरी जिनचंडने
 रे, परणावे निज ताय ॥५॥तण॥ सुख वीवसी थइ साधवी
 रे, वैजयंते दोय देव ॥तण॥ वरदत्त पिण तिहां नपनो रे, जिहां
 श्रीमंधर देव ॥तण॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवंत ना
 री पेट ॥तण॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुन्ये कीधो जेट ॥
 ॥७॥तण॥ सुरसेन राजा थयो रे, सो कन्या जरतार ॥तण॥
 सीमंधर स्वामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥८॥ तण॥
 तिहां पिण ते तप आदख्यो रे, लोक सहित जूपाल ॥ तण॥
 दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ ९॥तण॥ ज्या
 र महाव्रत चूपस्थुं रे; श्री जिनवरने पास ॥तण॥ केवलधर
 मुगति गयो रे; सादि अनंत निवास ॥१०॥ तण॥ रमणि वि
 जय गुनापुरी रे; जंबु वीदेह मजार ॥तण॥ अमरसिंह महि
 पालने रे; अमरावती घर नार ॥११॥ तण॥ वैजयंत थकी
 चवी रे; गुणमंजरीनो जीव ॥तण॥ मानस सर जिम हंस

लो रे; नाम धख्यो सुग्रीव ॥ १२ ॥ त० ॥ वीसे वरसे राजवी
रे, सहस चोरासी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे; के
वलज्ञान पवित्र ॥ १३ ॥ त० ॥ पंचमी तप महिमा विपे रे;
जांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जिणे जेदथी सीवपढ लहो रे,
तेहने तस उपकार ॥ १४ ॥ त० ॥

ढाल ६ छी.

(करकंडुने करुं वंदणा. ए देशी.)

चोवीस ढंडक वारवा ॥ हुं वारी ॥ चोवीसमो जिन चंद रे ॥
हुं वारी ढाल ॥ प्रगव्यो प्राणत स्वर्गथी ॥ हुं ॥ त्रिशला उर स
र हंस रे ॥ हुं ॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं ॥ पंचमी ग
तिने साधवा ॥ हुं ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं ॥ महानि
सिथ सिद्धांतमां ॥ हुं ॥ पंचमी तप प्रकास रे ॥ हुं ॥ २ ॥ अप
राधि पिण उख्यो ॥ हुं ॥ चडकोशिन साप रे ॥ हुं ॥ जज्ञ
करंता वांनणा ॥ हुं ॥ सरखा किधा आप रे ॥ हुं ॥ ३ ॥ देवा
नंदा ब्राह्मणी ॥ हुं ॥ रुपनदत्त वली विप्र रे ॥ हुं ॥ व्यासी
दिवस संबंधथी ॥ हुं ॥ कामित पूख्यो खिप्र रे ॥ हुं ॥ ४ ॥ कर्म
रोगने ढालवा ॥ हुं ॥ सवि उपधनो जाण रे ॥ हुं ॥ आदख्यो
मे आशा धरी ॥ हुं ॥ मुज उपर हित आण रे ॥ हुं ॥ ५ ॥
श्री विजयसिंह सुरीशनो ॥ हुं ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं ॥
शीश कपूरविजय कवि ॥ हुं ॥ चंद कीरण जस जास रे
॥ हुं ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निधे ॥ हुं ॥ कृमाविजय गुरु
नाम रे ॥ हुं ॥ जिनविजय कहे मुज होजो ॥ हुं ॥ पंचमी
तप परणाम रे ॥ हुं ॥ ७ ॥

॥ कलश. ॥

इय वीर लायक विश्व नायक, सिद्धिदायक संस्तव्यो॥
 पंचमी तप स्तवन टोडर, गुंथी जिन कंठे ठव्यो ॥ पुण्यपाट
 ण खेत्र मांहे, सत्तर त्राणुं संवत्सरे ॥ श्री पार्श्व जन्म क
 ढ्याण दिवसे, सकल नवि मंगल करे ॥१॥ इति. ॥

अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन.

ढाल १ ली.

हां रे मारे ठाम धरमना साढापचविस देश जो, दिपे
 रे तिहां देश भगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हां रे मारे नगरी ते
 हमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे तिहां श्रेणीक गाजे ग
 ज परे रे लो ॥१॥ हां रे मारे गाम नगर पूर पावन करता ना
 थ जो, विचरंता तिहां आवि वीर समोसख्या रे लो ॥ हां॥
 चउद सहस मुनीवरना साथें साथ जो, सुधा रे तप संजम
 शीयले अलंकख्या रे लो ॥२॥ हां॥ फुड्या रसनर जूड्या
 अंब कंदव जो, जाणुं रे गुणशिल वन हसि रोमंचीनुं रे लो
 ॥ हां॥ वाया वाय सुवाया तिहां अविलंब जो, वासे रे परि
 मल चिहुं पासें संचिनुं रे लो ॥३॥ हां॥ देव चतुरविध आ
 वे कोमा कोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो
 ॥ हां॥ चोसठ सुरपति सेवे होडा होड जो, आगे रे रस ला
 गे इंजाणि नचे रे लो ॥४॥ हां॥ मणिमय हेम सिंहासन बे
 ठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्नें जड्यां रे लो ॥ हां॥
 सुणतां डुंदनी नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सूर फुल स
 रस जानुं अड्यां रे लो ॥५॥ हां॥ ताजे तेजे गांजे घन जिम

धुंव जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥हांण॥ नि
रखी हरखी आवे जन मन लुंव जो, पोखे रे रस न पडे धो
खें जर्ममां रे लो ॥६॥हांण॥ आगम जाणि जिननो श्रेणिक
राय जो, आव्यो रे परिवरिनु हय गय रथ पायके रे लो ॥हांण॥
देइ प्रदक्षिणा वंदि वेगो ठाय जो, सुणवारे जिनवाणी मोटे
जायगे रे लो ॥७॥हांण॥ त्रिजुवन नायक लायक तव नगवं
त जो, आणि रे जिन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥
सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवा
णि मनमा गहगहे रे लो ॥८॥

॥ ढाल ९ जी. ॥

(वालम वहेलारे आवज्यो. ए देशी.)

वीर जिनवर इम उपदिसे, सांजलो चतुर सुजाण रे॥
मोहनि निंदमां का पडो, नुअखो धर्मनां ठाण रे ॥ वीरति
ए सुमति धरी आदरो ॥१॥ परिहरो विषय कषाय रे ॥ वा
पमा पंच परमादधी, का पमो कुगतिमा धाय रे ॥वी० ॥२॥
करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व
काले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥वी० ॥३॥
जूजूआ पर्व खटना कहां, फल घणा आगमे जोय रे ॥ वच
न अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धिफल होय रे ॥वी० ॥४॥
जीवने आयू परजव तणो, तिथि दिने बंध होय प्राय रे ॥ते
ह नणि एह आराधता, प्राणिनु सद्गति जाय रे ॥वी० ॥५॥
तेहवे अष्टमि फल तिदां, पुठे गौतमस्वाम रे ॥ जविक जी
व जाणवा कारणे, कहे वीरप्रभु ताम रे ॥वी० ॥६॥अष्ट म
हासिद्धि होय एदधी, संपदा आवनि वृद्धी रे ॥ बुद्धिना आव

गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धरे ॥वी०॥७॥ लाज होय
 आठ पमिहारनो, आठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ
 करमनो मुलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वी०॥८॥ आदि
 जिन जन्म दिक्का तणो, अजितनो जन्म कळयाण रे ॥
 चवन संजव तणो एह तिथें, अजिनंदन निरवाण रे ॥ वी०
 ॥९॥ सुमति सूत्रत नमि जनमिया, नेमनो मुगति दिन जा
 ण रे ॥ पास जिन एह तिथे सिद्धजा, सातमा जिन चवन
 माण रे ॥ वी० ॥१०॥ एह तिथि साधतो राजीनु, दंमविरज
 लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्यु
 क्ति रे ॥ वी० ॥११॥ अतित अनागत कालनां, जिनतणां के
 इ कळयाण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संयमी, पामस्ये पद
 निरवाण रे ॥ वी० ॥१२॥ धर्मवासित पशु पंखीया, एह तिथें
 करे उपवास रे, व्रतधारी जीव पोसो करे; जेहने धर्म अ
 न्यास रे ॥ वी० ॥१३॥ ज्ञांखिनु वीरे आठम तणो, जनि कहि
 त एह अधिकार रे ॥ जिन मुखे उच्चरी प्राणीया, पामशे न
 व तणो पार रे ॥ वी० ॥१४॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले क
 ष्ठनि कोडि रे ॥ सेवज्यो शिश बुध प्रेमनो, कहे कांति कर
 जोम रे ॥ वी० ॥१५॥

॥ कलश. ॥

इम त्रिजग ज्ञासण अचल सासन, वर्द्धमान जिनेस
 रु ॥ बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामि, संश्रुण्यो अलवेसरु ॥ जिन
 गुण प्रसंगे जण्यो रंगे, तवन ए आठम तणो ॥ जे जनि क
 ज्ञावे सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो ॥१॥ इति. ॥

अथ श्री एकादशीतुं स्तवन.

ढाल १ ली.

जगपति नायक नेमि जिणंद, घारीका नयरी समो
सख्या ॥ जगपति वंदवा कृश्र नरिद, यादव कोडस्युं परिव
ख्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमुल, जक्ति गुणो माला
रचि ॥ जगपति पुजी पुठे कृश्र, कायक समकित शिव रुची
॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥
जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कुण कहे
॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणानिलो ॥
जगपति कोय उपाय वताव, जिम थनं शीववधु कंतलो
॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मृगशिर मास, आराधो एकादशी ॥
नरपति एकसोने पंचास, कळ्याणक तिथि उद्धसी ॥ ५ ॥
नरपति दश खेत्रे त्रिणकाल, चोवीसि त्रिसें मली ॥ नरपति
नेठ जिनना कळ्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरप
ति अर दिक्षा नमि नाण; मद्धि जन्म व्रत केवली ॥ नरपति
वर्त्तमान चोवीस, माहे कळ्याणक आवलि ॥ ७ ॥ नरपति
मौनपणे उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन
वचन काय पवित्र; चरीत्र सूलो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति
दाहिण धातकीखंरु, पश्चिम दिश इहुकारथी ॥ नरपति
विजय पाटण अजीधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥
नरपति नारी चंदावति तास, चंङ्मुखी गजगामिनी ॥ नर
पति श्रेष्ठ सूर विख्यात, शीयल सलिला कामिनी ॥ १० ॥ न
रपति पुत्रादिक परिवार, सार नूपण चीवर धरी ॥ नरपति
जाए नित जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरप

ति पोखे पात्र सूपात्र, सामायक पोपध वरे ॥ नरपति देव
वंदन आवश्यक, काल बेजाए अनुसरे ॥१९॥

॥ ढाल २ जी. ॥

एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणारी ॥ विनये
विनवे शेर, मुनिवर करी करुणारी ॥१॥ दाखो मुऊ दिन
एक, थोमो पून्य कियोरी ॥ वाधे जिम वम बीज, सुभ
अनुबंध अयोरी ॥२॥ मुनी ज्ञांखे महान्नाग, पावन पर्व
घणारी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमनारी ॥३॥
सित एकादशी सेव, मास इग्यार लेगेरी ॥ अथवा वरस
इग्यार, उजवी तप सुवगेरी ॥४॥ सांजली सदगुरु वेंण,
आणंद अति उलस्योरी ॥ तप सेवी उजविअ, आरण स्वर्ग
वशोरी ॥५॥ एकवीस सागर आय, पाली पुन्य वसेरी ॥
सांजल केशव राय, आगल जेह थशोरी ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां
शेर, समृद्धत वमोरी ॥ प्रीतिमति प्रीया तास, पुन्ये जोंग
जळ्योरी ॥७॥ तस कूखे अवतार, सुचित्त सुन्न सुपनेरी ॥
जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी ॥८॥ नाल निक्षेप
निधान, जुमीथी प्रगट हवोरी ॥ गर्ज दोहदनुजाव, सुव्रत
नाम ठळ्योरी ॥९॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक ज्ञ
एयोरी ॥ योवन वय इग्यार, रूपवती परएयोरी ॥१०॥ जिन
पुजन मुनि दान, सुव्रत पचखाण धरेरी ॥ इग्यार कंचन
कोम, नायक पून्य जेरेरी ॥११॥ धर्मघोष अणगार, तिथी
अधिकार कहेरी ॥ सांजलि सुव्रत सेव, जातिस्मरण लहेरी
॥१२॥ जिन प्रत्यय मुनी साख, ज्ञे तप उचरेरी ॥ एका
दशी दिन आव, पोहरो पोसो धरेरी ॥१३॥

हाल ३ जी.

पत्नि संयुक्तें पोसह लीधो, सुव्रत शैवें अन्यदा जी ॥
 अवसर जाणि तस्कर धाव्या, घरमां धन लुंटे तदा जी ॥१॥
 सासन जक्तें देवी सक्ते, थंजाणा ते वापमा जी ॥ कोलाहल
 सूणी कोटवाल आव्यो, झूप आगल घस्वा रांकमा जी ॥२॥
 पोसह पारी देव जूहारी, दयावंत लेई जेटां जी ॥ रायनें
 प्रणमी चोर मूकावी, शैवें किधुं पारणुं जी ॥३॥ अन्य दी
 वस विश्वानल लाग्यो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ सेवजी पो
 सह समरस वेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥४॥ पुन्ये हा
 ट वखारो सेवनी, जगरी सडु प्रसंसा कर जी ॥ हरखे सेव
 जी तप व्रजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घर
 नो झार जलावी, संवेगी सीर सेहरो जी ॥ चउनाणी विज
 यशेखर सूरी, पासे तप व्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खट मा
 सी च्यार चोमासी, दो सय ठठ सो अठम करे जी ॥ विजा
 तप पिण बहुश्रुत सुव्रत, मनैएकादशी व्रत धरे जी ॥७॥
 एक अधम सूर मिश्याहट्टि, वेदना सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वो
 पार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिने जी ॥८॥ कर्म नडी
 न पापे जमीन, सूर कहे जावो नपथ जणि जी ॥ साधु न
 जाए रोश जराये, पाटु प्रहारे हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि
 मन वचन काय त्रिजोगे, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केव
 ल पामि जीत पदरामी, सुव्रत नेम कहे स्यामने जी ॥१०॥

हाल ४ थी.

कान पयंपे नेमने ए, धन धन जादव वंश ॥ जिहां प्र
 जु अवतल्या ए॥ मुज मन मानस हंस, जयो जीन नेमने ए

॥१॥ धन शिवादेवी मायमी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥
 सुजात जगत गुरु ए, रत्नत्रई अवदात ॥जण॥१॥ चरण वि
 राधी उपनो ए, हुंनवमो वासुदेव ॥जण॥ तिणे मने नवि उ
 द्दसे ए, चरण धरमनी सेव ॥जण॥ ३ ॥ हाथी जिम कादव
 गढ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥जण॥ तो पिण हुं न करी सकुं
 ए, डष्ट करमना जेय ॥जण॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो
 ए, किजे सीजे काज ॥जण॥ एहवां वचनने सांजलि ए, वां
 हे ग्रह्यानी लाज ॥जण॥५॥ नेम कोहे एकादशी ए, समकित
 जूत आराध ॥जण॥ थाइस जिनवर वारमो ए, ज्ञावि चोवि
 सीए लह ॥जण॥६॥

कलस.

इय नमि जिनवर नत पुरंदर, रैवताचल मंमणो ॥५॥
 बाण नंदए उमुनि चंद १ वरषे, राजनगरे संधुण्यो ॥ संवेग
 रंग तरंग जलनिधि, सत्यविजय गुरु अनुसरी ॥ कपूरविज
 य कवि कृमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥१॥

अथ श्री आंबील तप श्री सिद्धचक्रजीनुं
 स्तवन लिख्यते.

ढाल १ ली.

(जीहो कुमर बेगो गोखमे ॥ ए देशी.)

जी हो प्रणमं दिनप्रति जिनपति ॥ लाला ॥ शिवसुख
 कारी अशेष ॥ जी हो आशोई चैत्री जणी ॥ लाणा ॥ अढाइ वि
 शेष ॥१॥ जविक जन जिनवर जग जयकार ॥ जी हो जिहां

नवपद आधार ॥ जण॥ ए आंकणी ॥ जी हो तेह दिवस आ
राधवा ॥ लाण॥ नंदिसर सूर जाय ॥ जी हो जीवाजीगम मां
हि कहूं ॥ लाण॥ करे अड दिन महिमाय ॥ १॥ जण॥ जी हो न
वपद केरा यंत्रनी ॥ लाण॥ पुजा किजे रे जाप ॥ जी हो रोग
सोग सवि आपदा ॥ लाण॥ नासे पापनो व्याप ॥ ३॥ जण॥
जी हो अरिहंत सिद्ध आचारया ॥ लाण॥ उवप्राय साधु ए पं
च ॥ जी हो दंसण नाण चारित्र तवो ॥ लाण॥ ए चउ गुणनो
प्रपंच ॥ ४॥ जण॥ जी हो ए नवपद आराधतां ॥ लाण॥ चंपा
पति विख्यात ॥ जी हो नृप श्रीपाल सूखीयो थयो ॥ लाणाते
सुणज्यो अवदात ॥ ५॥ जण॥

॥ ढाल २ जी. ॥

कोइलो पर्वत धूँधलो रे लो ॥ एदेशी ॥

मालव धुर उजेणीये रे लो, राज्य करें प्रजापाल रे ॥
सुगुण नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो, बे पुत्री तस
वाल रे ॥ सुण॥ १॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे लो, जिम होय
सुखनी माल रे ॥ सुण॥ श्रीण॥ ए आंकणी ॥ पहिली मिथ्या
श्रुत जणी रे लो, विजी जिन सिद्धांत रे ॥ सुण॥ बुद्धि परिक्षा
अवसरे रे लो, पुढी समस्या तुरत रे ॥ सुण॥ २॥ श्रीण॥ तुमो
नृप वर आपवा रे लो, पहेलि करे ते प्रमाण रे ॥ सुण॥ बीजी
कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृप जाण रे ॥ सुण॥ ३॥
॥ श्रीण॥ कुष्टी वर परणावियो रे लो, मयणां वरे घरी नेह रे
॥ सुण॥ रामा हत्तीय विचारि ए रे लो, सुंदरी विणसे तुज
देह रे ॥ सुण॥ ४॥ श्रीण॥ सिद्धचक्र प्रनावधी रे लो, नीरोगी
थयो जेह रे ॥ सुण॥ पुण्य पसाए कमला लही रे लो, वाघ्यो

घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीण॥ मान लेवा ते जस लही
 रे लो, वंदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ नीज घर तेमी
 आवियो रे लो, आपे नीज आवास रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्रीण॥ श्री
 पाल कहे कामिनी सुणो रे लो, में जावुं परदेश रे ॥ सु० ॥
 माल मता बहु लावस्युं रे लो, पुरशुं तुम तणी खांत रे ॥ सु०
 ॥ ७ ॥ श्रीण॥ अवधि करी एक वरसनी रे लो, चढ्यो नृप
 परदेश रे ॥ सु० ॥ शेर धवल साथें चढ्यो रे लो, जल पंथें
 सुविशेष रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ श्रीण ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

॥ इमर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी. ॥

परणी बब्बरपति सुतारे, धवल मुकाव्यो ज्यांह ॥ जि
 नहर बार उधामते रे, कनककेतू बीजी त्यांह ॥ चतुर नर,
 श्री श्रीपाल चरीत्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे,
 समुद्र तटें आवंत ॥ मकरकेतू नृप सूतारे, वीणा वादें री
 जंत ॥ च० ॥ १ ॥ पांचमी त्रैलोक्यसुंदरी रे, परणि खुजा रूप
 ॥ ठढी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनूप ॥ च० ॥ ३ ॥
 राधावेधे सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो नीज
 घरे रे, साथें बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापालें सांनली रे, परद
 ल केरी वात ॥ खंधे कुहामो लेई करी रे, मयणां हुई विख्यात
 ॥ च० ॥ ५ ॥ चंपा राज्ये जई करी रे, नोगवी कामित नोग ॥
 धर्म आराधी अवतखो रे, पहोत्यो नवमें सूरलोग ॥ च० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

(कंत तमाकु परीहरो ॥ ए देशी.)

इम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधो सुविवेक ॥

मोरा लाल॥१॥ श्री सिद्धचक्र आराधिए ॥ ए आंकणी ॥ अरु
दल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं
दिशि सिद्धादिक चक्र, वक्रदिसि तुं गुणधार ॥ मो० ॥ १॥ वे प
म्निकमणां जंत्रनी, पुजा देववंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे
दिन सुविशेषथी, पंचामृत किजे पखाल ॥ मो० ॥ ३॥ श्री० ॥
जुमि सयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥
गुरु वैयावच किजीए, धरो सद्बहणा जोग ॥ मो० ॥ ४॥ श्री० ॥
गुरु पडिलान्नी पारीए, साहमीवञ्जल पण होय ॥ मो० ॥ उ
जमणां पिण नव नवां, फल धान्य रयणादिक होय ॥ मो० ॥
॥ ५ ॥ श्री० ॥ इह जव सवि सुख संपदा, परजवे सवि सुख
थाय ॥ मो० ॥ पंक्ति शांतिविजय तणो; कहे मानविजय
जवप्राय ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ इति ॥

अथ श्री रोहिणीतपनुं स्तवन.

॥ ढाल १ ली. ॥

हां रे मारे वासुपुज्यनो नंदन मघवा नाम जो, राणि
तेहनी कमला पंकज लोयणि रे लो ॥ हां रे मारे आठ पुत्रने
उपर पुत्री एक जो, मात पीताने बाहाली नामे रोहिणी रे
लो ॥ १ ॥ हां रे मारे देखी योवन वय निज पुत्री जूप जो,
स्वयंवaramंडप मांडि नृप तेढाविया रे लो ॥ हां रे मारे अंग
वंगने मरूधर केरा राय जो, चतुरंगी फोलाथी चंपाए आवि
या रे लो ॥ ३ ॥ हां रे मारे पूरव जवना रागे रोहिणी ताम जो,
जूप अशोकने कंठे वरमाला धरे रे लो ॥ हां रे मारे गज रथ
घोमा दान अने बहुमान जो, देई बोलावी घेटी बहु आडवरे

रे लो ॥ ३ ॥ हां रे मारे रोहिणी राणि जोगवतां सुख जोग
जो, आठ पुत्रने पुत्रि ज्यार सोहामणि रे लो ॥ हां रे मारे
आठमा पुत्रनुं लोकपालवे नाम जो, ते खोले लइ वेठी गो
खे ज्ञामनी रे लो ॥ ४ ॥ हां रे मारे एहेव कोइक नगर
वणिकनो पुत्र जो, आयु क्यथी वालक मरण दशा लेहे
रे लो ॥ हां रे मारे मात पितादिक सहु तेहनो परिवार
जो, रडतो पडतो गोख तले थडने वहे रे लो ॥ ५ ॥ हां
रे मारे ते देखी अति हरखी रोहिणी ताम जो; पिउने नां
खे एनाटिक कुण जातनुं रे लो ॥ हां रे मारे दिप कहेए पूर
व पुन्य संकेत जो; जन्म थकी नवि दिवुं डख कोई जातनुं
रे लो ॥ ६ ॥

॥ ढाल ९ जी. ॥

पिऊ कहे जोवन मदमाति; सहुने सरखी आस्या ॥
ए वालकना डखथी रोवे; तूऊने होवे तमासा ॥ १ ॥ बोलो वो
ल विचारी राज, इम किम कीजे हांसी ॥ तव राणिने रीस क
री खोलेथी, पूत्रने खूंची लीधो ॥ रोहिणी राणि नजरे जो
तां; गोखथी नांखि दीधो ॥ बोण ॥ २ ॥ ते देखी सहु अंतेउर
मां, सजने पोकार ते कीधो ॥ रोहिणी इम जाणे जे वाल
क, कोइके रमवा लीधो ॥ बोण ॥ ३ ॥ नगर तणे रखवाले देवे,
अधर ग्रह्यो तिहां आवी ॥ सोनाने सींहासण थाप्यो, आनू
षण पेहेरावि ॥ बोण ॥ ४ ॥ नगर लोक सहु जाग्य वखाणे, रा
जा विस्मय आवे ॥ दिप कहे जस पुन्य सखाइ, तिहां स
हु नवनीहि आवे ॥ बोण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(रूमो मास वसंत ॥ एदेशी.)

एक दिन वासुपुज्य जिनवरना, अंतेवासी मुनिराय
वाला ॥ रुपकुंजने सूवर्णकुंजजी, चञ्जलानि जव जाऊ
वाला ॥ १ ॥ रोहिणी तप फल जग जयवंतो ॥ ए आंकणी ॥
पञ्चास्या प्रभु नयर समिपे, हरख्यो रोहिणी कंत वाला ॥
सहु परिवारस्युं पद जुग वंदे, निसूण्यो धर्म एकांत वाला ॥
रोण ॥ २ ॥ करजोनि नृप पूढे गुरुने, रोहिणी पुन्य प्रबंध वा
ला ॥ स्युं किधुं प्रभु सुकृत एणे, जांखों ते सयल संबंध वा
ला ॥ रोण ॥ ३ ॥ गुरु कहे पुरव जवमा किधो, रोहिणी तप गु
ण खाण वाला ॥ तेथी जन्म थकी नविदीवुं, सुख छव जा
ण अजाण वाला ॥ रोण ॥ ४ ॥ जांखशे गुरु हवे पूरव जवनो,
रोहिणीनो अधिकार वाला ॥ ठिप कहे सुणज्यो एक चित्ते,
कर्म प्रपंच विचार वाला ॥ रोण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

गुरु कहे जंवू खेत्र नरतमां, सीरूपुर नयर मजार रे ॥
प्रथवीपाल नरेसर राजा, सिद्धमति तस नार ॥ १ ॥ राज
न सुणज्यो रे; कांइ पूरव जव अधिकार ॥ दिलमां धरज्यो रे
॥ ए आंकणी ॥ एक दिन आव्या चंडन्याने, राणीने बलि
रायरे ॥ खेले क्रिडा नवश ज्ञाते, जोज्यो करम निदान ॥ राण
॥ २ ॥ एहवे कोइक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम
रे ॥ राजा ते मुनिवरने देखी, राणिने कहे ताम ॥ राण ॥ ३ ॥
जवो ए मुनिने वोहरावो, जेहोय सुजतो आहार रे ॥ निसु

णी राणि मुनिनें उपर, उपनो क्रोध अपार ॥ राण ॥ ४ ॥ विष
य थकी अंतराय अयो ते, मनमां बहु डख लावे ॥ रीसे बल
ती कमवुं तूंबडुं, ते मुनिने वोहरावे ॥ राण ॥ ५ ॥ मुनिने आ
हार थकि विष व्याप्यो, कालधर्म तिहां किधो ॥ राजाए रा
णीने ततक्षण, देशनिकालो दिधो ॥ राण ॥ ६ ॥ सातमे दिन
मुनि हत्या पापे, गलत कोढ थयो अंगे रे ॥ काल करीने ठ
ठी नरके, उपनी पाप प्रसंगे ॥ राण ॥ ७ ॥ नारकिने तिर्यंच त
णा नव, जटकी काल अनंत रे ॥ दिष कहे हवे धर्मजोगनो,
कहीशुं सरस वृतांत ॥ राण ॥ ८ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

ते राणि मुनि पापथी ॥ केशरीयालाल ॥ फरती नवचक्र
फेर रे ॥ केशरीया लाल ॥ ताहरा नयरमां उपनी ॥ केण ॥ ध
नमित्र शेठने घेर रे ॥ केण ॥ जून् जून् कर्म विटंवना ॥ केण ॥
॥ १ ॥ धनवती कुखे उपनी ॥ केण ॥ डुरगंधी तस नाम रे ॥ केण
नगर वणिकना पुत्रने ॥ केण ॥ परणावि बहु माम रे ॥ केण ॥
जूण ॥ २ ॥ सूखसज्याने उपरे ॥ केण ॥ आवि कंतने पास रे ॥ केण ॥
बहु डुरगंधता नठली ॥ केण ॥ स्वामी पाम्यो त्रास रे ॥ केण
॥ ३ ॥ जूण ॥ मुकि परदेशे गयो ॥ केण ॥ जून् जून् कर्म स्वजाव
रे ॥ केण ॥ एक दिन कन्यानो पिता ॥ केण ॥ ज्ञानिने पूढे जाव
रे ॥ केण ॥ ४ ॥ जूण ॥ ज्ञानीए पूरव नव कह्यो ॥ केण ॥ जांख्यो
सहु अवदात रे ॥ केण ॥ फरी पूढे गुरुरायने ॥ केण ॥ किम हो
वे सूखशात रे ॥ केण ॥ ५ ॥ जूण ॥ गुरु कहे रोहिणी तप करो
॥ केण ॥ सात वरस सात मास रे ॥ केण ॥ रोहिणी नक्षत्रने
दिने ॥ केण ॥ चोविहारे उपवास रे ॥ केण ॥ ६ ॥ जूण ॥ वासुपु

ज्य जगवंतनि ॥केण॥ पुजा करो शुद्ध जाव रे ॥के०॥ एम ए
तप आराधता ॥केण॥ प्रगटे शुद्ध स्वजाव रे ॥केण॥ ७॥जूण॥क
रज्यो तप घूरण थए ॥केण॥ उजमणुं जलि जात रे ॥केण॥
तेहथी एक जव आंतरे ॥के०॥ लहेस्यो ज्योति महंत रे ॥
केण॥ ७॥जूण॥ एम मुनी मुखथी सांजली ॥के०॥ आराधि
ते सार रे ॥के०॥ ए ताहरी राणी थइ ॥के०॥ रोहिणी नामे
नार रे ॥के०॥ ७॥जूण॥ इम निसुणि हरख्या सह ॥केण॥ रो
हिणीने बलि राय रे ॥केण॥ दिप कहे मुनि कुंजने ॥के०॥
प्रणमी थानक जाय रे ॥के०॥ १०॥जू०॥

॥ ढाल दूठी. ॥

एक दिन वासुपुज्यजि ए, समोसखा जिनराज ॥
नमो जिनराजने रे ॥ रायने रोहिणी हरख्यां ए, सिधां
सयलां काज ॥ न० ॥ १ ॥ बहु परिवारस्युं आविया ए,
वंदे प्रभुना पाय ॥ न० ॥ प्रभु मुखथी वाणी सुणि ए,
आणंद अंग न माय ॥ न० ॥ २ ॥ रायने रोहिणी वेहु
जणां ए, लिधो संयम खास ॥ न० ॥ धन २ संजमघर मु
नि ए, सूर नर जेहना दास ॥ न० ॥ ३ ॥ तप तपि केवल लहि ए,
तास्या बहु नर नार ॥ न० ॥ शिवपद अविचल पद लहेणुं ए,
पाम्या जवनो पार ॥ न० ॥ ४ ॥ इम जे रोहिणी तप करे ए, रो
हिणीनि परे तेह ॥ न० ॥ मंगलमाला ते लहे ए, बली अज
रामर गेह ॥ न० ॥ ५ ॥ धन्य वासुपूज्यना तिर्थने ए, धन धन रो
हिणी नार ॥ न० ॥ एतप जे जावे करे ए, पामे ते जय २ का
र ॥ न० ॥ ६ ॥ संवत अठार उगणसावनो ए, उज्वल जाइव
मास ॥ न० ॥ दिपविजय तस गाइयो ए, करी खंजात चो

मास ॥ न० ॥ ७ ॥

॥ कलश. ॥

वासुपुज्य जगनाथ साहेब, तास तीरथे ए थयां ॥
 च्यार पुत्रने आठ पूत्रीथी, दंपती मुगतें गयां ॥ तपगच्छ वि
 जयाणंद पटधर, विजय देवेंडसूरिसरु ॥ तास राज्ये तवन
 किधुं, सकल संघ सोहंकरु ॥ सकल पंमीत प्रवर न्रूषण,
 प्रेमरत्न गुरु ध्याश्या ॥ कवि दिपविजये पुन्य हेते, रोहिणी
 गुण गाश्या ॥१॥ इति. ॥

अथ श्री हुंडितुं स्तवन लिख्यते.

ढाल १ ली.

(ए विंमी किहां राखी. ए देशी)

प्रणमी श्री गुरुना पयपंकज, शुणस्युं वीर जिणंद ॥
 ठवण नीखेप प्रमाण पंचांगी, परखी लहुं आणंद रे ॥१॥
 जिनजी ॥ तुज आणा शिर वहीए ॥ तुज शासन नय शुद्ध
 प्ररूपण, गुणथी शिवसुख लहीए रे ॥ जिनजी ॥ तु ॥
 ए आंकणी ॥ श्री अनुयोगड्वारे ज्ञांख्या, च्यार निखेपा
 सार ॥ च्यार सत्य दश सत्या ज्ञांख्या, ठाणांगें निरधार रे
 ॥ २ ॥ जि ॥ जास ध्यान कीरिया मांहि आवे, तेह सत्य
 करी जाणुं ॥ श्री आवश्यक सूत्र प्रमाणें, विगते तेह व
 खाणुं रे ॥ ३ ॥ जि ॥ चनविसव्वय मांहि निखेपा, नाम
 छय दोय जावुं ॥ कानसग आलावें ठवणा, जाव ते सघलें
 जावुं रे ॥ ४ ॥ जि ॥ पुस्तक लिखित सकल जिम आ
 गम, तिम आवश्यक एह ॥ जगववई नंदी साखे सम्मत,

तेहमां नहिं सदेह रे ॥ ५ ॥ जि० ॥ सूत्र आवश्यक जे घर
 घरनुं, कदेशे ते अज्ञानी ॥ पुस्तक अरथ परंपर आव्युं,
 माने तेहज ज्ञानी रे ॥ ६ ॥ जि० ॥ वंजी लिपी श्री गणधर
 देवें, प्रणमी जगवई आदें ॥ ज्ञान तणी ते ठवणा अथवा,
 ड्यथ्रुत अविवादे रे ॥ ७ ॥ जि० ॥ जेद अठार जे वंजी लि
 पिना, समवायांगें दीठा ॥ शुद्ध अरथ मरमी जव बहुला,
 जमशे कुमती धीठा रे ॥ ८ ॥ जि० ॥ वंजी लिपी जो तेह
 नो करता, तो लेखक पण आवें ॥ गुरु आणा विण अरथ
 करे जे, तेहनो बोल न फावे रे ॥ ९ ॥ जि० ॥ जिनवाणी
 पण ड्यथ्रुत ठे, नंदीसूत्रने लेखें ॥ जिम ते तिम वंजी
 लिपी नमीए, जाव ते ड्यथ्रुत विशेषे रे ॥ १० ॥ जि० ॥ जि
 म अजीव संयमनुं साधन, ज्ञानादिकनुं तेम ॥ शुद्ध जाव
 आरोपें विधिस्थुं, तेहनें सघलें खेम रे ॥ ११ ॥ जि० ॥ शु
 द्ध जाव जेहनो ठे तेहना, ज्यार निखेपा साचा ॥ जेहमां
 जाव अशुद्ध ठे तेहना, इक काचे सवि काचारे ॥ १२ ॥ जि० ॥
 दशवैकालिके दृपण दाख्युं, नारी चित्रने ठामे ॥ तो कि
 म जिनप्रतिमा देखीने, गुण नवि होय परिणामें रे ॥ १३ ॥
 जि० ॥ रुचकधीपें इक मगलें जाता, पद्मिमा नमीय आ
 णंदे ॥ आवतां इक मगलें नदीसर, बीजे इहां जिन वंदे रे
 ॥ १४ ॥ जि० ॥ त्रीवीगति ए जगवई जाखी, जंघाचारण
 केरी ॥ पंरुग वन नंदन इहां पडिमा, ऊरध नमें घणोरी रे
 ॥ १५ ॥ जि० ॥ विज्ञाचारण ते इक डगलें, मानुषोत्तरे जाये ॥
 बीजें नंदीश्वर जिनप्रतिमा, प्रणमी प्रमुदित थाये रे ॥ १६ ॥
 जि० ॥ तिहाथि पडिमा वंदण कारण, इक डगलें इहां आ

वे ॥ ऊरधपणें जातां बिहुं डगलां, आवतां एक स्वजावें रे
 ॥ १७ ॥ जिण ॥ शतक वीसमें नवमें उद्देशे, प्रतिमा मुनि
 वर वंदी ॥ इम देखी जे अवला नांजे, तस मति कुमति
 फंदी रे ॥ १८ ॥ जिण ॥ आलोअणनुं ठाण कह्युं जे, ते प्र
 माद गति केरो ॥ तीर गति जे यात्र विचालें, रहेतो खेद
 घणोरो रे ॥ १९ ॥ जिण ॥ करी गोचरी जिम आलोवे, दश
 वैकालिक साखे ॥ तिम ए ठाम प्रमाद आलोयें, नहीं दो
 ष ते पाखें रे ॥ २० ॥ जिण ॥ कहें कोइक कहेंवा मात्रज,
 कोइ न गयो नवि जास्ये ॥ नही तो लवणशिखा मांहीं
 जातां, किम आराधक थास्ये रे ॥ २१ ॥ जिण ॥ सत्तर सहस
 जोयण जइ उंचा, चारण त्रीठा चाले ॥ समवायांगें प्रगट
 पाठ ए, स्युं कुमती भ्रम घालें रे ॥ २२ ॥ जिण ॥ चैत्य श
 वदनो ज्ञान अर्थ ते, कहो करवो कुण हेते ॥ ज्ञान एकने चै
 त्य घणां ठे, जूळें जड संकेते रे ॥ २३ ॥ जिण ॥ रुचकादिक
 नां चैत्य नम्या ते, सासय पडिमा कहीए ॥ जेह इहांनां
 तेह अशाश्वत, बिहुंमां जेद न लहीए रे ॥ २४ ॥ जिण ॥
 जेह ऊपर साहिव तुज करुणा, शुद्ध अरथ ते नांखे ॥ तुज
 आगमनो शुद्ध प्ररूपक, सूजश अमीयरस चाखे रे ॥ २५ ॥ जिण ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

(महाविदेह क्षेत्र सुहामणुं ॥ ए देशी.)

तुज आणा मुऊ मन वशी, जिहां जिनप्रतिमां सु
 विचार लाल रे ॥ रायपतेणी सूत्रमां, सुरिआन तणो अ
 धिकार ॥ लाण ॥ १ ॥ तुण ॥ ते सुर अग्निनव ऊपनो; पुढे सा
 मानिक देव ॥ लाण ॥ स्युं मुऊ पूरवने पढे; हितकारी कहो

ततखेव ॥ला० ॥१॥ तुण॥ ते कहे एह विमानमां; जिणपनि
 मा डाढा जेह ॥ला० ॥ तेहनी तुम्हे पूजा करो, पूरव पञ्चा
 हित एह ॥ला० ॥३॥तुण॥ पूरव पञ्चा शब्दथी; नित करणी
 जाणिए सोइ ॥ ला० ॥ समकितदृष्टि सदहे, ते इव्य थकी
 किम होय ॥ ला०॥४॥ तुण॥ इव्य थकी जे पूजीया, प्रहरण
 कोशादि अनेक ॥ला०॥ तेहथी विहुं जूदा कह्या, ए तो सा
 चो ज्ञाव विवेक ॥ला० ॥५॥तुण॥ चक्ररयण जिण नाशनी,
 पूजा जे नरतेकीध॥ला०॥जिम तिहा तिम अंतर इहां,समकित
 दृष्टि सुप्रसीद ॥ला० ॥६॥तुण॥ पदेखो जब पूरव कहे, झा
 ता बडुर संबंध ॥ला० ॥ पञ्चाकरुअ विषय कह्या, वली मृ
 गापुत्र प्रबंध ॥ला०॥७॥तुण॥ आगमे सिद्धा कह्या, गइ णि
 इ कल्याणी देव ॥ला०॥ तस पूरव पञ्चा कहे, त्रिहुं काले हि
 त जिन सेव ॥ला०॥८॥तुण॥ जस पूरव पञ्चा नहि, मध्ये पण
 तस संदेह ॥जा०॥ इम पहेले अंगे कह्युं, ठे सूर्यो अरथ ते ए
 ह ॥ला०॥९॥तु०॥ पञ्चा पेञ्चा शब्दनो, जे फेर कहे ते डुव॥
 ला०॥ शब्द तणी रचना घणी, पण अरथ एकठे पुढ ॥ला०
 ॥१०॥तुण॥ वांची पुस्तक रत्नना, हवे लेइ घरम व्यवसाय
 ॥जा०॥ सिद्धायतने ते गयो, जिहा देवद्वदानो ठाय ॥ला०
 ॥११॥ तुण॥ जिनप्रतिमा देखी करी, करे शिर प्रणाम शुभ
 वीज ॥ला०॥ पुष्प माल्य चूर्णे करी, वस्त्राचरणो वली पू
 ज ॥जा० ॥१२॥तुण॥ फूल पगर आगें करी, आलेखे मंगल
 आठ ॥ला०॥ धूप देइ काव्य स्तवी, करे शक्रस्तवनो पाठ
 ॥जा०॥१३॥तुण॥ जेहना स्वमुखे जिन कहे, जब सिद्धि प्रमु
 ख ठ वोल ॥ला०॥ तास जगति जिनपूजना, नवि माने तेह

निटोल ॥ला० ॥१४॥ तु०॥ प्रभु आगल नाटक कस्यो; जग
 ते सूर्याजे सार ॥ला० ॥ जगति तणां फल शुन कहां, श्री
 उत्तराध्ययन मऊार ॥ला०॥१५॥ तु०॥ अंग उपांग घणें क
 ही, इम देव देवीनी नक्ति ॥ला० ॥ आराधकता तिणे थइ,
 इहां तामझी इंदनी युक्ती ॥ला०॥१६॥तु०॥ नक्ति जीतधर्मे
 करी, लीए दाढा अवर जिन अंग ॥ला०॥ धूजरचे सूर त्रि
 ए ते, कहे जंवूपन्नत्ती चंग ॥ला० ॥१७॥ तु०॥ शतक दशमे
 अंग पंचमे, उद्देशे ठेवें इंद ॥जा०॥ दाढ तणी आशातना, टा
 ले ते विनय अमंद ॥जा० ॥१८॥तु०॥ समकितदृष्टी सुर त
 णी, आशातना करस्ये जेह ॥ला० ॥ दुर्जनबोधि ते हुस्ये,
 गाणांगें जांखुं एह ॥ला० ॥१९॥ तु०॥ तेहने यश बोले क
 हुं, वली सुल्लजबोधिता थाय ॥ला० ॥ तिणे पूजादिक तेह
 नां, करणी शिवहेतु कहाय ॥ला० ॥२०॥तु०॥ तप संयम
 सुरतरु सम कहां, फल सम ते सुर शिवशर्म ॥जा०॥ सूर
 करणी माने नही, तेणे नवि जाण्यो मर्म ॥ला० ॥ २१ ॥
 ॥ तु० ॥ दशवैकालिके नर अकी, सुर अधिक विवेक जणा
 य ॥ला० ॥ इव्यस्तव तेणे कखां, माने तस सुजस ग
 वाय ॥ला०॥२२॥तु०॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(रुषजनो वंश रयणायरू ॥ एदेशी.)

शासन ताहरुं अति नलुं, जग नहि कोय तस सरिखुं
 रे ॥ तिमश राग वधे घणो, जिमश जुगति सु परखुं रे ॥ १ ॥
 शा०॥ अरिहंतने वली तेहनां, चैत्य नमुं अनेरां रे ॥ अंबड
 ने तस शिष्यनां, वचन उवाई घणोरां रे ॥शा०॥२॥ चैत्य श

वद तणो अरथ ते, प्रतिमा नहि कोइ बीजो रे ॥ जेह देखी
 गुण चिंतीए, तेहज चैत्य पतीजो रे ॥शा०॥३॥ इमज आला
 वे आणंदने, जिनपद्मिमा नति दीसे रे ॥ सप्तम अंगना अ
 र्थयी, ते नमता मन हीसे रे ॥शा०॥४॥ परतीरथी सुर तेह
 नी, प्रतिमानी नति वारी रे ॥ तिणे मुनी जिनप्रतिमा तणी,
 वंदन नति निरधारी रे ॥शा०॥५॥ परतीथीए जे परिग्रहां,
 मुनी तेपण परतीठी रे ॥ त्रिण शरण मांदि चैत्य ते, जही
 प्रतिमा शिव अढी रे ॥शा०॥६॥ दान किस्सुं प्रतिमा प्रते,
 इम कहे जे ठल हेरी रे ॥ उत्तर तास संजव तणी, शैली ठे
 सूत्र केरी रे ॥शा०॥७॥ दश विध बहुविध जिम कहा, वैयावच
 जहा जोगे रे ॥दशमे ते अंगे तथा इहां, जोमे नय उपयोगे रे
 ॥शा०॥८॥ साधुने जिनपद्मिमा तणुं, वैयावच तिहां बोळ्युं
 रे ॥ तेह अरथ थकी कुमतिनुं, हैडुं कांइ न खोळ्युं रे ॥ शा०
 ॥९॥ संघ तणी जिम धापना, वैयावच जस वादो रे ॥ जा
 णिए जिनपद्मिमा तणुं, तिम इहां कवण त्रिवादो रे ॥शा०॥१०॥
 इम सवि श्रावक साधुने, वंदननो अधिकारो रे ॥ सूत्रे कह्यो
 पद्मिमा तणो, हवे कहुं पूजा विचारो रे ॥शा०॥११॥ याग
 अनेक करिया कहा, श्री सिंघारथ राजे रे ॥ ते जिनपूजन
 कल्पमां, पशुना याग न ठाजे रे ॥शा०॥१२॥ श्री जिन पा
 सने तीरथे, श्रमणोपासक तेहो रे ॥ प्रथम अंगे कह्युं तेह
 ने, श्री जिनपूजानो नेहो रे ॥शा०॥१३॥ श्रेणिक महाव
 ल प्रमुखना, इम अधिकार अनेको रे ॥ ठळे अंगे वली झोप
 दी, पूजा प्रगट विवेको रे ॥शा०॥१४॥ नारद देखीने नवि
 थई, ऊनी तेह सुजाण रे ॥ जाणिए तेणे ते श्राविका, अक

र एह प्रमाण रे ॥ शाण ॥ १५ ॥ आंवित्र अंतर ठठनो, उप
 सर्गे तप कीधो रे ॥ किम नवि कहिए ते आविका, धरमे
 कारज सीधो रें ॥ शाण ॥ १६ ॥ रायकन्ना कही आविका, न क
 ही इम जे झूले रे ॥ राजीमति कही तेहवी, इम संदेहे ते
 जूले रे ॥ शाण ॥ १७ ॥ हरिपरि करम नियाणनो, इह जव जो
 ग न नासे रे ॥ समकित लहे परण्या पढी, कहे ते स्युं न
 विमासे रे ॥ शाण ॥ १८ ॥ जिणघर केणें कराविजं, तिहां प्रति
 मानी पईछा रे ॥ तेहनी पूजा ते कुण करे, इम परखे तेह
 गरीछा रे ॥ शाण ॥ १९ ॥ वर नवि माग्यो ठे पूजतां, शक्रस्त
 वे शिव मागे रे ॥ नक्ति जणी सूरियाजने, विरति विशेष
 थी जागे रे ॥ शाण ॥ २० ॥ धर्म विनय अरिहंतनो, इम ए लो
 गुवयारो रे ॥ सर्वने संजवे जाणिए, समकित शुद्ध आचा
 रो रे ॥ शाण ॥ २१ ॥ आणंदनो विधि नवि कह्यो, राय प्रदेशीने
 पाठे रे ॥ संजव सर्व न मानस्ये, विंटास्ये तेह आठे रे ॥ शाण
 ॥ २२ ॥ पत्तिकमणादिक क्रम नही, पाठे सप्तम अंगे रे ॥ प
 त्तिकमणां लुधथी प्रकरणे, सर्व कह्यो विधि रंगे रे ॥ शाण
 ॥ २३ ॥ किहां एक एक देशज ग्रहे, किहां ग्रहे ते अशेषो रे ॥
 किहां एक क्रम उत्क्रम कहे, ए श्रुत शैली विशेषो रे ॥ शाण
 ॥ २४ ॥ शासननी जे प्रजावना, ते समकितनो आचारो रे ॥
 श्री जिनपूजा जेकरे, ते लहे सुजश जंडारो रे ॥ शाण ॥ २५ ॥

॥ ठाल ४ थी ॥

(जांजरीयानी देशी.)

कोइ कहे जिन पूजतां जी, जे खटकाय आरंज ॥ ते
 किम आवक आचरे जी, समकितमां थिर थंज ॥ १ ॥ सुख

दायक तोरी, आणा मुज सु प्रमाण ॥ ए आंकणी ॥ तेहने कही ए
यतना जगति, किरीयामां नहि दोष ॥ पम्कमणे मुनि दा
न विहारे, नही तो होय तस पोष ॥ १॥ सु० ॥ साहमी वच्छल
पस्त्रिय पोसह; जगवइ अंग प्रसीद ॥ घर निर्वाइ चरण
लीए तेहना, ज्ञाता मांहि हरि कीध ॥ ३॥ सु० ॥ कोणिक राये
उदायन कीधां, वंदन मह सुविवेक ॥ एदाया कयवलिक
म्मा कहिया, तुंगिया आइ अनेक ॥ ४॥ सु० ॥ समकित संव
रनी ते किरीया, तिम जिनपूजा उदार ॥ हिंसा होय तो अ
रथ दंभमां, कहे नही तेह विचार ॥ ५॥ सु० ॥ नाग जूत यक्षा
दिक हेते, पूजा हिंसा रे जुत ॥ सुयगमागमां ते नवि जिन हे
ते, बोलिए जे होय जुत ॥ ६॥ सु० ॥ जिहां हिंसा तिहां नही
जिन आणा, तो किम साधु विहार ॥ कर्मबंध नही जयणा
जावे, एठे श्रुत व्यवहार ॥ ७॥ सु० ॥ प्रथम बंधने पढे निर्ज
रा, कूप तणो रे डिंढत ॥ कही कोई जोमे बुध जांखे, जावे
ते शुचि जल तंत ॥ ८॥ सु० ॥ उपादान वशे बंध कहिनु तस;
हिंसा शिर उपचार ॥ पुष्पादिक आरंज तणो एम, होय जा
वे परिहार ॥ ९॥ सु० ॥ जल तरता जल उपर मुनीने, जिम
करुणानो रे रंग ॥ पुष्पादिक ऊपर आवकने, तिम पूजा
मांहि वंग ॥ १०॥ सु० ॥ पात्रदानथी शुन विपाक जिम; ल
हे सुवाहु कुमार ॥ पहेले गुणठाणे नड्क पणे; तिम पू
जाथी उदार ॥ ११॥ सु० ॥ उपलक्षणथी जिम शीलादिक,
तिम जिनपूजा लिध ॥ मनुज आयु बंधे जे सुवाहु; तेणे
समकित प्रसिद ॥ १२॥ सु० ॥ मेघ जीव गज शश अनुकं
पा; दान सुवाहु विचार ॥ पहेले गुणठाणे पण सुंदर; ति

म जिनपूजा प्रकार ॥१३॥ सुण॥ दान देवपूजादिक सघलां;
 ड्यस्तव कहां जेह ॥ असदारंज्नी तस अधिकारी, मांमी
 रहे जेह गेह ॥ १४ ॥ सुण॥ सदारंनमां गुण जाणीजे, अस
 दारंन निवृत्ति ॥ अरमणीयता त्यागे जांखी, ईमहिज पर
 देशी प्रवृत्ति ॥ १५ ॥ सुण॥ लिखित शिल्प शत गणित प्रका
 श्यां, तेणे पूजा हित हेत ॥ प्रथम राय श्री रुषन जिणंदे, ति
 हां पण एह संकेत ॥ १६ ॥ सुण॥ यतनाए सूत्रे कह्युं मुनीने,
 आर्यक्रम उपदेश ॥ परिणामिक बुधे विस्तारे, समजे आ
 ळ अशेष ॥ १७ ॥ सुण॥ आर्य कार्य श्रावकनां जे ठे, तेहमां
 हिंसा दिठ ॥ हेतु स्वरूप अनुबंध विचारे, नासे देह निज पि
 ठ ॥ १८ ॥ सुण॥ हिंसा हेतु अजतना जावे, जीव वधे ते स्व
 रूप ॥ आणा जंग मिथ्यामति जावे, ते अनुबंध विरूप
 ॥ १९ ॥ सुण॥ हेतु स्वरूप हिंसा सेवी, सेवी ते अनुबंध ॥ तो
 जमालि प्रमुखे फल पाम्यां, कडुआ करी बहु धंध ॥ २० ॥
 सुण॥ स्वरूपथी हिंसा नवि टले ठे, समुझजे ते सीढ ॥
 वलि अपवाद पदे जे वरते, तेणे पण सिवगति लीढ ॥ २१ ॥
 सुण॥ साधु विहार परे अनुबंधे, नहि हिंसा जिननक्ति ॥ ए
 म जे माने तेहने बाधे, सुख जस आगम शक्ति ॥ २२ ॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

(माहरी सही रे समाणी. ए देशी.)

सासय पमिमा अमसय माने, सीढायतन नवि माने
 रे ॥ धनश् जिनवाणि, प्रभु ते जांखी अंग उवंगे ॥ वर्णव
 स्युं तिम रंगे रे ॥ धणा१॥ कंचन मय करतल पद सोहे, न
 वी जननां मन मोहे रे ॥ धणा॥ अंक रतनमय नख ससनेहा,

लोहीताक्ष मध्य रेहा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ गात्र दृष्टी कंचनमय
 सारी, नात्री ते कंचन क्यारी रे ॥ ध० ॥ रीष्ट रतन रोमरा
 जी विराजे, चचुक कंचन ठाजे रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्रीवत्स ते त
 पनीय बिनाला, होठ ते लाल प्रवाला रे ॥ ध० ॥ दंत फटिक
 मय जीज दयालु, बलि तपनीय मयनं तालुं रे ॥ ध० ॥ ४ ॥
 कनक नासिका तिहा सुविशेषा, लोहीताक्षनी रेखा रे ॥
 ध० ॥ लोहीताक्ष रेखित सुविसाला, नयन अक रतनाला
 रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ अष्टि पत्त जमुहावलि कीकि, रीष्ट रतनमय नी
 की रे ॥ ध० ॥ श्रवण निलाम्बुवटी गुणसाला, कंचन जाक
 ऊमाला रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ बज्र रतनमय अतिहि सुहामणी, सी
 स घडी सुखखाणी रे ॥ ध० ॥ केस जुमि तपनीय नीवेसा,
 रीष्ट रतनमय केसारे ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुंठे ठत्र धरे प्रत्येके, प्रति
 मा एक विवेके रे ॥ ध० ॥ दोय पासे दोय चामर ढाले, लीला
 ए जिनने उवारे रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ नाग झूत यक्षने कुंभधारा,
 आगे दोय उदारा रे ॥ ध० ॥ ते पद्मिमा जिनपद्मिमा आगे,
 मानु सेवा मागे रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ घंट कलस निंगार आयंसा,
 थाल पाइ सुपविठा रे ॥ ध० ॥ मणगुली आवाय करग प्रचं
 डा, चिंतारयण करंमा रे ॥ ध० ॥ १० ॥ हय गय नर किन्नर
 किपुरिसा, कंठ नरग वृष सरिखा रे ॥ ध० ॥ रयण पूंज व
 लि फूल चंगेरी, माढ्यने चूर्ण अनेरी रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ गंध व
 स्र आजरण चंगेरी, सरिसव पूजणी केरी रे ॥ ध० ॥ एम पू
 प्फादिक पद्मल वखाण्यां, आगे सिंहासन जाण्या रे ॥ ध०
 ॥ १२ ॥ ठत्र चामर आगे सुमुग्गा, तैल कुष्ट जृत जुग्गा रे ॥
 ध० ॥ जरीया पात्र चोयग सुविलासे, तगर एला सुचि वासे

रे ॥ध० ॥१३॥ वलि हरीआलने मणसील अंजन, सवि सु
 गंध मनरंजन रे ॥ध० ॥ ध्वजा एकसत आठ ए पूरा, साधन
 सर्व सनुरा रे ॥ध० ॥१४॥ सूर ए पूजा साधन साथे, जिनपू
 जा निज हाथे रे ॥ध० ॥ सिद्धायतने आप विमाने, श्रृंग्नादि
 क बहु माने रे ॥ध० ॥१५॥ एह अपूरव हरिसण दिवुं, सुरतरु
 फलथी मिवुं रे ॥ध० ॥ ए संसार समुझने नावा; तारण तरण
 सहावारे ॥ध० ॥१६॥ एम विस्मय नवजनय गुण रागे, जीले
 तेह अतागे रे ॥ध० ॥ राचे माचे ने वज्री नाचे; धर्मध्यान म
 न साचे रे ॥ध० ॥१७॥ अथै करता दिए ते नमरी; हरखे प्र
 नु गुण समरी रे ॥ध० ॥ योग निराखंवन लय आणी; वश
 करता शिवराणी रे ॥ध० ॥१८॥ इम नंदीश्वर प्रमुख अने
 रां; सास्वत चैत्य नलेरां रे ॥ध० ॥ तिहां जिन पूजी ते अनु
 माने; जनम सफल निज माने रे ॥ध० ॥१९॥ कळयाणक
 अठाइ वरसी; तिथी चउमासी सरसी रे ॥ध० ॥ तेह निमि
 ते सुर जिन अरचे; नित्य नक्ति पिण विरचे रे ॥ध० ॥२०॥
 नाव अखयनावे जे मिलिउं; ते नवि जाए टलिउं रे ॥ध० ॥
 फरी त्रावु नवि होय निषेधे; हुउं हेम रस वेधे रे ॥ध० २१॥
 एके जल लवे जलधी नजाये, तो ते अक्य आवे रे ॥ध० ॥
 आप नाव जिन गुण मांहि आणे, तिम ते अक्य प्रमाणे रे
 ॥ध० ॥२२॥ अपुणरुत्त अमसय वरवृत्ते; इम सूर नावे चिं
 ते रे ॥ध० ॥ इम जिनपूजी जे गुण गावे; सुजस जील ते
 पावे रे ॥ध० ॥ २३ ॥

॥ टाल ६ वी. ॥

(जोलीमा रे हंसा रे विषय नराचीए. ए देशी.)

समकित सुधुरे तेहने जाणिए, जे माने तुऊ आण॥
 सूत्र ते वांचे रे जोग वही करी; करे पंचांगी प्रमाण ॥ स०
 ॥ १ ॥ उद्देशादिक नहि चउ नाणना, ठे सुअनाणना तेह ॥
 श्री अनुयोगडुवार अकी लही, धरीए योग सुनेह ॥ २ ॥ स०
 उद्देशादिक क्रम विण जे नणे, आशातन तेह नाण ॥ नाणा
 वरणी रे वांचे तेहथी, जगवई अंग प्रमाण ॥ ३ ॥ स० ॥ श्री
 नंदी अनुयोगडुवारमा, उत्तराध्ययने रे योग ॥ काल ग्रहण
 नो रे विधि सघलो कह्यो, धरीए ते उपयोग ॥ ४ ॥ स० ॥ ठा
 ए त्रीजे रे वली दशमे कह्यो, योग वहे जेह साध ॥ आगमे
 सिद्धता ते संपजे, तेरे संसार अगाध ॥ ५ ॥ स० ॥ योग वहीने
 रे साधु श्रुत जणे, आवकने उपधान ॥ तप उपधाने रे श्रुत
 परिग्रह कह्या, नंदीए तेह निदान ॥ ६ ॥ स० ॥ इरियादिकना रे
 खट उपधान ठे, तेणे आवश्यक शुद्ध ॥ गृहि सामायक आदे
 श्रुत जणे, दीक्षा जेइ अनुद्ध ॥ ७ ॥ स० ॥ सूत्र नण्या कोइ
 आवक नवि कह्या, लच्छा कह्या तेह ॥ प्रथम ज्ञानने रे पठे
 दया कही, तिहा संयत गुण रेह ॥ ८ ॥ स० ॥ नवम अध्ययने
 रे बीजा अंगमा, घरमाहि दीव न दीढ ॥ वली अ चउदमे रे
 कह्यो शिक्षा लहे, ग्रंथ त्यजे ते गरीढ ॥ ९ ॥ स० ॥ सप्तम अंगे
 रे अपठिया संवरी, दाख्या आढ अनेक ॥ नवि आचारधरा
 दिक ते कह्या, मोटो एह विवेक ॥ १० ॥ स० ॥ उत्तराध्ययने रे
 कोविट जे कह्यो, आवक पालीक चप ॥ ते प्रवचन निग्रथ
 वचन थकी, अरथ विवेके अरुं ॥ ११ ॥ स० ॥ सूत्रें दीधु रे स
 त्य ते साधुने, सुरनरने वली अन्न ॥ संवरछारे रे बीजे एम
 कही, अग दशमें समरत्न ॥ १२ ॥ स० ॥ वली विगय पन्निव

ङ्गे वाचना, श्री ठाणांगें निषिध ॥ नविय मनोरथ श्रुत न
 एवा तणो, आवकने सु प्रसिद्ध ॥१३॥सण॥ वाचना देतां रे
 गृहिने साधुने, पायछित्त चउमास ॥ कह्युं निशीथे रे तो स्युं
 एवमी, करवी हुंश निरास ॥ १४ ॥ सण ॥ तजिय असप्राइ
 गुरु वाचना, लेई जोग गुणवंत ॥ जे अनुयोग त्रिविध सा
 चो लहे, करे ते करमनो अंत ॥१५॥स०॥ सूत्र अरथ पहेलो
 बीजे कह्यो, निजुत्तीए रे मीस ॥ निरविशेष त्रीजो ते अंग
 पांचमे, एम कहे तुं जगदीस ॥१६॥सण॥ सूत्र निजुत्ती रे वि
 हुं नेदे कह्यो, त्रीजो अनुयोगद्वार ॥ कूमा कपटी रे जे माने
 नही, तेहनो कवण आधार ॥१७॥सण॥ बढ ते सूत्रे रे अर्थ
 निकाचिया, निजुत्तीए अपार ॥ उपधि मान गुणणादिक कि
 हां लहे, ते विण मार्ग विचार ॥१८॥सण॥ जो निजुत्ती रे ग
 डकुमती कहे, सूत्र गयां नही केम ॥ जेह वांचतां रे आव्युं
 ते सवे, मानेतो होय खेम ॥१९॥सण॥ आंधा आगे रे दर्प
 ण दाखवो, बहेरा आगे रे गीत ॥ मूरख आगे रे कहेवुं यु
 क्तिनुं, ए सवि एकज रीत ॥२०॥सण॥ मारग अरथी रे पण
 जे लोक ठे, नडक अतीहि विनीत ॥ तेहने ए हित सीख
 सोहामणी, वली जे सुनय अधीत ॥२१॥सण॥ प्रवचन सा
 खीरे ए में जांखीयां, विगते अरथ विचार ॥ तुज आगम
 नीरे अही परंपरा, लहीए जग जयकार ॥२२॥ सण॥ गुण
 तुज सघलारे प्रनु कुण गशि सके, आणा गुण लव एक ॥
 एम में थुणातां रे समकित दृढ कख्युं, राखी आगम टेक ॥
 सण॥२३॥ आणा तारी रे जो में शिर धरी, तो स्युं कुमती
 नुं जोर ॥ तिहां नवि पसरे रे बल विषधर तणां, किंगारे जि

हां मोर ॥१४॥सण॥ पवित्र कीजे रे जीहा तुऊ गुणे, शि
र धरीए तुऊ आण ॥ दिलथी कहिए रे प्रभु न विसारीए,
लहीए सुजस कल्याण ॥ १५ ॥ सण ॥

ढाल ७ मी.

(राग धन्याश्री.)

वर्तमान शासननो स्वामी, चामीकर सम देहो जी ॥
वीर जिएसर मे इम थुणीज, मन धरी धर्म सनेहो जी ॥ ए
ह तवन जे जणस्ये गुणस्ये, तस घर मंगल माला जी ॥ स
मकित जाण हुस्ये चित तेहने, प्रगट जाक ऊमाला जी
॥१॥ अरथ एहना ठे अति सूद्धम, ते धारो गुरु पासे जी ॥
गुरुनी सेवा करता लहीए, अनुभव नीति अज्यासे जी ॥
जेह बहुश्रुत गुरु गीतारथ, आगमना अनुसारी जी ॥ ते
हने पूछी संशय टालो, ए हीतसीख ठे सारी जी ॥२॥ इंद
वपुर माहि रही चोमासु, धर्मध्यान सुख पाया जी ॥ संव
त १७३३ सत्तर तेत्रीसा वरपे, विजय दशमी मन ज्ञाया
जी ॥ श्री विजयप्रज्ञसूरी सवाया, विजयरत्न युवराया
जी ॥ तस राजे जिवि जन हित काजे, एम में जिनगुण गा
या जी ॥ ३ ॥ श्री कल्याणविजय वर वाचक, तपगच्छ गय
ए विणंदा जी ॥ तास सीस श्री लालविजय बुध, जिवि ज
न कैरव चदा जी ॥ तास सीस श्री जीतविजय बुध, श्री न
यविजय मुणिंदा जी ॥ वाचक जगविजय तस सीसे, शु
णिचा वीर जिएंदा जी ॥ ४ ॥ दोसी भूला सुत विवेकी, दो
सी मेघा हेते जी ॥ एह तवन में कीबुं सुदर, श्रुत अक्षर सं
केते जी ॥ ए जिन गुण सुरतरुनो परिमल, अनुभवनो ते ल

हेस्ये जी ॥ जमर परे जे अरथी हुइने, गुरु आणा शिर व
रस्ये जी ॥५॥ इति. ॥

अथ श्री रत्नाकर पंचविंशति लिख्यते.

श्रेयः श्रियां मंगल केलि सद्म, नरेंद्र देवेंद्र नतांघ्रि प
द्म ॥ सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान, चिरंजय ज्ञानकला निधा
न ॥१॥ जगन्नयाधार कृपावतार, दुर्वार संसार विकार वैद्य ॥
श्री वीतराग त्वयिमुग्धज्ञावात्, विज्ञप्रज्ञो विज्ञपयामि किं
चित् ॥२॥ किंवाल लीला कलितो न बालः, पित्रोः पुरो ज
लपति निर्विकल्पः ॥ तथा यथार्थं कथयामि नाथ, निजाशयं
सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥ दत्तं न दानं परिशीलनं च, न शालि
शीलं न तपोन्नित्तं ॥ शुनो न ज्ञावोप्यन्नवन्नवेस्मिन्,
विज्ञो मया त्रांत महो मुधैव ॥४॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन द
ष्टो, दुष्टेन लोनाख्य महोरगेण ॥ ग्रस्तोऽनिम्नाना जगरेण
माया, जालेनबद्धोऽस्मि कथं नृजे त्वां ॥५॥ कृतं मया मूत्र
हितं न चेह, लोकेऽपिलोकेश सुखं न मेऽनूत् ॥ यस्मादृशां
केवल मेव जन्म, जिनेशजज्ञे नव पूरणा य ॥६॥ मन्ये म
नोयन्न मनोज्ञ वृत्तं, त्वदास्य पीयूष मयूखलानात् ॥ दुतं
महानंद रस कठोर, मस्मादृशां देव तदष्म तोपि ॥७॥ त्व
तः सुदुःप्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं नूरि नव त्रमेण ॥ प्रमा
द निज्ञ वशतोगतं तत्, कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥८॥
वैराग्य रंगो परवंचनाय, धर्मोपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय
विद्याध्ययनं च मेऽनूत्, कियद्ब्रुवेहास्यकरस्त्वमीश ॥९॥
परापवादेन सुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्री जन वीक्षणेन ॥ चेतः

परापाय विचितनेन, कृतं नविष्यामि कथं विज्ञोहं ॥१०॥
 विडंबितं यत्स्मरघस्मरार्ति, दशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥
 प्रकाशितं तन्नवतोङ्गि यैव, सर्वज्ञ सर्वस्वयमेववेत्ति ॥११॥
 ध्वस्तोन्य मंत्रैः परमेष्टि मंत्रः, कुशास्त्र वाक्यैर्निहिताग
 मोक्ति ॥ कर्तुं वृथा कर्म कुदेव संगत्, अवांविहि नाथ मति
 न्नमो मे ॥ १२ ॥ विमुच्यदृक् लक्ष्यगतं नवंतं, ध्याता मया
 मूढ धियाङ्गदंतः ॥ कटाक्ष वक्षो जगजीर नात्रि, कटी तटी
 याः सुदृशा विलासाः ॥ १३ ॥ लोलेक्षणा वक्र नीरीक्षणेन,
 योमानसो राग लवो विलग्रः ॥ नशुद्ध सिद्धात पयोधि मध्ये,
 धौतोप्यगातारक कारणं किं ॥ १४ ॥ अंगं न चंगं न गणो गुणा
 नां, न निर्मलः कोपि कला विलासः ॥ स्फुरत्प्रज्ञानप्रजुता
 च कापि, तथाप्यहंकारक दर्थितोहं ॥ १५ ॥ आयुर्गलत्याशु
 न पाप बुद्धि, र्गतंवयो नोविषयान्निलापः ॥ यत्नश्च नैपज्य
 विधौ न धर्मे; स्वामिन्महामोह विडंबनामे ॥ १६ ॥ नात्मा
 नपुण्यं नन्नवो नपापं, मयाविटानां कटुगीर पीयं ॥ ग्रथारि
 कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपिदेव धिग्मां ॥ १७ ॥ न
 देवपूजा नच पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वा
 पि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतंमयारण्य विलाप तुल्यं ॥ १८ ॥
 चक्रमयाऽसत्स्वपि कामधेनुः, कल्पदु चिंतामणिपु स्पृहार्तिं ॥
 न जैनधर्मे स्फुट शर्मदेपि, जिनेशमे पश्यवि मूढ ज्ञावं ॥
 ॥ १९ ॥ सन्नोग लीला नचरोग कीला, धनागमो नो निधना
 गमश्च ॥ दारा नकारा नरकस्य चित्ते, विचिति नित्यं मयका
 धमेन ॥ २० ॥ स्थितं न साधो हृदी साधु वृत्तात्, परोपका
 रात्रयशोर्लिनंच ॥ कृतं न तीर्थोहरणादि कृत्यं, मया मु

धा हारितमेव जन्म ॥११॥ वैराग्य रंगो न गुरुदितेषु, न उ
 र्जनानां वचनेषु शांतिः ॥ नाध्यात्म लेशो ममकोपि देव,
 तार्यः कथं कारमयं ज्ञवाब्धिः ॥१२॥ पूर्वज्ञवे कारिमया न
 पुण्यं, आगामि जन्मन्यपिनो करिष्ये ॥ यदी दृशोहं ममते
 नतष्टा, ज्ञूतोऽज्ञवज्जावि ज्ञवत्रयीशः ॥१३॥ किंवा मुधाहं बहु
 धा सुधाञ्जुक, पूज्यत्व दग्नेचरित स्वकीयं ॥ जलपामि य
 स्मात् त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वंकियदेतदत्र ॥ १४ ॥ दी
 नोद्धार धुरंधरो स्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्र जने
 जिनेश्वर तथाप्येतांनयाचे श्रियं ॥ किंत्वर्हन्निदमेव केवल
 महो सद्बोधिरत्नं शिवः, श्री रत्नाकर मंगलैक निलयः श्रेय
 स्करं प्रार्थये ॥१५॥ इति. ॥

अथ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन.

॥ ढाल १ ली. ॥

सरसति, जगवति दियो मति चंगी, सरस सुरंगी वा
 णी ॥ तुज प्रसाद माझ चित्त धरुंहुं, जिन गुण रयणीखा
 णी ॥ गिरुआ गुण वीरजी, गायशुं त्रिजुवन राय ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ॥ तुम नामे घर मंगलिक माला, चित्त धरे बहु
 सुखदाय ॥ गि० ॥१॥ जंबूद्वीप जरतक्षेत्र माहे, नयर माह
 णकुंम गाम ॥ रुषनदत्त वर विप्र वसे तिहां, देवानंदा तस
 प्रिया नाम ॥ गि० ॥३॥ सुर विमान वर पुष्पोत्तरथी, ज्यवि
 प्रभु जियो ध्रुवतार ॥ तव ते माहणी रयणी मध्ये, सुपन
 देखे दश चार ॥ गि० ॥४॥ धुर १ मयगल मलपंतो देखे, बीजे

शृपञ्ज विशाल ॥ त्रीजे ३केसरी ४लक्ष्मी चोथे, पांचमे
 फूलनी माल ॥ गि० ॥ ५ ॥ ६ चंद ७ सूरज ८ घज ए कजस
 १० पञ्चमसर, देखे ११ देवविमान, १२ रतनरेख १३ रयणाय
 र राजा, चौदमे १४ अग्नि प्रधान ॥ गि० ॥ ६ ॥ आनंदनरते जा
 गी सुंदरी, कंतने कहे प्रजात ॥ सुणी विप्र कहे तुज सुत
 होशे, त्रिजुवन माही विख्यात ॥ गि० ॥ ७ ॥ अति अजिमान
 कियो मरियच नव, नवि जुन कर्म विचार ॥ तिहा त्रस था
 वर हुआ कुंअयरी, बलि नीच कुले अवतार ॥ गि० ॥ ८ ॥
 इण अवसर इंद्रासन मोले, ज्ञाने करी हरि जोई ॥ माह
 णी कुखे जगगुरु पेखी, नमी कहे अघटतुं होई ॥ गि० ॥ ९ ॥
 ततरुण हरि हरणगमेपी तेमावी, मोकलीन तेणे गाय ॥
 माहणी गरज अने त्रिगालानो, विहु वदली सुर जाय ॥ गि०
 ॥ १० ॥ बलि नीक्षत्रे ते देवानंदा, सुपन लहे अति सार ॥
 जाणे ए त्रिशला कर चढिया, जई कहे निज नरतार ॥ गि०
 ॥ ११ ॥ कंत कहे तुं डःख हर सुंदरी, मुज मन अचरिज
 एह ॥ मरुथल मांही कढपतरु दीगे, आज संगाय टढ्यो
 एह ॥ गि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

नयरी कृत्रिकुंम नरपति, सिंहास्थ जलो ए ॥ भाण
 न खंमे तस तणी; जग जश निरमलो ए ॥ १ ॥ तस पटरा
 णी त्रिशला सती; कुखे जगपति ए ॥ परम हरर हैमे ध
 री, उविया सुरपति ए ॥ २ ॥ सुखसझाये पोढी देवीय, चौद
 सुपन लहे ए ॥ जागती जिनगुण समरती, हरखती गहगहे
 ए ॥ ३ ॥ राजहंस गति चालती, पियु कने आवती ए ॥ प्रद

नगमते सूर के, वीनवे निज पति ए ॥ ४ ॥ वात सुणी राय
 रंजीया, पंमित तेनीया ए ॥ तिण समे सुपन विचारवा, पु
 स्तक बोनीयां ए ॥ ५ ॥ बोले मधुरी वाण के, गुणनिधि सुत
 होशे ए ॥ सुख संपति घरे बाधशे, संकट नांजशे ए ॥ ६ ॥ पं
 मितने राय तूनीया, लब्धी दिए घणी ए ॥ कहे वाणी सफ
 ल हज्यो, अमने तुम तणी ए ॥ ७ ॥ पंमित निय घर संच
 ख्या, गर्ज हाले नही ए ॥ सात मसवाडा बोलीया, माय म
 न चिंता थई ए ॥ ८ ॥ सखीयोने कहे सांजलो, किये मुज ग
 र्ज हख्यो ए ॥ हूं रे जोली जाणुं नही, फोगट प्रगट कियो ए
 ॥ ९ ॥ सखी कहे अरिहंत समरतां, दुःख दाखिइ टले ए ॥
 तव जिये नाण प्रयूंजीयुं, गर्जथी सलसले ए ॥ १० ॥ मात
 पिता परिवारनुं, दुःख निवारियो ए ॥ संयम नलेउं माय
 ताय बतां, जिनजी निरधारीयो ए ॥ ११ ॥ अणदीठे मोह ए
 वमो, ते किम विछोह खमे ए ॥ नव मसवाडा उपरे, दिन
 सारासातमे ए ॥ १२ ॥ चैत्र शुक्ल दिन तेरशे, जिनवर जन
 मिया ए ॥ सिद्धारथ राय नृपति, जला उठव मांमीया ए ॥ १३ ॥
 वस्तु-पुत्र जनम्यो ९ जगत शिणगार, श्री सिद्धारथ कुल मं
 ऋण कुल तणो दीवो ॥ श्री जिनधर्म पसाउले, त्रिशलादेवी
 सुत चिरंजीवो ॥ १४ ॥ ईम आशीष देई जली, आवी ठ
 प्पन कुमारि ॥ सूतिका कर्म करे सही, सयल विहुं हरिनी
 नारि ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

चढ्यो सिंहासन इंड, नाण निरखतां ए ॥ आसनथी
 उठेव, हृदय नक्ति घणी ए ॥ १ ॥ जाणे जनम जिणंद, इंडो

हरखता ए ॥ वाय सुघोषा घंट, सघली रणऊणी ए ॥ ३ ॥
 इंद्र जुवनपति वीश, व्यंतर तणा ए ॥ वत्रीश रवि शशि
 दोय, दश हरि कल्पनां ए ॥ १॥ चोसठ इंद्र मेलवी, प्रणमी
 कहे ए ॥ रत्नगर्जा जिन मात, दूजी इसी नही ए ॥ ४ ॥ ज
 न्म महोच्चव देव, सवि हुं आचीया ए ॥ देई निजा मंत्र, सुत
 लेई मेरु गया ए ॥ ५ ॥ कंचन मणि जूंगार, गंधोदके नखा
 ए ॥ किम सहेशे लघु वीर, हरि सशाय धर्या ए ॥ ६ ॥ वहेशे
 नीर प्रवाह, ते किम नामीए ए ॥ न करे नमणु इंद्र, जाण्यो
 स्वामीए ए ॥ ७ ॥ चरण अंगूठे मेरु, चांपे नाचीयो ए ॥ मुज
 शिर परि जगवंत, इम कह्यो राचीयो ए ॥ ८ ॥ जूधर सायर
 सात, ते सवि जलफला ए ॥ पाताले नागेंद्र, सघला सलस
 ल्या ए ॥ ९ ॥ गिरिवर तूटे टूंक, गडगडी पड्या ए ॥ तीन जु
 वनना लोक, सघला लडथड्या ए ॥ १० ॥ अनंत बल अरिहं
 त, सुरपति कहे ए ॥ मुज मन मूरख मूढ, एटलुं नवि लहे
 ए ॥ ११ ॥ प्रदक्षिणा देइ खामेव, महोत्सव करे ए ॥ नाचे
 सवि गाये गीत, पुण्य पोते नरे ए ॥ १२ ॥ इणो सुखे स्वर्ग
 नी लील; तृण सरिखी गणे ए ॥ जिन मेली मायने पास;
 पद गयां आपणे ए ॥ १३ ॥ माय जागी जोय पुत्र; सुरवर
 पूजियो ए ॥ कुंमल दोय देवडुण्य, अमि अंगूठे दियो ए ॥
 ॥ १४ ॥ जन्म महोच्चव तात, रुचि बाचीयो ए ॥ सजन संतो
 पी नाम, वर्द्धमान आपीयो ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

प्रजु कल्पतरु जिम बाधे, गुण महिमा पार न लाधे ॥
 रूपे अजुत अनोपम अकल; अंग लरुणा कला विधि सकल

॥ १ ॥ मुख चंद कमल दल नयणा; सास सुरनिगंध मीठां व
 यण ॥ हेम वरणे तनु सोहावे; गुण निर्मल जल न्हवरावे
 ॥ २ ॥ तप तेजे सुरज सोहे; देखी सुर नरनां मन मोहे ॥ र
 मे राजकुमरशुं वनमां; माय तायने नलट मनमां ॥ ३ ॥
 प्रभु अतुलिवल महावीर; इंड सन्नामां कहे जिन धीर ॥
 एक सुर तिहां वात न माने; आवे परखवा ते रमवाने ॥ ४ ॥
 सुर अहि थई आमली रुखे; प्रभु ग्रहीने दूरे नांखे ॥ वलि
 बालक थइने रमिउ, प्रभु खंधे लइने गमीउ ॥ ५ ॥ माय ता
 यने डःख अयुं दरीउ, लाड्यकमो कियो हरिउ ॥ सुर बाधे ग
 गन मिथ्याती, वीर मूठि चांपी पाड्यो धरती ॥ ६ ॥ नमि
 नाम दियो महावीर; जेहवो इंडे कह्यो तेवो धीर ॥ वलि
 प्रभु घर आवे रंगे, माय तायने नलट अंगे ॥ ७ ॥ वस्तुः ॥ रा
 य नुहव करे मनरंग, लेखणशाला सुत ठवे ॥ वीर ज्ञान
 राय न जाणे, सौधमेंड आवी करी ॥ पूठे ग्रंथ स्वामी व
 खाणे, जैन व्याकरणा तिहां कस्यो ॥ आनंदि सुरराय, वचन
 विशेषे नारति, जोशी विस्मय थाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

जोवन वय जब आविया ए, राजकन्या यसोदा परणा
 वियां ए ॥ विवाह महोहव शुभ किया ए, सवि सुख संसा
 रना विलसियां ए ॥ १ ॥ अनुक्रमे हूइ एक कुमरी ए, त्रीस
 वरस जिनराज लीला करी ए ॥ मात पिता सदगति गयां
 ए, पठे वीर वैरागे पूरीया ए ॥ २ ॥ मयण राय मन
 शुं जीतिया ए, वीरे अथिर संसार मन चिंतिया ए ॥
 राज्य रमणी रुद्रि परिहरी ए, कहे कुटुंबने लेशूं संजम

सही ए ॥ ३ ॥

॥ ढाल ६ छी ॥

पित्तरीन सुपास रे, जाइ नंदीवर्द्धन ॥ कहे वड एम न
कीजीये ए ॥ माय ताय विछोह रे, बली तुं ब्रत लीए ॥ चां
दी खार न दिजीए ए ॥१॥ नीर बीना जिम मछ रे, वीर वि
ना तिम ॥ टलवलतां सवि एम कहे ए ॥ कृपावंत जगवंत रे,
नेह बिना बलि ॥ बे वरस जाजेरा रहे ए ॥२॥ फासु लिए अ
न पान रे, पर घर नवि जिमे ॥ चित्त चारित्र जावे रहे ए ॥ न
करे राज्यनि चिंत, सुर लोकातिक आवि ॥ कहे संजम स
मे ए ॥ बूज बूज जगवंत रे, ठोम विषय सुख ॥ ए संसार
वधारणो ए ॥ ३ ॥

॥ ढाल ७ मी. ॥

आलेश त्रिसलाना कूमर, दान संवहरी ए ॥ ए आकणी ॥
एककोमि आठ लाख, दिन प्रति दिए ए ॥ कनक रयण
मणि रूप, मोति मुठि जरी जरी ए ॥१॥ आण ॥ धण कण
गज रथ घोमला ए, गाम नयर पूर देश तो ॥ मनवंडीत फ
ले ए ॥२॥ आण ॥ निरधन ते धनपति कीया ए, तस घर नारि
न उलखत; सम करे बलि बलि ए ॥३॥ आण ॥ दूख दालिह ह
रे जगतणां ए, मेह परे वरसिदान तो; पृथ्वी उरण करी
ए ॥४॥ आण ॥ बहू नर नारि उछव करे ए, सुर नर करेय ममा
ण तो; जिन दिक्षा वरी ए ॥५॥ आण ॥ विहार करम जगगुरु
किन्तु ए, केमे आवे माहण मीत्र तो, नारि संतापिन्तु ए ॥६॥
आण ॥ जिन जाचक हूं विसख्यो ए, प्रभु खय थकी सुरपट
तो; खंम करी दिए ए ॥७॥ आण ॥

॥ ढाल ८ मी. ॥

जस घर करे प्रभु पारणुं, सुर तिहां वरसे कंचन घणुं॥
 आंगणुं, दीसे तेजे तेह तणुं ए ॥१॥ देवडंडुनि वाजे ए, ति
 ए नादे अंबर गाजे ए; गाजे ए, त्रिभुवन मांहि सोहामणुं ए
 ॥२॥ त्रुटक॥ सोहामणा प्रभु तप तपे वहू, देश देशे विचरतां॥
 नवि जीवने उपदेश देई, साते ईती समावता ॥ पट मास
 वन कानसग रह्या जिन, करम कठिन ठेदे सही ॥ गोवा
 लिया गोरु जलाविया, जिनवर मुख बोले नही ॥ ३ ॥ चा
 ड्या रे गोरु दह दिसि गया, ते आवि पूठे किहां गया ॥ रु
 पिराज, उपर मूरख कोपीया ए ॥ ४ ॥ चरण उपर रांधी
 खीर, तेणे उपसर्गे न चड्या धीर; महावीर, श्रवणे खीला
 ठोकीया ए ॥ ५ ॥ त्रुटक॥ ठोकिया खीला दूखे पीड्या, कोण
 लहे जिम करि गया; जिन मने शत्रु मित्र सरिखा, मेरु
 परे ध्याने रह्या ॥ ६ ॥ जनहि वारे मेह वरसे, बीजनी ऊवके
 घणी ॥ विहूं चरण उपर कान नग्यो, इम सहे त्रिभुवन
 घणी ॥ ७ ॥ एक दिन ध्यान पूरु करी, प्रभु नयरी पहोता
 गोचरी; वैद्ये रे, श्रवणे खीला जाणिया ए ॥ ८ ॥ पारणुं करी
 कानसगे रह्या, तिहां वैद्ये संच जला किया; बांधी वृद्धें, खीला
 ताणीया ए ॥ ९ ॥ त्रुटक॥ ताणी काढ्या दोय खीला, वीर वे
 दन थई घणी ॥ आक्रंदता गिरि अयो शत खंम, जुन गति
 कर्मज तणी ॥ १० ॥ हसतां ते जीवे कर्म बांध्यां, रोवतां बूटे
 नही ॥ धन ९ मुनिवर रह्या ध्याने, कर्म इम त्रुटे सही ॥ ११ ॥

॥ ढाल ९ मी. ॥

जुन ९ कर्में शुं कीधुं रे, अन्न वरस रुषन न लाधूं रे ॥

करमवशे म करो को खेद रे, मल्लिनाथ पाम्या स्त्री वेद रे ॥ १ ॥
 कर्म चक्री ब्रह्मदत्त नमीयो रे, संजूम नरके पमियो रे ॥ अरत
 बाहूवलशुं जमीनु रे, चक्री दाख्यो यश चमीनु रे ॥ २ ॥ सनत
 कुमार सहिया रोग रे, नल दवदंति वियोग रे ॥ वासुदेव जरा
 कूमरें माख्यो रे, बलदेव मोहनीय दाख्यो रे ॥ ३ ॥ जुन सयं
 जुम सातमी बहिए रे, परिघ धूसर मुसल बहिए रे ॥ श्रेणिक
 नरकें पहोतो रे, वन अया दशरथ पूतो रे ॥ ४ ॥ सत्यवंत हरि
 चंद धीर रे, रुंघ घरे सिर बह्यो नीर रे ॥ कूबेरदत्तनं कूयोग रे,
 बहेन तजी मायशुं जोग रे ॥ ५ ॥ परहणें चंदनवाल, चढिनु
 सुनजाने आल रे ॥ मयणरेहा मृगांकरेख रे, दूख जोगविया
 अनेक रे ॥ ६ ॥ करमे चढ कलंकयो रे, राय रंक कोय न मुक्यो
 रे ॥ ७ ॥ अहिळ्याशु लुवयो रे, रेनादेई सवदा कीधो रे
 ॥ ८ ॥ इश्वर नारि नचाव्यो रे, ब्रह्मा ध्यान चूकाव्यो रे ॥ अई
 ७ कर्म प्रधान रे, जीत्या श्री वर्द्धमान रे ॥ ९ ॥

॥ ढाल २० मी. ॥

इम कर्म हणया सवि; धीर पुरुष महावीर ॥ बार वरस
 तप्या तप, ते सघलो विण नीर ॥ शालिवृद्ध तले प्रजु,
 पाम्या केवल नाण ॥ समोसरण रचें सुर, देशना दिए जिन
 नाण ॥ १ ॥ अपापा नगरी, जङ्ग करें विप्र जेह ॥ सवि वूजवी
 दिक्षा, वीर जिन वादे तेह ॥ गौतम ऋषि आदे, च्यारसे च्यार
 हजार ॥ चौदसदस मुनिश्वर, गणधर वर इग्यार ॥ २ ॥
 मूख्य चंदनवाला, साधवी सदस ठत्रीत ॥ दोरु लाख
 सदस नव, श्रावक दिए आशीष ॥ त्रिणालाख श्राविका,
 ठपर सहस्र अठार ॥ संघ चउविधि थापे, धन ए जिन परि

वार ॥३॥ प्रभु अशोकतरु तलें, त्रिगमे करेय वखाण ॥ सुणे
 पर्षदा बारे, जोजन वाणि प्रमाण ॥ त्रण ठत्र धरे सुर,
 चामर ढोले ईंइ ॥ नाटिक वत्रीस, चोत्रीस अतिशय जिनेंइ
 ॥ ४ ॥ फूल पगर जयतुर, वाजें छंदनि नाद ॥ नमें सकल
 सुरासुर, ठांमे सकल प्रमाद ॥ च्यारे दिसि स्वयं जिन, धर्म
 प्रकासे च्यार ॥ चोविसमो जिनवर, आलें जवनो पार ॥५॥
 प्रभु वरस बहोत्तेर, पालि निरमल आय ॥ त्रिभुवन उपगारि,
 तरण तारण जिनराय ॥ कार्तिक अमावासे, दीवाली निर
 वाण ॥ प्रभू मुक्ति पढोल्या, प्रणमें नित कढ्याण ॥ ६ ॥

कलश.

श्री वीर जिनवर सयल सुखकर, नामे नवनिधी सं
 पजे ॥ घर रुद्धि वृद्धि समृद्धि पामी, एक मना नर जे जजे ॥
 तपगढ ठाकूर गुण वैरागर, श्री हीरविजय सूरीश्वरो ॥
 हंसराज बंदे मन आणंदे, कहे धन मुऊ ए गुरो ॥१॥ इति.

अथ श्री मौनएकादशीना गणणानुं स्तवन.

॥ ढाल १ ली. ॥

धुर प्रणमुं जिन महरिसी; समरुं सरसति उल्लसी ॥
 धसमसी, मुऊ मति जिनगुण गायवा ए ॥१॥ हरी पुढी जि
 न उपदिसी; परव ते मौनएकादशी ॥ मन वसि, अह निसी
 ते जिवि लोकने ए ॥ २ ॥ तरियाने जवजल तरसी; एह पर
 जव पौषध फरसी ॥ मन हरसी, अवसर जे आराहसी ए
 ॥ ३ ॥ उजमणे जे धारसी; वस्तु इग्यार इग्यारसी ॥ वार
 सी, ते डुरगतिनां बारणां ए ॥४॥ ए दिन अतिहे सुहामणुं;

दोढसो कळ्याणक तणुं ॥ मन घणुं, गणणुं करतां सुख
होवे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ जी. ॥

(चेनन चेतजो रे ॥ ए देशी.)

पामे पामे त्रण चोवीसी, द्विप खेत्र जिन नामे ॥ पा
मे पामे पंच कळ्याणक, धारो शुभ परिणामे ॥ १ ॥ जिनवर
ध्याइए रे, मुक्ति मारगना दातार ॥ ए आंकणी ॥ सर्वज्ञाय
नमो एम पहेले, नमो अर्हत ते बीजे ॥ त्रीजे नमो नाथाय ते
चोप्रे, सर्वज्ञाय कहीजे ॥ १ ॥ जि० ॥ पाचमे नमो नाथाय क
हीजे, पामे पामे जाणो ॥ त्रण नाम तिर्थकर केरां, गणणां
पांच वखाणो ॥ ३ ॥ जि० ॥ त्रण चोवीसी एक एक ढाले, त्र
ण नाम जिन कहिशुं ॥ कोमि तपे करि जे फल लहिए, ते
जिन जगते लहिशुं ॥ ४ ॥ जि० ॥ काम सवे सीजे जिन नामे,
सफल होय निज जीहा ॥ जे जीजे जिन गुण समरता, स
फल जनम ते दीहा ॥ ५ ॥ जि० ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(महाविदेह क्षेत्र सुहामणुं ॥ ए देशी.)

जंवूद्विप जगत जलुं, अतीत चोवीसी सार ॥ मे० ॥ चो
था महाजस केवली, ठा सर्वानुभूति उदार ॥ मे० ॥ १ ॥
जीनवर नामे जय हुए ॥ श्री श्रीधर जिन सातमा, हवे चो
वीसी वर्त्तमान ॥ मे० ॥ श्री नमिजिन एकवीसमा, उगणी
समा मल्लि प्रधान ॥ मे० ॥ १ ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ श्री अर
नाथ अठारमा, हवे नावि चउवीसी जाव ॥ मे० ॥ श्री स्व
यंप्रज चोथा नमुं, ठा देवश्रुत मनलाव ॥ मे० ॥ ३ ॥ जि० ॥

श्री नृदयनाथ जिन सातमा, तेहने नामे मंगल माल ॥ मेण ॥
 उज्ज्व रंग वधामणां, वली लहिए प्रेम रसाल ॥ मेण
 ॥४॥ जिण ॥ अलिय विघन दूरे टले, डुरजन चित्युं नवि था
 ए ॥ मेण ॥ महिमा मोटाई वधे; वलि जगमांहि सुजस ग
 वाए ॥ मेण ॥ ५ ॥ जिण ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(सूण मोरी सजनी, रजनी न जावे रे ॥ ए देशी.)

पूरव जरते ते धातकीखंमे रे, अतीत चउवीसी गुण
 अखंमे रे ॥ चोथा श्री अकलंक सोजागी रे, ठठा देव सुजं
 कर त्यागी रे ॥ १ ॥ सप्तनाथ सप्तम जिनरायारे, सुरपति प्र
 णमें जेहना पायारे ॥ वर्तमान चोवीसी जाणो रे, एकवी
 समा ब्रह्मैष्ट वखाणो रे ॥ २ ॥ उगणीसमा गुणनाथ समरीए
 रे, अठारमा गांगिक मन धरीए रे ॥ कहुं अनागत हवे च
 उवीसी रे, धातकीखंडे हियडे हिसी रे ॥ ३ ॥ श्री सांप्रत चो
 था सुखदाइ रे, ठठा श्री मुनीनाथ अमाइ रे ॥ श्री विशिष्ट
 सप्तम सुखकारा रे, ते तो लागे मुऊ मन प्यारा रे ॥ ४ ॥ श्री
 जिन समरण जेहवुं मीठूं रे, एहवुं अमृत न जगमांहि दीठूं
 रे ॥ मुज सुमहोदय श्री जिन नामे रे, विजय लहीजे ठा
 मो ठामे रे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

(साहमेने टोमे पेसतां ॥ ए देशी.)

पुस्कर अर्ध पूरव दुआ जिन वंदिए रे, जरते अतीत च
 उवीसी के ॥ पाप निकंदिए रे ॥ चोथा सूमूड सुहंकरु, जि
 न वंदिए रे, ठठा व्यक्त जगदीश के ॥ १ ॥ पाण ॥ श्री कलाश्य

त सत गुण जस्या ॥ जि० ॥ हवे चउवीसी वर्तमान के ॥
 पा० ॥ कल्याणक ए दिन हुआ ॥ जि० ॥ लीजे तेहनां अचिवा
 न के ॥ १ ॥ पा० ॥ भरण्य वास एकवीसमा ॥ जि० ॥ जगणीस
 मा श्रीयोग के ॥ पा० ॥ श्री अयोग ते अठारमा ॥ जि० ॥ वि
 शीवरमणी संयोग के ॥ ३ ॥ पा० ॥ चोवीसी अनागत नजि
 ॥ जि० ॥ तिहां चोथा परम जिएम के ॥ पा० ॥ शुगरति ठछ
 नमुं ॥ जि० ॥ सातमा श्री निःकेश के ॥ ४ ॥ पा० ॥ प्रिय
 मेलक परमेसरू ॥ जि० ॥ एहनुं नाम ते परम निधान के
 ॥ पा० ॥ मोटानो जे आशरो ॥ जि० ॥ तेदयी लहिए जस
 बहुमान के ॥ ५ ॥ पा० ॥

॥ ढाल ६ छी ॥

(जोजिमा रे हंसा. ए देशी.)

घातकी खंमे रे पछिम नरतमा, अतीत चउवीसी सं
 जार ॥ श्री सर्वारथ चोथा जिनवरू, ठछ हरीजड घा
 ॥ १ ॥ जिनवर नामे रे मुऊ थाणद घणो ॥ ए आकणी ॥
 श्री मगधाधिप बड सातमा, हवे चउवीसी वर्तमान ॥ श्री
 प्रयथ प्रणमुं एकवीसमा, जेहनुं जगमा नही उपमान ॥ २ ॥
 जि० ॥ श्री अठोन्न जिनवर जगणीसमा, अठारमा महि
 ह नाथ ॥ हवे अनागत चउवीसी नमु, चोथा श्री दिनरूक
 शिवमाथ ॥ ३ ॥ जि० ॥ ठछ श्री जिन धनद सज्जारिण, सातमा
 पौषव देव ॥ हरपें जेहनारे चरण कमजतणी, सुर न सार
 रे सेव ॥ ४ ॥ जि० ॥ ध्याने मिलनुं रे एठवा प्रभु तणुं, बालस
 मांदि रे गंग ॥ जनम सफल करि मानु तेदयी, मुजस वि
 ज्ञान मुंग ॥ ५ ॥ जि० ॥

॥ ढाल ७ मी. ॥

(रूपज्ञनो वंश रयणायरु. ए देशी.)

पुस्कर पञ्चिम ज्वरतमां, धारो अतीत चञ्चवीसी रे ॥
चोथा प्रलंब जिनेसरु, प्रणामुं हिअडलें हीसीरे ॥१॥ एहवा
साहिब नवि वीसरे, कण कण समरिए हेजे रे ॥ प्रचु
गुण अनुजव योगथी, शोन्निए आतम तेजे रे ॥ए० ॥१॥
ए आंकणी ॥ ठठा चारित्रनिधी सातमा, प्रशमराजित
गुणधारो रे ॥ हवे वर्त्तमान चञ्चवीसीए, समरीजे जिन नामो
रे ॥ ए० ॥२॥ स्वामि सर्वज्ञ जयंकरु, एकवीसमा गुणगेहा
रे ॥ श्री विपरीत जगणीसमा, अविहरु धर्म सनेहारे ॥ए०
॥३॥ नाथप्रसाद अठारमा, हवे अनागत चञ्चवीसी रे ॥ चोथा
श्री अघटित जिन वंदिए, करम संतति जेणे पीसी रे ॥ए० ॥४॥
श्री ब्रमणेंड ठठा नमुं, रूपज्ञ चंजनिध वंडु रे ॥ सातमा
जग जस जयकरु, जिन गुण गातां आणंडु रे ॥ए० ॥५॥

॥ ढाल ८ मी. ॥

(जांजरीयानी. ए देशी.)

जंबूद्विप ऐरावते जी, अतीत चञ्चवीसी उदार ॥ श्री
दयांत चोथा नमुं जी, जग जनना आधार ॥१॥ मन मोहन
जिन जी, मनथी नही मुऊ दूर ॥ अजिनंदन ठठा नमुं जी,
सातमा श्री रतनेश ॥ वर्त्तमान चञ्चवीसीए जी, हवे जिन
नाम गणेश ॥ २ ॥ म० ॥ श्यामकोष्ठ एकवीसमा जी, जग
णीसमा मरूदेव ॥ श्री अतिपार्श्व अठारमा जी, समरुं चित
नितमेव ॥ ३ ॥ म० ॥ जावि चञ्चविसी वंदिए जी, चञ्चथा श्री
नंदिषेण ॥ श्री व्रतधर ठठा नमुं जी, टाले कर्मनी रेण ॥४॥

મળા શ્રીનિર્વાણ તે સાતમા જી, તેહશું સુજસ સનેહ ॥ જિમ
ચકોર ચિત ચંદસ્યું જી, જિમ મોરા મન મેહ ॥ મળ ॥૫॥

॥ ઢાલ ૯ મી. ॥

(પ્રથમ ગોવાલા તણે જવે જી. એદેશી)

પૂરવ અરધે ધાતકી જી, એરવતે જે અતીત ॥ ચઝવી
સી તેહમાં કહું જી, કહ્યાણક સુપ્રતીત ॥૧॥ મહોદય, સું
દર જિનવર નામ ॥ એ આંકણી ॥ ચોથા શ્રી સૌદર્ય નમું જી,
વંહ વારો વાર ॥ ઠઠા ત્રિવિક્રમ સમરીએ જી, સાતમા નારસિં
હ સાર ॥ ૨ ॥ મળ ॥ વર્તમાન ચઝવીસીએ જી, એકવીસમા
ક્ષેમંત ॥ સંતોપિત ઝંગણીસમા જી, અઢારમા કામનાથ સં
ત ॥ ૩ ॥ મળ ॥ જાવિ ચઝવીસી વંદિએ જી, ચોથા શ્રી મુનિ
નાથ ॥ ચંડદાહ ઠઠા નમું જી, જવ દવ નીરદ પાથા ॥૪॥ મળ ॥
દિલાદિત્ય જિન સાતમા જી, જન મન મોહનવેજિ ॥ સૂર
જસ લીલા પામિએ જી, જસ નામે રંગરેલ ॥૫॥ મળ ॥

॥ ઢાલ ૧૦ મી. ॥

(એ ઊંમી કિહાં રાખી. એદેશી)

પુસ્કર અરધ પૂરવ એરવતે, અતીત ચઝવીસી સંજારું
॥ શ્રી અષ્ટાહિક ચઝયા વાંદી, જવન બ્રમણ નિવારું રે ॥૧॥
જવિકા; એહવા જિનવર ધ્યાન, ગુણવંતના ગુણ ગાન રે ॥ જ
વિકા ॥ એહવા ॥૨॥ એ આંકણી ॥ વણિગ નામ ઠઠા જિન
નમિએ, સુરુ ધરમ વ્યવહારી ॥ ઝડયજ્ઞાન સાતમા સંજારું,
તીન જીવન ઝપગારી રે ॥૩॥ જળ ॥ વર્તમાન ચઝવીસી વંહ,
એકવીસમા તમોકંદ ॥ સાયકાઠુ ઝંગણીસમા સમરો, જન
મન નયનાનંદ રે ॥૪॥ જળ ॥ શ્રી ક્ષેમંત અઢારમા વંદો, જાવિ

चउवीसी ज्ञावो ॥ श्री निर्वाणी चोथा जिनवर, हृदय
कमल मांहि लावो रे ॥४॥ जण॥ ठठा श्री रविराज सातमा,
प्रथम नाथ प्रणमीजे ॥ चिदानंद घन सुजस महोदय; ली
ला लह्नी लहीजे रे ॥५॥ जण॥

॥ ढाल ११ मी. ॥

(करि कपट कूले रे लूठणां रे ॥ एदेशी.)

पष्ठिम ऐरवत कांइ जले, धातकीखंमे अतीत के ॥ च
उवीसीए पुरवास, चोथा जिन सुप्रतीत के ॥१॥ जिनवर
नाम सुहामणुं ॥ घडिय न मेढहाण जाय के, रात दिवस सु
ऊ सांजरे ॥ संजारे सूख आय के, जिनवर नाम सुहामणुं
॥ ए आंकणी ॥ श्री श्रीअवबोध ठठा नमुं, सातमा श्री वि
क्रमेंड के ॥ चोवीसी वर्त्तमानना हवे, संजारु जिनेंड के
॥२॥ जिण॥ एकवीसमा श्री सूझांति जी; उगणीसमा हरना
म के ॥ श्री नंदीकेश अठारमा; होजो तास प्रणाम के ॥३॥
जिण॥ ज्ञावि चोवीसी संजारीए, चोथा श्री महामृगेंड के ॥
ठठा यशोवित वंदिए; सातमा श्री धरमेंड के ॥४॥ जिण॥ म
न लाग्युं जस जेहशुं; न सरे तेह विण तास के ॥ तेणे मुऊ
मन जिन गुण शुणी; पामे सुजस विलास के ॥५॥ जिण॥

॥ ढाल १२ मी. ॥

पुस्कर पष्ठिम ऐवरते हवे, अतीत चउवीसी वखाणुं
जी ॥ अश्ववृंद चोथा जिन नमिए, ठठा कुटिलक जाणुं जी
॥ सातमा श्री वर्द्धमान जिणेश्वर, चउवीसी वर्त्तमाने जी ॥
एकवीसमा श्री नंदिकेश जिन, ते समरुं शुज ध्याने जी ॥१॥
उगणीसमा श्री धर्मचंड जिन; अठारमा श्री विवेको जी ॥

हवे अनागत चव्वीसीमां, संज्जारु शुज्जटेको जी ॥ श्री क
लाप चोथा जिन ठठा, श्री विसोम प्रणमीजे जी ॥ सात
मा श्री आरण जिन ध्यातां, जनमनो दाहो लीजे जी ॥ १॥
श्री विजयप्रनसूरी सूरान्ज्ये, दिन दिन अधिक जगीसे जी ॥
खंन नयरमा रही य चोमासु, संवत सत्तर चत्रीसे जी ॥ दो
ढसो कढ्याणकनुं गणणुं, ए में पुरुं किधुं जी ॥ डख चूरण
दीवाली दीवसे, मनवंगित फल लीधुं जी ॥ ३ ॥ श्री कढ्या
णविजय वर वाचक, वादि मतांगज सींहो जी ॥ तास सी
स श्री ज्ञानविजय बुद्ध, पंडित मांहि लीहो जी ॥ तास सी
स श्री जीतविजय बुद्ध, श्री नयविजय सोज्जागी जी ॥ वा
चक जसविजय तस सीसे, थूणीया जिन वडज्जागी जी
॥ ४ ॥ ए गणणुं जे कंठे करस्ये, ते शीवरमणी वरस्ये जी ॥
तरस्ये जव हरस्ये सवि पातिक, निज आतम ऊहरस्ये जी ॥
बारे ढाले जे नित्य समरस्ये, उचित काज आचरस्ये जी ॥
सुकुत महोदय सूजस महोदय, लीलाते आदरस्ये जी ॥ ५ ॥

॥ कलश. ॥

ए वार ढाल रसाल वारह, जावना तरुमंजरी ॥ वर
वार अंग विवेक पल्लव, वारवत शोना करी ॥ एम वार तप
विधि सार साधन, ध्यान जिन गुण अनुसरी ॥ श्रीनयविजय
बुद्ध चरण सेवक, जसविजय जयसिरि लहि ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन.

वापलमारे पातीकडां, तमे शुं करशो हवे रहीने रे ॥
श्री सिद्धाचल नयणे नीरख्यो, दरे जावो तुमे वहीने रे

॥वाण॥१॥ काल अनादी लगे तुम साथे, प्रीत करी नीरव
हीने रे ॥ आज थकी प्रभु चरणे रहिंशुं, एम सीखवीयुं म
नने रे ॥ वाण॥२॥ डुषम काले एणे नरते, मुक्ति नही संघे
एने रे ॥ पण तुज नक्ति मुक्तिने खेंचे, चमक नपर जेम लो
हने रे ॥ वाण॥३॥ बाज्य अन्धंतर शत्रु केरो, नय न होवे मु
ज मनने रे ॥ सेवक सुखीयो सुजस वीलासी, ते महिमा
प्रभु तुजने रे ॥ वाण॥४॥ शुद्ध सोहागण चूरण आप्युं, मि
थ्या पंक सोधणने रे ॥ आतमजाव थयो जव नीरमल, आणं
द तुज नजनने रे ॥ वाण॥५॥ नाम मंत्र तुमारो साध्यो, ते
थयो जग मोहनने रे ॥ तुज मुख मुझ देखी हरखुं, जिम चा
तुक जलधरने रे ॥ वाण॥६॥ अखय निधान तुज समकीत
पामी, कोण वंढे चल धनने रे ॥ शांत सुधारस कनक क
चोले, सिंचो सेवक तनने रे ॥ वा० ॥७॥ तुम विण अवर
देव न जाचुं, फरि फरि आ मनने रे ॥ ज्ञानविमल कहे नव
जल तारो, सेवक बांह ग्रहिने रे ॥ वाण॥८॥ इति॥

अथ श्री सिद्धाचलनुं स्तवन.

आज आणंद थयो, प्रेमनां वादल वरशां दहाडा सोहिला.

॥ ए देशी ॥

आज आणंद थयो, श्री सिद्धाचल निरख्या धन दिन
आजनो ॥ ए आंकणी ॥ आज आंगणे मोतीअ मेह वूठा,
म्हारे कुलदेव्या आपे तूठा ॥ आण॥ हुंतो रयण चिंतामणी
कर पायो, म्हारे कामकुंज आज घर आयो ॥ १ ॥ आण ॥
म्हारे आंगणे कळपपादप फलीनु, म्हारो जाग्यो पुन्य न

दय वलीन ॥आण॥ संघवी मोदी प्रेमचंदे, रूमो संघ चला
व्यो आणंदे ॥१॥ आण॥ लीखीय कंकोतरी देशदेशे, तुम्हे
जात्रा आवज्यो सुविशेषे ॥आण॥ सहु देश देशना सघ आ
व्या; ते तो पुन्य प्रवले घणुं सोहाया ॥३॥ आण॥ केई व्यव
हारी घणुं लटकाला; केई उत्तम जीव ठ हरीवाला ॥आण॥
केई शीलवंत केई पयचारी, केई सचीत्त तणा परीहारी ॥४॥
आण॥ विजय धर्मसूरी तपगच्छ राया, सिद्धिकेत्र फरसवा स
हु आया ॥ आण ॥ गिरि फरसिने आणंद पाया; वली पूज्या
रूपन्नजिणद पाया ॥५॥ आण॥ संवत अठार सात्रीस वर्षे;
चैतर सुदि तेरस दिन हर्षे ॥आण॥ ऋगुवारे जलो जस लीधो,
संघे साहमीवछल बहु कीधो ॥६॥ आण॥ इण गिरिवरीएअ
णसण कीधा, केई जिन उत्तम साधु सीधा ॥आण॥ तिणें उ
त्तम ए गिरिवर राया, फरसी कीजें निरमल काया ॥ आण
॥७॥ ए राजनगरना संघ मांहि, रथजात्रादिक कख्यां उछा
हि ॥आण॥ मांहि पटणी संघ साथे आयो, गिरि पद्मविजय
पुण्ये पायो ॥आण॥८॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलनुं रतवन ॥

आज तो वधाई राजा नाजिके डुवार रे, मरुदेवीने
वेटा जाया रूपन कुमार रे ॥ घनन घनन घंटा वाजे, देव
करे धेइकार रे ॥आण॥ १ ॥ इंझाणी सव मंगल गावे, लावे
मोति माल रे ॥ चंदन चरचित पाए लागे, प्रभु जीवो चिर
काल रे ॥आण॥२॥ दावि देवे साथि देवे, देवे मणि जंमार
रे ॥ हिर चिर पीतांबर देवे, देवे सरव सिणगार रे ॥ आण

॥ ३ ॥ अजोध्यामां नुहव होये, घर घर मंगलमाल रे ॥ के
वल कमला रूप निरंजन, आदिसर दयाल रे ॥ आज तो
वधाइ राजा नात्रिके डुवार रे ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ श्री सज्जायोनो समुदाय लिख्यते.

अथ श्री वीरना ११ गणधरनी सज्जाय.

(अजितजिणंदशुं प्रीतमी ॥ ए देशी.)

वीर पटोधर वंदीए, गुणधारी हो गुरु १ गौतमस्वाम ॥
रुद्धि वृद्धि सुख संपदा, नवनिधी हो प्रगटे जस नाम ॥ १ ॥
वीण ॥ २ अग्नीनूति ३ वायुनूतिसुं, पन्नर सत हो लहे संज
म नार ॥ ४ व्यक्त ५ सुधर्मा सहससुं, ते तरीया हो सुत
दरीया संसार ॥ ६ ॥ वीण ॥ ६ मंमीत ७ मौरीयपुत्र जी, सा
ढात्रिण त्रिण हो सत संयम लीध ॥ ८ अकंपित त्रि
सत्तसुं, ए अचलव्राता हो त्रिण सत प्रसीद्ध ॥ ९ ॥ वीण ॥ १०
मेतारज ११ प्रज्ञासना, सुध साधुजी हो त्रिण त्रिण सत ॥
चण्ड सहस मुनी वंदीये, साहुणी हो ठत्रीस सहस महंत
॥ ४ ॥ वी० ॥ वीरविमल कहे वीसुधसुं, विसुद्ध वंदो हो
एहवा अणगार ॥ तरण तारण तरी समा, समरथ हो शा
सन शणगार ॥ ५ ॥ वीण ॥ इति. ॥

अथ श्री ठंढणरूपिनी सज्जाय.

ठंढण रूपिजीने वंदना ॥ हुं वारीण ॥ उत्कृष्टो अणगार
रे ॥ हुंण ॥ अग्नीग्रह लीधो आकरो ॥ हुंण ॥ लवधे लेस्युं आहा

ર રે ॥ હું ॥ ૧ ॥ ઢં ॥ દિન પ્રતે જાએ ગોચરી ॥ હું ॥ ન મિલે
 સુધ આહાર રે ॥ હું ॥ ન લીએ મૂલ અસુજતો ॥ હું ॥ પિંજર
 હુવો ગાત રે ॥ હું ॥ ૨ ॥ ઢં ॥ હરી પુઠે શ્રી નેમને ॥ હું ॥ મુની
 વર સહસ્ર અઢાર રે ॥ હું ॥ ઝટકુષ્ઠો કુણા એહમે ॥ હું ॥ મુજ
 ને કહો કૃપાલ રે ॥ હું ॥ ૩ ॥ ઢં ॥ ઢંઢણ અધીકો દાહીન ॥
 હું ॥ શ્રીમુખ નેમી જિણંદરે ॥ હું ॥ કશ્ન ઝમાહો વાંઢવા
 ॥ હું ॥ ધન યાદવ કુલ ચદરે ॥ હું ॥ ૪ ॥ ઢં ॥ ગલીઆરે મુ
 નીવર મીલ્યા ॥ હું ॥ વાઢે કશ્ન નેરસ રે ॥ હું ॥ કિણહી
 મિથ્યાત્વિએ દેહીને ॥ હું ॥ આવ્યો જાવ વિશેષ રે ॥ હું ॥ ૫ ॥
 ઢં ॥ આવો અમ ઘર સાધુજી ॥ હું ॥ ઢ્યો મોદીક ઢે સુધ રે
 ॥ હું ॥ રૂપીજી લેશને વહ્યા ॥ હું ॥ પ્રજુજી પાસે વિસુદ્ધ રે ॥
 હું ॥ ૬ ॥ ઢં ॥ મુજ લવધે મોદીક મિલ્યા ॥ હું ॥ પુઢે કહો કૃ
 પાલ રે ॥ હું ॥ લવધ નહી વઘ તાહરી ॥ હું ॥ શ્રીપતી લવધ
 નિહાલ રે ॥ હું ॥ ૭ ॥ ઢં ॥ તો મુજને લેવો નહી ॥ હું ॥
 ચાહ્યો પરઠણ કાજ રે ॥ હું ॥ ઈટ નીજાઢે જાણે ॥ હું ॥
 ચુરે કર્મ સમાજ રે ॥ હું ॥ ૮ ॥ ઢં ॥ આવી સુધિ જાવ
 ના ॥ હું ॥ પામ્યો કેવલનાણ રે ॥ હું ॥ ઢંઢણ રૂપી મુગતે
 ગયા ॥ હું ॥ કહે જિનહર્ષ સુજાણ રે ॥ હું ॥ ૯ ॥ ઢં ॥ ઇતિ ॥

અથ શ્રી સીતાજીની સજ્ઞાય.

જનક સુતા હું નામ ધરાવું, રામ ઢે અંતરજામી ॥ પા
 લવ અમારો મેલને પાપી, કુલને લાગે ઢે યામી ॥ ૧ ॥ અ
 મસો માં જો ॥ માં જો માં જો માં જો ॥ અ ॥ મ્હારો નાહલીન
 હુહવાય ॥ અ ॥ મને સંગ કેનો ન સુહાય ॥ અ ॥ મ્હારું મન

मांहेथी अकुलाय ॥ अ०॥ ए आंकणी. ॥ मेरु महीधर ठाम
 तजे जो, पठर पंकज जगे ॥ जो जलधी मरजादा मुके, पां
 गलो अंबर पुगें ॥ अ०॥ १॥ तो पण तुं सांजलने रावण, नी
 श्वय शील न खंरु ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो प
 ण सत्य न ठंडु ॥ अ०॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणी लेवाने,
 हश्में घालें हाम ॥ सती संघाथे स्नेह करीने, कहो कोण सा
 धे काम ॥ अ०॥ ४ ॥ कुण परदारा संग करीने, आखो कुण
 जगरीड ॥ उंदो तो तुं जोने आलोची, सही तुज दाहामो
 फरीयो ॥ अ०॥ ५ ॥ जनक सुता हुं जगमां जाणे, नामंमल
 ठे ज्ञाई ॥ दशरथ नंदन शिर ठे स्वामी, लखमण करशे ल
 काई ॥ अ०॥ ६ ॥ हुं धणीआति पिउ गुण राति, हाथ ठे मा
 हरे ठाती ॥ रहे अलगो तुज वयणे न चलुं, कां कुले वाय ठे
 काती ॥ अ०॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन ए अवला, सीता जेह
 नुं नाम ॥ सतीयोमां सिरोमणी कहिये, नीत नीत होजो
 प्रणाम ॥ अ०॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री सोलसतीयोनी सज्ञाय.

(देशी चोपाइनी.)

सोल सतिनां दीजे नाम, जिम मनवंठीत होये काम ॥ जग
 ति जाव अति आणी घणो, जाव धरीने जवियण सुणो ॥ १ ॥
 १ ब्राह्मी श्चंदनवाला नाम, ३ राजीमति ४ शैपदी अन्निराम ॥
 ५ कौशल्याने ६ मृगावती, ७ सुलसा ८ सीता ए महासती ॥ ९ ॥
 सती ए सुजडा सोहामणी, पोल उधामी चंपातणी ॥ १० ॥ शिवा
 नाम जपो जगवती, जगीस आपे ११ कुंती सति ॥ १३ ॥ १२

शिववती शीले सोचती, जजो जावे ए नीरमल मती ॥१३॥
 दमयंतीने १४ चूला सती, १५ प्रजावतीने १६ पद्मावति
 ॥४॥ ए सोल सतीनां नाम उदार, जणतां गुणतां शिवसु
 ख सार ॥ झाकिनी माकिनी व्यंतर जेह, सती नाम नंवि
 प्रजवे तेह ॥५॥ आधि व्याधि सवी जाये रोग, मन गमिता
 सवि पामे जोग ॥ संकट विकट सवि जाये दूर, तिमिर सं
 मूह जीम जगे सूर ॥६॥ राज रुद्रि घर होये बहु, राय रां
 णा ते माने सह ॥ वाचक धर्मविजय गुरु राय, रतनविज
 य जावे गुण गाय ॥७॥ इति. ॥

अथ श्री क्रोधनी संज्ञाय,

कडुवां फल ठे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले ॥ रीस तणो
 रस जाणीये, हलाहल तोले ॥क० ॥ १॥ क्रोधे कोरुपुरव त
 णुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो ले
 खे न थाय ॥क०॥१॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन
 वैराग ॥ शीप्यना क्रोध थकी थयो, चंमकोसीयो नाग
 ॥क०॥ ३॥ आग जे जे घर थकी; ते पहेलुं घर वाले ॥ ज
 लनो जोग जो नवी मले, तो पासेनुं परजाले ॥क० ॥ ४ ॥
 क्रोध तणी गती एहवी, कहे केवलनाणी ॥ दाय करे जे
 हितनी; जालवजो एम जाणी ॥क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे
 क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो नीरमली, उपे
 सम रस नाहि ॥क०॥६॥ इति. ॥

अथ श्री माननी सञ्ज्ञाय.

रे जीव मान न कीजीए; माने विनय न आवे रे ॥ वि
नय विना विद्या नही; तो किम समकित पावे रे ॥ रेण॥१॥
समकित वीण चारित्र नही; चारित्र वीण नहि मुक्ति रे ॥
मुक्तिनां सुख ठे सास्वतां; ते किम लहीये जुक्ति रे ॥ रेण॥२॥
विनय बडो संसारमां; जग मांहि अधीकारी रे ॥ माने गुण
जाये गली, प्राणी जोज्यो विच्यारी रे ॥ रेण॥३॥ मान की
यो जो रावणे; तो ते रामे माख्यो रे ॥ डुरजोधन गरवे करी;
अंते सवि हाख्यो रे ॥ रेण॥४॥ सुका लाकमा सारीखो; डु
खदाइ ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने; देज्यो तुमे दे
सोटो रे ॥५॥ रेण॥इति. ॥

अथ श्री मायानी सञ्ज्ञाय.

समकितनुं मूल जाणीए जी; सत्य वचन साक्षात ॥
साचामां समकित वसे जी; मायामां मिथ्यात रे ॥ प्राणी म
करीस माया लगार ॥१॥ मुख मीठी जूठी मने जी; कुड क
पटनो रे कोट ॥ जीने तो जी जी करे जी; चीतमां ताके चो
ट रे ॥ प्राण॥२॥ आप गरजे आघो पडे जी; पिण न धरे बीस
वास ॥ मनसुं राखे आंतरो जी; ए मायानो पास रे ॥ प्राण
॥३॥ जेस्युं बांधी प्रीतनी जी; तेस्युं रहे प्रतीकुल ॥ मेल
न ठंमे मन तणो जी; ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥४॥ तप
कीधो माया करी जी, मीत्रसुं राख्यो रे जेद ॥ मलि जिने
श्वर जाणजो जी; तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्राण ॥५॥ उदयरत्न
कहे सांजलो जी; मेलो मायानी बुध ॥ मुक्तिपुरी जावा त

णो जी; ए मारग ठे सुध रे ॥ प्राण ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री लोचनी सञ्ज्ञाय.

तुमे लक्षण जोज्यो लोचनारें; लोचने मुनि जन पामे खो
चना रे ॥ लोचने माहा मन डोहलां करे रे; लोचने छुरघट पंथे
संचरे रे ॥ तुण ॥ १ ॥ तजे लोचन तेहनां लेअं नामणा रे, बली
पाये नमीने करुं खामणां रे ॥ लोचने मरजादा न रहे केह
नी रे; तुमे संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु ॥ २ ॥ लोचने घर मे
ली रणमां मरे रे; लोचने उंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोचने पा
प जणी पगलां जरे रे; लोचने अकारज करतां न जसरे रे ॥
तुण ॥ ३ ॥ लोचने मनहुं न रहे नीरमलुं रे; लोचने सगपण नासे
वेगलुं रे ॥ लोचने न रहे प्रीतने पावुं रे; लोचने धन मेले बहु
एकलुं रे ॥ तुण ॥ ४ ॥ लोचने पुत्र प्रते पीता हणे रे, लोचने हत्या
पातिक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोचने करी रे, उपर म
शिधर थाये ते मरी रे ॥ तुण ॥ ५ ॥ जोतां लोचनो थोचन दिसे
नहि रे, एहवुं सूत्र सिद्धाते कहुं सहि रे ॥ लोचने चक्री संजु
म नामे हुवो रे, तेतो समुद्र माही डुबी मुवो रे ॥ तु ॥ ६ ॥
एम जाणीने लोचने ठंमजो रे; एक धर्मसुं ममता मंरु
ज्यो रे ॥ कवी उदयरतन जांखे मुदा रे, वंडु लोचन तजे ते
हने सदा रे ॥ तुण ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री वणजारांनी सञ्ज्ञाय.

नरजव नयर सोहामणुं; वणजारा रे ॥ पामीने कर
जे वेपार, अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवर तणा ॥ वण ॥

पोठी नरजे नदर ॥अण॥१॥ शुन परिणाम विचित्रता॥वण॥
 करियाणां बहु मूल ॥अण॥ मोह नगर जावा नणी ॥वण॥
 करजे चित्त अनुकुल ॥अण॥१॥ क्रोध दावानल नुनवे॥वण॥
 मान विषम गीरिराज ॥अण॥ नुलंघजे हलवे करी ॥वण॥
 सावधान करे काज ॥अ०॥३॥ वंसजाल माया तणी ॥वण॥
 नवि करजे विसराम ॥अण॥ खाड मनोरथ नट तणी॥वण॥
 पूरणनुं नहि काम ॥अण॥४॥ राग छेप दोय चोरटा ॥वण॥वा
 टमां करजे हेराण ॥अ०॥ विविध वीरज नुल्लासथी ॥व०॥
 ते हणजे सीर ठाय ॥अण॥५॥ एम सवि विघन विदारीने
 ॥वण॥ पोचजे शीवपुर वास ॥अ०॥ खय उपसम जे नाव
 ना ॥वण॥ पोठी नखा गुण राश ॥अण॥६॥ खायकजावे ते
 अशे ॥व०॥ लाज होसे ते अपार ॥अण॥ उत्तम वणज जे
 एम करे ॥वण॥ पद्म नमे वारंवार ॥अण॥७॥इति॥

अथ श्री सोदागरनी सञ्ज्ञाय.

(लावो लावोने राज मोंघां मूलां मोती. ए देशी)

सुण सोदागर वे, दिलकी बात हमेरी॥ ते सोदागर डर
 विदेशी, सोदा करणकुं आया ॥ मोसम आए माल सवाया,
 रतनपुरीमें ठाया ॥१॥ सुण॥ तीनुं दलालकुं हर समजाया,
 जिनसे बहोत नफाया ॥ पांचु दीवानुं पात्रं पमाया, एककु
 चोकी बिठाया ॥२॥ सुण॥ नफा देखकर माल विहराणा, चु
 आ कटें न युं धरना ॥ दोनुं दगाबाजी डर करनां, दीपकी
 ज्योते फरना ॥३॥ सु०॥ नर दिन बली मेंहलमें रहेना, वं
 दरकुं न हलाना ॥ दश सेरसें दोस्तहि करना, उनसें चित

मीलाना ॥४॥ सुण ॥ जिनहर तजना जिनवर नजना; सज
ना जिनकुं दलाई ॥ नवसर हार गलेमें रखना; जखना ल
खकी कटाई ॥५॥ सुण ॥ शिरपर मुगट चमर ढलाई; अम
घर रंग वधार्ई ॥ श्री शुभ वीरविजय घर जाई; होत सता
वीस गाई ॥६॥ सुण ॥ इति ॥

अथ श्री आप स्वप्नावमां स्थिर रहेवानी सञ्ज्ञाय.

आप स्वप्नावमां रे; अवधु सदा मगनमां रहेना ॥ ज
गत जीवहे कर्माधीना, अचरीज कटुय नलीना ॥ आण ॥ १ ॥
तुम नही केरा कोई नही तेरा; क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा
हे सो तेरी पासे; अवर सवे अनेरा ॥ आण ॥ २ ॥ वपु वीना
सी तुं अवीनासी; अब हे इनकुं वीजासी ॥ वपु संग जब स
र्व नीकासी; तब तुम सीवका वासी ॥ आण ॥ ३ ॥ रागने री
सा दोय खवीसा; ए तुम छवका दिसा ॥ जब तुम उनकुं
छर करीसा, तब तुम जगका इसा ॥ आण ॥ ४ ॥ परकी आशा
सदा नीराशा; एहे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अ
ज्यासा; लहो सदा सुख वासा ॥ आण ॥ ५ ॥ कवहीक काजी
कवहीक पाजी; कवहीक दुआ अपत्राजी ॥ कवहीक
जगमां कीरति गाजी; सब पुदगलकि बाजी ॥ आण ॥ ६ ॥ सुध
उपयोगने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलं
ककुं छर निवारी; जीव वेर शिव नारी ॥ आण ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री सङ्कन शीख आत्मवोधनी सञ्ज्ञाय.

सांजल सयणां साची सुणावुं; पूरव पून्ये तुं पाम्यो

रे जाइ ॥ नरक नीगोदमां जमतां नरजव; ते नीःफल किम
 वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥१॥ जैनधरम जयवंतो जगमां; धा
 री धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघ घटा सरीखा गज साटे; ग
 रधज्ज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ सां० ॥२॥ कट्पवृद्ध कोहाडे
 कापी; धंतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणी चिंतित पूरण
 ते; काग उडावण डारे रे जाइ ॥ सां० ॥३॥ एम जाणी जा
 वा नवी दिजे; नर नारी नरजवने रे जाइ ॥ उत्तखी सुद्ध
 रमने साधो; जे मान्यो मुनी मनने रे जाइ ॥ सां० ॥४॥ जे
 विजाव परजावमां जजीए; रमण स्वजावमां करीए रे जा
 इ ॥ उत्तम पद पद्मने अवलंबी; नवियण नवजल तरीए
 रे जाइ ॥ सां० ॥५॥ इति ॥

अथ श्री आत्मबोधनी सन्ध्या.

हो सुण आतमा मत पड मोहपंजर मांहि; माया जा
 ल रे ॥ धन राज्य जोवन रूप रामा; सूत सुता घरवार रे ॥
 हुकम होदा हाथी घोडा; कारमो परिवार माया जाल रे ॥
 हो० ॥१॥ अतूली बल हरि चक्री रामा; तुं जो जित मद मत्त
 रे ॥ क्रूर जम बल निकट आवे; गलीत जाये सत्त ॥ मा०
 ॥२॥ हो० ॥ पुहवीने जे छत्रपरे करे; मेरुनो करे दंड रे ॥ तेह
 पण गया हाथ घसंता; मुकी सर्व अखंर मा० ॥३॥ हो० ॥
 जे तखत बेसी हुकम करता; पेहेरी नवला वेस रे ॥ पाग
 शेरा धरत तडा; मरी गया जम देश मा० ॥४॥ हो० ॥ मुख
 तंबोलने अधर राता; करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल
 पुन्य घाठे; करत पर घर टेल मा० ॥५॥ हो० ॥ नज सदा

जगवंत चेतन; सेव्य गुरु पद पद्म रे ॥ रूप कहे करे धर्म
करणी, पामे सास्वत सद्म मा० ॥६॥ हो० ॥ इति. ॥

अथ श्री आत्मशीख संज्ञाय.

(राग रामगिरी.)

आत्म रामे रे मुनि रमे, चित्त विच्यारीने जोय रे ॥
तादृहं दिते नवि कोय रे, सहु स्वारथ मिळ्युं जोय रे,
जन्म मरण करे जोय रे, पुंठे सब मिलि रोय रे ॥ आ०
॥ १ ॥ सजन वरग सवि कारमो, कुनो कुटुंब परिवार
रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विष नहि कोइ
आधार रे; जिएँ पामे जवपार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत
कलेवर मुकियां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ नव उदवे
गे रे तुं जन्म्यो, तोहि न आव्यो तूज अंत रे, चेतो हृदय मां
हि संतरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोगव्या, देव मनुअ ग
ति मांहिरे ॥ तृती नपाम्यो रे जीवमो, हजी तुज बांठा ठे
त्यांहि रे, आपे सतोष चित्त मांहिरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान क
रो रे आत्म तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादी संव
ध तुज को नहि, शुद्ध निश्चय एम धार रे; एणि विध निज
चित्त तार रे, मणिचंद्र आत्म तार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री सहजानंदीनी संज्ञाय.

(बीजी असरण जावनानी देशी.)

सहजानंदी रे आत्मा, सुतो कांइ नचिंत रे ॥ मोह
तणा रणिया जमे, जाग जाग मतिवंत रे ॥ लुटे जगतना

जंत रे, नांखी वांक अत्यंत रे ॥ नरकावास ठवंत रे, कोई वि
 रला नगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परणति नजी, माया क
 पट कराय रे ॥ कास कुसुम परे जीवने, फोगट जनम ग
 माय रे ॥ माथे जय जमराय रे, स्यो मन गर्व धराय रे ॥ स
 हु एक मारग जाय रे, कुण जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥
 रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाळ्या विण धाग रे ॥ द
 श माथां रण रमवड्यां, चांच दीए सिर काग रे ॥ देव गया स
 वि नाग रे, न रह्यो माननो ठाग रे ॥ हरि हाथे हरि नाग रे,
 जोज्यो जाइना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाळ्या केइ चालस्ये,
 केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नीत्य प्रते, जोतां लगन
 हजार रे ॥ देश विदेश सधार रे, तेनर इणे संसार रे ॥ जातां
 जम दरवार रे, न जुए वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायण पुरी
 द्वारिका, बलती मेहेली निरास रे ॥ रोता रणमां रे एकजा,
 नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु ठाया आवास रे, जल ज
 ल करी गयो सास रे ॥ बलनड सरोवर पास रे, सुणी पांम
 व शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ राजी गाजीने बोलता, करता हु
 कम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान
 रे ॥ ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए रुद्धि अश्विर निदान रे ॥ जे
 हवुं पिंपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ बालेश
 र विना एक घन्नी; नवि सोहातुं लगार रे ॥ ते विना जनमा
 रा वहि गया; नहि कागल समाचार रे ॥ नहि कोइ कोइनो
 संसार रे; स्वारथीयो परिवार रे ॥ माता मरुदेवि सार रे; पो
 हत्यां मोह मोऊार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अ
 धिको राग विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंढे विषय

गमार रे ॥ जुन सुरीकंता जे नार रे, विप देती जरतार रे ॥
 नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ह
 सी हसी देता रे ताळीयो ॥ सज्या कुसुमनी सार रे, ते नर
 अंते माटी थया ॥ लोक चणे घरवार रे, धरता पात्र कुंजार
 रे ॥ एहवुं जाणी असार रे, ठंमे विषय विकार रे ॥ धन तेह
 नो अवतार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ आवचा सुत शिव वस्था, वली ए
 लाची कुमार रे ॥ धीग धीग विषया रे जीवने, लही वैरा
 ग्य रसाल रे ॥ मेहेली मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल
 रे ॥ धन करकंडु झूपाळ रे ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री शुद्धविजय सु
 गुरु लही, धर्मरण धरो ठेकरे ॥ वीर वचन रस सेलमी,
 चाखे चतुर विवेकरे ॥ न गमे ते नर जेकरे, धरता धर्मनो
 ठेकरे, नवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

अथ श्री सार बोलनी संक्षाय,

सरसति सामिनी पय प्रणमेव, सहगुरु नाम सदा
 समरेव ॥ बोलीत इणीपरे आचार, जोइ लेज्यो जाण वि
 चार ॥ १ ॥ १ पंक्ति ते जे नाणें गर्व, श्ज्ञानी ते जे जाणे
 सर्व ॥ इतपसी ते जे नाणे क्रोध, कर्म आठ जीते ते श्ज्यो
 ध ॥ २ ॥ २ उत्तम ते जे बोले न्याय, धर्म ते जे मन नीर
 माय ॥ ३ ॥ ३ ठाकूर ते जे पाले वाच, सहगुरु ते जे जाणें साच
 ॥ ४ ॥ ४ एगिरुते ते जे गुण आगलो, स्त्री परिहार करे ते १० ज
 लो ॥ ५ ॥ ५ मेलो ते जे निदा करे, श्पापी ते जे हिंसा आ
 चरे ॥ ६ ॥ ६ श्मूर्ति ते जे जिनवर तणी, श्किर्ति ते जे बीजे सु

णि ॥ १४ लब्धी ते गौतम गणधार, १५ बुद्धी अधीको अजय
 कुमार ॥ ५ ॥ १६ श्रावक ते जे लहे नवतत्व, १७ कायर ते
 जे मुके सत्व ॥ १८ मंत्र खरो ते श्री नवकार, १९ देव ख
 रो जे सुगति दातार ॥ ६ ॥ २० पदवी ते तीर्थंकर तणी, २१
 मति ते जे उपजे आपणी ॥ २२ समकीत ते जे साचुं गमे,
 २३ मिथ्यामति ते जुलो नमे ॥ ७ ॥ २४ मोटो ते जे जाणे पर
 पीड, २५ धनवंत ते जे ज्ञागे ज्ञीम ॥ मन वश आणे ते २६
 बलवंत, आलसथी अलगो २७ पुन्यवंत ॥ ८ ॥ कामी ते नर
 कहीए २८ अंध, मोहजाल ते २९ मोटो बंध ॥ ३० दारिद्र्य
 ते धर्म हिन, दुरगति मांहि रुजे ते ३१ दिन ॥ ९ ॥ ३२ आगम
 ते जिहां बोली दया, ३३ मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ ३३ सं
 तोषि ते सुखीया थया, ३४ दुखीया ते जे दोने ग्रह्या ॥ १० ॥
 ३५ नारी ते जे होये सती, ३६ दर्शन ते जे उघो मुहपति ॥
 राग द्वेष टाले ते ३७ यति, सुधुं जाणे ते ३८ जिनमति
 ॥ ११ ॥ ३९ काया ते जे शिथिले पवित्र; माया रहित होये ते
 ४० मित्र ॥ वृद्धापण पाले ते ४१ पुत्र; धर्म हाण पामे ते
 ४२ शत्रु ॥ १२ ॥ ४३ वैरागी ते विरमे राग; ४४ तारु ते जव तरे
 अथाग ॥ ४५ रोष नरक तणो ए माग; ठाग हणीने मागे
 त्याग ॥ १३ ॥ ४६ देह मांहि ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेखे
 ४७ दीह ॥ ४८ रस मांहि उपसम रस लिह, थूलीजड
 ४९ मुनिवरमां सिंह ॥ १४ ॥ ५० साचूं ते जे जिननुं नाम, जि
 ननुं देहरुं जिहां ते ५१ गाम ॥ ५२ न्यायवंत कहिये ते राम,
 ५३ योगी ते जे जीते काम ॥ १५ ॥ एह बोल बोळ्या मे ख
 रा, सार नथि एहथी उपरा ॥ कहे पंमित लक्ष्मी कछोल,

धर्मरंग मन धरज्यो चोल ॥१६॥ इति॥

अथ श्री सोलसतियोनी सज्ञाय.

(देशी त्रिपदिनी.)

आदिनाथ आदे जिनवर वंदि, सफल मनोरथ किजी
 ए ए ॥ प्रजाति उठी मंगलीक कामे, सोल सतिनां नाम लि
 जीए ए ॥१॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी नरतनी
 बेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोल सति मांहि
 जे वडी ए ॥२॥ बाहुवल जगनी सतिय सिरोमणी, सुंदरी
 नामे रूपन सुता ए ॥ अंक सरूपे त्रिभुवन मांहे, जेह अनो
 पम गुण जुता ए ॥ ३ ॥ श्चंदनवाला बालपणेथी, शियल
 वंति सुघ श्राविका ए ॥ अमदने बाकुले वीर प्रतिलाज्या,
 केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारणी नं
 दनी, धराजेमति नेम बल्लजा ए ॥ जोवन बेसे कामने जि
 ति, संयम लिये देव छल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच नरतारी पांरुव
 नारी, डुपद एतनया बखाणीए ए ॥ एकसो आठे चिर पु
 राणां, शियल महिमा तसु जाणिए ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनि
 नारि निरुपम, दकौशल्या कुल चंझिका ए ॥ शियल सलु
 णी राम जनेता, पुन्य तणी परनालीका ए ॥ ७ ॥ कोसंघिक
 ठामे सतानिक नामे, राज करे रंग राजीनु ए ॥ तस घर घ
 रणी उभृगावति सति, सुरजवने जस गाजीनु ए ॥ ८ ॥ सु
 लसा साची शियल न काची, राची नहि विपयारसे ए ॥
 मुखरु जोतां पाप पुलाये, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥
 राम रघुवंशी तेदनी कामनी, जनक सुता ए सिता सति ए

॥ जग सहु जाणे धिज करंतां, अनल शितल थयो शियल
 श्री ए ॥१०॥ काचें तांतणे चालणी वांधी, कुवा थकि जल
 काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सति १०सुनझ, चंपा वार उ
 घामीयुं ए ॥११॥ सुर नर वंदित शियल अखंमीत, ११शिवा
 शिवपद गामनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइए, वलिहा
 री तसु नामनी ए ॥१२॥ हस्तिनापुरे पांडुरायनी, १२कुंता
 नामे कामनी ए ॥ पांढव माता दशे दसारनी, वहेन पति
 व्रता पदमनी ए ॥१३॥ १३शिलवती नामे शिलव्रत धारणी;
 त्रिविधे तेहने वंदिए ए ॥ नाम जपंतां पातिक जाए, दर्शने
 दूरित निकंदिए ए ॥१४॥ निषधा नयरी नल नरिंदनी, १४दव
 दंती तस गेहनि ए ॥ संकट पडे शियलज राख्युं, त्रिभुवन
 किरती जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता,
 १५पुफचूलाने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दा
 ता ॥ सोलमि सति १६पद्मावति ए ॥ १६॥ विरे ज्ञांखि शा
 स्त्रे साखि, उदयरत्न जंणे मुदा ए ॥ वाहाणलां वातां जे
 नर नणशे, ते लहेशे सुख संपदा ए ॥१७॥ इति ॥

अथ श्री वीसथानक तपनी सज्ञाय.

(श्री सिमंधर साहेव आगे. ए देशी.)

अरिहंत पहेले थानक गणिए, बिजे पद सिद्धाणं ॥
 त्रिजे पवयण आयरिअ चोथे, पांचमे पद थेराण रे ॥ १ ॥
 नविया, विस थानक तप किजे ॥ जुली विस करिजे रे ॥
 न० ॥ गणणुं एह गणिजे रे ॥ न० ॥ जिम जिनपद पा
 मीजे रे ॥ न० ॥ नरनव लाहो लिजे रे ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥

नवजाय ठे सव साहुणं, सातमें आठमें नाण ॥ नवमे दंस
 ए दशमे विणयस्त, चारित्र इग्यारमें जाणो रे ॥ जण॥१॥ विण॥
 वारमे वंन्नवयधारिणं, तेरमे कीरिआणं ॥ चउदमे तव प
 न्नरमे गोयम, सोलसमे नमो जिणाणं रे ॥ जण॥३॥ विण॥
 चारित्रस्त सतरमे जपिए, अठारसमे नाणस्त ॥ उंगणीस
 मे नमोसुयस्त संनारो, विसमे नमो तिठस्त रे ॥ जण॥४॥
 विण॥ एकासणादिक तप देव वंदण, गुणणुं दोय हजार ॥
 संघवी विनय बुध सिस सूदर्शन, जंपे एह विच्यारो रे
 ॥ जण॥५॥ विण॥ इति. ॥

अथ श्री आंवेले तपनी संज्ञाय.

गुरु नमतां गुण उपजे, बोले आगम वाण ॥ श्री सि
 पालने मयणां, सदाए गुणखाण ॥१॥ श्री मुनिचंड मुनिस्
 रु, बोले अवसर जाण ॥ ए आंकणी ॥ आंवेलेनो तप वरणवे,
 नवपद नेवे रे निधान ॥ कष्ट टले आशा फले, बाधे वसु
 धा वान ॥ श्रीण॥१॥ रोग जाये रोगी तणा, जाये शोक संता
 प ॥ वाहालां वृंद जेलां मले, पुन्य वधे घटे पाप ॥ श्रीण॥३॥
 उजल आसो शुद्धकी, तप मांड्यो तेणे जेह ॥ पुरो तप
 पुनम लगि, कामनि कंथ सनेह ॥ श्रीण॥४॥ चैत्र शुद्ध सात
 मथकि, नव आंवेले निरमाय ॥ ५म एकाशी आंवेले, ए त
 प पुरो थाय ॥ श्रीण॥५॥ राज निकंटक पालतो, नव सत
 वर्ष विलंब ॥ देशव्रतिपणूं आदखुं, दिपाव्यो जग जन ॥
 श्रीण॥६॥ गज रथ सहस ते नव जला, नवलख तेजि तो
 खार ॥ नवकोमि पायदल जुलुं, नव नंदन नव नार ॥ श्रीण॥

॥७॥ तप जप उजवी ते थकि, लिधुं नवमुं सर्ग ॥ सूर नर
नां सूख जोगवि, नवमे नव अपवर्ग ॥ श्री० ॥८॥ दंसविज
य कविरायनो, जिम जल उपर नाव ॥ आप तख्या पर ता
रस्ये, मोहन सहज स्वनाव ॥ श्री० ॥९॥ इति॥

अथ श्री सामायकना ३९ दोषनी सज्ञाय.

शुन गुरु चरणे नामि सिस, सामायकना दोष बत्रिस
॥ कहेस्युं तिहां मनना दश दोष, दुशमन देखी धरतो १ रो
प ॥१॥ सामायक अविवेके ९करे, ३अर्थ विचार न हश्मे
धरे ॥ उदवेग धमन वंढे एजस घणो, न ६करे विनय वमेरा
तणो ॥२॥ उजय आणे चित्ते णव्यापार, एफल संसय १०नी
आणां सार ॥ हवे वचनना दोष निवार, १कुवचन बोले क
रे ९टुंकार ॥३॥ लेइ कुंची ३जा घर उघाम, ४मुख लवरी
करतो ए वढवाम ॥ कहे ६ आवो जावो बोले उ गान, मोह
एकरी हुलरावे बाल ॥४॥ करे ए विकथा ने १०हसे अपार,
ए दश दोष वचनना वार ॥ कायाना हवे डपण वार, १चप
लासन जोवे दिशि ९च्यार ॥५॥ ३सावद्य काम करे संघाय,
४आलस मोमे नुंचे हाथ ॥ पग लंबे वेसे एअविनित, उठिं
गण ले थांनो दर्जीत ॥६॥ मेल उउतारे एखरज खणाय,
पग उपर चढावे एपाय ॥ अति १०उघाडुं मेहेले अंग, हां
के ११तिम वलि अंग उपांग ॥७॥ १२ निझाए रस फल नि
गमे, करहा कंटक तरुए जमे ॥ ए बत्रिसे दोष निवार, सा
मायक करज्यो नर नार ॥८॥ समता ध्यान घटा उजली,
केसरी चोर हुन केवली ॥ श्रीशुन विर वचन पालति, स

रगे गइ सुलसा रेवति ॥ ए॥ इति ॥

अथ श्री मुहपतिना ५० बोलनी सज्ज्ञाय.

॥ ढाल. ॥

सिरि जंबू रे विनय जगति शिर नामिने, करजोडि रे
पूछे सोहम स्वामीने ॥ जगवंता रे कहे शिव कांता किम
मले, कहे सोहम रे मिथ्या भ्रम दूरे टले ॥ चूटक ॥ दूरे
टले विष गरल इहा, उनय मारग अनुसरि ॥ एक ज्ञान
दूजी करत किरिया, अजेदारोपण करि ॥ जिम पंगु दर्शि
त चरण कर्पित, अंध विहुं निज पूर गया ॥ तिम सत्व स
जतां तत्व जजता, जविक केइ सुखिया थया ॥ १ ॥

॥ ढाल. ॥

वैकलड्युं रे कष्ट ते करवुं सोहीलु, पण जंबु रे जाण
पणुं जग दोहिलुं ॥ तिणे जाणी रे आवश्यक किरिया करो,
उपगरणे रे रजहरणो मुहपति धरो ॥ चूटक ॥ मुहपति
स्वेते मानोपेते, सोल निज अंगुल जरी ॥ दोय हाथ जालि
दग निहाली, दृष्टि पमिलेहण करी ॥ तिहा सूत्र १ अर्थतत्व
करीने, सद्धुं एम जाविये ॥ नचावचा रूप तिगतिग, पखो
मा पट लाविए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

१ समकित मोहनी रे ३मीश्र ४ मिथ्यातने परिहरुं, ५
काम राग रे ६ स्नेह ७ दृष्टी राग परिहरुं ॥ ए साते रे बोल क
ह्या हवे आगले, अंगुली वचे रे त्रण्य वधुटक कर तले ॥

॥ त्रूटक ॥ कर तले वामें अंजली धरी, अखोभा नव की
जीए ॥ प्रमार्जन नव तिमज करीए, तिग तिगंतर लिजीए
॥ णसुद्ध देव णसुगुरु १० सुधर्म आदरुं, १३ प्रतिपत्ती परिह
रुं ॥ वलि १४ ज्ञान १५ दर्शन १६ चरण आदरुं, विराधक
१ एत्रिक अपहरुं ॥ ३ ॥

॥ ढाल. ॥

१० मनोगुप्ती रे ११ वचन १२ कायगुप्ती जजुं, १३ मनो
दंम रे १४ वचन १५ कायदंम तजुं ॥ पचवीसे रे बोल ए मुह
पतिना लह्या, हेवे अंगना रे परिहरुं एम सघला कह्या ॥

॥ त्रूटक ॥ कह्या वधटक करी परस्पर, वाम हाथे त्रिक क
रो ॥ १ हास्य २ रति ३ अरति ठंमी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥
४ नय ५ शोक ६ डुगंठा तजीने, पयाहिणे आचरो ॥ ७ कृश
लेश्या ८ नील एकापोत, नीलामें त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥

॥ ढाल. ॥

१० रस गारव रे ११ रुद्धि १२ शाता गारवा, मुख हड्मै रे
त्रण्य त्रण्य एम धारवा ॥ १३ माया सत्त्व रे १४ नियाण १५ मि
थ्यात टालीए, वाम खंधे रे १६ क्रोध १७ मान दोय गाली
ए ॥ त्रूटक ॥ गालीए १८ माया १९ लोभ दक्षिण, खंध उर्द
अधो मली ॥ त्रिक वाम पादे २० पुढवीने २१ अप; २२ तेजनी
रक्षा करुं ॥ जिमणे पगे त्रण्य २३ वाज २४ वणसई, २५ त्रस
काय रक्षा करुं ॥ पंचास बोले पमीलेहण, करत ज्ञानी
जव हरुं ॥ ५ ॥

॥ ढाल. ॥

एह मां हिंथी रे चालीस बोले ते नारीने, ३ शिस ३ ह

दयना रे ४ खंध बोल दश वारीने ॥ इणि विधिस्थुं रे पम्मी
लेहणथी शिव लहो, अविधि करिरे ठकायनो विराधक क
हो ॥ चूटक ॥ कह्यो किंचित आवस्यकथी, तथा प्रवचन
सारथी ॥ ज्ञावना चेतन पावना कही, गुरु वचन अनुसार
थी ॥ शिव लहे जंबू रहेज्यो शुभ, वीरविजयनी वाणीए ॥
मन मांकडुं वनवास रमतुं, वस्य करी घर आणीए ॥६॥

अथ श्री रात्रीजोजनना दोषनी संज्ञाय.

पुन्य संजोगे नरजव लाधो, साधो आतम काज ॥ वि
पया रस जाणी वीप सरीखो, एम ज्ञाखे जिनराज रे ॥१॥
प्राणी, रात्रीजोजन वारो ॥ आगम वाणी साची जाणी,
समकित गुण सहीनाणी रे ॥प्राण॥ एआंकणी ॥ अचक वा
वीसमां रयणी जोजनना, दोष कहा परधान ॥ तीणे कार
ण राते मत जीमो, जो होय हश्मे सान रे ॥ प्राण॥२॥ १दा
न २ स्नान ३ आयुधने ४ जोजन, एटलां राते नवी कीजे ॥
ए करवां सूरजनी साखे, नीति वचन समजीजे रे ॥ प्राण
॥३॥ उत्तम पशु पंखी पिण राते, टाळे जोजन टाणो ॥ तुमे
तो मानवी नाम धरावो, किम संतोष न आणो रे ॥प्राण॥४॥
माखीजू किमि कोलीआवमो, जोजनमां जो आवे ॥ को
ढ जलोदर वमन विकलता, एहवा रोग उपावे रे ॥प्राण॥५॥
उब्रु जव जीव हत्या करता, पातिक जेह उपायो ॥ एक त
लाव फोमंता तेटलो, दूषण सुगुरु वतायो रे ॥ प्राण ॥६॥
एकडोत्तर नव सर फोढ्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अवडो
त्तर नव दव दिधा जीम, एक कूवणज संताप रे ॥प्राण ॥७॥

એકસોને ચુમાલીસ નવ લગે, કુવણજના જે દોષ ॥ કૂડું
 એક કલંક દિયંતાં, તેહવો પાપનો પોષ રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૮ ॥ એક
 સો એકાવન નવ લગે દીધાં, કૂમાં કલંક અપાર ॥ એક વા
 ર સીલ સંઘ્યા જેહવો, અનરથનો વીસ્તાર રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૯ ॥ એક
 સોને નવાણુ નવ લગે સંઘ્યાં, સિયલ વિષય સંબંધ ॥ એક
 રાત્રીજોજનમેં તેહવો, કર્મ નીકાચીત બંધ રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૧૦ ॥
 રાત્રીજોજનમાં દોષ ઘણા બે, સ્યો કહીએ વિસ્તાર ॥ કેવલી
 કહેતાં પાર ન પાવે, પૂરવ કોમિ મજાર રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૧૧ ॥ રા
 ત્યે નીત્ય ચોવીહાર કરિને, શુભ પરીણામ ધરિજે ॥ માસે
 માસે પાસખમણનો, લાજ એણી વીધ લીજે રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૧૨ ॥
 મુની વસતાની એ સીખામણ, જે પાલે નર નારી ॥ સુર નર સુ
 ય વીલસી તે હોવે, મોક્ષ તણા અધિકારી રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૧૩ ॥

અથ શ્રી શ્રાવકની કરણીની સસાય.

(દેશી ચોપાઈની.)

શ્રાવક તું બેઠે પરનાત, ચ્યાર ઘડી લે પાઠલી રાત ॥
 મનમાં સમરે શ્રી નવકાર, જિમ પામે નવ સાંયર પાર ॥ ૧ ॥
 કવણ દેવ કવણ ગુરુ ધર્મ, કવણ અમારે બે કુલ કર્મ ॥ ક
 વણ અમારે બે વ્યવસાય, એહવું ચિંતવજે મન માંહ ॥ ૨ ॥
 સામાયિક લીજે મન શુદ્ધ, ધર્મ તણી હિયમે ધરજે બુદ્ધ ॥
 પદ્મિકમણો કરે રચણી તણો, પાંતિક આલોવે આપણો
 ॥ ૩ ॥ કાયા સર્જે કરે પચ્ચાણ, સુદ્ધી પાલે જિનની આણ ॥
 નણજે ગણજે તવન સસાય, જીણ હુંતી નીસ્તારો થાય
 ॥ ૪ ॥ ચિંતારે નીત ચબડે નીમ; પાલે દયા જીવંતાં સિમ ॥

देहरे जइ जुहारे देव; झ्य ज्ञावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पो
 साले गुरु वंदजे जाय; सुणो वखाणा सदा चित्त लाय ॥
 नीरडपणने सुजतो आहार; साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥
 स्वामीवचन करजे घणो; सगपण मोटो स्वामी तणो ॥ ७ ॥
 खीया हिणा दिनने देख; करजे तास दया सुवीसेय ॥ ८ ॥
 घर अनुसारे देजे दान, मोटास्युं म करजे अनीमान ॥ गुरु
 ने मुखे लीजे आखडी; धर्म न मुकीश एके घडी ॥ ९ ॥ वारु
 सुद करे व्यापार, जुग अधिकानो परिहार ॥ म नरजे केह
 नी कुमी साख; कुडासुं कथन म जाख ॥ १० ॥ अनंतकाय
 कही वत्रीस; अन्नक वावीस बीसवावीस ॥ ते नक्षत्र न
 बी कीजे किमे; काचां कुणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रात्री
 नोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साधु
 लोहने गली, मधु धावमी मत वेचो वली ॥ १२ ॥ वली म क
 रावे रंगण पास, डपण घणां कहां ठे तास ॥ पाणी गलजे
 वेवे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां
 करजे यत्न, पातीक ठंमी करजे पुन्य ॥ ठांणा ईधण चूलो
 जोय, वावरजे जीम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परे वावर
 जे नीर, अणगल नीर म घोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधुं पालजे,
 अतीचार सघला टालजे ॥ १५ ॥ कहा पन्नरे करमादान,
 पाप तणी परहरजे खाण ॥ किंस्युं मले जे अनरथदंड, मि
 थ्या मेल म नरजे पौम ॥ १६ ॥ समकितशुं हियडे राखजे,
 बोल बीचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करजे आरंज, पा
 लो सिल तजो मन दंज ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत डधने वही,
 उघाडां मत मेलो सहि ॥ उत्तम ठाम खरचजो वित्त, पर उ

पगार करजो शुन चित्त ॥१७॥ दिवस चरीम करजे चोवि
हार, ज्यारे आहार तणा परीहार ॥ दिवस तणां आलोवे
पाप, जीम ज्ञांजे सघला संताप ॥१८॥ संध्या आवश्यक
साचवे, जिनवर चरण सरण जव जवे ॥ ज्यारे सरण करी
दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ म
न एहवा, तीरथ शेत्रुंजे जायवा ॥ समेतसीखर आवु गी
रनार, जेटीश हुं धन्य धन्य अवतार ॥२०॥ श्रावकनी कर
णी ठे एह, एहथी आये नवनो ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातळां,
पाप तणां बुटे आंमला ॥२१॥ वारु लहीए अमर वीमान,
अनुक्रमे पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिनहर्ष घणो ससनेह,
करणी डख हरणी ठे एह ॥२२॥ इति ॥

अथ श्री नेम राजेमतीना १७मासनी सज्ञाय.

सखि तोरण आई कंत गया निज मंदिरे, जे नजर मे
लावो कीध ते मुज सांजरे ॥ घर लावत जाली हाथ हुं हेठी
उतरी, पण करी वरघोडो आय ठबीले ठेतरी ॥१॥ मधु
बिंडु समो संसार, मुजाणा माळ्हता ॥ संसारे सुखी अण
गार, जिनेसर बोळता ॥ ए आंकणी ॥ सखि शारे कहुं अव
दात, वियोगी दुःखी तणा ॥ दुनियामें डुरजन लोक, हांसी
करे घणा ॥ मीठी लागे परनी वात, अगनि पग ना लहे ॥
केना मोन चूए केना नेव, ते मुख ना कहे ॥ मण॥२॥ सखि
श्रावण ठे महेली महीयरिया तले, ठे ठटकी वारधी वेव
वाली ना वले ॥ काम वरती फरती धरती ऊरती वादली, ग
यो श्रावण मास निरास; राजुल एकली ॥ मण॥३॥ सखि

जादरवे नरतार बिना किम रीजिए, विरहानल जगी जाल
 धुंआ विण दाजीए ॥ फल पाक्यां करसण शालि न खाइए खे
 लीए, होत छुखना दाहाडा वे च्यार आघेरा ठेलीए ॥ म० ४ ॥
 वणे आसो मासे सेव सुंआली सुखडी, गया दश रे दशाराना
 दिन दिवाली दुकडी ॥ सखि सांघण करीए लाख सरस न
 वि नोलनां, रंग तानने नाटक साल पिठ बिना पेखणां
 ॥ म० ५ ॥ मास कारतके केलि करे नर नारी वागमां, जेणे
 मासे टवुके टाढ कुमारी रागमां ॥ जेदना वालम गया
 विदेश सदेशा मोकले, महारे गाम घणी घरवट वसे पिठ
 वेगले ॥ म० ६ ॥ सखि मागशिरे मागणना मनोरथ पूरता,
 मने मेहेली वाले वेश चतुरगुण चूरता ॥ सखि कोइ रे सं
 देसा लेई आवे जाय मुऊ कने, तेहने देनं रे मोतनको हार
 अमुलक नूपणे ॥ म० ७ ॥ पोस मासे पोतानी वंडी शिआ
 ले चालिया, वालेसर बिना वेरण रात सुना मेहेल मालि
 यां ॥ जाय जोवनियुं नरपुर अरण्य जिम मालती, जेना
 पिठ रे गया परदेश छुखे दिन काढती ॥ म० ८ ॥ पिठ माहा
 मासे मत जाऊ रे हिमालो हालसे, रयणी एक वरस
 समान वियोगी सालसे ॥ लंकाथी सीता पट मासे
 राम घर लाविया, एदवा वहि गया साते मास प्रितम घेर
 नाविया ॥ म० ९ ॥ हलकारो हसंत वसंत आकासथी नूत
 स्थो, मानुं फागुण सुरनर राय मलीने नूतस्थो ॥ होरि खेले
 गोपि गोविंद हमु घर आवती, अलि केशुं आ ऊंपापात वि
 योगे मालती ॥ म० १० ॥ सखि चैतरे चित्त थकी विठोही
 वालमे, आवा छुखना दाहाडा किम जाये उगे रवि आथमें

॥ आंख मीचणे मलि जाय रे नुघाड्ये वेगलो, सामलीयो
 सिद्ध सरूप सुपनमां आगलो ॥मण॥११॥ रमे हंस युगल शु
 क मोर चकोर सरोवरे, निज नाथ सहियरने साथ सुखी रमे
 वन धरे ॥ मुख मंजरि आंवा माले कोयल टहुकती, सखि
 वातमां वीत्यो वसंत रूप राजीमती ॥मण॥१२॥ सखि वैशा
 खे वन मांहे रे हिंचोले हिंचता, कदली घर फूल बिठाय खु
 शिथी नाचता ॥ सरोवर जल कमळे केलि करंता राजवी, मु
 ज सरखी ठुबीली नार लग्न लेइ लाजवी ॥मण॥१३॥ जेठ मा
 से जुलमना ताप तपंती नूतला, आव मासनो मेघ वियोग
 बले तरु कुंतला ॥ पशु पंथी विसामा खायरे शीतल ठाया
 तरु, माहारे पिड विना नहि विसराम नातिने नूतरुं ॥ मण
 ॥१४॥ सखि आवियो मास अशाढ जरे जल वादली, गर
 जारवे टहुके मोर ऊबुके बीजली ॥ वरसाते वसुधा नवप
 ल्लव हरियां धरे, नदि नाले जरियां नीर वपैयो पिड पिड क
 रे ॥मण॥१५॥ चोमासे करित माला रमतां पंखिआ, एम
 वीत्या बोरे मास प्रीतम घर नाविया ॥ श्रावण शुद्धि ठे स्वा
 मि गया सहसावने, लेइ संजम केवली थाय दिन पंचावने
 ॥मण॥१६॥ नेम मुखथी राजुल नव नवनेह निहालती, वैरा
 ग सुधारस लीन सदा मन वालती ॥ कालांतरे नेम दयाल
 तिहां देशना दिए, प्रभु हाथ सहेली साथ राजुल दिक्ता लि
 ए ॥मण॥१७॥ लही केवल करी परिसादन बिहुं मुगति ग
 यां, बनी प्रीत ते सादिअनंत जांगे जेलां थयां ॥ शुन वीर
 विजय सुख लील मगत्र विशेषता, लोकनालनी नाटकशा
 ल समयमां देखतां ॥ मण ॥१८॥ इति. ॥

अथ श्री पंचमहाव्रतनी सज्ज्ञायो.
प्रथम प्राणातिपात विरमणनी सज्ञाय.

(कपूर होय अति ऊजलो रे. ए देडी.)

सकल मनोरथ पुरवे रे, संखेश्वर जिनराय ॥ तेह त
णा सुपसायथी रे, करुं पंच महाव्रत सजाय रे ॥ १ ॥ मुनि
जन, ए पहेलुं व्रत सार ॥ एहथी लहिए जवनो पार रे ॥ मुण
॥ ए आंकणी. ॥ प्राणातीपात वीरमण कह्युं रे, पहिलु व्रत
सुविचार ॥ त्रस थावर वेहु जीवनी रे, रक्षा करे अणगार रे
॥ मुण ॥ १ ॥ प्राणातीपात करे नहि रे, न करावे कोइ पास ॥
करता अनुमोदे नहि रे, तेहनो मुगतीमां वास रे ॥ मुण ॥ ३ ॥
जयणाए मुनी चालंता रे, जयणाए वेसंत ॥ जयणाए उ
जा रहे रे, जयणाए सुवंत रे ॥ मुण ॥ ४ ॥ जयणाए नोजन
करे रे, जयणाए वोलंत ॥ पाप करम बाधे नहि रे, ते मुनी
मोटा महंत रे ॥ मुण ॥ ५ ॥ पाचे व्रतनी जावना रे, जे जावे
झपिराय ॥ कांतिविजय मुनी तेहना रे, प्रेमे प्रणमे पाय
रे ॥ मुण ॥ ६ ॥ इति. ॥

अथ श्री बीजी मृषावाद विरमणनी सज्ञाय.

(जोलीमारे हंसारे विषय न राखिए. ए देडी)

असत्य वचन मुखथी नवि बोलीए, जिम नावे रे सं
ताप ॥ महाव्रत बीजे रे जिनवर एम जणे, मृषा समुं नहि
पाप ॥ अण ॥ १ ॥ खारा जलथी रे तृपती न पामीए, तीम खो
टानी रे वात ॥ सुणता शाता रे किमही न उपजे; वली हो
य धर्मनो घात ॥ अण ॥ २ ॥ असत्य वचनथी रे वैर परंपरा, को

न करे विसवास ॥ साचा माणस साथे गोठमी; मुज मन
करवानी आस ॥ अण॥३॥ साचा नरने रे सहु आदर करे; लो
क ज्ञणे जसवाद ॥ खोटा माणस साथे गोठमी; पग पग
होय विषवाद ॥ अण॥४॥ पाली न शके रे धर्म वितरागनो;
कर्मतणे अनुसार ॥ कांतिविजय कहे ते परसंसीए; जे कहे
शुद्ध आचार ॥ अण॥५॥ इति. ॥

अथ श्री त्रीजी अदत्तादान विरमणनी सज्ञाय.

(चंदन मलयागर तणुं. ए देशी.)

त्रीजुं महाव्रत सांजलो; जे अदत्तादान ॥ इव्य क्षेत्र
काल ज्ञावथी, त्रीविधे पचस्काण ॥१॥ ते मुनिवर तारे तरे,
नहि लोन्ननो लेश ॥ कर्मने क्य करवा ज्ञणी; पेहेख्यो सा
धुनो वेश ॥ तेण॥२॥ गाम नगर पुर विचरतां; तरणा मात्र जे
सार ॥ साधु होय ते नवी बीए; अण आप्युं लगार ॥ तेण॥३॥
चोरी करतां इह जवे; वध बंधन पामंत ॥ रुं रुं ते नरके प
मे; एम शास्त्र बोलंत ॥ तेण॥४॥ परधन लेतां परतणा; लि
धा बाऊ प्राण ॥ परधन परनारी तजे; तेहनां करुं रे वखा
ण ॥ तेण॥५॥ त्रीजुं महाव्रत पालतां; मोक्ष गया केइ कोडा ॥
कांतिविजय मुनि तेहना; पाय नमे करजोम ॥ तेण॥६॥ इति ॥

अथ श्री चोथी मैथुन विरमणनी सज्ञाय.

(सुमति जिणोसर साहेब पांचमो. ए देशी.)

सरसति केरारे चरण नमी करी; महाव्रत चोथुं रे सा
र ॥ कहेस्युं नावे रे ज्ञविषण सांजलो; सुणतां जय जय

कार ॥१॥ एहवा मुनीवरने पाये नमुं; पाले शियल उदारा॥
 अठारसहस सीलांगरघना घणी; उत्तारे जव पार ॥ए०॥१॥
 चोथा व्रतने समुझनी उपमा; वीजां नदियो समान ॥ उत्त
 राध्ययने रे ते वत्रीसमे; ज्ञांखे जिन वर्द्धमान ॥ ए०॥३॥ को
 स्या मंदिर चोमासु रह्यो; न चढ्यो शियल लगार ॥ तेषुली
 ज्ञने जाजं ज्ञामणे; नमो नमो रे सो वार ॥ए०॥४॥ सीता
 देखी रे रावण मोहीयो, किधा कोमि उपाय ॥ सीता माता
 रे शियलथी नवि चढ्या; जगमां सहु गुण गाय ॥ ए०॥५॥
 शियल विहुणा रे माणस फुटडा; जेहवां आवल फुल ॥ शि
 यल गुणे करी जे सोहामणा; ते माणस बहु मूल ॥ ए०॥६॥
 नीत उठीने तस समरण करुं; जेणे जग जीत्यो रे काम ॥
 व्रत लेइने रे जे पाले नहि; तेहनुं न लिजे रे नाम ॥ ए०॥७॥
 दशमा अंगमां रे शियल वखाणीयुं, सकल धरम मांहि सा
 र ॥ कातिविजय मुनीवर एणीपरे जणे, शियल पालो नर
 नार ॥ ए०॥ ८ ॥ इति॥

अथ श्री पांचमी परिग्रह विरमणनी सञ्ज्ञाय,
 (हवे राय शेठ ते विहुं जणा. ए देशी.)

आज सफल मनोरथ अति घणो; मदाव्रत गावा पां
 चमा तणो ॥ जिहां सर्व थकी परिग्रह तजे; तेहने संजम र
 मणि अति नजे ॥१॥ आ० ॥ जेथी संजमजात्रा नीरवदि
 ए; ते तो परिग्रह मांहि नवि कहिए ॥ जे उपरे मुरठा होय घ
 णी; तेहने परिग्रह ज्ञांखे जग घणी ॥ आ०॥२॥ तृष्णा तरु
 णीसुं मोहिया; तेणे विशे विसवा खोइया ॥ तृष्णा तरुणी

जस घरवाला; ते जग सघलाना नसियाला ॥आ० ॥३॥ तृ
 ष्णा तरुणी जेणे परिहरि; तेणे संजमश्री पोते वरी ॥ संय
 म रमणी जस पटराणी; तेहने पाय नमे इंड इंडाणी ॥आ०
 ॥४॥ संजम रमणीशुं जे राता; तेहने इह नव परन्नव सुख
 शाता ॥ पांचे व्रतनी जावना कहि, ते आचारांग सूत्रथी ल
 ही ॥आ० ॥५॥ श्री किरतीविजय उवजाय तणो, जग मांहे
 जस महिमा घणो ॥ तेहनो शीष कांतिविजय कहे, ए स
 जाय नणे ते सुख लहे ॥आ०॥६॥इति॥

अथ श्री ठी रात्रीनोजन विरमणनी सझाय.

(सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे. एदेशी.)

सकल धरमनो सार ते कहीए रे, मनवंढीत सुख जेह
 थी लहिए रे ॥ रात्रीनोजननो परिहार रे, ए ठहुं व्रत जगमां
 सार रे ॥ मुनिजन जावे ए व्रत पाळो रे, रात्रीनोजन त्रिवि
 धे टाळो रे ॥१॥ मु०॥ ए आंकणी. ॥ इव्य थकी च्यारे आहा
 र रे, न लीए रात्रे ते अणगार रे ॥ रात्रीनोजन करतां नि
 रधार रे, घणा जीवनो आय संहार रे ॥मु० ॥३॥ देवपूजा न
 वि सुजे स्नान रे; स्नान विना किम खाइए धान रे ॥ पंखी
 जनावर कहिए जेह रे; रात्रे चुण नवि करता तेह रे ॥मु०
 ॥३॥ मारकंठ रुषीसर बोळ्या वाणी रे, रुधीर समान ते
 सघलां पाणी रे ॥ अन्न ते आमीष सरखुं जाणो रे; दिना
 नाथ जव आये राणो रे ॥मु०॥४॥ सावर सुअर धुअड कांग
 रे, मंजार वींठुने वली नाग रे ॥ रात्रीनोजनथी ए अवता
 र रे; शैवशास्त्रमां इस्यो विचार रे ॥ मु० ॥५॥ जुकाथी ज

लोदर थाय रे, कीमी आवे बुद्धि पलाय रे ॥ कोलीआवमो
जे उदरे आवे रे, कुष्ठरोग ते नरने थावे रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ श्री
सिद्धांत जिनागम मांदि रे; रात्रीभोजन दोष बहु त्यांही
रे ॥ कांतिविजय कहे ए व्रत सारो रे; जे पाले तस धन अ
वतारो रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री अठार पापस्थानकनी सञ्ज्ञायो.

तत्र हिंसा पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(कपूर होय अति उजलो रे. ए देशी)

पापस्थानक पेहेलुं कहुं रे, हिंसा नाम डुरंत ॥ मारे
जे जग जीवने रे, ते लहे मरण अनंत रे ॥ प्राणी, जिनवा
णी धरो चित्त ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मात पितादि अनंतनारे,
पामे वियोग ते मंड ॥ दारिद्र दोहग नवि टले रे; मले न व
ह्वन वृंद रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ होय विपाके दशगूणं रे, एक वार कियुं
कर्म ॥ शतसहस्र कोडिगमे रे, तीव्र ज्ञावनां मर्म रे ॥ प्रा०
॥ ३ ॥ मेर केहेतां पण दुःख हूवे रे; मारे किम नवि होय ॥
हिंसा जगिनी अति वूरी रे, वैश्वानरनी जोय रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
तेहने जोरे जे हूवारे, रौड्यध्यान प्रमत्त ॥ नरक अतिथि ते
नृप हूवारे; जिम सुजूम ब्रह्मदत्त रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ राय विवेक
कन्या कमा रे; परणावे जस साय ॥ तेह थकी दूरे टले रे,
हिंसा नाम वलाय रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री मृषावाद पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(लाबलदे मात मब्हार. ए देशी.)

बीजुं पापनुं स्थान; मृपावाद डुध्यान ॥ आज हो ॥ ठं
 मो रे नवि मंमो धर्मशुं प्रीतडी जी ॥१॥ वैर खेद अविश्वा
 स; एहथी दोष अन्यास ॥ आणा ॥ आए रे नवि जाए व्याधि
 कुपण्यथी जी ॥२॥ रहेवुं कालिकसूरि; परिजन वचन ते नू
 रि ॥ आणा ॥ सहेवुं रे नवि कहेवुं जूठ ज्ञयादिके जी ॥३॥ आ
 सन धरत आकाश; वसुनृप हुन सुप्रकाश ॥ आणा ॥ जूठे रे सु
 र रूठे घाड्यो रसातले जी ॥४॥ जे सत्यव्रत धरे चित्त; होय
 जग मांहे पवित्त ॥ आणा ॥ तेहने रे नवि ज्ञय सुर व्यंतर यद्ध
 थी जी ॥५॥ जे नवि नांखे अलीक, बोले ठायुं ठीक ॥ आणा ॥
 टेके रे सुविवेके सुयश ते सुख बरे जी ॥६॥ इति ॥

अथ श्री अदत्त पापस्थानक सज्ञाय.

(निड्मी बेरण हुइ रही. ए देशी.)

चोरी व्यसन निवारीये; पापस्थानक हो त्रीजुं कह्युं
 घोर के ॥ इहजव परजव डुःख घणां; एह व्यसने हो पामे
 जग चोर के ॥ चोणा १ ॥ चोर ते प्राये दरिद्रि हुए, चोरीथी हो
 धन न ठरे नेट के ॥ चोरनो कोय धणी नही; प्राये नूख्युं
 हो रहे चोरनुं पेट के ॥ चो० ॥१॥ जिम जलमांही नांखिये;
 तले आवे हो जलमां अयगोल के ॥ चोर कठोर करम करी;
 जाय नरके हो तिम निपट निटोल के ॥ चोणा ३ ॥ नातुं प
 ड्युं वली वीसख्युं; रहुं राख्युं हो आपण कख्युं जेह के ॥ तृ
 ण तूस मात्र नलीजीये; अणदीधुं हो किहां कोइनुं तेह के ॥
 चोणा ४ ॥ दूरे अनर्थ सकल टले; मिले बहाला हो सघले ज
 श थाय के ॥ सुर सुखनां हुए जेठणां; व्रत त्रीजुं हो आवे

जस दाय के ॥चोण॥५॥ त्यजी चोरपणु जे चोरटा; होय दे
वता हो रोहिणीय जेम के ॥ ए व्रतथी जस सुख लहे; वली
प्राणी हो वहे पुण्यशुं प्रेम के ॥चोण॥६॥इति॥

अथ श्री अब्रह्मचर्य पापस्थानक संज्ञाय.

(तुमे बहु मित्री रे साहिवा. ए देशी.)

पापस्थानक चोथुं वर्जिए; दुर्गति मूल अवंज ॥ जग
सवि मूज्यो ठे एहमां; ठंमे तेह अचंज ॥ पा०॥१॥ ए आ
कणी ॥ रूनुं लागे रे ए धुरे, परिणामे अति क्रूर ॥ फल कि
पाकना सारिखुं; वरजे सज्जन दूर ॥पा०॥२॥ अधर विडुम
स्मित फूलडा; कुच फल कठिन विशाल ॥ रामा देखी न
राचिये; ए विपवेली विकार ॥पा०॥३॥ प्रबल ज्वलित अय
पूतली; आलिंगन नलुं तंत ॥ नरक दुआर नितविनी, जघ
न सेवन ए डुरंत ॥ पा०॥४॥ दावानल गुण वनतणो, कुल
मशी कूर्चक एह ॥ राजधानी मोहरायनी; पातक कानन
मेह ॥ पा०॥५॥ प्रभुताये हरि सारिखो; रूपे मयण अवतार
॥ सीताये रे रायण यथा; ठंमो तुमे नर नार ॥ पा०॥६॥
दश शिर रणमांहे रोलिया, रावण विवश अवंज ॥ रामे
न्याये रे आपणो, रोप्यो जग जयधंज ॥ पा०॥७॥ पाप बंधा
ये रे अति घणुं, सुकृत सकल क्षय जाय ॥ अब्रह्मचारीनुं
चितव्युं, कदिय सफल नवि थाय ॥ पा०॥८॥ मंत्र फले जग
जश वधे, देव करे रे सान्निध ॥ ब्रह्मचर्य धरे जे नरा, ते पामे
नवनिध ॥ पा०॥९॥ शेष सुदर्शनने टली, शूली सिंहासन
होय ॥ गुण गाये गगने रे देवता, महिमा शीजनो जोय

॥ पा० ॥ १० ॥ मूल चारित्र्यं ए ननु, समकित वृद्धि नि
दान ॥ शील सलील धरे जीके, तस हुं सुजस वखाण
॥ पा० ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ श्री परिग्रह पापस्थानक सन्धाय.

(सुमति सदा दिलमां धरो. ए देशी.)

परिग्रह ममता परिहरो, परिग्रह दोषनुं मूल ॥ सल्लोणे ॥
परिग्रह जेह धरे घणो, तस तप जप प्रतिकूल ॥ स० ॥ प० ॥ १ ॥
ए आंकणी ॥ नवि पलटे मूलराशिथी, मार्गी कदिय न होय
॥ स० ॥ परिग्रह ग्रह ठे अजिनवो, सहुने दीये दुःख सोय ॥
स० ॥ प० ॥ २ ॥ परिग्रह मद गरुअत्तणे, नवमांहि पडे जंत ॥
स० ॥ यानपात्र जिम सायरे; नाराक्रांत अत्यंत ॥ स० ॥ प०
॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान हय गय वरे; तप जप श्रुत परतंत ॥ स० ॥
ठोडे सम प्रभुता लहे; मुनि पण परिग्रहवंत ॥ स० ॥ प० ॥ ४ ॥
परिग्रह गृहवशे लिंगिया; लेई कुमति रजशीश ॥ स० ॥ जि
म तिम जग लवता फिरे; उनमत हुइ निश दीश ॥ स० ॥
प० ॥ ५ ॥ तृपतो न जीव परिग्रहे; इंधणथी जिम आग ॥ स०
तृष्णा दाह ते उपशमे; जल सम ज्ञान वैराग ॥ स० ॥ प० ॥ ६ ॥
तृपतो सगर सुते नही; गोधनथी कुचिकर्ण ॥ स० ॥ तिलक
शेठ वली धानथी, कनके नंद सकर्ण ॥ स० ॥ प० ॥ ७ ॥ असं
तुष्ट परिग्रह नखा; सुखीया न इंद न रिंद ॥ स० ॥ सुखी एक
अपरिग्रही; साधु सुजस समकंद ॥ स० ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री क्रोध पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(रूपन्ननो वंश रयणायरु. ए देशी.)

क्रोध ते बोध निरोध ठे, क्रोध ते संयम घाति रे ॥ क्रोध ते नरकनुं वाराणु, क्रोध डरित पक्षपाति रे ॥१॥ पापस्थानक ठहुं परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ मन घरि उत्तम खंत रे ॥ क्रोध झुयंगनी जांगुली; एह कही जयवंति रे ॥ पा०॥१॥ पूरवकोडि चरण गुणो, ज्ञान्यो ठे आतम जेण रे ॥ क्रोध विवश हुंता दोय घडी; हारे सवि फल तेण रे ॥ पा०॥३॥ बाले आश्रम आपणो, नजना अन्यने दाहे रे ॥ क्रोध कुशानु समान ठे; टाले प्रशम प्रवाहे रे ॥ पा०॥४॥ आक्रोश तर्जना घातना; धर्म ब्रंशमां जावे रे ॥ अग्रिम अग्रिम विरहथी, लाज ते शुद्ध स्वजावे रे ॥ पा०॥५॥ न होय ने होय तो चिर न ही; चिर रहे तो फल ठेहो रे ॥ सज्जन क्रोध ते एहवो; जेहवो डरजन नेहो रे ॥ पा०॥६॥ क्रोधी मुखे कटु बोलणा, कंठकिया कूटसाखी रे ॥ अदित कळ्याणकरा कहा, दोपना तरु शत साखी रे ॥ पा०॥७॥ क्रूरगडू चउ तप कस्या, चरित सुणि सम आपणो रे ॥ उपशम सारठे प्रवचने, सुजश वचन ए प्रमाणो रे ॥ पा०॥८॥ इति ॥

अथ श्री मान पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(नदी यमुनाके तीर छडे दोय पंखियां. ए देशी)

पापस्थानक कहे सातमुं श्री जिनराज ए, मान मान वने होय डरित शिर ताज ए ॥ आठ शिखर गिरिराजतणां आडां वले; नावे विमला लोक तिहा किम तम टले ॥ १ ॥

प्रज्ञामदं तपमदं वली गोत्रमदे ज्ञस्या; आजीविका मदवंत
 न मुक्ति अंगीकस्या ॥ कयोपशम अनुसारे जो एह गुण व
 हे; शोमद करवो एहमां निर्मद सुख लहे ॥१॥ उच्चजाव द
 ठ दोषे मदज्वर आकरो; होय तेहनो प्रतिकार कहे मुनिवर
 खरो ॥ पूर्वपुरुष सिंधुरथी लघुता जाववुं; शुद्ध जावन ते पा
 वन शिवसाधन नवुं ॥३॥ माने खोयुं राज्य लंकानुं रावणे,
 नरनुं मान हरे हरि आवि औरावणे ॥ भूलिज्जड श्रुतमदधी
 पाम्या विकार ए, माने जीवने आवे नरक अधिकार ए॥४॥ वि
 नय श्रुत तप शील त्रिवर्ग हणे सवे; माने ते ज्ञाननो नंज
 क होय ज्ञवोनवे ॥ लुंपक ठेक विवेक नयणनो मान ठे; ए
 हने ठंमे तास न दुःख रहे पठे ॥ ५ ॥ माने बाहुबलि वरस
 जगे कान्दस्सग रह्या, निर्मद चक्री सेवक दोय मुनि सम क
 ह्या ॥ सावधान त्यजी मान जे ध्यान धवल धरे, परम सु
 जस रामा तस आलिंगन करे ॥६॥ इति॥

अथ श्री माया पापस्थानक सज्ञाय.

(स्वामी स्वयंप्रज्ञ सांजलो, अरिहंता जी. ए देशी.)

पापस्थानक कह्युं आठमुं, सुणो संता जी ॥ ठंमो मा
 या मूजा ॥ गुणवंता जी ॥ कष्ट करे व्रत आदरे ॥ सु० ॥ माया
 ये ते प्रतिकूल ॥ गुणा॥१॥ नगन मास नपवासिया ॥ सु० ॥
 शीथ लीये कृश अन्न ॥ गुण ॥ गर्ज अनंता पामशे ॥ सु० ॥
 जो ठे माया मन्न ॥ गुणा॥२॥ केश लोच मल धारणा ॥ सु० ॥
 जूमिशय्या व्रत याग ॥ गुण ॥ सुकर सकल ठे साधुने ॥ सु० ॥
 डुक्कर माया त्याग ॥ गुणा॥३॥ नयन वचन आकारनुं ॥ सु० ॥

गोपन मायावंत ॥गुण॥ जेह करे असती परे॥सुण॥ ते नहि
हित करे तंत॥गुण॥ ॥४॥ कुसुमपुरे घर शेठने ॥सुण॥ हेठे रहे
संविज्ञ ॥गुण॥ ॥ ऊपरे तस बीजो रहे ॥सुण॥ मुत्कल पण
सुगुणज्ञ ॥गुण॥ ॥ ५ ॥ दंजि एक निंदा करे ॥सुण॥ बीजो घरे
गुण राग ॥गुण॥ ॥ पेहेलाना जव छस्तर कह्या ॥सुण॥ बीजा
ने केवल त्याग ॥गुण॥ ॥ ६ ॥ विधि निषेध नवि उपदिसे ॥सुण॥
एकाते जगवंत ॥गुण॥ कारणे निःकपटी हवुं ॥सुण॥ ए आ
णा ठे तंत ॥गुण॥ ॥ ७ ॥ मायायी अलगा टलो ॥सुण॥ जिम म
ले मुगति सुरंग ॥गुण॥ ॥ सुजस विलास सुखी रहो ॥सुण॥
लक्षण आवे भंग ॥गुण॥ ॥ ८ ॥ इति॥

अथ श्री लोचन पापस्थानक सज्ञाय.

(जीरे म्हारे जाग्यो कुमर जाम. ए वेशी.)

जीरे म्हारे लोचन ते दोष अथोचन, पापस्थानक नवमुं
कहुं ॥ जी रे जी ॥ जीण॥ ए ठे सर्व विनाशनं मूल, एहथी
कोणे न सुख लहुं ॥ ॥ जी रे जी ॥ १ ॥ जीण॥ सुणिये बहु
लोनांघ, चक्रवर्ति हरिनी कथा ॥ जी० ॥ पाम्या कटुक वि
पाक, पीवत रक्त जलो यथा ॥ जीण॥ ॥ २ ॥ जीण॥ निर्धनने शत
चाह, शत लहे सहस जोडिए ॥ जी० ॥ सहस लहे लख लो
चन, लख लाजे मन कोडिए ॥ जीण॥ ॥ ३ ॥ जीण॥ कोटीश्वर नृ
प शक्ति, नृप चाहे चक्रीपणुं ॥ जीण॥ चाहे चक्रि सुर जोग,
सुर चाहे सुरपति सुख घणु ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीण॥ मूल लघु पण
लोचन, वाधे सराव परे सही ॥ जीण॥ उत्तराध्ययने अतत, ५
छा आकाश समी कही ॥ जीण॥ ॥ ५ ॥ जीण॥ स्वयंनृमण समु

इ, कोइक अवगाही शके ॥जीण॥ ते पण लोच समुद्र, पार
न पामे बल थके ॥ जीण॥६॥जीण॥ कोइक लोचने हेत, तप
श्रुत हारे जे जडा ॥ जी०॥ काग उडावण हेत, सुरमणि ते
नांखे खडा ॥ जीण॥७॥जीण॥ लोच तजे जे धीर, तस सवि
संपत्ति किंकरी ॥ जी०॥ सुजस सुगुण विदास, गावे तस
सुरसुंदरी ॥ जीण॥८॥इति॥

अथ श्री राग पापस्थानक सङ्गाय.

(सुण मोरी सजनी रजनी न जावे रे. ए देशी.)

पापस्थानक दशसुं कह्युं राग रे, कुणहि न पाम्यो ते
हनो ताग रे ॥ रागे वाह्या हरि हर वंजारे, राचे नाचे करेय
अचंजारे ॥ १ ॥ राग केसरी ठे वडरांजारे, विषयानिलाष
ते मंत्री ताजारे ॥ जेहना ठोरु इंडिय पंचो रे, तेहनो की
धो ए सकल प्रपंचो रे ॥ २ ॥ जेह सदागम वश हुइ जाशे रे,
अप्रमत्तता शिखरे वाशे रे ॥ चरण धरम नृप शैल विवेके
रे, तेहसुं न चले रागी टेके रे ॥ ३ ॥ बीजा तो सवि रागे वा
ह्यारे, एकादश गुणठाणे उमाह्यारे ॥ रागे पांड्या ते नर खू
तारे, नरय निगोद महा दुःख जुतारे ॥ ४ ॥ राग हरण तप
जप श्रुत दाख्यां रे, तेहथी पण जेणे नव फलं चाख्यां रे ॥
तेहनो कोइ न ठे प्रतिकारो रे, अमीय होय विष त्यां श्यो चा
रो रे ॥ ५ ॥ तप बले बूढ्या तरणुं ताणी रे, कंचन कोडी आ
षाढभूति नाणी रे ॥ नंदिषेण पण रागे नडियारे, श्रुतनिधि
पण वेद्या वश पडियारे ॥ ६ ॥ बावीश जिन पण रहि घर
वासे रे, वर्त्या पूर्व राग अज्यासे रे ॥ वज्रबंध पण जस बंद

तूटे रे, नेह तंतुथी तेह न तूटे रे ॥४॥ देह जच्चाटन अग्निनुं द
हवुं रे, घण कूटन एसवि दुःख सहवुं रे ॥ अति घणी रा
ति जो होय मजीठरे, रागतणो गुण एदज दीठरे ॥५॥ राग
न करजो कोई नर कोइशुं रे, नवि रहेवाय तो करजो मुनि
शुं रे ॥ मणि जिम फणि विपनो तिम तेहो रे, रागनुं जेपज
सुजस सनेहो रे ॥६॥ इति ॥

अथ श्री द्वेप पापस्थानक सहाय.

(लालननी देशी.)

द्वेप न धरिये लालन, द्वेप न धरिये ॥ द्वेप तज्यार्थी
लालन, शिवसुख वरिये ॥ ला० ॥ शि० ॥ पापस्थानक ए अ
ग्यारमुं कूडुं; द्वेप रहित चित्त होय सवि रूडुं ॥ ला० ॥ हो०
॥ १ ॥ चरण करण गुण वनि चित्रशाली, द्वेप धुमे होय ते
सवि काली ॥ ला० ॥ ते० ॥ १ ॥ दोप बेतालीश शुद्ध आहारी,
धुम्र दोपे होय प्रबल विकारी ॥ ला० ॥ प्र० ॥ १ ॥ उग्रविहार ने
तप जप कीरिया, करता द्वेप ते नवमांहे फरिया ॥ ला० ॥
ज० ॥ ४ ॥ योगनुं अंग अद्वेप, ते पहेलुं, साधन सवि लहे तेह
थी बहेलुं ॥ ला० ॥ ते० ॥ ५ ॥ निर्गुण ते गुणवंत न जाणे; गुण
वंतना गुण द्वेपमां ताणे ॥ ला० ॥ द्वे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने व
दि गुण रागी; जगमांहे तेहनी किरती जागी ॥ ला० ॥ की०
॥ ७ ॥ राग घरीजे जिहां गुण लहिये; निर्गुण ऊपरे समचि
त्त रहिये ॥ ला० ॥ स० ॥ ८ ॥ जवथिति, चिंतन सुजस विलासे;
उत्तमना गुण एम-प्रकासे ॥ ला० ॥ ए० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री कलह पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(किसके चेले किसके पूत. ए देशी.)

कलह ते बारमुं पापनुं स्थान; डुरगति वननुं मूल नि
दान ॥ साजन सांचलो ॥ म्होटो रोग कलह काच कामलो
॥ ए आंकणी ॥ दंत कलह जे घरमांहे होय; लढी निवास
तिहां नवि जोय ॥ सा० ॥ १ ॥ शुं सुंदरी तुं न करे सार; न क
रे नापे कांई गमार ॥ सा० ॥ क्रोधमुखी तुं तुजने धिक्कार;
तुजथी अधिको कुण कलिकार ॥ सा० ॥ २ ॥ साहामुं बोले
पापिणी नित्त, पापी तुज पिता जुन चित्त ॥ सा० ॥ दंत क
लह इम जेहने थाय, ते दंपतिने सुख कुण ठाय ॥ सा० ॥ ३ ॥
कांटे कांटे आये वाड, बोले बोले वाधे राड ॥ सा० ॥ जाणी
मौन धरे गुणवंत, ते सुख पामे अतुल अनंत ॥ सा० ॥ ४ ॥
नित्ये कलहण कोहणा शील, जंमन शील विवाद सलील ॥
सा० ॥ चित्त ऊताप धरे जे एम, संयम करे निरर्थक तेम ॥
सा० ॥ ५ ॥ कलह करीने खमावे जेह, लघु गुरु आराधक हो
य तेह ॥ सा० ॥ कलह समावे ते धन्य धन्य, उपशम सार
कह्यो सामान ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारद नारी निर्दय चित्त, कलह
जुदीरे त्राये नित्य ॥ सा० ॥ सज्जन सुजस सुशील महंत, वा
रे कलह स्वभावे संत ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री अभ्याख्यान पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(अरणिक मुनिवर चाळ्या गौचरी. ए देशी.)

पापस्थानक ते तेरमुं ठांडीये, अभ्याख्यान डरंतो जी
॥ अठतां आल जे परनां उचरे, डःख पामे ते अनंतो जी

॥१॥ धन्य धन्य ते नर, जे जिनमत धरे ॥ ए आंकणी ॥ अ
ठते दोपे रे अज्याख्यान जे; करे न पूरे ठाणो जी ॥ ते ते दो
पे रे तेहने दूषीये, इम नांखे जिन नाणो जी ॥ ध० ॥ १ ॥ जे
बहु मुखरी रे बलि मत्सर नखा, अज्याख्यानी ते होय जी
॥ पातक लागे रे अणकीधां सही, ते कीधुं सवि खोय जी ॥
ध० ॥ ३ ॥ मिथ्यामतिनी रे दश संज्ञा जिके; अज्याख्यानना
जेदो जी ॥ गुण अवगुणनो रे जे करे पावटो; ते पामे बहु
खेदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ परने दोष न अठता दीजीये, पीजीये
जो जिनवाणी जी ॥ उपशम रसशुं रे चित्तमां नीजीये;
कीजीये सुजस्त कमाणी जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री पैशून्य पापस्थानक संज्ञाय.

(शिरोहीनो सालु हो के, ऊपर योघपुरी. ए देशी.)

पापस्थानक हो के चौदमुं आकरूं, पैशून्यपणानुं हो
के व्यसन ठे अति बूहूं ॥ अशन मात्रना हो के शूनक कृत
झठे, तेहथी जूंडो हो के पिशुन लवे पठे ॥ १ ॥ बहु उपकरि
ये हो के पिशुनने परे परे, कलहनो दाता हो के होय ते ऊप
रे ॥ दूधे धोयो हो के वायस ऊजलो, किम होय प्रकृते हो
के जे ठे शामलो ॥ २ ॥ तिलह तिलटण हो के नेह ठे ज्यां
लगे, नेह पणठे हो के खल कहिये जगे ॥ इम निःस्नेही हो
के निरदय हृदयथी, पिशुननी वार्ता हो के नवि जाये कथी
॥ ३ ॥ चाडी करतां हो के वाडी गुणतणी, सूके चूके हो के
ख्याति ते पुण्यतणी ॥ कोइ न देखे हो के वदन ते पिशुनतणुं,
निर्मल कुलने हो के कलंक दीये ते धणुं ॥ ४ ॥ जिम सज्जन

गुण हो के पिशुन ते दूषिये, तिम तिणे सहजे हो के त्रिभुवन
नूषिये ॥ नस्मे मांज्यो हो के दर्पण होय नलो, सुजस स
वाई हो के सज्जन सुकुल तिलो ॥५॥ इति॥

अथ श्री रतिअरति पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(प्रथम गोवालियातणे नवे जी. ए देशी.)

जिहां रति कोइक कारणे जी; अरति तिहां पण होय ॥
पापस्थानक ते पंदरमुं जी; तेणे ए एकज जोय ॥१॥ सुगुण
नर; समजो चित्त मऊार ॥ ए आंकणी ॥ चिंतन अरति र
ति पाखशुं जी; ऊडे पंखी रे चित्त ॥ पिंजर शुद्ध समाधिमें
जी; रूंध्यो रहे ते मित्त ॥ सु० ॥ १ ॥ मन पारद ऊडे नही जी;
पामे अरति रति अंग ॥ तो हुए सिद्धि कड्याएनी जी; ना
वठ जाए नाग ॥ सु० ॥ २ ॥ परवश अरति रति करी जी; नु
त्तारथ होय जेह ॥ तस विवेक आवे नही जी; होय न दुः
खनो ठेह ॥ सु० ॥ ४ ॥ नहिरति अरति ठे वस्तुथी जी; ते उपजे
मनमांहि ॥ अंगज वल्लभ सुत हुन जी; यूकादिक नहि कांहि
॥ सु० ॥ ५ ॥ मन कळिपत रति अरति ठे जी; नही सत्य पर्या
य ॥ नहि तो वेची वस्तुमां जी; किम ते सवि मिट जाय
॥ सु० ॥ ६ ॥ जेह अरति रति नवि गणे जी; सुख दुःख
दोय समान ॥ ते पामे जस संपदा जी; बाधे जग तस वा
न ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री परपरिवाद पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(साहेब बाहु जिणेसर वीनवुं. ए देशी.)

सुंदर पापस्थानक तजो सोलमुं, परनिदा असराल हो
 ॥ सुंदर निंदक जे मुखरी हुवे, ते चोथो चंमाल हो ॥ सुं० ॥ १ ॥
 सुंदर जेहने निंदानो ढाल ठे, तप किरिया तस फोक हो ॥
 सुंदर देव किछिब ते उपजे, ए फल रोका रोक हो ॥ सुं० ॥ २ ॥
 सुंदर क्रोध अजीरण तपतणां, ज्ञानतणो अदंकार हो ॥
 सुंदर परनिंदा किरिया तणो, वमन अजीरण आहार हो ॥
 सुं० ॥ ३ ॥ सुंदर निंदकनो जेहने स्वनाव ठे, तास कथन नवि
 निंद हो ॥ सुंदर नाम धरी जे निंदा करे, तेह महामति मंद हो
 ॥ सुं० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप न कोईनुं धारिये, दाखिये निज निज रं
 ग हो ॥ सुंदर तेहमां कांइ निंदा नही, बोले वीजुं अंग हो ॥
 सुं० ॥ ५ ॥ सुंदर एह कुशीलणी इम कहे, कोप हुए जे नां
 खे हो ॥ सुंदर तेह वचन ठे निंदातणां, दशवैकालिक साखे हो
 ॥ सुं० ॥ ६ ॥ सुंदर दोष नजरणी निंदा हुवे, गुण नजरे हुए रा
 ग हो ॥ सुंदर जग सवि चाले मादल मढयो, सर्वगुणी बीत
 राग हो ॥ सुं० ॥ ७ ॥ सुंदर निज मुख कनक कचोलडे, निंद
 क पर मल लेय हो ॥ सुंदर जेह घणा परगुण ग्रहे, संत ते
 विरला कोय हो ॥ सुं० ॥ ८ ॥ सुंदर परपरिवाद व्यसन तजो,
 म करो निज उत्कर्ष हो ॥ सुंदर पाप करम इम सवि टले,
 पामे सुजस ते हर्ष हो ॥ सुं० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री मायामृपा पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(सखी चैतर महीने चाळ्या. ए देशी.)

सत्तरमुं पापनुं गम, परिहरजो सदगुण धाम; जिम वा
 धे जगमां माम हो ढाल ॥ मायामोस नवि कीजे ॥ १ ॥ ए

आंकणी ॥ ए तो विपने वलीय वधाखुं, ए तो शस्त्रने अव
 लुं धाखुं ॥ ए तो वाधनुं बाल वकाखुं हो लाल ॥ माण॥२॥
 ए तो मायीने मोसावाई, अइ म्होटा करेय ठगाई ॥ तस हे
 ठे गइ चतुराई हो लाल ॥ माण॥३॥ वगला परे पगलां नरता,
 थोडुं बोले जाणे मरता ॥ जग धंधे घाले फिरता हो लाल ॥
 माण॥४॥ जे कपटी बोले जूवुं, तस लागे पाप अपूवुं ॥ पं
 कितमां होय मुख जूवुं हो लाल ॥ माण॥५॥ दंन्तीनुं जूवुं
 मीवुं, ते नारी चरित्रे दीवुं ॥ पण ते ठे दुर्गति चीवुं हो ला
 ल ॥ माण॥६॥ जे जूवो दे उपदेश, जन रंजनने धरे वेश ॥
 तेनो जूवो सकल कलेश हो लाल ॥ माण॥७॥ तेणे त्रीजो
 मारग जांख्यो, वेष निंदे दंजे राख्यो ॥ शुद्धनापीये सम सु
 ख चाख्यो हो लाल ॥ माण॥८॥ जूवुं बोली उदर जे नरवुं,
 कपटीने वेषे फरवुं ॥ ते जमवारे शुं करवुं हो लाल ॥ माण
 ॥९॥ पंढे जाए तो पण दंजे, मायामोसने अधिक अचंजे
 ॥ समकितदृष्टि मन अंजे हो लाल ॥ माण॥१०॥ श्रुत म
 र्यादा निरधारी, रह्या मायामोस निवारी ॥ शुद्धनाषकनी
 बलिहारी हो लाल ॥ माण॥११॥ जे मायाये जूव न बोले,
 जग नही कोइ तेहने तोले ॥ ते राजे सुजस अमोले हो ला
 ल ॥ माण॥१२॥ इति. ॥

अथ श्री मिथ्यादर्शनशटय पापस्थानक सञ्ज्ञाय.

(उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरे. ए देशी.)

अढारमुं जे पापनुं स्थानक, ते मिथ्यात्व परिहरियेजी
 ॥ सत्तरथी पण ते एक नारी, होय तुलाये जो धरिये जी ॥

कष्ट करो परे परे दमो अत्पा, धर्म अर्थे धन खरचो जी ॥ प
 ण मिथ्यात्व ठेते ते जूठुं, तिणे तेहथी तुमे विरचो जी ॥१॥
 कीरिया करतो त्यजतो परिजन, दुःख सहतो मन रीजे
 जी ॥ अंध न जीते परनी सेना, तिम मिथ्यादृष्टि न सीजे
 जी ॥ वीरसेन शूरसेन दृष्टांते, समकितनी निर्युक्ते जी ॥
 ते जोडने जलीपरे मन जावो, एह अरथ वर युक्ते जी ॥२॥
 धम्मे अधम्म अधम्मे धम्मद, सन्नामग्ग उमग्गा जी ॥ उ
 न्मार्गे मारगनी सन्ना, साधु असाधु संलग्गा जी ॥ असाधु
 मां साधुनी मति, जीवे अजीव अजीवे जीव वेदो जी ॥ मुक्ते
 अमुक्ते अमुक्ते मुक्तिह, सन्ना ए दश जेदो जी ॥३॥ अग्निग्रहिक
 निज निज मते अग्निग्रह, अनग्निग्रहिक सहसुरिखा जी ॥ अग्नि
 निवेशिक जाणे तो कहे जूठुं, करे न तत्व परिख्खा जी ॥ संशय
 ते जिन वचननी शंका, अव्यक्ते अनानोगा जी ॥ एपण पांचे
 जेद ठे विश्रुत, जाणे समजु लोगा जी ॥४॥ शोक लोकोत्तर जेद
 ए पट विध, देव धर्म वली गुरु पर्व जी ॥ शक्ते तिहां लौकि
 क त्रण आदर, करतां प्रथम निगर्व जी ॥ लोकोत्तर देव मा
 ने नियाणो, गुरु ते लक्षण दीणा जी ॥ पर्वनिष्ट इहलोकने
 काजे, माने गुरुपद लीना जी ॥ ५ ॥ ए एकवीश मिथ्या
 त्व त्यजे जे, नजे चरण गुरुकेरा जी ॥ सजे न पापे रजे न
 राखे; मत्सर डोह अनेरा जी ॥ समकितधारी शुद्ध आचारी,
 तेहनी जग वलिहारी जी ॥ शासन समकितने आराधे; ते
 हनी करो मनोहारी जी ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व ते जग परम रोग
 ठे, वलीय महा अंधकारो जी ॥ परम शत्रुने परम शस्त्र ते,
 परम नरक संचारो जी ॥ परम दोहगने परम दरिद्र ते, प

रम संकट ते कहिये जी ॥ परम कंतार परम डुर्निह ते, ते
 ठंमे सुख लहिये जी ॥७॥ जे मिथ्यात्व लवलेख न राखे, शु-
 द्धो मारग जांखे जी ॥ ते समकित सुरतरु फल चाखे, रहे
 वली अणीये आखे जी ॥ म्होटाइ शी होय गुण पाखे, गुण
 प्रभु समकित दाखे जी ॥ श्रीनयविजय विबुध पय सेवक,
 वाचक जस इम जाखे जी ॥७॥इति॥

अथ श्री आंबील तपनी सशाय.

श्री मुनिचंड मुनीसर वंदीए, गुणवंता गणधार ॥ सु-
 ज्ञानी ॥ देशना सरस सुधारस वरसता, ज्युं पुष्कर जलधार
 ॥ सु० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अतीसअ ज्ञानी पर उपगारीआ, संजम
 सुध आचार ॥ सु० ॥ श्री श्रीपाल जणी जीणे आपीन, करी
 सीधचक्र उदार ॥ सु० श्री० ॥ २ ॥ आंबील तप वीधी सीखी आ-
 राधीए, पत्नीकमणां दोय वार ॥ सु० ॥ अरीहंतादीक पद एक
 एकनुं, गुणणुं दोय हजार ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पडीलेहण दोय टंक
 नी कीजीए, जीनपुजा त्रण्य काल ॥ सु० ॥ ब्रह्मचारी वली
 जूँए संधारवुं, वचन न आल पंपाल ॥ सु० श्री० ॥ ४ ॥ मन एका
 ग्रह करी आंबील करो, आसो चैतर मास ॥ सु० ॥ सुद सात
 मथी नव दिन कीजीये, पुनमे उज्जव खास ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 इम नव जली एकाशी आंबिले, जली पूरण हर्ष ॥ सु० ॥ उज
 मणुं पण उजमथी करो, साढाच्यारे रे वर्ष ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥
 एह आराधनश्री सुख संपदा, कीरती जगमां रे आय ॥
 सु० ॥ रोग उपड्य नासे एहश्री, आपदा दूर पलाय ॥ सु० ॥ श्री०
 ॥ ७ ॥ संपदा वाधे अतीय सोहामणी, आणा होय अखंरु

॥सु०॥ मंत्र यंत्र तंत्रे करी शोचता, महीमा जास प्रचरु ॥
 सु०श्री०॥७॥ चक्रेश्वरी तेहनी सेवा करे, विमलेश्वर वर देव
 ॥सु०॥ मन अनिलापा पुरे तेहनी, जे करे नवपद सेव ॥सु०॥
 श्री०॥८॥ इणीपरे श्री श्रीपादे आराधीनु, तीणे नाठा तस रो
 ग ॥सु०॥ राज रुद्रि संपदाये, वाधीयो मनवंछित लह्या जोग
 ॥सु०॥ श्री०॥१०॥ नवमे नवे अनुक्रमे सीधसे, श्री सिद्धचक्र
 सुपसाय ॥सु०॥ इणी परे जे नवीयण आराधसे, तस जसवाद
 गवाय ॥सु०॥ श्री०॥११॥ ससारीक सुख विलसी अनुक्रमे, क
 री कर्मनो अंत ॥ सु० ॥ घाती अघाती क्षय करी जोगवे, शा
 श्वत सुख अनंत ॥सु०॥ श्री०॥१२॥ इम उत्तम गुरु वयण सुणी
 करी, पावन हुआ बहु जीव ॥सु०॥ पद्मविजय कहे ए सुरत
 रु समो, आपे सुख सदैव ॥सु०॥ श्री०॥१३॥ इति॥

अथ श्री पर्यूपणपर्वनी सञ्ज्ञाय.

परव पजुसण आवियां रे लोल, कीजे घणां धर्म ध्यान रे ॥
 नविक जन ॥ आरंज सकल निवारिये रे लोल, जीवने दीजे
 अनयदान रे ॥ न० ॥१॥ प०॥ सघला मासामां शिरे रे लो
 ल, जाध्व मास सुमास रे ॥ न०॥ तेहमां आठ दिन रूयमा
 रे लोल, किजे सुकृत उल्लास रे ॥ न०॥२॥ प०॥ खांमण पी
 सण गारमां रे लोल, नावण धोवण जेह रे ॥ न०॥ एहवा
 आरंज टालिए रे लोल, पामे सुख अठेह रे ॥ न०॥३॥ प०॥
 पुस्तक वासिने राखिए रे लोल, उठव करीय अनेक रे ॥ न०॥
 घर सारु वित वावरो रे लोल, हियमे आणि विवेक रे ॥
 न०॥४॥ प०॥ पुजि अरचि आणिए रे लोल, सदगुरुजिने पा

स रे ॥न०॥ ढोल ब्रदामा फेरीने रे लोल, मंगलीक गावे जा
 स रे ॥न०॥५॥५०॥ श्रीफल सखर सोपारियो रे लोल, दि
 जे सामिने हाथ रे ॥न०॥ लान अनंतो बताविउ रे लोल,
 श्रीमुख त्रिजोवन नाथ रे ॥न०॥६॥५०॥ नव वाचना श्री
 सूत्रनी रे लोल, सांजलो शुद्ध जाव रे ॥न०॥ सामिवञ्जल
 किजिए रे लोल, नवजल तरवा नाव रे ॥न०॥७॥५०॥ चि
 त करी चैत्य प्रवाप्तिया रे लोल, पुजा सत्तर प्रकार रे ॥न०॥
 अंग पुजा सदगुरुतणि रे लोल, किजे हरख अपार रे ॥न०॥
 ॥८॥५०॥ जीव अमर पलाविए रे लोल, तेहथी सिवसुख
 होय रे ॥न०॥ दान संवञ्जरी दिजिए रे लोल, एह सम परव
 न कोय रे ॥न०॥९॥५०॥ कानसग करिने सांजलो रे लोल,
 आगम आपणे कान रे ॥न०॥ ठठ अष्टम तप आकरा रे लो,
 किजे नज्जल ध्यान रे ॥न०॥१०॥५०॥ इणि विधे जे आराध
 शे रे लोल, ते लहे सुखनी कोड रे ॥न०॥ मुगति मंदिरमां
 मावस्ये रे लोल, मुनि हंस नमे करजोड रे ॥न०॥११॥

अथ श्री पांचमनी सन्धाय,

सुगुरु चरण पसानले रे लाल, पंचमीनो महिमा ॥ आ
 तमा ॥ विवरीने कहेशुं मेरे लाल, सुणतां पातिक जाय ॥आ०॥
 पंचमी तप प्रेमे करो रे लाल ॥ १ ॥ मन सुधे आराधीये रे
 लाल, बुटे करम नीदान ॥आ०॥ आ नव सुख पामे घणां रे
 लाल, परनव अमर विमान ॥आ०॥१॥५०॥ सयल सूत्र र
 चना करि रे लाल, गणधर हुवा रे विख्यात ॥आ०॥ ज्ञाने
 करिने जाणता रे लाल, सरग नरगनी वात ॥आ०॥३॥५०॥

गुरु ज्ञान क्रियाए दीपता रे लाल, ते तरिया संसार ॥आ०॥
 ज्ञानवंतने सह नमे रे लाल, उत्तरे जवपार रे ॥ आ०॥४॥
 पं०॥ अजुवाली पख पंचमी रे लाल, करो उपवास जगीस
 ॥आ०॥ नमो नाणस्स गणगुं गणो रे लाल, नोकरवृत्ती वि
 स ॥आ०॥५॥ पं०॥ पंच वरस एम जिये रे लाल, उपर
 वली पंच मास ॥आ०॥ सक्ति सारु उजवो रे लाल, जीम
 हुवे चित्त उलास ॥आ०॥६॥पं०॥ वरदत्तने गुणमंजरी रे ला
 ल, तपथी निरमल धाय ॥ आ० ॥ कीरतिविजय उवजाय
 ना रे लाल; कांतिविजय गुण गाय ॥आ०॥७॥ पं०॥ इति ॥

अथ श्री आठमनी सज्ञाय.

श्री सरस्वति चरणे नमी; आपो वचन विलास ॥ ज
 वियण॥अष्टमी गुण हुं वर्णवुं; कर सेवकने उच्चास॥ज०॥१॥
 अष्टमी तप जावे करो ॥ ए आंकणी ॥ आणी हर्ष उमेद ॥
 ज०॥तो तुमे वुटस्यो आपदा;करस्यो कर्मनो ठेद॥ज०॥२॥अष्ट
 प्रवचन ते पालिए, टालीए मदनो तामा॥ज०॥अष्ट प्रतिहारज
 मन धरि; जपीए ते जिनजीनुं नाम ॥ज० ॥३॥ ज्ञान आरा
 धन एह थकी; लहिए शिवसुख सार ॥ ज० ॥ आवागमन
 ज नवि दोवे; एह ठे जग आधार ॥ज०॥४॥ एहवो तप तुमे
 आदरो; धरिने मन जिनधर्म ॥ ज०॥ तो तुमे पामस्यो जव
 तणो, टालस्यो चिहुं गति जर्म ॥ज०॥५॥ तिर्थंकर पदवी ल
 हे; तपथी नवे निधान ॥ज०॥ तो जुन महि कुमरी परे;
 पाम्या ते बहु गुण ज्ञान ॥ज०॥६॥अ०॥ ए तपनाठे गुण घ
 णा; जांखे श्री जिन इश ॥ज०॥ श्री विजयरत्नसूरीदनो,

अथ श्री चार शरणां.

मुजने चार सरणां होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधु जी ॥
 केवली धर्म प्रकासीन; रत्न अमूलख लाधुं जी ॥ १ ॥ मु० ॥
 चउगती तणां दुःख ठेदवा, समरथ सरणां एहो जी ॥ पूर्वे
 मुनिवर जे हुवा; तेणे सरणां कीधां तेहो जी ॥ २ ॥ मु० ॥ सं
 सार मांहे जीवने; समरथ सरणां चारो जी ॥ गणि समय
 सुंदर एम कहे; कल्याण मंगलकारो जी ॥ ३ ॥ मु० ॥

लाख चोरासी जीव खमावीए; मन धरी परम विवेको
 जी ॥ मित्रामी डुकमं दीजीए; जीन वचने लहीए टेको
 जी ॥ १ ॥ ला० ॥ सात लाख जु दग तेउ वाउना, दश चौदे व
 नना जेदो जी ॥ खट विगल सुरतिरि नारकी, चउ ९ चउदे
 नरना जेदो जी ॥ २ ॥ ला० ॥ मुज वेर नहि केहशुं, सौ मित्र
 स्वजावो जी ॥ गणि समयसुंदर एम कहे, पामीए पुन्य प्र
 जावो जी ॥ ३ ॥ ला० ॥

पाप अठारे जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखे जी ॥
 आलोयां पाप बुटीए, जगवंत एणी परे जांखे जी ॥ १ ॥
 पा० ॥ आश्रव कषाय दोयबंधणा, वली कलह अन्याख्यानो
 जी ॥ २ ॥ रति अरति पैसुन निंदना, मायामोस मिथ्यातो जी
 ॥ ३ ॥ पा० ॥ मन वचन कायाए जे कख्यां, मित्रामी डुकमं
 तेहो जी ॥ गणि समयसुंदर एम कहे, जैनधर्मनो मर्म एहो
 जी ॥ ३ ॥ पा० ॥

धन ९ ते दिन मुज कदी होसे, हुं पामीश संजम सुधो
 जी ॥ पूर्व रुषि पंथे चालसुं, गुरु वचन प्रतिबुद्धो जी ॥ १ ॥ ध० ॥

अंत पंत त्रिहा गोचरी, रण वने काजसग लहीसुं जी ॥ स
मता शत्रु मित्र जावहुं, सम्यक् सुखे घरहुं जी ॥१॥ धण॥
संसारना संकट थकी, हुं ठुटीश अवतारो जी ॥ धनश् सम
यसुंदर ते घडी, तो हुं पामीश जवनो पारो जी ॥३॥ धण॥

चालो सहीयरो मंगल गाइए, लहीए प्रभुनां नाम रे ॥
ए आंकणी ॥ पहेलुं मंगल वीर प्रभुनुं, वीजुं गौतमस्वामी रे
॥त्रीजुं मंगल धुलिजझुं, चोथुं मंगल धर्म रे ॥१॥ चाण॥ जी
वनी जयणा नित्यज करीए, सेविये जैनधर्म रे ॥ जीव अ
जीवने छलखीए तो, समकीतनुं मर्म रे ॥२॥ चाण॥ ठाणं इंधणां
नितज पुंजीए, चुले चंदरवो बांधीए रे ॥ पोचे हाथे वासी
दां वालीए, दीवे ढांकण ढांकीए रे ॥३॥ चाण॥ सीआले पकवान
दीन त्रीस, जनाले दीन वीस रे ॥ चोमासे पंदर दीन मान,
उपर अनक जाण रे ॥४॥ चाण॥ चउद थानकीआ जीव छलखी
ए, पत्रवणा सूत्रनी साखे रे ॥ वनीनीतमां बलखा मांहे,
अंतर्मुहुर्त पाखे रे ॥५॥ चाण॥ सरीरनो मेल नाकनो मेल, वमन
पीत सातमे रे ॥ शुक्र सोणित मृत्यु कलेवर, चीनुं कलेवर अ
गीआरमे रे ॥६॥ चाण॥ नगरनो खाल असुची ठामे, स्त्री पुरुष सं
गमे रे ॥ उपजे त्यां मनुष समुर्विम, थानक जाणो चउदमे रे
॥७॥ चा०॥ असंख्याता अंतर्मुहुर्त आवखे, बीजानो नहि पार
रे ॥ बावीस अनक वत्रीस अनंतकाय, वरजे नरने नार रे
॥८॥ चाण॥ आप वेदना पर वेदना सरखी, लेखवीए आठ जाम
रे ॥ पद्मवीजय पसायथी पामे, जीत ठामो ठाम रे ॥९॥ चा०॥

॥ अथ श्री बार नावनानी ढालो प्रारंभः ॥

॥ दोहा. ॥

पास जिनेश्वर पय नमी, सहगुरुने आधार ॥ नविय
एा जनने हित नणी, नणशुं नावन बार ॥१॥ १प्रथम अ
नित्य १अशरणपणुं, एह ३संसार विचार ॥ ४एकलपणुं ए
अन्यत्व तिम, ६अशुचि ७आश्रव संनार ॥१॥ ८संवर एनि
ऊँर नावना, १० लोकसरूप ११ सुबोधि ॥ ६छह नावन
१२जिनधरम, एणीपरे करे जीव सोधि ॥३॥ रसकुंपी रस
नावियो, लोह थकी होय हेम ॥ जीव इण नावन शुद्ध हुए,
परम रूप लहे तेम ॥४॥ नाव विना दानादिको, जाणे अलू
णो धान ॥ नाव रसांग मढया थकी, तूटे करम निदान ॥५॥

॥ ढाल १ ली. ॥

(नावनानी देशी.)

पहेली नावना एणीपरे नावीये रे; अनित्यपणुं सं
सार ॥ कान्न अणी जेहवो जलविंडुज्जी, इंडधनुष अनुहा
र ॥ सहज संवेगी सुंदर आतमा रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ धर
जिन धर्मशुं रंग ॥ चंचल चपलानी परे चिंतवे रे, कृत्रिम
सवि हु संग ॥ स० ॥१॥ इंडजाल सुहणां शुन्न अशुन्नशुं रे,
कूडो तोषने रोष ॥ तिम अम नूढया अधिर पदारथे रे, श्यो
कीजे मन शोष ॥ स० ॥ ३ ॥ ठार त्रेह पामरना नेह ज्युं रे,
ए जोवन रंग रोल ॥ धन संपद पण दीसे कारमी रे, जेहवा
जलधि कल्लोला ॥ स० ॥ ४ ॥ मुंज सरिखे मागी नीखडी रे, राम
रह्या वनवास ॥ एणो संसारे ए सुख संपदा रे, जिम संध्या
राग विलास ॥ स० ॥ ५ ॥ सुंदर ए तनु शोन्ना कारमी रे, विण

संतां नहीं वार ॥ देव तणे वचने प्रतिवूजीयो रे, चक्री सन
तकुमार ॥ स० ॥ ६ ॥ सूरज राहु ग्रहणे समजीयो रे, श्री की
र्तिधर राय ॥ करकंभू प्रतियुज्यो देखीने रे, वृषभ जराकु
ल काय ॥ स० ॥ ७ ॥ किहां बगे धूआ धवल हर रहे रे, जल
परपोटो जोय ॥ आनखुं अथिर तिम मनुष्यनुं रे, गर्व म क
रओ कोय ॥ जे क्षणमां खेरु होय ॥ स० ॥ ८ ॥ अतुलिव
ल सुर वर जिनवर जिझ्या रे, चक्री हरिवल जोडि ॥ न र
ह्यो एणे जुग कोइ थिर अइ रे, सुर नर नूपति कोडि ॥
स० ॥ ९ ॥ इति. ॥

॥ दोहा. ॥

पल पल गीजे आनखुं, भंजली जल ज्युं एह ॥ चल
ते साथे संबलो, लेइ शके तो लेह ॥ १ ॥ ले अचित्य गलगुं
ग्रही, समय सींचाणो आवि ॥ शरण नहीं जिनवयण विण,
तेणे हवे अशरण जावि ॥ २ ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

(राग सामेरी, राम जणे हरि उगीये ॥ ए देशी.)

बीजी अशरण जावना, जावो हृदय मजार रे ॥ घर
म विना परजव जतां, पापे न लहीश पार रे ॥ जाइश नर
क डवार रे, तिहा तुज कवण आधार रे ॥ लाल सुरंगारे प्रा
णीआ ॥ १ ॥ ए आंकणी. ॥ मुकने मोह जंजाल रे, मिथ्या
मति सवि ढाल रे, माया आल पंपाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥ मात
पिता सुत कामिनी, नाइ जयणि सहाय रे ॥ में में करतां
रे अज परे, कर्म ग्रहो जीव जाय रे ॥ तिहां आडो को न

वि थाय रे, दुःख न लीये वेंहं चाय रे ॥ लाण ॥ ३ ॥ नंदनी सो
 वन हुंगरी, आखर नावी को काज रे ॥ चक्री सुजूम ते ज
 लधिमां, हाखो षट खंम राज रे ॥ बूढ्यो चरम ऊहाज रे,
 देव गया सवि ज्ञाज रे; लोभे गइ तस लाज रे ॥ लाण ॥ ४ ॥
 छीपायन दही छारिका, बलवंत गोविंद राम रे ॥ राखी न
 शक्या रे राजवी, मात पिता सुत धाम रे ॥ तिहां राख्यां
 जिन नाम रे, शरण कील नेमिस्वाम रे ॥ व्रत लेइ अनिराम
 रे, पोहोत्या शिवपुर ठाम रे ॥ लाण ॥ ५ ॥ नित्यमित्र सम दे
 हडी, सयणां पर्व सहाय रे ॥ जिनवर धर्म नगरशे, जिम
 ते वंदनीक ज्ञाय रे ॥ राखे मंत्रि नपाय रे, संतोष्यो बली
 राय रे; टाड्या तेहना अपाय रे ॥ लाण ॥ ६ ॥ जनम जरा
 मरणादिक, वयरी लाग्या ठेकेड रे ॥ अरिहंत शरण सुआ
 दरी, जव भ्रमनां दुःख फेड रे ॥ शिवसुंदरी घर तेड रे, ने
 ह नवल रस रेड रे, सींची सुकृत तरु पेड रे ॥ लाण ॥ ७ ॥

॥ दोहा. ॥

थावचा सुत अरहस्यो, जोर देखी जम घाड ॥ संय
 म शरणुं संग्रह्युं; धण कण कंचण ठांड ॥ १ ॥ इणे शरणे सु
 खीया अया, श्री अनार्थी अणगार ॥ शरण लह्या विण जी
 वडो, इणी परे रुले संसार ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

(राग मारुणी.)

त्रीजी ज्ञावन इणी परे जावीये रे, एह सरूप संसार ॥

કર્મવશે જીવ નાચે નવ નવ રંગશું રે, એ એ વિવિધ પ્રકાર ॥
 ચેતન ચેતી એ રે ॥૧॥ એ આંકળી. ॥ લહી માનવ અવતાર ॥
 જવ નાટકથી જો હવે ઝનગારે, તો ઠંઠો વિષય વિકાર ॥
 ચેળાશ ॥ કવ હી જૂ જલ જલણા નિલ તરુમાં વશો રે, કવ હી
 નરક નિગોદ ॥ વિતિ ચરેંદિય માંહે કેડ દિન વશ્યો રે, કવ
 હીક દેવ વિનોદ ॥ ચેળ ॥ ૩ ॥ કીડી પતંગ હરિ માતંગ પણું
 જજે રે, કવ હી સર્પ શીયાલ ॥ બ્રાહ્મણ કૃત્રીય વૈશ્ય વણિક
 કહાવતો રે, હોવે શૂઢ ચંમ્પાલ ॥ ચેળા ॥ ૪ ॥ લલ ચોરાશી ચ
 ઘટે રમતો રંગશું રે, કરી કરી નવ નવ વેશ ॥ રૂપ કુરૂપ ધ
 ની નિર્દય સોનાગીયો રે, હર્નાગી દરવેશ ॥ ચેળા ॥ ૫ ॥ જ્ય
 કેત્ર સૂક્ષ્મને વાદર જેડશું રે, કાલ જાવ પણ તેમ ॥ અનંત
 અનંત પુજલ પરાવર્તન કચ્છારે, કહ્યો પન્નવણા એમ ॥ ચેળ
 ॥ ૬ ॥ જાઈ વહિન નર નારી તાત પણું જજે રે, માત પિતા હો એ
 પુત્ર ॥ તેહિજ નારી વૈરીને વલી વાલહી રે, એહ સંસારહ સૂ
 ત્ર ॥ ચેળ ॥ ૭ ॥ જવન જાનુ જિન જાંઘ્યા ચરિત્ર સુણી ઘણાં
 રે, સમજ્યા ચતુરસુજાણ ॥ કર્મ વિવર વશ મૂકી મોહ વિ
 ટંબનારે, મહ્યા મુગતિ જિન જાણ ॥ ચેળા ॥ ૮ ॥ શિતિ. ॥

॥ દોહા. ॥

ઈમ જવજવ જે હુઃખ સહ્યા, તે જાણે જગનાથ ॥
 જયનંજણ જાવઠ હરણ, ન મહ્યો અવિદ્ધ સાથ ॥ ૧ ॥
 તેણે કારણ જીવ એકલો; ઠોડી રાગ ગલપાસ ॥ સવિ સંસારી
 જીવશું, ઘર ચિત્ત જાવ ઝડાસ ॥ ૨ ॥

॥ ઢાલ ૪ થી. ॥

(राग गोडी. पूत न कीजे हो साधु विसासडो.)

चोथी ज्ञावना नवियण मन धरो; चेतन तुं एकाकी
रे ॥ आव्यो तिम जाइश परजव वली; इहां मूकी सवि वा
कीरे ॥ ममकर ममतारे समता आदरो ॥१॥ ए आंकणी॥
आणो चित्त विवेको रे ॥ स्वारथीयां सज्जन सह ए मढ्यां; सु
ख डःख सहेसो एको रे ॥ मण॥१॥ वित्त वहेचण आवी सह
ए मढ्यां, विपत्ति समय जाय नासी रे ॥ दव बलतो देखी
दश दिशे पुले, जेम पंखी तरुवासी रे ॥ म०॥३॥ पट खंम
नवनिधि चौद रयण धणी; चोशठ सहस्स सु नारी रे ॥ ठेह
डेढोडी चढया ते एकला; हास्यो जेम जूआरी रे ॥ म० ॥४॥
त्रिजुवन कंटक विरुद धरावता, करता गर्व गुमानो रे ॥ त्रा
गा विण नागा ते सह चढया; रावण सरिखा राजानो रे ॥
म० ॥ ५॥ माल रहे घरस्त्री विसामता; प्रेतवना लगे लो
को रे ॥ चय लगे कायारे आखर एकलो; प्राणी चले पर
लोको रे ॥ मण॥६॥ नित्य कलहो बहु मेले देखीयो, विहुं प
ण खटपट आय रे ॥ वलियानी परे विहरीश एकलो, इम वू
ऊयो नमिराय रे ॥ मण॥७॥ इति॥

॥ दोहा. ॥

जवसायर बहु डःख जल; जन्म मरण तरंग ॥ म
मता तंतु तिणे ग्रह्यो; चेतन चतुर मातंग ॥१॥ चाहे जो ठो
डण ज्ञणी; तो ज्ञज ज्ञगवंत महंत ॥ दूर करे पर बंधने; जि
म जलथी जलकंत ॥२॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

(कपूर हुवे अति ऊजलो रे ए देशी.)

पांचमी जावन जावीए रे, जिन् अन्यत्व विचार ॥
 आप सवारथी ए सहुरे; मलिज तुज परिवार ॥ संवेगी तुं
 दर, वुज मा मूज गमार ॥ १ ॥ ए आंकणी. ॥ त्हारुं को न
 हीं इण संसार, तुं केहनो नही निरधार ॥ सं० ॥ १ ॥ पंथ सिरे
 पंथी मळ्यारे; कीजे किणहीशुं प्रेम ॥ रात्रि वसे प्रह ऊठच
 ले रे, नेह निवाहे केम ॥ सं० ॥ ३ ॥ जिम मेलो तीरथ मले रे;
 जन वणजनी चाह ॥ केत्रोटो के फायदो रे, लेइ लेइ निज
 घर जाह ॥ सं० ॥ ४ ॥ जिहां कारज जेहनां सरे रे, तिहां ते दा
 खे नेह ॥ सूरिकंतानी परे रे, ठटक देखाडे ठेइ ॥ सं० ॥ ५ ॥
 चूलणी अंगज मारवारे, कुड करी जतु गेह ॥ जरत बाहु बल
 ऊजीया रे; जुज जुज निजना नेह ॥ सं० ॥ ६ ॥ श्रेणिक पुत्रे
 बांधीज रे, लीधुं वहेची राज्य ॥ दुःख दीधुं बहु तातने रे;
 देखो सुतनां काज ॥ सं० ॥ ७ ॥ ए जावनाये शिवपुर लहुं रे,
 श्री मरुदेवी माय ॥ वीर शिष्य केवल लहुं रे, श्री गौतम
 गण राय ॥ सं० ॥ ८ ॥ इति. ॥

॥ दोहा ॥

मोह वसु मन मंत्रिबी; इंडिय मळ्या कलाल ॥ प्रमाद
 मदिरा पायके; बाध्यो जीव जूपाल ॥ १ ॥ कर्म जंजीर जडी
 करी; सुकृत माल सवि लीध ॥ अशुज विरस डुरगंध मय,
 तन गोत हरे दीध ॥ २ ॥

॥ ढाल ६ छी. ॥

(राग सिंधु सामेरी.)

ढठी जावन मन धरो जीव; अशुचि जरी ए काया रे॥
 शी माया रे; मांडे काचा पिंमशुं ए ॥१॥ नगर खाल परे नि
 त वहे; कफ मल मूत्र जंमारो रे; तिम छारो रे॥ नर नव द्वाद
 श नारिना ए ॥२॥ देखी डुरगंध दूरथी; तुं मुह मचकोडे मा
 णे रे ॥ नवि जाणे रे; तिण पुज्ज निज तनु जखुं ए ॥ ३ ॥
 मांस रुधिर मैदा रसे; अस्थि मज्जा नर बीजे रे ॥ शुं रीजे रे;
 रूप देखी देखी आपणुं ए ॥ ४ ॥ कृमि वालादिक कोथली;
 मोहरायनी चेटी रे ॥ एपेटी रे; चर्म जडी घणा रोगनी ए
 ॥५॥ गर्जवास नव मासमां; कृमि परे मलमां वसियो रे; तुं
 रसीयो रे ॥ जंघे माथे इम रह्यो ए॥६॥ कनक कुमरी नोजन
 जरी; तिहां देखी डुरगंध बुज्या रे ॥ ते जूज्या रे; मल्लि
 मित्र निज कर्मशुं ए ॥७॥ इति॥

॥ दोहा. ॥

तन बिल्वर इंडी मढा, विषय कलोल जंवाल ॥ पाप
 कलुष पाणी जखुं, आश्रव वहे घडनाल ॥ १ ॥ निर्मल पख
 सहेजे सुगति, नाण विनाण रसाल ॥ शुं बगनी परे पंकज
 ल, चूंथे चतुर मराल ॥ २ ॥

॥ ठाल ७ मी. ॥

(राग धोरणी.)

आश्रव जावना सातमी रे, समजो सुगुरु समीप ॥
 क्रोधादिक कांडू करो रे; पामी श्री जिन दीपो रे ॥ सुण सु
 ण प्राणिया; परिहर आश्रव पंचो रे ॥ दशमे अंगे कहा;
 जेहना डुष्ट प्रपंचो रे ॥ सुण॥१॥ होंशे जे हिंसा करे रे; ते ल

हेश कटुक विपाक ॥ परिहोशे गोत्रासनी रे; जो जो अंग वि
पाको रे ॥ सु० ॥ १ ॥ मिथ्या वयणे वसु नड्यो रे; मंनिक पर
धन लेइ ॥ इणं अत्रहो रोलव्या रे; इंझादिक सुर केइ रे ॥ सु०
॥ ३ ॥ महाआरंज परिग्रहे रे, ब्रह्मदत्त नरय पदुत्त ॥ सेव्यां
शत्रु पणुं जजे रे; पांचे छरगति दूतो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ठिड स
हित नावा जले रे; बूडे नीर जराय ॥ तिम हिंसादिक आ
अवे रे; पापे पिंम जरायो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ अविरति लगे एके
डियारे, पापस्थान अठार ॥ लागे पांचे ही क्रिया रे, पंच
म अंग विचारो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कटुक क्रिया थानक फलां रे;
बोढ्या बीजे अंग ॥ कहेतां हीयडुं कमकमे रे, विरुज तास
प्रसंगो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ १ मृग श्पतंग ३ अली ४ माठलो रे, एक
री एक विषय प्रपंच ॥ डःखीयाते किम सुख जहे रे, जस
परवश एह पंचो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हास्य निंद विकथा वशे रे,
नरक निगोदे रे जात ॥ पूरवधर श्रुत हारीने रे, अवरांनी
शी वातो रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ दोहा. ॥

शुज मानस मानस करी, ध्यान अमृत रस रेल ॥ नव
दल श्री नवकार पय, करी कमलासन केलि ॥ १ ॥ पातक पंक
पखालीने, करी संवरनी पाल ॥ परम हंस पदवी नजो, वो
डी सकल जंजाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ८ मी. ॥

(श्री गुरु पदपंकज नमी जी. ए देशी.)

आठमी संवर जावना जी, धरी चित्तशुं एक तार ॥

समिति गुनि सूधी धरो जी, आपो आप विचार ॥ सल्लगा;
 शांति सुधारस चाख ॥ ए आंकणी. ॥ विरस विषय फल फू
 लडे जी, अटतो मन अनि राख ॥ सणा १ ॥ ज्ञान अज्ञाने सु
 ख दुःखे जी, जीवित मरण समान ॥ शत्रु मित्र सम जाव
 तो जी, मान अने अपमान ॥ सणा २ ॥ कही ए परिग्रह वांड
 शुं जी, लेशुं संयम नार ॥ श्रावक चिंते हुं कदा जी, करीश
 संधारो सार ॥ सणा ३ ॥ साधु आमंसा इम करे जी, मृत्र न
 एीश गुरु पास ॥ एकलमस्तु प्रतिमा ग्ही जी, करीश मंजे
 पण खास ॥ सणा ४ ॥ सर्व जीव द्वित चिंतये जी, वैर म कर
 जग मित्त ॥ सत्य वचन मुख जांग्रीये जी, परिहर परनुं वि
 त्त ॥ सणा ५ ॥ काम कटक नेदण नणी जेव वर तुं शीलस
 ब्राह्म ॥ नवविध परिग्रह मूकतां जी, लहीये सुख अथाह
 ॥ सणा ६ ॥ देव मणुअ उपसर्गशुं जी, निश्चल होय सधी
 र ॥ वागीश परीसद् जीपीये जी; जिम जीत्या श्री वीर ॥
 सणा ७ ॥ इति. ॥

॥ दोहा. ॥

दृढप्रहर दृढ ध्यान धरी, गुण निधि गजसुकुमाल ॥
 मेतारज मदन भ्रमो, सुकोशल सुकुमाल ॥ १ ॥ इम अनेक
 मुनिवर तस्या, उपशम संवर जाव ॥ कठिन कर्म सवि नि
 र्जक्यां, तेणे निर्जर प्रस्ताव ॥ २ ॥

॥ ढाल ए मी. ॥

(राग गोडी, मन झमरा रे ॥ ए देशी.)

नवमी निर्जर जावना, चित्त चेतो रे ॥ आदरी व्रत प

चक्राण ॥ चतुर चित्त चेतो रे ॥ पाप आलोचो गुरु कने,
 चिण॥ धरिये विनय सुजाण ॥ चण॥१॥ वैयावच्च बहुविध क
 रो ॥ चिण॥ दुर्वल बाल गिलान ॥ चण॥ आचारज वाचक त
 णो ॥ चिण॥ शिष्य साधर्मिक जाण ॥ चण॥१॥ तपसी कुल
 गण संघनो ॥ चिण॥ धविर प्रवर्तक वृद्ध ॥ च०॥ चैत्य नक्ति
 बहु निर्झरा ॥ चिण॥ दशमे अंग प्रसिद्ध ॥ चण॥३॥ उन्नय टं
 क आवश्यक करो ॥ चिण॥ सुंदर बलि सजाय ॥ चण॥ पोसह
 सामायिक करो ॥ चिण॥ नित्य प्रत्ये निय मन जाय ॥ च०
 ॥४॥ कर्मसूडन कनकावली ॥ चिण॥ सिद्धनिक्रीडित दोय
 ॥ चण॥ श्रीगुणरयण संवत्सर ॥ चिण॥ साधु पडिम दश दो
 य ॥ चण॥५॥ श्रुत आराधन साचवो ॥ चिण॥ योगबहन उप
 धान ॥ चण॥ शुक्लध्यान सूधुं धरो ॥ चिण॥ श्री आंबिलव
 र्द्धमान ॥ चण॥६॥ चौद सहस्त अणगारमां ॥ चिण॥ धन ध
 न्नो अणगार ॥ चण॥ स्वयंमुख वीर प्रशंसीयो ॥ चिण॥ खंध
 क मेघकुमार ॥ चण॥७॥ इति ॥

॥ दोहा. ॥

मन दारु तन नालि करि, ध्याननल सलगाव ॥ कर्म
 कटक नेदन जणी; गोला ज्ञान चलाव ॥ १ ॥ मोहराय मा
 री करी; जंचो चढी अवलोय ॥ त्रिभुवन मंदिर मांझणी;
 जिम परमानंद होय ॥२॥

॥ ढाल १० मी. ॥

(राग गोडी, जंबूघीप मज्जार ॥ ए देशी.)

दशमी लोक स्वरूपरे; जावन जावीये ॥ निसुणि गुरु

उपदेशथी ए ॥१॥ ऊर्ध्व पुरुष आकार रे, पग पहोला करी ॥
 कर दोय कटी राखीये ए ॥ २ ॥ एणे आकारे लोक रे; पुञ्ज
 पूरीनु; जिम काजलनी कूपली ए ॥३॥ धर्म अधर्म आकाश
 रे; देश प्रदेश ए; जीव अनंते पूरीनु ए ॥ ४ ॥ सातराज दे
 शूण रे; ऊर्ध्व तिरिय मली; अधोलोक सात साधिकूं ए
 ॥५॥ चौदराज त्रसनाडी रे; त्रस जीवालय; एक रज्जु दी
 र्घ विस्तरू ए ॥ ६ ॥ ऊर्ध्व सुरालय सार रे; निरय जुवन नी
 चे; नाज्जी नर तिरि दो सुरा ए ॥७॥ द्वीप समुद्र असंख्य रे;
 प्रजु मुख सांजली; राय रूपि शिव समजीनु ए ॥८॥ लांबी
 पहोली पणयाल रे; लखजोयण लही; सिद्धशिला शिर ऊ
 जली ए ॥ ९ ॥ ऊंचो धनुसय तीन रे; तेत्रीश साधिके; सि
 ष्ठ योजनने ठेहडे ए ॥१०॥ अजर अमर निकलंक रे; नाण
 दंसणमय; ते जोवा मन गहगहे ए ॥११॥ इति.

॥ दोहा. ॥

वार अनंती फरसीनु, ठाली वाटक न्याय ॥ नाण वि
 ना नवि सांजरे; लोक त्रमण चडवाय ॥ १ ॥ रत्नत्रय त्रिहुं
 जुवनमें; छल्लह जाणी दयाल ॥ बोधिरयण काजे चतुर;
 आगम खाण संजाल ॥२॥

॥ ढाल ११ मी. ॥

(राग खंजाती.)

दश दृष्टांते दोहिलो रे; लाध्यो मणुअ जमारो रे ॥ ३
 छहो जंवर फूल ज्युं रे, आरज घर अवतारो रे ॥ मोरा जीवन
 रे ॥ बोधिजावन इग्यारमी रे; ज्ञावो हृदय मजारो रे ॥ मो०

॥१॥ ए आंकणी. ॥ उत्तम कुल तिहां दोहिलो रे, सहगुरु धर्म
 संयोगो रे ॥ पांचे इंडीय परवडा रे; उल्लहो देह निरोगो रे ॥
 मोण॥१॥ सांजलवुं सिद्धांतनुं रे; दोहिलुं तस चित्त धरवुं रे ॥
 सूधी सदहणा धरी; उक्कर अंगे करवुं रे ॥ मोण॥३॥ सामग्री
 सघली लही रे; मूढ मुधा म म हारो रे ॥ चिंतामणि देवी दीयो
 रे; हास्यो जेम गमारो रे ॥ मो० ॥४॥ लोह कीलकने कारणे रे;
 कुण यान जलधिमां फोडे रे ॥ गुण कारण कोण नवलखो रे,
 हार हीयानो त्रोडे रे ॥ मोण ॥५॥ बोधिरयण उवेखीने; को
 ण विपयार्थे दोडे रे ॥ कांकर मणि समोवड करे रे; गज वे
 चेखर होडे रे ॥ मो० ॥६॥ गीत सुणी नटणी कने रे; कुल्ल
 क चित्त विचास्यो रे ॥ कुमरादिक पण समजीया रे; बोधिर
 यण संज्ञास्यो रे ॥ मोण॥७॥ इति. ॥

॥ दोहा. ॥

परिहर हरिहर देव सवि, सेव सदा अरिहंत ॥ दोष र
 हित गुरु गणधरा, सुविदित साधु महंत ॥१॥ कुमति कदा
 ग्रह मूकतुं, श्रुत चारित्र विचार ॥ जवजल तारण पोत स
 म, ते धर्म हियामां धार ॥२॥

॥ ढाल १९ मी. ॥

(चेनत ज्ञान अजुआलिये, ए देशी.)

धन धन धर्म जग हितकरु, जांखियो जलो जिनदेव
 रे ॥ इह परजव सुखदायको; जीवडा जनम लगे सेव रे
 ॥ १ ॥ जावना सरस सुरवेखडी; रोष तुं हृदय आराम रे ॥
 सुकृत तरु लहिये वटु पसरती, सफल फलशे अनिराम रे ॥

ज्ञाण ॥ २ ॥ खेत्र शुद्धि करीये करुणारसे; काढि मिथ्यादिक
 साल रे ॥ गुपति त्रिहुं गोपी रूढी परे; नीक तुं सुमतिनी वा
 ल रे ॥ ज्ञाण ॥ ३ ॥ सींचजे सुगुरु वचनामृते; कुमति कंथेर त
 जी संग रे ॥ क्रोध मानादिक सूकरा; वानरो वार अनंग रे ॥
 ज्ञाण ॥ ४ ॥ सेवतां एहने केवली; पन्नर सय तीन अणगार
 रे ॥ गौतम शिष्य शिवपुर गया; ज्ञावतां देव गुरु सार रे
 ॥ ज्ञाण ॥ ५ ॥ शुक परिव्राजक सिधलो; अर्जुनमाली शिव
 वास रे ॥ राय परदेशीय पापीनु; कापीनु तास डःख पा
 स रे ॥ ज्ञाण ॥ ६ ॥ दुषम समय दुप्पसह लगे, अविचल शा
 सन एह रे ॥ ज्ञावशुं नवियण जे नजे, तेह शुन मति गुण
 गेह रे ॥ ज्ञाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ दोहा. ॥

तपगह्व पति विजयदेव गुरु, विजयसिंह मुनिराय ॥
 शुद्ध धर्म दायक सदा, प्रणमो एहना पाय ॥ १ ॥

॥ ढाल १३ मी. ॥

(राग धन्याश्री.)

तुमे ज्ञावो रे, नवि इणी परे ज्ञावना भावो ॥ तन म
 न वयण धर्म लय लावो, जिम सुख संपद पावो रे ॥ ज्ञाण
 ॥ १ ॥ ललनां लोचन मन न मोलाउ, धन कारण कांइ धावो
 ॥ प्रभुशुं तारो तार मिलावो, जो होय शिवपुर जावो रे ॥
 फरी गर्जवास न आवो रे ॥ ज्ञाण ॥ २ ॥ जंबुनी परे जीव जगा
 वो, विषय थकी विरमावो ॥ ए हितशिख अमारी मानी,
 जग जस पमह वजावो रे ॥ ज्ञाण ॥ ३ ॥ श्री जशसोम विबुध

वैरागी; जग जस चिहुं खंम चावो ॥ तास शिष्य कहे जाव
न जणतां, घर घर होय वधावो रे ॥ जण॥ ४ ॥

॥ दोहा. ॥

नोजन नज गुण वरस शुचि, सीत तेरश कुजवार ॥
जगति हेतु जावन जणी; जेसखमेर मऊार ॥ जण॥ ५ ॥

॥ इति श्री बार जावनानी ढालो समाप्तम्. ॥

अथ श्री जसोविजयजीकृत आठदृष्टिनी सञ्ज्ञायो.

अथ श्री प्रथम मित्रादृष्टिनी सञ्ज्ञाय.

(चतुर सनेहि मोहना. ए देशी)

शिवसुख कारण उपदिशि, योग तणी अड दिढी रे ॥
ते गुण शुणी जिन वीरना, करस्युं धरमनी पुढी रे ॥ वीर जिने
सर देशना ॥ १ ॥ सघन अधन दिन रयणिमां, वाल विकल
ने अनेरा रे ॥ अरथ जोये जिम जूजूआ, तिम नुध नजर
ना फेरा रे ॥ वीण॥ १ ॥ दर्शन जे अयां जूजूआं, ते नुध नजर
ने फेरे रे ॥ नेद थिरादिक दृष्टिमा, समकितदृष्टिने हेरे रे
॥ वीण॥ २ ॥ दर्शन सकलना नयग्रहे, आप रहे निज जावे
रे ॥ हित करी जनने संजीवनी, चारो तेह चरावे रे ॥ वीण
॥ ४ ॥ दृष्टी थिरादिक चारमां, मुगति प्रयाण न जाजे रे ॥
रयणि सयन जेम श्रम हरे, सुर नर सुख तेम ठाजे रे ॥ वीण
॥ ५ ॥ एह प्रसंगथी में कह्युं, प्रथम दृष्टी हवे कहिये रे ॥
जिहां मित्रा तिहा बोध जे, ते तृण अगनि सो लहिये रे ॥ वीण

॥ ६ ॥ व्रत पण जिम इहां संपजे, खेद नही शुभ्र काजे रे ॥
 द्वेष नही बली अवरसुं, एह गुण अंग विराजे रे ॥ वीणा॥ ७ ॥
 योगनां बीज इहां ग्रहे, जिनवर शुद्ध प्रणामो रे ॥ ज्ञावाचा
 रज सेवना, नव उद्देग सुगामो रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ इव्य अग्निग्र
 ह पालवा, नृषध प्रमुखने दाने रे ॥ आदर आगम आशरी,
 लिखनादिक बहुमाने रे ॥ वीणा॥ ९ ॥ लेखन पुजन आपवुं,
 श्रुत वाचना नदग्राहो रे ॥ ज्ञाव विस्तार सजायथी, चिंतन
 ज्ञावने चाहो रे ॥ वीणा॥ १० ॥ बीज कथा ज्ञली सांजली, रो
 मांचित हुये देह रे ॥ एह अवंचक योगथी, लहिये धरम सने
 हरे ॥ वीणा॥ ११ ॥ सदगुरु योगे वंदन क्रिया, तेहथी फल होय
 जेहो रे ॥ योग क्रिया फल जेदथी; त्रिविध अवंचक एहो रे
 ॥ वीणा॥ १२ ॥ चाहे चकोर ते चंदने; मधुकर मालती नोगी रे
 ॥ तेम नवि सहज गुणे होये; उत्तम निमित्त संयोगी रे ॥
 वी० ॥ १३ ॥ एह अवंचक योग ते, प्रगटे चरमावर्त्ते रे ॥ सा
 धुने सिद्धदशा समो; बीजनं चित्त प्रवर्त्ते रे ॥ वीणा॥ १४ ॥ क
 रण अपूर्वना निकटथी, जे पहेलुं गुणठाणुं रे ॥ मुख्यपणो
 ते इहां होये; सुजश विलासनं टाणुं रे ॥ वीणा॥ १५ ॥ इति॥

अथ श्री बीजी तारादृष्टिनी सज्ञाय;

(मन मोहन मेरे. ए देशी.)

दर्शन तारा दृष्टिमां; मन मोहन मेरे ॥ गोमय अग्नि
 समान ॥ म० ॥ शौच संतोषने तप जलो ॥ म० ॥ सजाय ई
 श्वर ध्यान ॥ म० ॥ १ ॥ नियम पंच इहां संपजे ॥ म० ॥ नही
 किरिया उद्देग ॥ म० ॥ जिज्ञासा गुण तत्त्वनी ॥ म० ॥ पण न

ही निज हठ टेग ॥ मण॥ १ ॥ ए दृष्टी होय वरततां ॥ म० ॥
 योग कथा बहु प्रेम ॥ म० ॥ अनुचित तेह न आचरे ॥ मण॥
 वाढ्यो वले जेम हेम ॥ मण॥ ३ ॥ विनय अधिक गुणीनो करे
 ॥ मण॥ देखे निज गुण दाण ॥ मण॥ त्रास धरे जव नय थकी
 ॥ मण॥ जव माने डःख खाण ॥ मण॥ ४ ॥ शास्त्र घणां मति
 थोडली ॥ म० ॥ शिष्ट कहे ते प्रमाण ॥ मण॥ सुजश लहे ए
 नावथी ॥ मण॥ न करे जूठ रुफाण ॥ मण॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री त्रीजी वलादृष्टिनी संज्ञाय;

(प्रथम गोवाला तणे जवे जी. ए देशी.)

त्रीजी दृष्टी वला कही जी, काष्ट अगनी सम बोध ॥
 क्लेप नही आसन सधे जी, श्रवण समीहा सोधरे ॥ जिन
 जी, धन धन तुज उपदेश ॥ १ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्थो
 जी; जेम चाहे सुर गीत ॥ सांजलवा तेम तत्त्वने जी; ए दृ
 ष्टी सुबिनितरे ॥ जि० ॥ २ ॥ सरिए बोध प्रवाहनी जी, ए
 विण श्रुत थलकूप ॥ श्रवण समीहा ते किसी जी; सचित
 सुणे जेम जूपरे ॥ जिण॥ ३ ॥ मन रीजे तन उल्लसे जी; री
 जे बुजे एक तान ॥ ते इच्छाविणु गुण कथा जी; वहिरा आ
 गल गानरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ विघन इहां प्राये नही जी, धर्म हेतु
 मां कोय ॥ अनाचार परिहारथी जी; सुजश महोदय हो
 यरे ॥ जिण॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री चोथी दीप्तादृष्टिनी संज्ञाय;

(जांजरीयानी देशी.)

योग दृष्टी चोथी कही जी; दीप्ता तिहां न उठान ॥ प्रा
 णायाम ते ज्ञावथी जी; दीप प्रज्ञा सम ज्ञान ॥ मन मोहन
 जिन जी, मीठी ताहरी वाण ॥ १ ॥ बाह्य ज्ञाव रेचक इहां
 जी; पूरक अंतर ज्ञाव ॥ कुंज कश्चिरता गुणे करी जी; प्रा
 णायाम स्वज्ञाव ॥ मण॥१॥ धर्म अरथि इहां प्राणने जी; वां
 डे पण नही धर्म ॥ प्राण अरथे संकट पमे जी; जूनु ए दृष्टी
 नो मर्म ॥ मण॥३॥ तत्त्व श्रवण मधुरोदके जी; इहां होए बी
 ज प्ररोह ॥ खार उदक सम ज्ञाव त्यजे जी; गुरु जगति अ
 डोह ॥ मण॥४॥ सुकृम बोध तो पण इहां जी; समकित वि
 ण नवि होय ॥ वेद्य संवेद्य पदे कह्यो जी; ते न अवेद्ये जोय
 ॥ मण॥५॥ वेद्य बंध शिवहेतु ठे जी; संवेदन तस नाण ॥ न
 य निक्षेपे अति जलुं जी; वेद्य संवेद्य प्रमाण ॥ मण॥६॥ ते प
 द ग्रंथि विनेदथी जी; ठेहली पाप प्रवृत्ति ॥ तसलोह पद धृ
 ति समी जी; तिहां होय अंत निवृत्ति ॥ मण॥७॥ एह अकी
 विपरित ठे जी; पद ते अवेद्य संवेद्य ॥ ज्ञाव अग्निनंदी जीव
 ने जी; ते होय वज्र अज्ञेय ॥ मण॥८॥ लोनी कृपण दयाम
 णो जी; मायी मञ्जर ठाण ॥ ज्ञाव अग्निनंदी ज्ञाव जय नस्यो
 जी; अफल आरंज अयाण ॥ म०॥९॥ एहवा अवगुणवंत
 नुं जी; पद ठे अविद्य कठोर ॥ साधु संग आगम तणुं जी;
 ते जीत्यो धुर घोर ॥ मण॥१०॥ ते जीते सहजे टले जी; वि
 षम कुतर्क प्रकार ॥ दूरे निकट हाथी हणे जी, जेम ए बठ
 र विचार ॥ मण॥११॥ हुं पाम्यो संशय नहि जी, मूरख करे
 ए विचार ॥ आलसुआ गुरु शिष्यनो जी; ते तो वचन प्रका
 र ॥ मण॥१२॥ धीरजे ते पति आवुं जी; आप मते अनुमा

न ॥ आगमने अनुमानथी जी; साचुं लहे सुज्ञान ॥ म०
॥ १३ ॥ नही सर्वज्ञ जूजूआ जी; तेहना जे वली दास ॥ न
गति देवनी पण कही जी, चित्र अचित्र प्रकाश ॥ म० ॥ १४ ॥
देव संसारी अनेक ठे जी; तेहनी नक्ति विचित्र ॥ एक राग
पर छेपथी जी; एक मुक्तिनी अचित्र ॥ म० ॥ १५ ॥ इंदियार्थगत
बुद्धि ठे जी, ज्ञान ठे आगम हेत ॥ असंमोह शुभ कृति गुणे
जी; तेणे फल जेद संकेत ॥ म० ॥ १६ ॥ आदर किरिया रति
घणी जी, विघन टले मिले लब्धि ॥ जिज्ञासा बुद्ध सेवना
जी; शुभ कृति चिन्ह प्रत्यब्धि ॥ म० ॥ १७ ॥ बुद्धि क्रिया नव
फल दिये जी; ज्ञान क्रिया शिव अंग ॥ असंमोह किरिया
दिये जी, शिघ्र मुगति फल चंग ॥ म० ॥ १८ ॥ पुद्गल रचना
कारमी जी; तिहां जश चित न लीन ॥ एक मार्ग ते शिव त
णो जी; जेद लहे जग दिन ॥ म० ॥ १९ ॥ शिष्य जणी जिन दे
शना जी; कहे जन परिणति निन्न ॥ कहे मुनिना नय देश
ना जी; परमार्थथी अनिन्न ॥ म० ॥ २० ॥ शब्द जेद जगडो
किस्यो जी; परमार्थथी जो एक ॥ कहो गंगा कहो सुर नदि
जी; वस्तु फिरे नहि ठेक ॥ म० ॥ २१ ॥ धर्म कृमादिक पण
मिटे जी; प्रगटे धर्म संन्यास ॥ तो जगडा जांटा तणो जी;
मुनिने कवण अज्यास ॥ म० ॥ २२ ॥ अनिनिवेश सयलो
त्यजी जी; चार लही जेणे दृष्टि ॥ ते लेशे हवे पंचमी जी;
सुजश अमृत धन वृष्टि ॥ म० ॥ २३ ॥ इति ॥

अथ श्री पांचमी थिरादृष्टिनी सज्ञाय.

(धन धन संप्रति साचो राजा. ए देशी.)

दृष्टि शिरामांहे दर्शन नित्ये; रतनप्रज्ञा सम जाणो रे॥
 आंति नहि वली बोध ते सुद्धम; प्रत्याहार वखाणो रे ॥१॥
 ए गुण वीर तणो न विसारुं; संचारुं दिन रात रे ॥ पशु टा
 ली सुर रूप करे जे; समकितने अवदात रे ॥ए०॥ २॥ बाल
 धुलि घर लीला सरिखी, जव चेष्टा इहां नासे रे ॥ रुद्धि सि
 द्धि सवि घटमां पेसे, अष्ट महासिद्धि पासे रे ॥ए०॥ ३॥ वि
 षय विकारे इंडिय न जोडे, ते इहां प्रत्याहारो रे ॥ केवल
 ज्योति ते तत्व प्रकाशे, शेष उपाय असारो रे ॥ ए०॥ ४॥
 शीतल चंदनश्री पण उपनो, अगति दहे जेम वनने रे ॥
 धर्म जनित पण जोग इहां तेम; लागे अनिष्ट ते मनने रे ॥
 ए०॥ ५॥ अंशे होय इहां अविनाशी, पुद्गल जाल तमासी
 रे ॥ चिदानंद धन सुजश विलासी, केम होये जगनो आ
 सी रे ॥ ए०॥ ६॥ इति॥

अथ श्री ठी कांतादृष्टिनी सज्ञाय.

(नोलीडा हंसारे विषय न राचीये. ए देशी.)

अचपल रोग रहित निठुर नहि, अल्प होय दोय निति
 ॥ गंध ते सारो रे कांति प्रसन्नता, सुस्वर प्रथम प्रवृत्ति ॥१॥
 धन धन शासन श्री जिनवर तणुं ॥ ए आंकणी. ॥ धीर प्र
 ज्ञावी रे आगळे योगथी, मित्रादिक युक्त चित्त ॥ ज्ञान इष्टनो
 रे द्वंद्व अधृष्यता; जन प्रीयता होय नित्य ॥ध०॥ १॥ नाश
 दोषनो रे तृपति परम लहे, समता उचित संयोग ॥ नाश
 वयरनो रे बुद्धि शतंजरा, ए निष्पन्नह योग ॥ध०॥ २॥ चि
 न्ह योगनारे जे पर ग्रंथमां, योगाचारय दिठ ॥ पंचम दृष्टी

थकी ते जोमिये, एहवा तेह गरिठ ॥ ध० ॥ ४ ॥ ठठि दिठि रे
हवे कांता कहुं; तिहां ताराज प्रकाश ॥ तत्वमिमांसा रे द
ठ होये धारणा; नहि अन्य श्रुत वास ॥ ध० ॥ ५ ॥ मन महि
लानुं रे वहाला जपरे, बीजा काम करंत ॥ तेम श्रुतधर्मे
रे एहमां मन धरे, ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ ध० ॥ ६ ॥ एहवे ज्ञाने
रे विघन निवारणा, जोग नहि जव हेत ॥ नवि गुण दोष न
विषय स्वरूपथी, मन गुण अवगुण खेत ॥ ध० ॥ ७ ॥ माया
पाणी रे जाणी तेहने, लंघी जाय अमोल ॥ साचुं जाणी रे
ते बिहतो रहे, न चले मामामोल ॥ ध० ॥ ८ ॥ जोग तत्त्वने रे
एम जय नवि टले, जूग जाणे रे जोग ॥ ते ए दृष्टी रे जव
सायर तरे, लहे वली सुजश संयोग ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री सातमी प्रजादृष्टिनी सञ्ज्ञाय.

(ए ठींडि किहां राखी. ए देशी)

अर्कप्रज्ञा सम बोध प्रज्ञामां, ध्यान प्रीयाए दिठी ॥ त
त्व तणी प्रतिपत्ते इहां वली, रोग नहि सुख पुठी रे; जवि
का, बीरवचन चित धरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सधलुं परव
शते दुःख लक्षण, निजवश ते सुख लहीये ॥ ए दृष्टे आत
मगुण प्रगटे, कहो सुख ते कुण कहिये रे ॥ न० ॥ २ ॥ नागर
सुख पामर नवि जाणे, वल्लज सुख न कुमारी ॥ अनुजव
विण तेम ध्यानतणुं सुख, कुण जाणे नर नारी रे ॥ न०
॥ ३ ॥ एह दृष्टीमां निर्मल बोधे, ध्यान सदा होये साचुं ॥
दूषण रहित निरंतर ज्योति, रतन ते दीपे जाचुं रे ॥ न०
॥ ४ ॥ विषय जोग कय शांत वाहिता, शिवमारग ध्रुव नाम

॥ कहे असंग क्रिया इहां योगी, विमल सुजश परिणाम रे
॥ न० ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री आठमी परादृष्टिनी सञ्ज्ञाय.

(तुज साथे नहि बोलुं मारा वाला, तें मुजने विसारी जी)

॥ ए देशी. ॥

दृष्टी आठमी सार समाधि; नाम परा तस जाणुं जी ॥
आप स्वप्नावे प्रवृत्ति पूरण, शशि सम बोध वखाणुं जी ॥
निरतिचार पद एहमां योगी, कहिये नहि अतिचारी जी ॥
आरोहे आरूढे गिरिने, तेम एहनी गति न्यारी जी ॥ १ ॥ चं
दन गंध समान कृमा इहां, वासकने नग वेषे जी ॥ आसं
गे वर्जित वली एहमां, किरिया निज गुण लेखे जी ॥ शिक्षा
थी जेम रतन नियोजन; दृष्टी जिन्न तेम एहो जी ॥ तास
नियोगे करण अपूरव, लहे मुनि केवल गेहो जी ॥ २ ॥ की
ए दोष सर्वज्ञ महामुनि, सर्व लब्धि फल नोगी जी ॥ पर
उपगार करी शिव सुख ते, पामे योग अयोगी जी ॥ सर्व श
त्रु क्षय सर्व व्याधिलय, पूरण सर्व समीहा जी ॥ सर्व अर
थ योगे सुख तेहथी, अनंतगुण निरीहा जी ॥ ३ ॥ ए अड
दिठी कही संक्षेपे, योगशास्त्र संकेते जी ॥ कुल योगीने प्र
वृत्त चक्र जे, तेह तणे हित हेते जी ॥ योगी कुले जाया तस
धर्मे, अनुगत ते कुल योगे जी ॥ अद्वेषी गुरु देव द्विज प्रि
य; दयावंत उपयोगे जी ॥ ४ ॥ शुश्रूषादिक अमृगुण संपूरण,
प्रवृत्त चक्र ते कहिये जी ॥ यमद्वय लाजनी परदूग अर्थी, आ
द्य अवंचक लहिये जी ॥ चार अहिंसादिक यम इहा, प्रवृ

तिथिर सिद्धि नामे जी ॥ शुद्धिरूचे पाळे अतिचारह, टाळे
फल परिणामे जी ॥ ५ ॥ कुल योगीने प्रवृत्त चक्रने, श्रवण
शुद्धि पक्षपात जी ॥ योगदृष्टी ग्रंथे हित होवे, तेणे कहुं ए
वात जी ॥ शुद्ध जावने सुनि किरिया, वेढुमां अंतर केतो जी
॥ जलद्वलतो सूरजने खजूड, तास तेजमां तेतो जी ॥ ६ ॥
गुह्यजाव ए तेहने कहिये, जेहसुं अंतर जांजे जी ॥ जेह
सुं चित्त पटंतर होवे, तेहसुं गुह्य न ठाजे जी ॥ योग्य अयो
ग्य विज्ञाग अलद्वलतो, करशे मोटी वातो जी ॥ खमशे ते पं
क्ति परपदमां, मुष्टी प्रहारने लातो जी ॥ ७ ॥ सज्जा त्रण
श्रोता गुण अवगुण, नंदिसूत्रे दीसे जी ॥ ते जाणि ए ग्रंथ
योग्यने, देजो सुगुण जगीशे जी ॥ लोकपूख्यो निज निज
इच्छा, योग जाव गुण रयणे जी ॥ श्री नयविजय विबुद्ध पय
सेवक, वाचक जशने वयणे जी ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री मुनीमारग आदिनी गुंहलीड.

(आवां हरी लासरीयावाला. ए देशी.)

मुनीवर मारगमे वसिया, वसि उनमारगथी खसिया ॥
सिववहु खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वीत्युं गुणठाणुं वाल,
जगवद् अंगे सुविशाल, रहे प्रमत्ते धणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अं
तर मुहुरत धिति आवे, निझमा गुण पलटावे; पण अप्रम
त तणे जावे ॥ मु० ॥ ३ ॥ इव्य जाव सयम धरिया, जंगम
तीरथ संचरिया; पाखरिया सिंह केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ डवि
हा सीत सहे न लहे, उश्च परिसह वीस सहे; मुनीवर आचा
राग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्रवाल दस विधे पाळे, चरण करण गु

ए संजाले; शुन्य दहन अविधी टाले ॥मु०॥६॥ एहवा मुनी
वरने आगे, चतुरा अक्षय फल मागे, श्राविका मुनि गुण रा
गे ॥मु०॥७॥ गुंहली करि निज मल धोती, वधावति खलके
मोती; ललि ललि गुरु सनमुख जोती ॥ मु०॥८॥ आगम र
यण गुणे रमती, गुरु गुण गाती मन गमती; श्री शुन वीर
चरण नमती ॥मु०॥९॥ इति. ॥

अथ श्री पर्यूषणनी गुंहली.

(देशना सुणी रह लागस्ये. ए देशी.)

जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे गुरु
राज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांचलो, जीरे पर्व पजूषण आ
ज ॥ जी०॥१॥ जीरे आश्रवनाव निवारीने, जीरे सजन
सहित बहुमान ॥ जीरे कल्पसूत्र घर लाविए, जी रे अठा
ईधर धरी ध्यान ॥ जी०॥२॥ जीरे दीपक अगर जखेवीए,
जीरे रात्रीजाग्रण नीत्य ॥ जीरे पूजा विविध रचाविए,
जीरे त्रय दिवस एणी रित्य ॥ जी०॥३॥ जीरे सुण सज
नी रजनी गइ, जीरे कल्प धूरा परनात ॥ जीरे सहीयर
मली मंगल जणे, जीरे हय गय रथ मेलात ॥ जी०॥४॥
जीरे वरघोमे जली ज्ञांतिस्सुं, जी रे शुची तनु पुस्तक हाथ
॥ जीरे एम मंमाणे आविया, जीरे जिहां श्रुतनिधि गुरु
नाथ ॥ जी०॥५॥ जीरे गुरु सन्मुख लही वाचना, जीरे प्र
मुदीत परषद मांहि ॥ जी रे एणे अवसर गजगती सती;
जीरे मुनीपद नमत उठांहि ॥ जी०॥६॥ जीरे समकित वं
ती श्राविका; जी रे सहीयर मली समदीठ ॥ जी रे अनु

जव उज्जल मोतीए, जी रे आस्तिक लक्षण पीठ ॥ जी०
॥७॥ जी रे स्वस्तिक पूरी वधावती, जी रे वेसती वेसण ठा
य ॥ जी रे पंच कल्याणक देशना; जी रे नव व्याख्यान सु
णाय ॥ जी० ॥ ८ ॥ जी रे ठठ अछम तप जिन नमी; जी रे सां
जलस्ये नर नार ॥ जी रे श्री शुन वीरने शासने; जी रे करस्ये
एक अवतार ॥ जी० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री गुंहली लिख्यते.

(सुण गोवालणी. ए देशी)

सुण साहेली जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने; मुनि
मुख जोतां मन उलसे तन विकसे आपण बेने ॥ ए आं
कणी. ॥ थावर तीरथ डुरगति वारे, पण घर मेहली जइए
ज्यारे ॥ विधि योगे ध्यान धरे त्यारे, संसार समुद्र थकी ता
रे ॥ सु० ॥ १ ॥ सु० ॥ जंगम मुनि मारगमां फरता, संजम आ
चरणा आचरता ॥ जग जीव उपर करुणा धरता, पुण्यसा
ली घर पावन करता ॥ सु० ॥ २ ॥ सु० ॥ अनाचिरण बावन प
रीहरता, बोले दशवैकालिक करता ॥ गणि पेटि बहुश्रुत
नी धरता, मुखचंद्र थकी अमृत ऊरता ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ वर
ज्ञान ध्यान हय गय वरिया, तप जप चरणादिक परिक
रिया ॥ विरती पटराणीस्यु ठरीया, मुनिराज सचाइ कंस
रिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सुविहीत गीतारथ गुरु आगे, विधि
योगे वंदे गुण रागे ॥ कर कंकण पग ऊऊर वागे; गुंहली क
रतां अनुजव जागे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ कंकावटीए केशर लेती,
करि स्वस्तिक पातकम धोता ॥ वधावती उज्जल फल मो
ती, वलती ललतो गुरु मुख जोती ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ कल

कंठवती मधुरा रावे, गुणवंती तिहां गुंहली गावे ॥ आ नव
सौभाग्यपणुं पावे, शुन वीर वचन हश्मे नावे ॥ सुणा॥७॥

अथ श्री गुंहली लिख्यते.

(केशरीया चढो वरघोमे. ए देशी.)

राजगृही वनखंम विचाल, आव्या विरजिणंद दयाल
॥ वंदे श्रेणीक नामे नूपाल तो, वीर जग गुरु वंदना करीए ॥
वंदना करीए ने नवजल तरीए तो ॥ वीणा १ ॥ कुष्टिक रुप
एक देव तेवार, मरण जीवन जण च्यार विचार ॥ श्रेणीक
रायने खेद अपार तो ॥ वीणा २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी,
शेडुक ब्राह्मण धननो आसी ॥ पुत्र कुटुंबने रोगे वासी तो
॥ वीणा ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण लही जल तरस अ
पार ॥ जलमां मेडकनो अवतार तो ॥ वीणा ४ ॥ वारी हारी
नारी वचनथी, पुरव नव लही चाढ्यो वनथी ॥ मुज वंदन
हरख्यो तन मनथी तो ॥ वीणा ५ ॥ तुज घोष्टक पद हणीयो
जाम, लही सुरनव आव्यो एणे ठाम ॥ श्रेणीक देखे तुज
परीणाम तो ॥ वीणा ६ ॥ मोक्ष गमन कहे मुजने सार, दर्ड
रंक तणो अधिकार; उपदेशमाला ग्रंथ मोजार तो ॥ वीणा
७ ॥ राणी चेलणा हरख न मावे, मुक्ताफलसुं गुंहली बना
वे; श्री शुन वीरजिणंद वधावे तो ॥ वीणा ८ ॥ इति ॥

अथ श्री सुगुरुनी गुंहली.

(मोतीवाला नमर जी. ए देशी.)

चरण करणस्युं सोनता, व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥ न

विजन मानस हंस रे, जगत उपगारी सुगुरु जी ॥ जंगम ती
रथ साधु जी ॥ व्रण ॥ लोचन तणो नहि अंश रे ॥ जण ॥ १ ॥ प
मिरुवादिक गुण ज्ञस्या ॥ व्रण ॥ षट् कारण लिए आहार रे ॥
जण ॥ सामुदायी गोचरी ॥ व्रण ॥ ज्ञान रतन जंमार रे ॥ जण
॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगले ॥ व्रण ॥ वनिता धरिये विवेक रे ॥
जण ॥ सरखी साहेलीए परवरी ॥ व्रण ॥ समकितनी घणी टे
करे ॥ जण ॥ ३ ॥ आस्तिक पीठनी उपरे ॥ व्रण ॥ अनुभव सुग
ता स्वेत रे ॥ जण ॥ चिहुंगति चूरण साधीयो ॥ व्रण ॥ वधावती
धरि देत रे ॥ जण ॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गुंहली ॥ व्रण ॥ मुनि गु
णमणी धरि हाथ रे ॥ जण ॥ श्री शुभ विरनी देहना ॥ व्रण ॥ सु
एतां मिले शिवसाथ रे ॥ जण ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री गुंहली लिख्यते.

(देशी गरवानी.)

बहेनी अपापा नयरी उद्यान के वाजां वाजीयां रे लो
॥ वेण ॥ देव वाजित्र अनेक के, गहन घन गाजीया रे लो ॥ वेण
समोवसरण अतिचंग के, मली घणा देवता रे लो ॥ वेण ॥
अण हुंते एक कोमिके, प्रभु पाय सेवता रे लो ॥ १ ॥ वेण ॥ इ
इजूति आदि ईग्यार के, ब्राह्मण दिपता रे लो ॥ वेण ॥ वेद
वादना जाण के, बहु वाद जीपता रे लो ॥ वेण ॥ संसय ठे अ
ति गुढ के, मिथ्यामते पुरिया रे लो ॥ वेण ॥ करवा प्रभुं वा
द के, आन्या अति सूरिया रे लो ॥ २ ॥ वेण ॥ श्री जिन अमृ
त वाणि के, सुणि सुख पाविया रे लो ॥ वेण ॥ ठंडी सकल
जंजाल के, हुआ व्रत ज्ञावीया रे लो ॥ वेण ॥ इइ सोनानो

आल के, वासज लाविया रे लो ॥ बेण ॥ अरिहा एह आचार
के, तिरथ थापीया रे लो ॥ ३ ॥ बेण ॥ लावो गुंहली गेह के,
हरख वधामणां रे लो ॥ बेण ॥ वधावो श्री जिनराज के, करो
नित नामणां रे लो ॥ बेण ॥ बांधो तोरण बार के, सूरतरु
मालीका रे लो ॥ बेण ॥ गावो मंगल गीत के, मलि बहु बा
लीका रे लो ॥ ४ ॥ बेण ॥ गौतम केवलज्ञान के, सोहम गढ
धणी रे लो ॥ बेण ॥ आपी जंबूने पाट के, पोहता शिव नणी
रे लो ॥ बेण ॥ करतां एहनूं ध्यान के, लहिए जस घणो रे
लो ॥ बेण ॥ वीसूध कहे श्री विरने, सह जय जय नणो रे
लो ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री गुंहली लिख्यते.

(धन धन संप्रति साचो राजा. ए देशी.)

आगम वयण सुधारस पीजे, नरनव लाहो लीजे रे ॥
शुद्धातम सरधान करीने, नव नव पातिक ठीजे रे ॥ आप
॥ १ ॥ नवनीरु जे गुरु कुलवासी, आगमना अन्यासी रे ॥
वस्तु तत्त्वना शुद्ध प्रकासी, पुजलजाव निरासी रे ॥ आप
॥ २ ॥ लज्यालु कुलवंती सोहागण, ते गुरु निकटे आवे रे ॥
मुक्ताफल स्वस्तिक करी सुंदर, मोतीयमे वधावे रे ॥ आप
॥ ३ ॥ बैशी यथोचित थानक गुरु मुख, निरखी हरखि सु
ख पावे रे ॥ तन मन एकाग्रे करीने, देशना सुणे निज ना
वे रे ॥ आप ॥ ४ ॥ इणपरे आगम नक्ति करीने, उत्तम गुरु
गुण गावे रे ॥ पद्मविजय कहे तेह पनोती, सकल मंगल
घर लावे रे ॥ आप ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री गुहली लिख्यते.

सजनी मोरी गुणसिखवनके मेदान रे ॥ स० ॥ आ
 व्या श्री वीर वर्द्धमान रे ॥ स० ॥ ज्ञानादिक गुण दरीया रे ॥
 स० ॥ पतित पावन पीहरीया रे ॥ स० ॥ १ ॥ गु० ॥ स० ॥ श्रेणिक ह
 रख्यो आवे रे ॥ स० ॥ समकित खायक जावे रे ॥ स० ॥ कंच
 नवरणी नारी रे ॥ स० ॥ पंचसयां परिवारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ गु० ॥ स०
 धर्म देशना जिन जांखे रे ॥ स० ॥ नवपद महिमा दाखे रे ॥
 स० ॥ नवपद आतम जाणो रे ॥ स० ॥ आतम नवपद वखा
 णो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ गु० ॥ स० ॥ नवतत्व भूषण सार रे ॥ स० ॥ रत्न र
 केवी उद्धार रे ॥ स० ॥ आचरण मन बहु मूल रे ॥ स० ॥ पेहे
 री वसन अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ गु० ॥ स० ॥ कीरीया कंकावटी हा
 य रे ॥ स० ॥ मन निर्मल ने पाय रे ॥ स० ॥ जिन गुण
 कुंकुम धोली रे ॥ स० ॥ मझि सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥
 गु० ॥ स० ॥ आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेलणा गुहली व
 नावे रे ॥ स० ॥ एणिपरे गुहली कीजे रे ॥ स० ॥ नरन्नव
 लाहो लीजे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ गु० ॥ स० ॥ विषय ते विष सम जाणो
 रे ॥ स० ॥ बोले त्रीनुवन राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरे
 चालो रे ॥ स० ॥ शृं नव मांहि माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ गु० ॥
 स० ॥ मणि उद्योत गुरु मलिया रे ॥ स० ॥ आज मनोरथ फजि
 या रे ॥ स० ॥ शृं कहिये वारो वार रे ॥ स० ॥ शंका करो
 परिहार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ गु० ॥ इति. ॥

अथ श्री चरण करण शित्तरीनी गुहली.

गुहली करो गुरु आगले हो लाल, जे गिरुआ गुणवत

रे ॥ हुं वारी लाल ॥ चरण करणनी शित्तरी हो लाल, धार
 क ते सुणो संतरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ गुं० ॥ ५ पंच महाव्रत पालता हो
 लाल, १० दश जतीधर्म नदारे ॥ हुं० ॥ संजम १७ सत्तर प्र
 कारनो हो लाल, सेवे ए अणगाररे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ गुं० ॥ वैयावच
 १० दशहा कही हो लाल, ब्रह्मविधी ए नव सार रे ॥ हुं० ॥ झा
 नादिक ३ त्रण जेहने हो लाल, १२ छादश तपना धार रे ॥
 हुं० ॥ ११ ॥ गुं० ॥ ४ क्रोधादिक चउ जय करे हो लाल, चरण सि
 तरी एह रे ॥ हुं० ॥ ४ पिंसादिक चउ जे कया हो लाल, देवे सु
 जतो तेह रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ गुं० ॥ पंच ए सुमती सदा धरे हो लाल;
 जावे जावना १२ वार रे ॥ हुं० ॥ दश १२ दोय पन्निमा जे वहे
 हो लाल, मुनीवर ते सुखकार रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ गुं० ॥ इंडी ५ पंच
 ने रोधता हो लाल, पन्निहण २५ पणविस रे ॥ हुं० ॥ की
 रीया जे सुधी करे हो लाल, ३ त्रण गुपती निस दीस रे ॥
 हुं० ॥ ६ ॥ गुं० ॥ अजीग्रह ४ च्यारने आदरे हो लाल, वाचंयम
 ते सुध रे ॥ हुं० ॥ करणसितरी सेवतां हो लाल, नरनव ला
 हो लीधरे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ गुं० ॥ एहवा गुरुने आगले हो लाल,
 साथीन पूरे नार रे ॥ हुं० ॥ जसविजय गुरु सेवतां हो लाल,
 प्रामे शुन नव पार रे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ गुं० ॥ इति ॥

अथ श्री गहूली.

॥ घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥

महावीरजी आवी समोसख्या, राजगृही नयरी न
 ध्यान ॥ समवसरण देवे रच्युं; तिहां बेठा श्री वर्द्धमान ॥ म०
 ॥ १ ॥ वनपालके आपी वधामणी; हरखयो श्रेणिक नूपाल

॥ गौतम आदि गणधर; साधवी ठत्रीश हजार ॥म० ॥१॥
 राजा गज शणगास्या मलपता, तूर्य तणो नहि पार ॥ राजा
 बहु सामग्रीये संचखो; साथे मंत्री अन्नयकुमार ॥ म०॥३॥
 ठोअ ददामा गडगडे; सरणाअ अतिहि रसाज ॥ राय गज थकी
 हेठा ऊतस्या; आवी बांड़े प्रजुजीना पाय ॥ म०॥४॥ राय
 न्नण प्रदक्षिणा देइ करी, आवी वेठा सना मोऊर ॥ राणी
 चेलणा लावे गहूंअली; साथे सखियोनो परिवार ॥म० ॥५॥
 राणिये घाट उठ्यो रे घूटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥
 राणीये कुंकुम घोळ्यां कुंकावटी; राणिये लीधुं श्रीफल श्री
 कार ॥ म० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूंअली; महावीरना
 पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारे परवरी; राणी गावे गीत
 रसाज ॥ म० ॥७॥ राणी लली लजी लीये रे लूठणां; राणी
 पूजे प्रजुजीना पाय ॥ महावीरनी देशना सानली, सम
 कित पाम्यो नरराय ॥म०॥८॥ प्रजु तुम सरीखा गुरु मुऊ
 मळ्या; महारी दुर्गति दूरे पजाय ॥ प्रजु तेवक जाणी तार
 जो, मुने मुक्ति तणा सुख थाय ॥म० ॥९॥ इति ॥

अथ श्री जीवाग्निगम मूत्रनी गहूली.

॥ जवितुमे वडो रे सूरेश्वर धराया ॥ ए देशी ॥

सहियर मुणीये रे जीवाग्निगमनी वाणी, मीठी लागे
 रे मुऊने वीरनी वाणी ॥ ए आकणी ॥ सूत्रतणी रचना ग
 णधरनी, अर्थ ते वीरे जाख्या ॥ गौतम पूठे वे करजोडी;
 आतम हित करी दाख्या ॥स०॥मी०॥१॥ जीव अजीव त
 णीजे रचना; पूठी गौतमस्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे

वातो; नांखे अंतरजामी ॥सण॥मीणा॥५॥ साते नरक तणां
 दुःख नांख्यां; आतम हित करी दाख्यां ॥ जे जे प्रश्न पूछे
 गोयम; ते ते प्रजुजीये नांख्यां ॥सण॥मीणा॥३॥ पांच अनु
 त्तर तणी जे रचना, विविध प्रकारे नांखी ॥ नविक जीवने
 सुणवा कारण, श्री जिन आगम साखी ॥सण॥मीणा॥४॥
 मीठी वाणीये गहूंली गावे; वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक
 पूरे नावे धरीने; अकृते करीने वधावे ॥स०॥मी०॥५॥ नौ
 तनपुरमां रंगे गाई; गहूंली चढते उमंगे ॥ कहे मुक्ति जिन
 राजनी वाणी; सुणजो अति उठरंगे ॥सण॥मीणा॥६॥इति॥

अथ श्री गहूंली.

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

रत्नत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ सहियर
 मोरीहे ॥ आगम आगमधर सुणी; गुण गुणी नाव अनेद
 ॥१॥ सहियर मोरी हे; गहूंली करो गुरु आगले ॥ ए टेक ॥
 पर परिणामने टालवा; लेवा शिवपुर शर्म ॥सण॥ग०॥१॥
 डव्य नाव संजोगथी; जे रहे नित्य अलेप ॥स०॥ स्याद्वाद
 नी दीये देशना; जाणंग नय निक्षेप ॥सण॥ग०॥३॥ आत्म
 नाव स्वरूपना; नासन जानु समान ॥सण॥ स्व पर विवेचन
 श्रुतश्रुकी; तेणो नक्ति बहुमान ॥सण॥ग०॥४॥ रुचिवंती सु
 श्राविका; करवा श्रुतनी बहु नक्ति ॥स०॥ विनयवती बहु
 मानथी; फोरवती आत्मशक्ति ॥सण॥ग०॥५॥ आत्म वा
 जोठ उपरे; समकित साधियो पूरे ॥सण॥ लली लली करती
 लुठणां, मिथ्यामति करी दूरे ॥सण॥ग०॥६॥ जे सुणे आगम

इण विधे; जन्म सफल होय तास ॥सण॥ माहरे जवो जव
नित्य होजो, ज्ञानमहोदय वास ॥स०॥गण॥७॥इति॥

अथ श्री गहूली.

जी रे मारे देशना द्यो गुरुराज; उलट आणी अति घ
णो ॥जी रे जी॥ जी रे मारे आवियो हर्ष उल्लास; पूंठ देई
संसारने ॥जी०॥१॥जी०॥ विलंब न कीजे गुरुराज, दास न
पर दया करो ॥जी०॥ मेहर करी मेहेरवान, अमृत वचने सीं
चिये ॥जी०॥२॥जी०॥ सुणवा सूत्र सिद्धत; हेजे दियडुं ग
हगहे ॥जी०॥ जिम मोरा मन मेह, सीताने मने राम जी
॥जी०॥३॥जी०॥ कमलामन गोविंद, पारवती ईश्वर जपे॥
जी०॥ तिम मुऊ हृदय मऊार, जिनवाणी रूचे घणी ॥
जी०॥४॥जी०॥ नयगम जंग निक्षेप; सुणतां समकित सप
जे ॥जी०॥ उत्पाद व्यय ध्रुवरूप, स्यादाद रचना घणी ॥
जी०॥५॥ जी०॥ नवतत्त्व ने पट्झय, चार निक्षेप सत्तनये
करी ॥जी०॥ निश्चय ने व्यवहार, इणिपरे मुज ठंवरवाविये
॥जी०॥६॥जी०॥ कृपा करो गुरुराज, ते सुणवा इछा घणी
॥जी०॥ निज पर सत्ता रूप, जासे ते सुणतां थका ॥ जी०
॥ ७ ॥जी०॥ जिन उत्तम महाराज, तस पद पद्म सेवे सदा
॥जी०॥ प्रगटे आत्म स्वरूप, अजय अर एणी परे जणे ॥
जी०॥ ८ ॥ इति॥

अथ श्री गहूली.

(राग धोल.)

वेनी संचरतां रे संसारमां रे, वेनी सहगुरु धर्म संजो

ग ॥ वधावो गहूंअली रे ॥ वेनी सदहणा जिनशासननी रे,
 वेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व० ॥ १ ॥ वेनी सम संतोष साडी
 बनी रे; वेनी नवब्रह्म नवरंग घाट ॥ वण ॥ वेनी तप जप चो
 खा ऊजला रे; वेनी सत्यव्रत विनय सुपाट ॥ वण ॥ १॥ वेनी
 समकित सोवन थालमां रे; वेनी कनक कचोडे चंग ॥ व०
 वेनी संवर करो शुभ साश्रीयो रे; वेनी आणा तिलक अन्नं
 ग ॥ वण ॥ ३ ॥ वेनी समिति गुप्ति श्रीफल धरो रे, वेनी अनु
 जव कुंकुम घोल ॥ वण ॥ वेनी नवतत्त्व हश्ये धरो रे; वेनी
 चरचो चंदन रंग रोल ॥ वण ॥ ४ ॥ वेनी जवजल जेहमां जे
 दीये रे, वेनी विवेक वधावो शाल ॥ वण ॥ वेनी वीर कहे जि
 नशासने रे, वेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री गहूंली एकवीसमी.

गाम नगर पुर विचरंता, गुरु आवेढे; मुनि पंच सया
 परिवार ॥ साथे जावेढे ॥ सहस्र अठार सीलांगना, जे धो
 रीढे; ब्रह्मचर्यना जेद अठार, आप विचारी ठे ॥ १ ॥ जीव
 जेद वत्रीशनी, दया जाणी ठे ॥ निरुपाधिक देशना सार,
 नाथे वखाणी ठे ॥ दिव्हा दोष निवारवा, नर तारे ठे ॥ पाप
 स्थानना दोष अठार, दूरे निवारे ठे ॥ २ ॥ रत्नत्रयि आराध
 ता, गुरु राजे ठे ॥ गुरु राजगृही उद्यान, अधिक दिवाजे ठे
 ॥ कनक कमल बीराजता, गुरु गाजे ठे ॥ प्रभु वीर पट्टोदर
 धीर, जावठ जांजे ठे ॥ ३ ॥ जंबुकुमर युक्ते करी, गुरु जेव्या
 ठे ॥ कहे मुखशी महारां आज, पातक मेव्यां ठे ॥ समुद्रसि
 री जंबु लणी, पट्टराणी ठे ॥ वलि बीजी साते नार, गुणनी

खाणी ठे ॥४॥ पहेरी करुणा काचली, मन मोती ठे ॥ उ
ढी समकित साडी मांढे, गुरु मुख जोती ठे ॥ थिरता जाव
ना थालमां; व्रत मोती ठे ॥ नरी कुंकुम राग कचोल, पुण्य
पनोती ठे ॥ ५ ॥ थ्रवा जावनो साथियो, त्या पूरे ठे ॥ ठवि
पंचाचार रतन, चिहुं गति चूरे ठे ॥ ते देखी मोहरायनी, मा
त जूरे ठे ॥ ए लेशे शिवसुख राज, चढते नूरे ठे ॥ ६ ॥ गहूं
ली करो गुरु आगले, मन माचे ठे ॥ हवे जंबु सोहम पास,
संजम जाचे ठे ॥ पांचशे सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं ठे ॥ कोह
मोहन महाराज, कारज सीधुं ठे ॥ ७ ॥ इति॥

अथ श्री गहूंली.

अरिहा आया रे; चंपावनके मेदान ॥ सुरपति गाया
रे; शासनके सुलतान ॥ ए आंकणी ॥ समवसरण सुर म
ली विरचावे, फूल सचित्त जल थलना लावे ॥ विकसित जा
नु सम वरसावे॥ उपर बेसे रे, मुनि मुख परपदा वार ॥ प्रभु
महिमाये रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रवचन
सारज्झार ॥ अ० ॥ १ ॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल ठ
टकायां फूल विठाय, सजी सामईयुं वदन आय, उववाई सू
त्रे रे, देशना अमृतधार ॥ गौतम पूठे रे, अंबडनो अधि
कार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥ अ० ॥ २ ॥
पाणी ठेते तरशां व्रत पाली, गंगा बेलु वच्चे संधारी ॥ देव
लोक पंचम अवतारी, अंबड नामे रे ॥ ते सहुनो सिरदार ॥
अवधिज्ञानी रे ॥ वैक्रियलब्धि उदार; तापस वेशे रे, पाले
अणुव्रत वार ॥ अ० ॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक जरिया; कंपि

दपुर मांहे संचरिया ॥ नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया;
 सहु को जाणे रे ॥ अम घर उंठव थाय; घर घर हुंशे रे ॥
 कौतुक जोवा ते जाय, देव ज्ञवांतर रे; अंबड मुक्ति वराय ॥
 अ०॥४॥ सांजली हशडे हर्ष ज्ञराणी; बहुत साहेलीनी ठकु
 राणी ॥ नामे सुजज्ञ धारणी राणी; चीर पटोली रे ॥ पेहे
 री निकट ते जाय, धुंघट खोली रे; अंजलि शीश नमाय ॥
 केशर घोली रे; साथिये मोती पूराय ॥ अ०॥५॥ चतुरा च
 उमुख चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे; श्री शुभ
 वीरनां चरण वधावे; मंगल गावे रे; रंजना अपठर नार ॥ ज
 गतनो दीवो रे; विश्वंज्जर जयकार ॥ बहु चिरंजीवो रे; त्रि
 शब्दा मात मढहार ॥ अ०॥६॥ इति॥

अथ श्री गहूंली.

अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ वीरनी
 आणा शिर धरता, पवयण माये सुविचरंता; सोहमपाट दी
 पावंता ॥ अ०॥१॥ श्री जिन आणामती रागी; ज्य ज्ञाव प
 रिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लय लागी ॥ अ०॥२॥ ठत्रीश
 ठत्रीशीये पूरा, रागादिकथी रहे दूरा; शांतमुझ मांहे ससनू
 रा ॥ अ०॥३॥ वीर वाणी चित्त अनुसरता, कुमति तणा मद
 गालंता; आव्या राजगृही फरता ॥ अ०॥४॥ कोणिक जूप
 तिनी राणी, ज्ञामंरुलमां ऊजाणी; धवल मंगल करे गुण
 खाणी ॥ अ०॥५॥ अनुजव ज्ञाने चित्त ठरशे, सजुरु अंगे सदा
 वरसे, ज्ञवि जलधर चातक वरसे ॥ अ०॥६॥ एणी परे जे गुरु
 गुण गावे, संवरजावे चित्त लावे; महीं इंसिंहसूरि सुख पावे अ०॥७॥

अथ श्री गहूंली.

आर्यदेश नरजव लहो रे, आवक कुल मनोहार रे ॥
 जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अवतार ॥ गुरुने
 बोलडीये, मोह्या मोह्या रे त्रिजुवन लोक; गुरुने बोलडीये
 ॥१॥ उठी सवारे प्रभु नमे रे, करे नवकारसी सार रे ॥ सो
 ल शणगार सजी करीने; आवे गुरु दरवार ॥ गु०॥१॥ त्रण
 प्रदक्षिणा देइ करीने; वांढी बेसे ठाय रे ॥ नुठ हाथ अलगी
 रहिने; गहूंली पूरवा जाय ॥ गु०॥३॥ चिहुं गति दुःख निवार
 वा रे, महामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल मांढे बडो रे; सा
 थियो कीजे उदार ॥ गु०॥४॥ बधावे गुरुरायने रे; पठे करे
 पञ्चक्राण रे ॥ लूठणीयां लटके करे रे; जाव जलो मन आ
 ण ॥ गु०॥५॥ आगम अर्थने धारती रे, करती विनय विशेष
 प रे ॥ एम आतमने तारती रे; सौभाग्य लक्ष्मी सुविशेष
 ॥ गु०॥ ६ ॥ इति ॥

अथ श्री गहूंली.

(देशी उपरनी गहूंलीनी.)

जीरे सूरें उगमती गहूंअली; जीरे गुरु आगल श्री
 कार ॥ मनोहर गहूंअली ॥ जी रे सही रे समाणी संचरी;
 जी रे पूंठे बहु परिवार ॥ म० ॥ १ ॥ जी रे चालो रे सही
 यो उतावली; जी रे हैयडे हर्ष न माय ॥ म०॥ जी रे समकित
 ने अजुवाजवा, जी रे वंदीये श्री गुरुराय ॥ म०॥२॥ जी रे
 सरखा सरखी सुंदरी, जी रे टोजे मली गहघाट ॥ म० ॥
 जी रे आठा सालु उठणी, जी रे उपर नवरंग घाट ॥ म०

॥३॥ जी रे नावे सहगुरु जेटवा; जीरे सह मलीने साथ ॥
मण॥ जी रे नलटे आव्या अप्पा सहि; जीरे सोवनआली हा
थ ॥मण॥४॥ जी रे हीरे जडित कुंकावटी; जीरे मांहे कपूर
बरास ॥मण॥ जीरे मांहे मृगमद महमहे, जीरे केसर चं
दन खास ॥मण॥५॥ जीरे चतुरा चाली चमकती; जीरे ठ
मकेशुं ठवती पाय ॥मण॥ जीरे चरणे नेनर रणऊणे, जी
रे माननी माने गाय ॥मण॥ ६ ॥ जीरे पाय वींठूआ वाज
णां; जीरे जांजरना रमजोल ॥मण॥ जीरे प्रेमशुं गहुंअली
करी; जीरे नवखंसी रंगरोल ॥मण॥७॥ जीरे पूरी सोहाग
ण साथीयो; जीरे मोतीडे मनरंग ॥मण॥ जीरे झूंगल जे
री नणहणे; जीरे वाजे ढोल मृदंग ॥म०॥ ८ ॥ जीरे त्रण
खमासमण देखे; जीरे वंदे सह नरनार ॥मण॥ जीरे सं
घ मळ्यो सह सामटो; जीरे उत्सवनो नहि पार ॥मण॥९॥
जीरे सहगुरु दीये तिहां देशना; जीरे वांची सूत्र विचार ॥
मण॥ जीरे जलधरनी पेरे गाजता, जीरे वरसता अमृतधा
र ॥मण॥ १० ॥ जीरे मीठी रे मीठी मीठडी; जीरे मीठी
साकर डाख ॥मण॥ जीरे तेह थकी पण मीठडी; जीरे मी
ठी महारा गुरुजीनी नाख ॥मण॥ ११ ॥ जीरे एक चित्ते जे
सांजले; जीरे पामे ते नव पार ॥मण॥ जीरे नित्य नित्य रं
ग वधामणां; जीरे सुख पामे संसार ॥मण॥ १२ ॥ जीरे ही
ररतन सूरि राजीया; जीरे तपगह्व केरा रानु ॥मण॥ जी
रे अमे अमारा गुरुजीने गायशुं; जीरे न गमे ते उठीने
जानु ॥मण॥ १३ ॥ जीरे दान शीयल तप जावना; जीरे जे
सुणे ए जिनवाण ॥मण॥ जीरे उदयरतन मुनि एम केहे;

जी रे ते लहे कोडि कल्याण ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति. ॥

अथ श्री गहंली

मुनि पंचम गणधर वीरना रे, मुनि वंदीये ॥ साथे
पांचशे मुनि गुणधाम रे, गुरु वंदीये ॥ राजगृही उद्यानमां
रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसखा शुच ठाम रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच महा
व्रत पालता रे ॥ मु० ॥ दशविध संयतिनो धर्म रे ॥ गु० ॥ सं
यम सत्तर प्रकारथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥
गु० ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय जलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य नव वा
डे युत्तर रे ॥ गु० ॥ रत्नत्रय आराधता रे ॥ मु० ॥ वार जेदे त
पमां रत्त रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया लोचने रे ॥ मु० ॥
जीपता करे उग्र विहार रे ॥ गु० ॥ चरणसित्तरी पालता रे ॥
मु० ॥ तिम करणसित्तरी सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदन हेते आवि
या रे ॥ मु० ॥ राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेखण ला
वे गहंली रे ॥ मु० ॥ घाट शील पेहेरी मनोहार रे ॥ गु०
॥ ५ ॥ आज्ञापण सत्य वचननां रे ॥ मु० ॥ करे स्वस्तिक वि
नय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अकृत आपती रे ॥ मु० ॥ करे लू
वणा सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ देशना सांजले हर्षशुं रे ॥
मु० ॥ कहे धन धन तुम गुरुज्ञान रे ॥ गु० ॥ उत्तम गुरुपद
पद्मनी रे ॥ मु० ॥ सेवा करता लहे शिवनाथ रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्री गहंली.

(नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी.)

चंपानयरी उद्यानमा, गणधर आवीया ॥ नामे सोह

म स्वामी, ज्ञविक मन जाविया ॥ विषय प्रमाद कषाय, हा
 स्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निज परिणति ज्ञजी
 ॥ १ ॥ नीरागी जगवान, करे गुण देशना ॥ उपकारी अस
 मान के, तारे ज्ञवि जना ॥ सुणवा जिनवर वाण, तिहां आ
 व्या सह ॥ नर नारीना थोक के, हर्ष मने बहु ॥ २ ॥ वसन
 आचूषण व्रत, तणां अंगे धरे ॥ कोणिक जूपति नार, हवे
 गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरनी, साथे आवती ॥ आ
 त्म असंख्य प्रदेश, रकेवी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकुम घोली,
 स्वस्तिक करे जावथी ॥ आतम पीठनी उपर, जिन गुण गा
 वती ॥ विनयवती बहुमानथी, इम गहूंली करे; अनुजवनां
 करि लूढणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ इव्य जावथी एणी प
 रे, जे गहूंली करे ॥ समकितवंती श्राविका, जव सायर तरे
 ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी म
 नुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री गहूंली.

वीरजी आया रे, गुणशील वनके मेदान ॥ विप्र पडि
 बोह्या रे, केवलज्ञान प्रधान ॥ अरिहा तिन जगतके ज्ञाण,
 समवसरण तखते महेराण, जलके ज्ञाममंजु गुणखाण, श्रे
 णिक हरख्यो रे आयो वंदन काज, चतुरंगी फोजां रे वांक
 डीया करी साज, साथे तरुणी रे पंचसयाको समाज ॥ वी०
 ॥ १ ॥ धर्म प्रकाशे बारे परखदा मांहे, मजकुर पूढे गोयम उ
 त्साहे; चउ अनुयोगे उत्तर सोहाय, श्रेणिक पूढे रे बेसी य
 थोचित ठाय; वाणी निसुणी रे मनमां हर्षित थाय, संशय

टाले रे आत्म अनंत सुख थाय ॥ वी० ॥ १ ॥ वत्रीशवर ना
 टक रची सार, करी नर नारी रूप रसाल; खलके कंकणना
 खलकार, प्रचुने वेदे रे दर्डरांक सुर सार, ज्ञातासूत्रे रे वर
 णवियो अधिकार, समकित संगे रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥
 वी० ॥ ३ ॥ चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगे अनेक शणगा
 र सोहाणी; बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकुम घोली रे सा
 थीयो रंग रसाल; रयणे पूरी रे वधावे जरी आल, नेह घरी
 ने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ त्रिशला नंदन सूरि
 जन बंदो, अचसर लइ आ फंद निकदो; पामे नित्य नव न
 वा आनंदो, बहु चिरंजीवो रे तीरथपति सुलतान; विल ज
 री ध्यातु रे प्रभुगुणनुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसू
 रि गुण ठाण ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री जंबुगुरुनो गहंली.

अजब कियो रे मुनिराय, लघुवये जोग लियो रे ॥ शो
 ल वरस संयम लियो रे, तरुणी आठ बिठोड ॥ मुनिवर
 योग लियो रे, कोडि नवाणुं सोवन तणी रे; ठोडी मनने को
 ड ॥ मु० ॥ १ ॥ तप द्वादश जेदे करे रे, जावता जावना बार ॥
 मु० ॥ पडिमा वारना उद्यमी रे, गुण उत्रीगना आधार ॥
 मु० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चउदे जला रे, निमित्त अठग सुठाय
 ॥ मु० ॥ निपुण ते गुणठाणंग तणा रे, गुणसागर गुरुराय ॥
 मु० ॥ ३ ॥ मुनि मंझुलुं परवखारे, जंबू जुगप्रधान ॥ मु० ॥
 निचरंता पाठ धारिया रे, राजगृही उद्यान ॥ मु० ॥ ४ ॥ को
 णिक नरपति वांदवारे, साथे लइ परिवार ॥ मु० ॥ ५ ॥ पद्माव

ती करे गहूंअली रे, इव्य प्रधान विचार ॥मुण॥५॥ चउ गति
चूरण साधियो रे, श्रद्धा पीठ बनाय ॥मुण॥ वसन आनूषण
व्रत तणां रे, शिवफल श्रीफल ठाय ॥मुण॥ ६ ॥ उत्तम गुरु
गुण नक्तिथी रे, वधावे गुरुराज ॥मुण॥ गुरु मुख पद्मनी दे
शना रे, सुणि पामे शिवराज ॥मुण॥७॥इति. ॥

अथ श्री गहूंली.

(जुमखडानी देशी.)

ज्ञानदीवाकर शोभता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहंकर
साधु जी, मूकी काम विडंबना ॥ कुक्षीसंबल साज, सुहं
कर साधु जी ॥१॥ नहि ममता समता धरा, शांत सुदंत म
हंत ॥मुण॥ षटपद वृत्ति आहारता, देश काल मतिमंत ॥मुण॥
॥२॥ पंच महाव्रत ज्ञावना, ज्ञावता पचवीश ॥मुण॥ पण
विश चित्त न धारता, अशुच ज्ञावन निश दीस ॥मुण॥३॥
शिवनारी रंजन जणी, पेहेख्यो साधुनो वेश ॥मुण॥ ते आ
गल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥मुण॥४॥ क्रोधादिक
चउ जीतवा, वरवा चार अनंत ॥मुण॥ स्वस्तिक पूरी वधा
वती, सगुरु चरण नमंत ॥मुण॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअ
ली, धरती हर्ष अमंद ॥मुण॥ श्री शुजवीर वचन सुणी, पा
मे पद महानंद ॥मुण॥६॥इति. ॥

अथ श्री फूलडां.

सखी रे में कौतुक दीवुं, साधु सरोवर जलता रे ॥
सखी० नाके रूप निहालता रे, सखी० लोचनथी रस जाणता

रे; सखी० मुनिवर नारीशुं रमे रे॥१॥सखी० नारी हींचोले
कंतने रे, सखी० कंत घणा एक नारीने रे॥सखी० सदा यौव
न नारी ते रहे रे, सखी०वेश्या विलुछ केवली रे॥२॥सखी०
आंख विना देखे घणुं रे, सखी० रथ बेठा मुनिवर चले रे॥स
खी० हाथ जले हाथी मूवीयो रे,सखी० कूतरिये केशरी हणयो
रे ॥३॥ सखी० तरशो पाणी नवि पीये रे,सखी० पग विहू
णो मारग चले रे; सखी० नारी नपुंसकजोगवे रे, सखी० अं
वाडी खर ठपरे रे ॥४॥ सखी० नर एक नित्य उनो रहे रे;
सखी० बेठो नथी नवि बेसरो रे, सखी० अक्षर गगन वच्चे ते रहे
रे, सखी० माकडे महाजने घेरीयो रे ॥५॥ सखी० छंदरे मेरु
हलावियो रे, सखी० सूर्य अजवालुं नवि करे रे,सखी० लघु बं
धव बन्नीश गया रे, सखी० शोक धरे नहीं बेनडी रे ॥६॥ स
खी० शामलो हंस में देखीयो रे, सखी० काट बढ्यो कंचनगि
रिरे; सखी० अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे, सखी० तोहे प्रभु
न संनारीया रे ॥ ७ ॥ सखी० वयरसामी सुता पारणे रे;
सखी० आविका गावे हालरा रे, थइ महोटा अर्थ ते केहेजो
रे; श्रीशुभ वीरने वढाजडा रे ॥८॥ इति॥

अथ श्री चूनडी.

हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पेंजण पाप
अदार ॥ हांजी सूतर जलुं रे सिधातनु, दाजी टालो आठ प्र
कार; हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥१॥ हांजी त्रण गुति ता
णो तणो, हांजी नलीय नरी नव वाड; हाजी वाणो वणो
रे विवेकनो, हाजी खेमा खुंटीय खाय ॥शी०॥ १ ॥ हांजी

मूल उत्तर गुण घुघरा, हांजी ठेडा वणो ने चार; हांजी चा
 रित्र चंदो वच्चे धरो, हांजी हंसक मोर चकोर ॥ शी० ॥ ३ ॥
 हांजी अजब बिराजे चूनडी; हांजी कहो सखी केटलुं मूढ्या ॥
 हांजी लाखे पण लाजे नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥ हां०
 ॥ ४ ॥ हांजी पहेली नुढी श्री नेमजी, हांजी बीजी राजुल ने
 ट; हांजी बीजी गजसुकुमालजी, हांजी चौथी सुदर्शन शे
 ठ ॥ हां० ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबूस्वामी ने, हांजी ठी धनो
 अणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी आठमी एवं
 ती कुमार ॥ हां० ॥ ६ ॥ हांजी सीता कुंता झैपदी, हांजी दमयं
 ती चंदनबाल; हांजी अंजना ने पद्मावती, हांजी शिव
 ती अति सार ॥ हां० ॥ ७ ॥ हांजी अजब बिराजे रे चूनडी,
 हांजी साधुनो शणगार; हांजी मेघ मुनीसर एम नणे, हां
 जी शीयल पावो नर नार ॥ हां० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्री नवपदनी गहूंली.

आतमराम मुनिराजीया, जवजल तारण नाव ॥ मो
 री सहीयो रे ॥ पांचे योगने साधवा, लीधो ते मुनिवर ना
 व ॥ मो० ॥ चालोने गीतारथ गुरुने वांदवा ॥ १ ॥ वृत्ति कहे
 योग पांचमो, साधन करे सुविलास ॥ मो० ॥ अनुभव अ
 न्यासी सदा, करता ज्ञान अन्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहे
 लो अध्यात्म योग जे, जावना योग तेम जाण ॥ मो० ॥ ध्या
 न योग बीजो सही, समता योग मन होय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥
 एम अनेक गुण शोचता, वीर आणा लेश मान ॥ मो० ॥ गो
 यमस्वामी समोसखा, राजगृही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥

श्रेणिकराय आवे वांदवा, सुणी आगमन उदंत ॥ मो०॥ द्वा
यिक समकितनो घणी, वांदे गुरु गुणवंत ॥ मो०॥ चा०॥ ५॥
इण अवसर राणी चेलणा, जाव सजी शणगार ॥ मो०॥ श्र
द्धा पीठ उपर सही, गढूंली करे मनोहार ॥ मो०॥ चा०॥ ६॥
तव गोयम दिये देशना; सेवो जविक सिद्धचक्र ॥ मो०॥ आं
विल उली आराधिये, जिम न पडो जवचक्र ॥ मो०॥ चा०
॥ ७॥ पांचे धर्मीने चार धर्म ठे; धर्मी सेव्या धर्म होय ॥ मो०॥
मयणा ने श्रीपालनो, संबंध कहे सवि सोय ॥ मो०॥ चा०
॥ ८॥ वली नवपदमय ठे आतमा; आतम नवपद जोय ॥
मो०॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकशी; जेद लहो नवि कोय ॥
मो०॥ चा०॥ ९॥ आतमधर्मी ए देशना; धारजो हृदय म
जार ॥ मो०॥ द्दमाविजय जस संपदा; शुभविजय सुखका
र ॥ मो०॥ चा०॥ १०॥ इति. ॥

अथ श्री गहूंली.

अंवसाल उद्यानमां, कांइ विचरंता वीर जिणंदरे ॥
समवसरण देवे रयुं, कांइ बेठा नयनानंद ॥ जिनजीने बो
लडीये ॥ मोह्या मोह्यारे सुर नर लोक ॥ जि०॥ १॥ पर्यदा वा
र तिहां मली, कांइ बेठी नमी शुभ चित्त रे ॥ कोडीगमे
सेवा करे, कांइ निर्जर नेपुर हुत ॥ जि०॥ २॥ चउमुख चउ
दिशि वीर जी, कांइ देवे देशना साररे ॥ दान शी गल तप
जावना; कांइ शिवपुर मारग चार ॥ जि०॥ ३॥ चार निकाय
ना देवता; कांइ अणदूते एक कोडी रे ॥ सेवा करे प्रभुजी
तणी; कांइ उज्जा वे करजोडी ॥ जि०॥ ४॥ वनपालके जइ

वीनव्यो; कांइ श्रीकोणिक महाराय रे ॥ सपरिवारशुं आ
 वियो; कांइ बेठो नमि प्रभु पाय ॥ जिण॥५॥ समतारसमयी
 देशना; कांइ ज्ञांखे वीर कृपाल रे ॥ नयगर्जित सुणी बोल
 डा, कांइ हरख्यो चित्त जूपाल ॥ जिण॥६॥ मिथ्यामत दूरे
 टढ्यो; कांइ ज्ञायो समकित सूर रे ॥ मोह महामद मोडि
 यो, कांइ प्रगख्यो आतम नूर ॥ जिण॥७॥ कोणिक घरणी
 धारणी; कांइ ज्ञरी अकृत शुचि थाल रे ॥ जिन आगल स्व
 स्तिक करे; कांइ कुंकुम रंग रसाल ॥ जिण॥८॥ मलीने सौ
 गावे तिहां, कांइ प्रभु गुण नक्ति सलोक रे ॥ ज्ञान सुजस वि
 नोदमां, कांइ मग्न हुआ बहु लोक ॥ जिण॥९॥ इति. ॥

अथ श्री पर्यूषण स्तुति.

परव पजूसण पुण्ये पामी; श्रावक करे ए करणी जी
 ॥ आठे दिन आचार पढावे; खंमण पीसण घरणी जी ॥
 सूद्धम बादर जीव न विणासे, दया ते मनमां जाणे जी ॥
 वीर जिनेसर नित पूजीने, सूधो समकित आणे जी ॥१॥ व्र
 त पाले ने धरे ते शुद्धि; पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर
 चंदने जिन सवि पूजे; नवन्नय बंधन खोले जी ॥ नाटक क
 रीने वाजिंत्र वजाडे; नर नारीने टोले जी ॥ गुण गावे जि
 नवरना एणि विध; तेहने कोइ न तोले जी ॥२॥ अठमज्जत्त
 करी लइ पोसइ; बेसी पौषधशाले जी ॥ राग द्वेष मद म
 त्सर हांडी, कूड कपट मन टाले जी ॥ कळपसूत्रनी पू
 जा करीने; निशिदिन धर्मे माले जी ॥ एहवी करणी कर
 तां श्रावक; नरक निगोदिक टाले जी ॥३॥ पडिक्कमाणं क

रिए शुद्ध जावे; दान संवत्सरी दीजे जी ॥ समकितधारी जे
जिनशासने; रात्रि दिवस समरीजे जी ॥ पारण वेला पडि
लाजीने, मनोवांछित महोत्सव कीजे जी ॥ चित्त चोखे पजू
सण करशे, मनमान्यां फल लेशे जी ॥४॥ इति. ॥

अथ काउस्सगना १६ आगार लिख्यते.

(गाथा) अन्नचयाई १२ वारस, आगारा एवमाइ
आ चउरो ॥ १ अगणि १ पणिंदीछिदण, १ बोहिस्कोजाय १
मकोय ॥ इति ज्ञाप्ये. ॥

संख्या आगार सूत्रनाम आगार अर्थ आगार ते वृट. ॥

- १ (अन्नचउससिएणं के०) ऊंचो श्वास लेतां.
- २ (नित्तसिएणं के०) नीचो श्वास मूकतां.
- ३ (खासिएणं के०) खांसि उधरस आवे मुखे दाथ देतां.
- ४ (ठीएणं के०) ठीक आव्ये आडो हाथ देवे.
- ५ (जंजाइएणं के०) वगासु आव्ये आमो हाथ देवे.
- ६ (उड्डुएणं के०) उड्डकार आव्ये आमो हाथ देवे.
- ७ (वायनिसग्गेणं के०) अधोद्वारे वाय संचारवे.
- ८ (नमलिए के०) नमर अथवा चकर आवे, पमे, हाले.
- ९ (पित्तमुञ्जाय के०) पित्त वनमादिकथी.
- १० (सुद्धमेहिंभंग संचालेहिं के०) सुद्धम अंग हालवे.
- ११ (सुद्धमेहिखेलसंचालेहि के०) सुद्धम खेल बलखो हालवे.
- १२ (सुद्धमेहिंदिछीसंचालेहि के०) सुद्धम आंख्य हालवे.
- १ (अगणि के०) अग्नि दीवानी उजेई आवे बीजे ठाम जवे.
- २ (पणिंदीछिदण के०) मंजारी प्रमुख हिसक प्राणीयो

जीवधातादि देखी चित्त न ठरेथी बीजे ठामे जइ का
नसग्न करवे.

३ (बोहिखोनाई के०) चोर नयादिकथी बीजे ठामे जतां.

४ (रुक्मोय के०) सापना जयथी हाले, बीजे ठामे जवे.

अथ श्री काउस्सगमां १९ दोष लागे तेनी
गाथा ज्ञाप्यमांथी.

गाथा—१घोमग शलय ३खंजाइ, ४मालु ५धी ६निय
ल ७सवरी ८खलिण एवहु ॥ १०लंबुत्तर ११थण १२संज
ई, १३जमुहंगुली १४वायस १५कविठो ॥१॥ १६सिरकंप
१७मुय १८वारुणि, १९पेहिती वइऊ दोस नसग्नो ॥ लंबुत्त
र थण संजई, नदोस समणिणं सवहु सहीणं ॥२॥ इति. ॥
संख्या. सूत्रपद. अर्थ.

१ (घोमग के०) घोमानी परे पग वांका राखे ते.

२ (लय के०) लता जे वृद्ध वेलमीनीपरें हाले ते.

३ (खंजाइ के०) थांजा प्रमुखे उगीगुं ले ते.

४ (माल के०) माले मागले मेडे पाटमे माथुं अडामे ते.

५ (उधी के०) पगना अंगुठा अथवा पगनी पानीउ मेलवे ते.

६ (नियल के०) पग पहोला राखे ते.

७ (सवरी के०) जलीडीनिपरें गुज्य स्थाने हाथ राखे ते.

८ (खलिण के०) रजोहरण वांको राखे ते.

९ (वहु के०) बहुनीपरें नीचुं माथुं राखी करे ते.

१० (लंबुत्तर के०) पहेरवानुं वस्त्र ढींचणथी लांबु राखे ते.

११ (थण के०) मांसादिकथी हृदय ढांकी राखे ते.

- १२ (संजई के०) सीतादिकथी हृदय ढांकी राखे ते.
 १३ (नमुहंगुली के०) ज्ञापण आंगली प्रमुख दजावे ते.
 १४ (वायस के०) कागमानीपरे आंख्यो फेरवे ते.
 १५ (कविष्ठो के०) वस्त्र संकोची राखे ते.
 १६ (सिरकंप के०) माथुं हलावे धुणावे ते.
 १७ (मुय के०) मुगानीपरे हुंहुंकार करे ते.
 १८ (वारुणि के०) मदिरानीपरे बम्बम् शब्द करे ते.
 १९ (पेहि के०) वांदरानीपरे होठ हलावे ते.

ए जंगणीसमा मुनी तथा श्रावकने सर्व तजवा.

साधवीने १६ तजवा १०, ११, १२ ते विना.

श्राविकाने १५ तजवा ए, १०, ११, १२ ते विना.

अथ पञ्चखाण नमुक्कारसहि आदिनां, गुरु करावे, गुरुनुं वचन पञ्चखाई ॥ करतानुं वचन पञ्चखामी, गुरुनुं वचन वो सिरे, करतानु वचन वोसिरामि ॥

१ अथ नमुक्कारसहिनुं.

जगएसूरे नमुक्कार सहिथं पञ्चस्काई चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं १ अन्नञ्जणाजोगेणं, २ सह स्तागारेणं, वोसिरे. ॥१॥

२ अथ नमुक्कारसहि मुष्ठसहिनुं.

जगएसूरे नमुक्कारसहिथं मुष्ठसहिथं पञ्चस्काई चउ विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं १ अन्नञ्जणाजोगेणं २ सहस्तागारेणं, ३ मदत्तरागारेणं, ४ सबसमाहिचत्तिया गारेणं, वोसिरे. ॥ २ ॥

अथ पोरसि साढपोरिसिनुं.

उगगएसूरे नमुकारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठि
सहिअं पञ्चखाइ उगगएसूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं १ अन्नठणानोगेणं, २ सहस्सागारेणं, ३ पञ्च
न्नकालेणं, ४ दिसामोहेणं, ५ साहुवयणेणं, ६ महत्तरागारेणं,
उसवसमाहिवतियागारेणं, वोसिरे. ॥३॥

ए पञ्चखाणमां मुठिसहि लिधि तेथी एक आगार वध्योठे.

४ अथ पुरिमठ अवढनुं.

पोरिसि मुठिसहिनी रीते पण उगगएसूरेने वामे सूरे
एउगेनो पाठ लेजो ॥ इति. ॥४॥

५, ६ अथ वेसणा एकासणानुं.

उगगएसूरे नमुकारसहिअं, पोरिसहिअं, मुठिसहिअं
पञ्चखाइ उगगएसूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अन्नठणानोगेणं सहसागारेणं पञ्चन्नकालेणं दिसा
मोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तीयागारे
णं विगइउ पञ्चखाइ अन्नठणानोगेणं सहसागारेणं लेवाले
वेणं गिहठसंसोठेणं उस्किनविवगेणं पडुच्चमस्किएणं पारिठा
वणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं बिया
सणं पञ्चखाइ तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं १ अ
न्नठणानोगेणं, २ सहसागारेणं, ३ सागारियागारेणं, ४ आउ
ट्टणपसरेणं, ५ गुरूअप्रुठाणेणं, ६ पारिठावणियागारेणं, ७
महत्तरागारेणं, ८ सवसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेणवा

अलेवेणवा, अद्येणवा, बहुलेणवा, ससिञ्जेणवा, असिञ्जेणवा
वोसिरे. ॥ इति ॥

हवे एकासणनुं पच्चस्काण करवुं होय तो प्रथमे वेयास
णाने गमे एकासण कदेवुं ॥५॥६॥ इति. ॥

॥ अथ एकलठाणनुं.

ए पच्चखाण एकासण प्रमाणे पाण एक आगार उठो
आठटणपसारेणं न कहेवुं, सात आगार ठे माटे.

॥ अथ आयं विलनुं.

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिंमं, पोरिसि, साठपोरिसि, मुठि
सहिंमं पच्चखाइ उग्गएसूरे चउद्धिहं पि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अन्नञ्जणान्जोगेणं सहसागारेणं पच्चनकालेणं
दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिया
गारेणं आयं विलं पच्चस्काइ १ अन्नञ्जणान्जोगेणं, २ सहसागारे
णं, ३ लेवालेवेणं, ४ गिहत्तसंसडेणं, ५ उक्कित्तविवेगेणं, ६ पा
रिठावणियागारेणं, ७ महत्तरागारेणं, ८ सवसमाहिवत्तियागा
रेणं, एकासणं पच्चस्काइ तिविहपि आहारं असणं खाइमं
साइमं अन्नञ्जणान्जोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आ
उठण पसारेणं गुरुअठणेणं पारिठावणियागारेणं मह
रात्तगारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवे
णवा अद्येणवा बहुलेणवा ससिञ्जेणवा असिञ्जेणवा वोसिरे.

॥ अथ तिविहार उपवासनुं.

सूरेउग्गए अन्नत्तं पच्चस्काइ तिविहपि आहारं असणं
खाइमं साइमं १ अन्नञ्जणान्जोगेणं, २ सहसागारेणं, ३ पारि
ठावणियागारेणं, ४ महत्तरागारेणं, ५ सवसमाहिवत्तिया

गारेणं, पाणहार पोरिसि साठपोरिसि मुठसहिअं पञ्चस्काइ
अन्नठणान्नेगेणं सहसागारेणं पञ्चन्नकाजेणं दिसामोहेणं
साहुवयोणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं पा
णस्स लेवेणवा अलेवेणवा अळेणवा बहुदेणवा ससिळेणवा
असिळेणवा वोसिरे. ॥९॥

१० अथ चनव्विहार उपवासनुं.

सूरेण्णए अप्रत्तठं पञ्चस्काइ चनव्विहंपि आहारं अस
णं पाणं स्वाइमं साइमं १ अन्नठणान्नेगेणं, २ सहसागारेणं,
३ पारिठावखियागारेणं, ४ महत्तरागारेणं, ५ सबसमाहि
वत्तियागारेणं, वोसिरे. ॥ इति ॥ १० ॥

११ अथ पाणहारनुं ठठ अठमादिक तप करे.

बीजा दिवसादिके पाणी वापरवुं होय त्यारे करे ते.
पाणहार पोरिसि मुठसहिअं पञ्चस्काइ अन्नठणान्नेगेणं सह
सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स १
लेवेणवा २ अलेवेणवा ३ अळेणवा ४ बहुदेणवा ५ ससिळेण
वा असिळेणवा वोसिरे. ॥ इति ॥ ११ ॥

१२ अथ गंठसहिअं आदे अनिग्रहनुं.

गंठसहिअं वेठसहिअं दिपसहिअं टवुकहिअं मुठस
हिअं पञ्चस्काइ १ अन्नठणान्नेगेणं, २ सहसागारेणं, ३ मह
त्तरागारेणं, ४ सबसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे. ॥ १२ ॥

१३ अथ नियम धारे तेने देसावगासिकनुं.

देसावगासिअं नवजोगं परिजोगं पञ्चस्काइ १ अन्नठ
णान्नेगेणं, २ सहसागारेणं, ३ महत्तरागारेणं, ४ सबसमाहि
वत्तियागारेणं वोसिरे. ॥ इति ॥ १३ ॥

१४ अथ निविगईनुं पञ्चखाण.

निविगईनुं पञ्चखाई १ अन्नठणानोगेणं २ सहसागारेणं ३ लेवालेवेणं ४ गिहठसंसठेण ५ उक्किन्नविवेगेणं ६ पडुच्चमस्किणं ७ पारिष्ठावणियागारेणं ८ महत्तरागारेणं एसवसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति. ॥ १४ ॥

अथ सांजनां पञ्चखाण.

वयसणा एकासणा निविगई आयंबील उपवास ठठ अठ्ठादि उश्च जल वावरे तेने.

१५ अथ पाणहार दिवस चरिमनुं.

पाणहार दिवस चरिम पञ्चखाई १ अन्नठणानोगेणं २ सहसागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति. ॥ १५ ॥

१६ अथ श्रीचउविहारनु. रात्रे चारे आहार वंध.

दिवस चरिमं पञ्चखाई चउविहंपि आहारं असणां पायं खाइमं साइमं १ अन्नठणानोगेणं २ सहसागारेण ३ महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति. ॥ १६ ॥

१७ अथ श्री तिविहारनुं पाणी मोकलुं.

दिवस चरिमं पञ्चखाई तिविहंपि आहारं असणां खाइमं साइमं १ अन्नठणानोगेणं २ सहसागारेण ३ महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे इति ॥ १७ ॥

१८ अथ श्री डविहारनुं नोजन खादिम वंध.

दिवस चरिमं पञ्चखाई डविहंपि आहारं असणां खाइमं १ अन्नठणानोगेणं २ सहसागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४

सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति. ॥ १८ ॥

अथ श्री पञ्चखाणना आगारनी गाथा.

दोचेव नमुक्कारे, आगारे ठ चेव पोरसिए ॥ सत्ते वइ
पुग्मिहे, इक्कासणगंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग ठाणेंसुय, अठेवय
अंविजंनि अ गारा ॥ पंचव जत्तठे, ठ पाणे चरिम चत्तारि
॥ २ ॥ पंच चनुगे अन्निगहे, निवीए अठ नव आगारा ॥ अ
पानरे पंच चन्न, हवंति ससेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

अथ श्री च्यार आहारनां नाम तथा अर्थ.

- १ (असणं के०) कठालादि ज्ञात दूध पकवानादि.
- २ (पाणं के०) कांजी केर जवादि धोयण मदीरादिक पाणी.
- ३ (खाइम के०) शेक्यां धान तथा फलादि.
- ४ (साइमं के०) सूठ जीरु अजमो तंवोलादि.

अथ श्री पञ्चखाण पारतां ठ बोलनां नाम.

- १ (फान्निअ क०) जे काल सुधी लीधुं त काल फरस त.
- २ (पाजीअ के०) पञ्चखाण कखुं त वारवार संजारे त.
- ३ (सोहिअं के०) गरुआदिकन नीमत्री पठे पारे त.
- ४ (तारिअं के०) जकाज सुधी कखुं त काल उपर आय त.
- ५ (कीट्रिअं के०) जो जनादि करतां पञ्चखाण त्रिचारे त.
- ६ (अरारहिअं के०) ए सर्व प्रकारे संपूर्ण पारवुंते.

अथ ठ ठींडीथी पञ्चखाण करे तेनां नाम.

- १ (राजान्नियोगण के०) राजा नगराधिपतिना बले करी.
- २ (बलान्नियोगेणं के०) चारादिकना बल करी.
- ३ (गणान्नियोगेणं के०) घणाना समवाय बले करी.

- ४ (देवानियोगेणं के०) देवकोपादिक उपध्वे करी.
 ५ (गुरुनिगहेणं के०) गुरु धर्म जीवीन्दाइनो उपध्व
 वारवाने.
 ६ (चित्तिकंतरेणं के०) आजीवी ता डल्लेने डरुआदिके.
 ॥ इति श्री काञ्चसग आदिमां आगार. ॥

अथ पञ्चखाणना ४ए चांगा लिख्यते.

॥ त्रण जोगना ॥ ॥ त्रण करणना मलीने थाय ॥

॥ गाथा—मण वय काय मणवय, मणएणु वयतएण
 िजोग सग सत्त, करण कारणाणुमई ड ति जुअ तिवाल
 सियाल जंगसय ॥ १ ॥

- | | |
|----------|------------------------------------|
| १ मने० | करुं नहि. |
| २ मने० | करावुं नहि. |
| ३ मने० | अनुमोडु नहि. |
| ४ मने० | करु नहि, करावुं नहि. |
| ५ मने० | करुं नहि, अनुमोडु नहि. |
| ६ मने० | कर वुं नहि, अनुमोडु नहि. |
| ७ मने० | करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोडु नहि. |
| ८ वचने० | करु नहि. |
| ९ वचने० | करावुं नहि |
| १० वचने० | अनुमोडु नहि. |
| ११ वचने० | करु नहि, करावुं नहि. |
| १२ वचने० | करुं नहि, अनुमोडु नहि. |
| १३ वचने० | करावुं नहि, अनुमोडु नहि. |

| | |
|----------------|-----------------------------------|
| १४ वचने० | करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| १५ कायाए० | करुं नहि. |
| १६ कायाए० | करावुं नहि. |
| १७ कायाए० | अनुमोड नहि. |
| १८ कायाए० | करुं नहि, करावुं नहि. |
| १९ कायाए० | करुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २० कायाए० | करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २१ कायाए० | करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २२ मन० वचने० | करुं नहि. |
| २३ मन० वचने० | करावुं नहि. |
| २४ मन० वचने० | अनुमोड नहि. |
| २५ मन० वचने० | करुं नहि, करावुं नहि. |
| २६ मन० वचने० | करुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २७ मन० वचने० | करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २८ मन० वचने० | करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| २९ मन० काया० | करुं नहि. |
| ३० मन० काया० | करावुं नहि. |
| ३१ मन० काया० | अनुमोड नहि. |
| ३२ मन० काया० | करुं नहि, करावुं नहि. |
| ३३ मन० काया० | करुं नहि, अनुमोड नहि. |
| ३४ मन० काया० | करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| ३५ मन० काया० | करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोड नहि. |
| ३६ वचन० कायाए० | करुं नहि. |
| ३७ वचन० कायाए० | करावुं नहि. |

- ३० वचन० कायाए० अनुमोड नहि.
 ३९ वचन० कायाए० करु नहि, करावुं नहि
 ४० वचन० कायाए० करुं नहि, अनुमोड नहि.
 ४१ वचन० कायाए० करावुं नहि, अनुमोड नहि
 ४२ वचन० कायाए० करुं नहि, करावु नहि, अनुमोड नहि.
 ४३ मन० वचन० कायाए० करुं नहि.
 ४४ मन० वचन० कायाए० करावुं नहि.
 ४५ मन० वचन० कायाए० अनुमोड नहि.
 ४६ मन० वचन० कायाए० करुं नहि, करावुं नहि.
 ४७ मन० वचन० कायाए० करुं नहि, अनुमोड नहि.
 ४८ मन० वचन० कायाए० करावुं नहि, अनुमोड नहि.
 ४९ मन० वचन० कायाए० करुं नहि, करावुं नहि, अनुमोड नहि. ॥ इति ४९ चांगा समाप्तम् ॥

अथ श्री देवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लिख्यते.

पांखमी गाथा—चौतीसे अतिशय जूझ, वचनातिशय युत्त ॥ सो परमेश्वर देखि जवि, सिंहासन संपत्त ॥१॥

॥ ढाल ॥ सिंहासन वेठा जग जाण, देखि जविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुज निरमल जाण, लहीये परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमंजलि मेढ्हो आदि जिणंदा, तोरा चरण कमल सेवे चोसठ इंदा ॥ कु० ॥ गाथा० ॥ जो नियगुण पक्कव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुगल आरोप ता, जोत सुरंग नरत्त ॥२॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आणदी, पुगल संगे जेह अफंदी ॥ जे परमेश्वर निज पद ली

न, पूजो प्रणमो नव्य अदीन ॥ ३ ॥ कुसुमंजलि मेढ्हो शां
 ति जिणंदा ॥ तोण ॥ कुण ॥ गाथाण ॥ निम्मल नाण पयास क
 र, निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्ममुवयेस कर, सो पर
 मप्पा धन्न ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, न
 विजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी नीशाणी,
 तसु जगते मुज मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेढ्हो नेमि
 जिणंदा ॥ तोण ॥ कुण ॥ गाथाण ॥ जे सिद्धा सिद्धंति जे, सिद्ध
 संति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत
 ॥ ४ ॥ ढाल. ॥ शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणा
 मे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंदादिक
 जसु चरण पयाले ॥ ५ ॥ कुसुमांजलि मेढ्हो पास जिणंदा,
 तोण ॥ कुण ॥ गाथाण ॥ समदिठी देस जय, साहु साहुणी सा
 र ॥ आचारज उवप्राय मण, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धाख्यो, मोह तणो का
 रण निरधाख्यो ॥ विविह कुसुमवर जाति गदेवि, तसु चर
 णे प्रणमंत ठवेवी ॥ ६ ॥ कुसुमांजलि मेढ्हो वीरजिणंदा ॥
 तोण ॥ कुण ॥ इति पांखमी ॥ वस्तु ॥ ठंड. ॥ सयल जिनवर
 नमिय मनरंग, कद्धाण कविहि संथविय ॥ करिइ धम्म
 सुपवित्त ॥ सुंदर सयइक सत्तरि तिथकर, एक सम ग्रिहरं
 ति महीयल ॥ चवण समय इगवीस जिण, जमण समय
 इगवीस ॥ नत्तिह जावे पूजीया, करो संघ सुजगीस ॥ ६ ॥

॥ ढाल ९ जी. ॥

(एक दिन अचिरा हुजरांवती, ए दशी.)

नव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजगति प्रमुख ग

ए परणम्या ॥ तजि इंदोय सुख आससना, करि थानक
वीशनी सेवना ॥१॥ अति राग प्रसस्त प्रज्ञावता, मन एह
वी जावना जावता ॥ सवि जीव करू सासन रसी, एसी
जाव दया मन उद्धसी ॥२॥ जही परणाम एहवुं जलुं, निप
जावी जिनपद निरमलु ॥ आयु वये विच इरु नव करी,
श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहाथी चवि लहे नरंजव उ
दार, ज़रते तिम एरवतेज सार ॥ महाविदेहे प्रिय प्रधान,
मध्यखंमे अवतरे जिन निधान ॥४॥

॥ अथ सुपनां ढाल ३ जी. ॥

पुण्ये सुपनह पेखे, मनमांहि हरख विशेषे ॥ गजवर
उज्ज्वल सुंदर, निर्मल वृषज मनोहर ॥ १ ॥ निरञ्जय केशरि
सिंह, लक्ष्मी अतिहि अदीह ॥ अनुपम फूजनी माल, निर्म
ल शशी सुकुमाल ॥ २ ॥ तेज तरणी अति दीपे, इंदुध्वजा
जग ऊप ॥ पूरण कलश पडूर, पदम सरोवर पूरा ॥३॥ श्या
रमे रणायर, देखे माता गुण सायर ॥ वारमे जुवन
विमान, अनुपम रत्न निधान ॥४॥ अगनि शिखा निरधूम,
देखे माताजी अनुपम ॥ दरखी रायने ज्ञासे, राजा अर
थ प्रकासे ॥५॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पुत्र म
नोहर ॥ इडादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥
॥६॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २ उपना जिननाह, माता तव
रणणी समे ॥ देखी सुपन हरखंति जागीय, सुपन कही नि
ज कंतने ॥ सुपन अरथ सांजले सोजागीय, त्रिजवन ति
लक महागुणी ॥ होस्ये पुत्र प्रधान, इडादिक जसु पयनमी,
करशे सिध विधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

(चंडाञ्जलानी.)

सोहमपति आसन कंपीयो, देइ अवधि मन आणंदि
 यो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, नवजल तारण प्र
 गढ्यो जिहाज ॥१॥ नव अडवी पारग सत्तवाह, केवल ना
 णाईय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर रेह, कारण न
 लढ्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसी तव रोमराय, बल
 यादिकमें निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद,
 प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥३॥ सग अडपय सम्मुह आवि
 तढ, करि अंजलि प्रणमी नमीयमढ ॥ मुख ज्ञांषि ए खिण
 आज सार; तीयलोय पहु दीठो नद्वार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो
 सुरलोक देव, विषयानले तोपित तनु सवेव ॥ तसु शांति क
 रण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरूडवान ॥ ५ ॥ ते
 देव सकल तारण समढ; प्रगढ्यो तसु प्रणमी हवो सनथ ॥
 एम जंपी सकढव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥
 गावे तव रंजा गीतज्ञान, सुरलोक हुवा मंगल निधान ॥ न
 रखेत्रे आरिज शुन ठाम, जिनराज वधे सुर हरख धाम
 ॥ ७ ॥ पिता मात घरे उढव अलेख, जिनसासन मंगल अति
 विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरख समग, संयम अरथी ज
 नने उमंग ॥ ८ ॥ सुन वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंडा
 दिक हरख साथ ॥ सुख पाम्या त्रिजुवन सर्व जीव, वधाई
 वधाई थइ अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल ५ मी. ॥

(श्री शान्तिजिननो कलश कहिशुं, प्रेम सागर पुर) ए देशी.

श्री तीर्थपतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार, नर
खेत मंरुण डह विहंमन नविक मन आधार ॥ तिहां राव
राणा हरख उठव थयो जग जयकार, दिसि कुमरी अवधि
विशेष जाणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी
संग कुमरी गावती गुण ठंद, जिन जननी पासे आवि पहो
ती गहगहती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचि व
घायो रम्म, अम जम्म निम्मल करण कारण कारण करिश
सुइकम्म ॥ ७ ॥ तिहां नुमि सोधन दीप दर्पण वाय वीजण धा
र, तिहां करीय कदली गेह जिनवर जननि मज्जनकार ॥ वर
राखडी जिन पाणि बांधि दीये एम आशीश, जुग कोडि को
डि चिरंजीवो धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ६ मी. ॥

(प्रभु प्रणमुं रे एहनी.)

जयनायक जी त्रिभुवन जन हितकार ए, परमात्म
जी चिदानंद घन सार ए ॥ जिण रयणी जी दस दिसी नि
र्मलता घरे, शुन लग्ने जी ज्योतिप चक्र ते संचरे ॥ जिन ज
नम्या जी जिण अवसर माता घरे, तिणे अवसर जी इंद्रास
ण पण थरदरे ॥ १ ॥ तूटक ॥ थरदरे आसन इंद्र चिते, कोण
अवसर ए वन्यो ॥ जिन जनम उठव काल जाणी, अतिदि
आणंद उपनो ॥ निज सिद्धि संपति हेतु जिनवर जाणी न
गते उमह्यो, विकसित वदन प्रमोद वधते देव नायक गहग
ह्यो ॥ १ ॥ चाल-तव सुरपति जी घंटा नाद करावए, सुरलोके

जी घोषण एह देवरावए ॥ नरक्षेत्रे जी जिनवर जनम हु
 वो अठे, तसु जगते जी सुरपती मंदरगिरि गठे ॥ त्रूण ॥
 गठे मंदर शिखर उपर जुवन जीवन जिन तणो, जिन ज
 नम नुंठव करण कारण आवजो सवि सुर गणो ॥ तुम शुद्ध
 समकित थास्ये निरमल देवाधिदेव निहालतां, आपणां पा
 तिक सर्व जास्ये, नाथ चरण पखालतां ॥३॥ चाल-इम सांन
 ली जी सुरवर कोडि बहु मिली, जिन वंदन जी मंदरगिरि
 साहमा चली ॥ सोहमपती जी जिन जननी घर आवीया,
 जिन माता जी वंदि स्वामी वधावीया ॥ त्रूण ॥ वधावी
 या जिनवर हर्ष बहुले धन्य हुं कृतपुन्य ए, त्रैलोक नाय
 क देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पु
 त्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी, उठंग तुमचे वलीय थापिश
 आतमा पुण्ये जरी ॥४॥ चाल-सुरनायक जी जिन निज करक
 मले ठव्या, पांच रूपे जी अतिशो महिमाये स्तव्या ॥ नाटक
 विधि जी तव बत्तीस आगत वहे, सुर कोडे जी जिन दरश
 णने उमहे ॥ त्रूण ॥ सुर कोडी कोडी नाचती वली नाथ
 सुचि गुण गावती, अपठरा कोमि हाथ जोमि हाव नाव
 दिखावती ॥ जय जयो तुं जिनराज जग गुरु एम दे आशीस ए,
 अमत्राण शरण आधार जीवन एक तुं जगदीश ए ॥५॥ चाल-
 सुर गिरिवर जी पांसुक वनमे चिहुं दिशे, गिरि शिखर जी
 सिंघासण सासय वसे ॥ तिहां आणी जी शक्रे जिन खोले
 ग्रह्या, चोसठे जी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूण ॥ आ
 विया सुरपति सर्व जगते, कलश श्रेणि बणाव ए ॥ सिद्ध
 र्थ पमुहा तीर्थ उषधि सर्व वस्तु अणावए ॥ अच्युत पति

तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोमिने, जिनमज्जनारथ नीर
लावो सवे सुर करजोडिने ॥६॥

॥ ढाल ७ मी. ॥

(शांतिने कारणे । इंद कलसा नरे, ए देशी.)

आत्म साधनो रशी देव कोडि हसी, उलशीने धसी
खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थ
जल अमल लेवा जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश क
रि सहस अष्टोत्तरा, उक्त चामर सिंहासण सुन्नतरा ॥ उपग
रण पुष्प चंगेरी पमुहा सवे, आगमे जांखिया तेम आणी
ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय कर कलश करि देवता, गावता
जावता धर्म उन्नतिरत्ता ॥ तिरिय नर अमरने हरख उपजाव
ता; धन्य अम सगति सुचि जगति एम ध्यावता ॥ ३ ॥
समकित बीज नीज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे
जगति जल शींचता ॥ मेरु सिहरोवरे सर्व आढ्या वही, श
क्र उठंग जिन देखी मन गहगहरी ॥ ४ ॥ गद्य ॥ हंडो देवा
अणाईकाल अदिष्ठ पुढो तिलोय तारणो, तिलोय बंधू मिष्ठ
तमोह विहंसणो ॥ अणाइ तिण्हा विणासणो, देवाहिदेवो
दिष्ठो हियकामेहि ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तेही ॥ एम पञ्चान्त
वण जवण जोईसरा, देव वेमाणीया जक्ति धम्मायरा ॥
केवि कप्पडिया केवि मित्ताणुगा, केवि वर रमणि वयणेण
अइ उच्चगा ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ तळ अनुय १ इंद आदेश करजो
डि सवि देव गण लेय कलश आदेश पामिय ॥ अद जूत
रूप सरूप जुय कवण एह पुढंत सामिय, इंद कहे जग
तारणो पारग अम परमेश ॥ नायक दायक धर्मनिही, क

रिये तसु अतिशोक ॥ ७ ॥

॥ ढाल ८ मी. ॥

(तीर्थ कमल दल उदक जरिने, पुष्कर सागर आवे)

॥ ए देशी. ॥

पूर्ण कलश सुचि उदकनि धारा, जिनवर अंगे नामे ॥
 आतम निरमल जाव करंतां, वधते सुन्न परिणामे ॥ अच्यु
 त आदिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानि
 क इंडाणी पमुहा, एम अजिषेक करंत ॥ १ ॥ गाहाण ॥ तव
 ईसाण सुरिंदो, सक्कं पनणेंई करइ सुपसावो तुम अंके मह
 नाहो, पणमित्तं अम्म अप्पेह ॥ २ ॥ ता सक्किंदो पनणेंइ,
 साहमीवड्डलंमि बहुलाहो आणा एवंतेणं; गिण्हहोउ कय
 ढनो ॥ ३ ॥ ढाल तेज ॥ सोहम सुरपति वृषन्नरूप करी,
 न्हवण करे प्रभु अंग ॥ करिये विक्षेपण पुष्पमाला ठवि, व
 र आन्नरण अन्नंग ॥ ४ ॥ तव सुरवर बहु जयश रव करि, ना
 चे धरि आणंद ॥ मोक्ष मारग सारथपति पाम्यो, नांजसु ह
 वे जव फंद ॥ ५ ॥ कोडि बत्तीसे सोवन उवारी, वाजंते वर
 नादे ॥ सुरपति सिंघ अमर श्री प्रभुने, जननीने सुप्रसा
 दे ॥ ६ ॥ आणी आपी एम पयंपे, अम निस्तरिया आज ॥
 पुत्र तुमारो नाथ हमारो; तारण तरण जिहाज ॥ ७ ॥ मात
 जतन करी राखज्यो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरप
 ति जगति सहित नंदीसर, करे जिन जगति उदार ॥ ८ ॥
 निय ९ कप्प गया सवि निर्जर, कहेता प्रभु गुण सार ॥ दि
 द्वा केवलज्ञान कळयाणक, इच्छा चित्त मज्जार ॥ ९ ॥ खर
 तरगढ जिन आणा रंगी, राजसागर उवजाय ॥ ज्ञान ध

रम दीपचंद सुत पाठक, सुगुरु तणो सुपसाय ॥ १० ॥ देव
चंद निज जगते गायो, जनम महोच्चव वंद ॥ बोधवीज अं
कूरो छलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ११ ॥ इति. ॥

॥ कलश. ॥

(राग वेलाञ्जल.)

एम पूजा जगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय
विजाव निज जावमें, रमता शिवराज ॥ एण ॥ १ ॥ काल
अनंते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपय सीमंधर प्रभु,
केवलनाण दिणंद ॥ एण ॥ २ ॥ जनम महोच्चव इणिपरे,
आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमा तणो, अनुमोदन खं
त ॥ एण ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन
पद्मिमा जिन सारिखी, कही सूत्र मजार ॥ एण ॥ ४ ॥ इति. ॥

अथ श्री देवचंद्रजीकृत अष्टप्रकारी पूजा.

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ छहो. ॥

स्वस्ति श्रीसुख पुरवा, कळपवेलिनो सार ॥ पूजा
जवि जिननी करो, अष्ट जेद सुविचार ॥ १ ॥ गंगा मागध
हीरनीधी, नपधी मीश्रित सार ॥ कुसुम वासीत सुची ज
ले, करो जिन स्नात्र उदार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

मणीकनकादिक अम्रवीधि करी, नरि कलस सफार ॥

शुभ्र रूचि जे जिनवर न्हैवे, तस नहि छरित प्रचारं ॥१॥ मे
रुशिखर जिम सुरवर, जिनवर न्हवण अमान ॥ करता वर
ता निज गुण, समकित वृद्धि निधान ॥ २॥

॥ अथ चाल ॥

स्नात्र करतां जगत गुरु शरीरे, सकल देवे विमल क
लस नीरे ॥ आपणा कर्म मल दूरे किधा, तेणे ते विबुद्धे ग्रं
थे प्रसीधा ॥१॥ हर्ष जरी अप्सरा वृंद आवे, स्नात्र करी ए
म आसीश जावे ॥ जिहां दगे सुरगिरि जंबुदीवो, अम त
णा साध्य जीवात्म जीवो ॥२॥

॥ काव्य ॥

विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महोदय
कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि
विशुद्ध्ये ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतातनं ज्ञान शक्तये,
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय; श्रीमङ्गिनेन्द्राय जलं यजाम
हे स्वाहा ॥ २॥ इति ॥

अथ द्वितीय चंदन पूजा.

॥ डहो. ॥

बावना चंदन कुंकुमा, मृगमदने घनसार ॥ जिन त
नु द्वेपे तसु टले, मोह संताप विकार ॥१॥

॥ ढाल ॥

सकल संताप निवारण, तारण सहु ज्ञवि चित्त ॥ प
रम अनीहां अरेहां, तनु चरचो जवि नित्त ॥ १॥ निज रूपे

उपयोगी, धारी नीज गुणगेह ॥ नाव चंदन सह नावथी,
टाळे डुरित अवेह ॥ १ ॥

॥ अथ चाल ॥

जिन तनु चरचतां सकल नाकी, कंहे कुग्रहा उभ्रता
आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज म्हांकी, नव्यता
अम तणी आज पाकी ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सकल मोहतिमिर विनाशनं, परम शीतल नावयुतं
जिनं ॥ विनय कुंकम चंदन दर्शनै, सहज तत्व विकाश
कृतेर्बयेत् ॥ १ ॥ वैष्णवी परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय ॥ श्रीमत् जिनेशाय, चंदन
यजामहे स्वाहाः ॥ २ ॥ इति ॥

अथ तृतीय पुष्प पूजा.

॥ इहो. ॥

शतपत्री वर मोगरा, चंपक जाय गुलाब ॥ केतकी द
मणो बोलसिरि, पुजो जिन जरी ठाव ॥ १ ॥

॥ दाल ॥

अमल अखंमि विवसित, गुज कुसुमनी जाति ॥
लाखिणो टोडर ठवो, आंगी रचो बहु जांति ॥ १ ॥ गुण कुसुमें
नीज आतमा, मंमि करवा नव्य ॥ गुण रागी जड त्या
गी, पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

जग धणी पूजतां विविध, फूले सुरवरा ते तेषो खिण

अमूले ॥ खंत धरि मानवा जिनप पूजे, तसु तणा पापसं
ताप धूजे ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै, विंशद चेतन जाव समु
न्नवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून धनैर्नवैः ॥ परम तत्त्वमयं हिय
जाम्यहं ॥ १ ॥ नैऋतीपरमाण ॥ अनंताण ॥ जन्मजराण ॥ श्री
मते जिनेंशाय, पुष्पंयजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति ॥

अथ चतुर्थ धूप पूजा.

॥ इहो. ॥

कृशागर मृगमद तगर, अंबर तुरुष्क लोवान ॥ मेलि
सुगंध घनसार घन, करो जिनने धूप दान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

धूप घटी जिम महमहे, तिम दहे पातिक वृंद ॥ अर
तिअनादीनी जावे, पावे मन आणंद ॥ १ ॥ जे जिन पूजे
धुप, नव कुंफे फिरि तेह ॥ नावे पावे ध्रुव घरे, आवे
सुख अवेह ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

जिनघरे वासना धुप पूरे; मिष्ठत दुर्गंधता जाए दरे ॥
धुप जिम सहज उर्ध्वगति स्वप्नावे; कारका उच्चगति जाव
पावे ॥ १ ॥

लेपे

॥ काव्य ॥

सकल कर्म महेधन दाहनं, विमल संवर जावसु धू
सकलं ॥ अशुभ पुजल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतो स्तुसुह
मअनीहां ॥ १ ॥ नैऋती परमात्मानेण धूपंयजामहेस्वाहा ॥ इति ॥

अथ दीप पूजा.

॥ डहो. ॥

मणीमय रजत ताम्रनां, पात्र करी घृत पूर ॥ वर्त्ति सू
त्र कुसुंजनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

मंगल दीप वधावो, गावो जिन गुण गीत ॥ दीप त
णी जिम आलिका, मालिका मंगल नीत ॥ १ ॥ दीप तणी
जिम ज्योति, द्योति जिन मुख चंद ॥ निरखी हरखी जवि
जना, जिम लहो पूर्णानंद ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

जिनगृहे दीपमाला प्रकासे, तेहथी तिमीर अज्ञान
नासे ॥ निज घटे ज्ञान ज्योति विकासे, जेहथी जग तणा
जाव जासे ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

जविक निर्मज बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक
दीपनं ॥ सुगुण राग विगुण समन्वितं, दधतु जाव विकाश
कृतेर्जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म ॥ दीपय जामहे स्वाहा.

अथ अर्कत पूजा.

॥ डहो. ॥

अर्कत अर्कत पुरस्युं, जे जिन भागे सार ॥ स्वस्तिक
रचतां विस्तरे, निज गुण जर विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

उज्वल अमल अखंरित, मंडित अक्षीत चंग ॥ पुंजत्र

य करो स्वस्तिक, अस्तिक ज्ञावे रंग ॥ १ ॥ निज सत्ताने
सनमुख, उनमुख ज्ञावे जेह ॥ ज्ञानादिक गुण ठावे, ज्ञा
वे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

स्वस्तिक पुरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्री ज्ञड कळ्या
ण जागे ॥ जन्म जरा मरणादि अशुभ ज्ञागे, नियत शिव
सर्म रहे तासु आगे ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सकल मंगल केलि निकेतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं
जिनं ॥ श्रयति नव्यजना इति दर्शयत्, दधतु नाथ पुरोक्त
त स्वस्तिकं ॥ १ ॥ नैऋती परमात्मणः अक्षतं यजामहे स्वाहा.

अथ नैवेद्य पूजा.

॥ डहो. ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृत पूर ॥ करो
नैवेद्य जिन आगळे, कुथा दोष तव दूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

दपन श्री वर घेवर; मधुतर मोतिचूर ॥ सिंहकेश
रीया सेवैया; दलिया मोदक पुर ॥ १ ॥ साकर डाक सिंधो
डां; नक्ति व्यंजन घृत सद्य ॥ करो नैवेद्य जिन आगळे; जि
म मीले सुख अनवद्य ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

ढोकतां नोज्य परज्ञाव त्यागे; ज्ञवि जना निज गुण

जोय्य मागे ॥ अम नणी अमतणुं सरूप जोय्य; आपज्यो
तातजी जगत पूज्य ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सकल पुञ्जल संग विवर्जनं; सहज चेतन नाव विलास
कं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृति नाव म
हं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मण॥ नैवेद्य यजामहेस्वाहा. ॥

अथ फल पूजा.

॥ डहा. ॥

पक्क बिजोरां जिन करे, ठवतां शिवपद देई ॥ सरस
मधुर रस फल घणे; एह जिन जेद करेई ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंगी; नारंगी आवा सार ॥ अंजीर
वंजीर दामिम; करणा पट बीज स्फार ॥ १ ॥ मधुर सुखा
दिक उत्तम; लोक आनंदित जेह ॥ वरण गंधादिक रमणी
क, बहु फल ढोके तेह ॥ २ ॥

॥ अथ चाल ॥

फल नरे पूजतां जगत स्वामी; मनुज गति ते लहे स
फल पामी ॥ सकल मुनी ध्येय गति जेद रंगे, ध्यावतां फल
समाप्ति प्रसंगे ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्क फल व्रज ढौ
कनं ॥ विहित मोक्ष फलस्य प्रजोपुरः, कुरुत सिद्धि फलाय
महाजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मनेण॥ फल यजामहेस्वाहा.

॥ હા. ॥

ફમ અડવિધ જિન પુજતાં, વિરચે જે થીર ચિત્ત ॥ મા
નવ જવ સફલો કરે, વાંધે સમકિત વિત્ત ॥૧॥

॥ અથ કલશ ॥

॥ હાલ ॥ અગણીત ગુણ ગણ આગર, નાગર વંદિત
પાય ॥ શ્રુતધારી ઉપગારી, શ્રી જ્ઞાનસાર ઉવપ્રાય ॥૧॥ ત
સુ ચરણકજ સેવક, મધુકર પરી લયલીન ॥ શ્રી જિનપુ
જા ગાઈ એ, જિનવાણી રસ પીન ॥ ૨ ॥

॥ અથ ચાલ ॥

સંવત્ ગુણ યુગ અચલ ઇંડુ, હર્ષ જરિ ગાઈયો શ્રી જિને
હ ॥ તાસ ફલ સુકૃતથી સકલ પ્રાણી, લહો જ્ઞાન ઉદ્યોત
ધન શીવ નીશાણી ॥ ૧ ॥

॥ કાવ્ય ॥

ઈતિ જિનવર વૃંદં જ્ઞાતિતઃ પૂજયંતી, સકલ ગુણ નિ
ધાનં દેવચંડ સ્તવંતિ ॥ પરમ સુખ સમાધે બીજજૂતં વિશુ
દ્ધં, સમય મદમ મૂલં દર્શનં સદ્વ્રજંતે ॥૧॥ ઇતિ. ॥

અથ કુંવરવિજયજી કૃત શ્રી અષ્ટપ્રકારી પૂજા.

॥ હા. ॥

ત્રિજગ નાયક તું ધણી, મહા મોટો મહારાજ ॥ મોટે
પુન્યે પામિયો, તુજ દરશણ હું આજ ॥૧॥ આજ મનોરથ સ
વિ ફલ્યા, પ્રગલ્બા પુન્ય કલોલ ॥ પાપ કરમ દૂરે ટલ્યા,
નાઠા હઃસ્વ દંદોલ ॥૨॥ સુખદાંઈ પ્રજ્ઞુ તું વડો, તુજ સમ અ

वर न कोय ॥ कर्म मल डुरे कख्या, पाम्या शिवपद सोय ॥३॥
 ज्ञानावरणी क्षय करी, दर्शनावरणी कर्म ॥ वेदनीकर्म दू
 रे करि, टाट्युं मोहनीकर्म ॥ ४ ॥ नामकर्मने आज्ञकर्म, गो
 त्र अने अंतराय ॥ अष्टकर्म ते एणी परे, डुर कख्यां महाराय
 ॥५॥ दोष अदारे क्षय गया, प्रगव्या गुण अनंत ॥ अंतरंग सुख
 जोगवे, निश्चल धीर महंत ॥ ६ ॥ कष्टवृक्षने कामकुंज,
 पुरे मनना कोरु ॥ प्रभु सेवाथी ते मले, जो मनसा होय अ
 डोल ॥ ७ ॥ त्रण ज़ुवनमां तु वडो, तुज सम अवर न कोय
 ॥ इंड चंडने चक्रवी, तुज पद सेवे सोय ॥ ८ ॥ प्रभु सेवा
 जावे करे, प्रेम धरि मन रग ॥ इख दोहग दूरे टले, पामे सु
 ख मन चंग ॥ ९ ॥ पूजा करतां प्राणीया, पोते पुजनीक हो
 य ॥ आ नव परजव सुख घणा, तस तोले नही कोया ॥१०॥
 जीवमा जिनवर पूजीये, जिन पूज्या सुख थाय ॥ इख दोह
 ग दूरे टले, मनवंठीत सुख थाय ॥११॥ इय जावथी अ
 ति घणा, हीयडे हर्ष न माय ॥ एणि विधे जिनवर पूजतां,
 पाप कर्म दूर जाय ॥१२॥

अथ जल पूजा. ॥१॥

सुगं रामय जल वासीने, जै पूजे जिनराय ॥ तस त्रिजु
 वन जश गिस्तरे, डुर्गघता डुर जाय ॥१॥ मलीन वस्तु उज्व
 ल करे, एह सजाव जल मांढ ॥ जलशुं जिनवर पूजतां, कर्म
 कलंक मिट जाय ॥ २ ॥ तीर्थोदक कुजे करी, रतन प्रमुख
 श्रीकार ॥ अडसहस अड जातना, अथवा कलसा च्यार ॥३॥
 आठ जात कजश वरि, नवरावे जिनराय ॥ तस त्रिजुवन
 जश गिस्तरे, सुरपति सेवे पाय ॥४॥ ज्ञान कलश जरी आ

तमा, समता रस नरपूर ॥ श्री जिनने नवरावतां, कर्म था
य चकचूर ॥ ५ ॥

अथ चंदन पूजा. ॥ ७ ॥

केशर चंदन इव्य थकी, नाव थकी बहुमान ॥ जिन
वर अंगे चरचतां, प्रगटे आतम ज्ञान ॥१॥ केशर चंदन घ
सी करी, नरी कचोलां सार ॥ जिनवर अंगे चर्चतां, पाप
करो परिहार ॥ २ ॥ वावनाचंदन अति जलुं, कस्तूरी व
रास ॥ एणि विध जिनवर सेवतां, पामे लीज विजास ॥३॥
कनक कचोलां नरि करि, सेवे जिनपति पाय ॥ इख दोहग
डरे टले, मनवंडित सुख थाय ॥ ४ ॥ तत्त वस्तु शीतल क
रे, चंदन शीतल आप ॥ चंदनसे जिन पूजतां, मिटे मोह
संताप ॥५॥ पुजाने प्रणाम दो, करो चंदनकी रीत ॥ शीत
तलताने सुगंधता, जेणे नांजे नव चीत ॥६॥

अथ धूप पूजा. ॥ ३ ॥

पावक ग्रहे सुगंधकुं, धूप कहावत सोय ॥ उखेवत धू
प जिणंदकुं, कर्म दहन सव होय ॥१॥ धूप उखेवत जे जना,
प्रभु आगल बहुमान ॥ दुर्गंधता दूरे करे, पामे अमर विमा
न ॥२॥ हुतासनसे काष्ट ज्युं, तेम ध्यानानल कर्म ॥ तिण
मसे धूप पूजा करो, जिम पामो शिवशर्म ॥३॥

अथ फूल पूजा. ॥ ४ ॥

प्रणीधाने सदगति होवे, पुजाथी किम नवि होय ॥
सुमेन सजावे दुर्गता, पूजा पंचाशक जोय ॥१॥ शतपत्री
वर मोगरो, चंपक जाय गुजाव ॥ केतकी दमणो बोलशिरी,
पूजो जिन नरी ठाव ॥२॥

अथ दीप पूजा. ॥ ५ ॥

केवलनाथ पईवशुं, जिम लहे लोकालोक ॥ तिम पूजा इय दीपनी, करता शिवफल रोक ॥ १ ॥ जग दीप क प्रभु दीप जे; करता नावो एह ॥ अवरणुं जे अनादिनु; झा न लहो निज तेह ॥ २ ॥

अथ अक्षत पूजा. ॥ ६ ॥

हवे अक्षत पूजा करो, शाल त्रिहि गोधूम ॥ उज्ज्वल परे श्रद्धावके, टालो मोहकी धुम ॥ १ ॥ अक्षय फल लेवा नणी, अक्षत पूजा उदार ॥ इह नव पिण नवि क्षय होवे; राज रुद्रि नमार ॥ २ ॥

अथ नैवेद्य पूजा. ॥ ७ ॥

इवे नैवेद्यनी पूजना; किजे जिम इलीराय ॥ नव नि वेद्य प्रभु मुखे; अविचल मागो गाय ॥ १ ॥ करता नुक्ता मु ऊ नहि; पुजलनावनो जीव ॥ तेणे पुजलनी तर्जना; कर तां सर्म सदैव ॥ २ ॥

अथ फल पूजा. ॥ ८ ॥

फल पूजा करतां थका, सफल करो अवतार ॥ फल मागो प्रभु आगजे; तारु मुऊ तार ॥ १ ॥ जस फल उपम जग नहि, पाम्या पठे नहि अत ॥ अव्याबाध अचल अरुज; मागुं शिव अनंत ॥ २ ॥ जे जेसी करणी कर; ते तेसां फल होय ॥ फलपूजा जिनदेवकी; निश्चे शिवपद होय ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी इणि परे; जे पूजा करे उदार ॥ अष्टमी गति फ लते लहे; पामीजे नव पार ॥ ४ ॥ जिन उत्तम पद पदानी;

नित सेवा करो त्रण काज ॥ निज रूप प्रगटे सुख होवे; अ
मीकुंवर कहे नहि वार ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्री आरति लिख्यते.

आरति कीजे पासकुमरकी; जनम मरण जयहर जि
नवरकी ॥ नयरी वणारसी जनम कहावे; वामा माता प्रजु
हुदरावे ॥ आण ॥ १ ॥ योवन वनफल जोगी जणावे, नारि प्र
जावती सती परणावे ॥ काय निरोग जोग वीलसावे, पु
रीसादाणी विरुद्ध धरावे ॥ आ ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकि कमठ
हरावे, गहन दहनशी फणी निकसावे ॥ सेवक मुख नव
कार सुणावे, धरणराय पदवि निपजावे ॥ आण ॥ ३ ॥ क्रोधी
कमठ हठ तप लय लावे, जिन दरशनसें सुरगति पावे ॥ जोग
संयोग वियोग वनावे, संयमश्री आत्म परणावे ॥ आण
॥ ४ ॥ ध्यान लेहेरीया काउसग्न जावे, स्वामी वडतरु तले
लय लावे ॥ मेघमाळी जलधर वरसावे, जब नासा ज्वर ३
जल लावे ॥ आण ॥ ५ ॥ तव धरणेंडासन कंपावे, पदमावती
साथ तिहां आवे ॥ नाथ उरथ सिर फणीकुं धरावे, जइ अ
पराधी देव डरावे ॥ आण ॥ ६ ॥ सांइ शरण लहि समकित पा
वे, फणिपति नाटक विधि विरचावे ॥ प्रजु चरणे नमी गे
ह सधावे, जगदीसर घनघाति हरावे ॥ आण ॥ ७ ॥ साका
रे केवल डग पावे, धर्म कही जिननाम खपावे ॥ जूतल वि
चरी मोक्ष सधावे, अगुरु लघु गुण प्रजु निपजावे ॥ आण
॥ ८ ॥ आरत गतकी आरती गावे, ओता वरता आरति उत
रावे ॥ मनमोहन प्रजु पास कहावे, श्री गुनवीर तेशीश
नमावे ॥ आण ॥ ९ ॥ इति. ॥

अथ श्री आरति लिख्यते.

जय जय आरति शान्ति तुम्हारी, तोरा चरण कमल
कि में जाऊं बलिहारी ॥ ज० ॥ १ ॥ विस्वसेन अचिराजिके नं
दा, शान्तिनाथ मुख पुनमचंदा ॥ ज० ॥ १॥ चालीश धनुश
सोवनमय काया; मृगलंठन प्रभु चरणे सुहाया ॥ ज० ॥ ३ ॥ च
क्रवर्ति-प्रभु पंचमा सोहे, शोलमा जिनवर जग सह मोहे ॥
ज० ॥ ४ ॥ मंगल आरति जोरै किजे; जनम जन्तमनो लाहो
बीजे ॥ ज० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावे; सो नर नारी
अमर पद पावे ॥ ज० ॥ ६ ॥ इति. ॥

अथ श्री आरति लिख्यते.

अपठरा करति आरति जिन आगे; हां रे जिन आगे रे
जिन आगे ॥ हां रे एतो अविचल सुखड़ा मागे, हां रे नाजी
नंदन पास ॥ अ० ॥ १ ॥ तायेई नाटीक नाचती पाय-ठमके;
हां रे दोय चरणे जांजर ठमके ॥ हां रे सोवन घुघरडी घमके,
हां रे लेती फूदडि बाल ॥ अ० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांसली न
फ वेणा; हां रे रूढा गावती स्वर जीणा ॥ हां रे सुणिचातु
क जन अति लेणा; हां रे जोती मुखदुं निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य
मरुदेवी मातने प्रभु जाया, हां रे तोरी कंचनचरणी काया ॥
हां रे में तो पूरव पुन्ये पाया, हां रे देख्यो तोरो दीदार ॥ अ०
॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो; हां रे प्रभु सेवक
हुंहुं तारो ॥ हां रे जवो जवना छवड़ा वारो; हां रे तुंवे दि
नदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरज्यो,
हां रे मोरी आपदा सघली हरज्यो ॥ हां रे मुनि माणिक

सुखीनु करज्यो; हांरे जाणी पोतानो वाल ॥अ०॥६॥इति॥

अथ श्री आरति लिख्यते.

च्यारो मंगल च्यार; आज मारे च्यारो मंगल च्यार ॥
देख्यो दरस सरस जिनजीको; शोभा सुंदर सार ॥ आ०
॥ १ ॥ ठीनु ठीनु ठीनु मनमोहन चरचो, घड़ी केशर घन
सार ॥आ०॥२॥ विविध जातिके पुष्प मंगावो, मोघर ला
ल गुलाब ॥आ०॥ ३ ॥ धूप नखेवो ने करो आरती; मुख बो
लो जयकार ॥आ०॥४॥ हर्ष धरी आदेश्वर पूजो, चोमुख प्र
तिमा च्यार ॥आ०॥५॥ हृदये धरी ज्ञावे ज्ञावना जावो; जि
म पामो जवपार ॥आ०॥६॥ सकलचंद सेवक जिनजीको;
आनंदघन नपगार ॥ आ० ॥७॥ इति. ॥

अथ जिन नवअंग पूजाना उहा लिख्यते.

जल नरी संपूट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ रूप
न चरण अंगूठडो, दायक नव जल अंत ॥ १ ॥ जानु बले
कानसग रह्या, विचस्या देश विदेश ॥ खडां शेकेवल लह्युं,
पूजो जानु नरेश ॥२॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वर
सीदान ॥ करकांमि प्रभु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥
मान गयुं दोष अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ नुजा बले नव
जल तस्या, पूजो खंध महंत ॥४॥ सिद्धशिवा गुण उजली,
लोकांते नगवंत ॥ वसिया तिणे कारण नवि, शिरशीखा
पूजंत ॥ ५ ॥ तिर्थंकर पद पुन्यथी, तिहुअण जन सेवंत ॥
त्रिजोवन तिलक समा प्रभु, जाल तीक्ष्ण जयवंत ॥ ६ ॥

शोल पहार प्रजु देशना, कंठ विवर वर्तूद्ध ॥ मधुर ध्वनी
सूरनर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल
उपसम वले, वाळ्या रागने रोश ॥ हीम देहे वनखंमने, ह
दय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगु
ण विसराम ॥ नाजी कमलनी पूजना, करतां अविचल धा
म ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना, तिणे नव अंग जिणंद ॥
पूजो बहु विध रागथी, कहे शुज वीर मुणंद ॥ १० ॥ इति ॥

अथ विगय निवियाताना जेद लिख्यते.

| संख्या. | विगयनाम. | जकाजक. | उत्तर विगय. | निवियाता. |
|---------|----------|--------|-------------|-----------|
| १ | दूध | जक | ५ | ५ |
| २ | दहि | जक | ४ | ५ |
| ३ | घी | जक | ४ | ५ |
| ४ | तेल | जक | ४ | ५ |
| ५ | गोल | जक | २ | ५ |
| ६ | कढावीगय | जक | २ | ५ |
| ७ | मदिरा | अजक | २ | ० |
| ८ | मांस | अजक | ३ | ० |
| ९ | माखण | अजक | ४ | ० |
| १० | मध | अजक | ३ | ० |

जकविगय ६ नां निवियातां ३० नां नाम

५ अथ दूध विगयनां निवियातां.

१ (पयसाडि केण) झकादि नांखी रांध्युं.

- १ (खीर केण) चोखा घणा दूध थोडुं.
- २ (पेया केण) घणुं दूध थोडा चोखा.
- ३ (अवलेहि केण) आटादिकथी पच्युं.
- ४ (डधटी केण) खटाई नांखी पचाव्युं मावादि.

५ अथ दहिं विगयनां निवियातां.

- १ (करंबो केण) रांध्या चोखा नांखे ते.
- २ (सिखरण केण) बहु खांड नांखे ते.
- ३ (सलवण केण) लूण सहित मथ्युं दहि.
- ४ (मथीत केण) मथ्युं ठण्युं लवण युक्त.
- ५ (घोतवडां केण) घोत उकाली वमां घाले ते.

५ अथ घीनी विगयनां निवियातां.

- १ (निभ्रंजण केण) त्रण घाण तळ्या पठेनुं रहुं तथा शीरादि उपरनुं.
- २ (विसंदण केण) घी नितरी खांमादि सहित.
- ३ (पक्कोसहि केण) नुषधि पाकमांथी नीकळ्युं.
- ४ (किटीयं केण) कीटुं वधरी प्रमुख.
- ५ (पक्कघय केण) खेर आंबलादिकथी पकव्युं ते.

५ अथ तेल विगयनां निवियातां.

- १ (तिलकुटि केण) तल कुटि पीळी खांडादि नांखे ते.
- २ (निभ्रंजण केण) त्रण घाण पठीनुं—केरी आदिनुं.
- ३ (पक्कोसहि केण) नुषधी लाखादिकथी पकव्युं ते.
- ४ (तरि केण) नुषधी पाकां तरी.
- ५ (मंली केण) तेलनी मली प्रमुख.

५ अथ गोल विगयनां निवियातां.

- १ (सक्कर केण) साकरनी जात गागमा
- २ (गुलवाणु केण) पाणिमां आटो नांखे ते.
- ३ (पाय केण) प्रायो करेलो.
- ४ (खंम के) खांमनी सर्व जाति.
- ५ (अघ केण) कढो शेल्डीनो रस.

५ अथ कम्ह विगयनां निवियातां.

- १ मोटो पुंडलो तली पढीनुं तढ्युं.
- २ तुरीय घाणाइ चोथा घाणादिनुं.
- ३ गुलघाणी गलपापडी आदे कालेनी.
- ४ जललपसी लापसी प्रमुख
- ५ पोतुं देइ पुम्लादि करे ते

॥ इति श्री विगय निवियातां विचार जाण्यमांथी लख्यां ठे. ॥

अथ मुहपत्तिना ५० बोल अग सुधानां लिख्यते.

- १ १ सूत्र अर्थ तत्व करी । सद्धुं.
- २ १ समकित मोहनी २ मीश्र मोहनी ३ मिथ्यात मोहनी
- ३ १ कामराग २ स्नेहराग ३ दृष्टिराग परिहरुं. [परिहरुं
- ३ १ सुदेव २ सुगुरु ३ सुधर्म आदरुं.
- ३ १ कुदेव २ कुगुरु ३ कुधर्म परिहरुं.
- ३ १ ज्ञान २ दरसन ३ चारीत्र आदरुं.
- ३ १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र विराधन परिहरुं
- ३ १ मनगुप्ती २ वचनगुप्ती ३ कायगुप्ती आदरुं.

३ १ मनदंम २ वचनदंम ३. कायदंम परिहरुं.

ए पचविश बोल मुहपतिना थया.

हवे अंगना १५ बोल लखीए बीए.

३ हास रति अरति परिहरुं.

३ नय शोग डुगंठा परिहरुं.

३ कृशलेस्या निललेस्या कापोतलेस्या परिहरुं.

३ रसगारव रुहिगारव शातागारव परीहरुं.

३ मायाशब्द निदानशब्द मिथ्यात्वशब्द परीहरुं.

२ क्रोध मान परिहरुं.

२ माया लोभ परिहरुं.

३ पुढवीकाय अपकाय तेजकायनी जयणा करुं.

३ वाजकाय वनस्पतीकाय त्रसकायनी रक्षा करुं.

ए १५ अंगना बोल. एवं सर्वे मलीने ५० थया.

१ ॥ साधु श्रावकने ॥ ५० ॥

२ ॥ साधवी श्राविकाने ॥ ४० ॥

ते लेस्या ३ शब्द ३ कषाय ४ ए दश विना जाणवा.

कंदोरा चवलाना पेला १० बोल.

कटासणां कांबली ए वस्त्रादि वासणा पाट पाटला

दिकना प्रथमना १५ बोल कहेवा. ॥ इति. ॥

अथ श्री पोसहमां संमल करवां. वडिनीति लघु

नीत्यादि प्रवण जोग जग्या प्रतीलेखण

निमिते लखीए बीए.

प्रथम संधारा पासेनी जग्याए,

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥१॥
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ॥२॥
- ३ आघाडे मग्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥३॥
- ४ आघामे मग्ने पासवणे अणहियासे. ॥४॥
- ५ आघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥५॥
- ६ आघाडे डुरे पासवणे अणहियासे. ॥६॥

॥ हवे उपाश्रयना वारणाना मांहिनी तरफनां. ॥

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥१॥
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे. ॥२॥
- ३ आघाडे मग्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥३॥
- ४ आघाडे मग्ने पासवणे अहियासे. ॥४॥
- ५ आघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥५॥
- ६ आघाडे डुरे पासवणे अहियासे. ॥६॥

हवे उपाश्रयना वारणावाहिर नजिक रहींने करते.

- १ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥१॥
- २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ॥२॥
- ३ अणाघाडे मग्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥३॥
- ४ अणाघाडे मग्ने पासवणे अणहियासे. ॥४॥
- ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ॥५॥
- ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे. ॥६॥

हवे उपाश्रयथी १०० हाथ आसरे डुरे रहेते करवां.

- १ अणाघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥१॥
- २ अणाघामे आसन्ने पासवणे अहियासे. ॥२॥

३ अणाघामे मघ्रे उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥३॥

४ अणाघामे मघ्रे पासवणे अहियासे. ॥४॥

५ अणाघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे. ॥५॥

६ अणाघामे दूरे पासवणे अहियासे. ॥६॥

॥ इति श्री मंमल बोल १४ समाप्तम्. ॥

अथ श्रावकनी ११ पडिमानो विच्यार ॥

१ दंसण श्वय ३ सामाई, ४पोसह ५पमिमा ६ अवन्न
उसच्चित्ते ॥ ७आरंज एपेस १०उद्धिठ, वज्जए ११समणज्जएय.

१ (दंसणपमिमा के०) त्रणकाल देवपूजा राजादी
षट् आगार रहीत शंकादि शल्य रहीत मास १ नी.

२ (व्रतपमिमा के०) पांच अणुव्रत अतीचार रहीत
व्रतनुं पालवुं प्रथम पमिमा सहित मास २ नी.

३ (सामाइय के०) सांज सवार सामायिक करे अ
तिचार रहित मास ३ नी, पूर्व क्रिया सहित.

४ (पोसहपमिमा के०) च्यार परवी पोसह संपूर्ण
च्यारे प्रकारनो पोसह उपवास. शक्ति ना होय तो आंबी
ल नीवि करे मास ४ नी.

५ (पमिमापमिमा के०) प्रतीपोर पोर १४ लोगस
नो काउसगग करवो, मास ५ नी.

६ (अब्रह्मत्यागी के०) शील पालवुं मास ६ नी.

७ (सचीतत्यागी के०) सचित आहारादीकनो त्याग
करे मास ७ नी.

८ (आरंजत्याग के०) पोते आरंज ते, जीववध व्या
पार न करे ॥ मास ८ नी.

૯ (પેસ કરાવે નહિ કેળ) પોતે બીજા પાસે આરંજ જે જીવઘાતાદિ વ્યાપાર કરાવે નહી, માસ ૯ ની.

૧૦ (જીદેસીક કેળ) પોતાને અર્થે વીજે આરંજ કરી કાંઈ વસ્તુ નીપજાવી, તે પોતે વાવે નહી, માસ ૧૦ ની.

૧૧ (સાધુ જેવો કેળ) રાજાદિક સમક્ષે જતિવેષ પહેરી ચલણો પ્રમુખ ડગરણ ધરી, આહાર જિજ્ઞાસુતીએલે. ત્યાં પ્રતીમાધર શ્રાવક હું એમ કહે, માસ ૧૧ સુધી.

॥ ૯ શ્રાવકની ૧૧ પદ્ધતિ અતીગ્રહવ્રત વિશેષ સંપૂર્ણ. ॥

અથ ચતુર્દશ નિયમ ધારવાની વિગત લિખ્યતે.

॥ ગાથા ॥ ૧ સચિત્ત ૨ દદ્ધ ૩ વિગઈ, ૪ વાણહ ૫ તંબોલ ૬ વજ્ર ૭ કુસુમેસુ ॥ ૮ વાહણ ૯ સયણ ૧૦ વિલેવણ, ૧૧ વંજ ૧૨ દિસિ ૧૩ ન્હાણ ૧૪ જત્તેસુ. ॥ ૧ ॥

૧ સચિત્ત જે માટી પાણી અગ્નિ મીઠું નીલી વનસ્પતી ફલ ફૂલ ઢાલ કાષ્ઠ મૂલ પત્ર બીજ અદે કાચાં ધાન ॥ પાકાં પણ શસ્ત્ર લાગે વે ઘડિ અથવા વિના સચિત્તમાં. તે નું માન કરે.

૨ દ્વય જે જે વસ્તુ મુખમાં જુદા જુદા સ્વાદ અર્થે નાંખવી તે તેની ગણત્રીનો નિયમ.

૩ વિગઈ તે ૧ હથ ૨ દહી ૩ ઘી ૪ ગોલ ૫ તેલ ૬ કડહ વિગય તે જે તાવડે તલે ને ત્રણ ઘાણ તલ્લ્યા પદારથ કમે વિગય, અને બીજા ઘાણ નીવિયાતામાં તેનો નીયમ.

૪ વાણહ તે પગરખાં મોજની પાવડી ચાલડી મોજા તેનો નિયમ.

५ तंबोल ते सोपारी पान लवंग एलची प्रमुख मुख शुद्धि थाय तेना तोलनो नियम.

६ वड (वस्त्र) ते पोताने पहेरवामां आवे तेनी गण त्रीनो नियम.

७ कुसुमेषु ते जे वस्तु नाके सुंधे तेना तोलनो नियम.

८ वाहण ते त्रण जेदे. चरतुं ते घोडा, हाथी जंट, बजद, पामा प्रमुख, फरतुं ते गामी; रथ प्रमुख, तरतुं ते वहाण नाव तापा बोट प्रमुख तेनो नियम.

९ सयण ते सुवाना खाटला पलंगादी पाट पाटला पथरणां प्रमुखनो नियम.

१० विलेवण ते जे वस्तु पोताने शरीरे विलेपन करे तेना तोलनो नियम.

११ बंज ते नारीना जोगनो नियम.

१२ दिसि ते पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, उर्ध्व अने अधो जवानुं प्रमाण करे ते.

१३ न्हाण ते सर्व अंगे नाहवुं ते. तेनुं परिमाण.

१४ जत्तेसु ते जोजन पाणी जम्यामां आवे तेनुं तोल.

१५ पृथविकाय ते माटी मीठुं, खडी प्रमुख पोताने निमीते वावरे तेनो नियम.

१६ अपकाय ते पाणी पीये वावरे नाह्या प्रमुखमां आवे तेना तोलनुं मान.

१७ तेजकाय ते जे पोताने शरीरे जोग उपजोगमां

१ चारी सघमी अंगिठी प्रमुखनुं रांध्युं नीपज्युं ताप्या पार झां आवे तेनो नियम करे ते.

१८ वाजकाय ते पंखा दिंचोला परुवा लुगमादिकथी
पवन नांखीए तेनुं प्रमाण.

१९ वनस्पतिकाय ते. लीलां फल फूल शाक खाद्या
वावस्यामां आवे ते. दातण सुशंनु परिमाण.

२० त्रसकाय ते जे त्रास पामे ते किडा किडी चिंठी
गाय महु पंखी मनुष्य देव नारकी. तेमांना कोईने विना अप
राधे संकटपी मारुं नही तेनो नियम.

२१ अस्ति ते तरवार जाला तीर ठरी कोश कोदाला
पावमा घंटि प्रमुख जीववधना करनारा तेनो नियम करे ते.

२२ मत्सी ते शाहीना खमिआ दवातो प्रमुखनो
नियम करे ते.

२३ कृत्सी ते जमिन खोदवादीक घर हाट खेत्र प्रमु
ख तलाव कुवादि खोटे पावमादिके करी तेनो नियम.
इति श्री चन्द्र नियमादि बोल २३ पोताथी पले तिम पाले
तेने धन्य ठे. ॥

अथ श्री समकित सहित वारव्रत उचरवानो
विधि संक्षेपे लखीए ठीए.

प्रथम समकित ते शुं? यथार्थ वस्तुतत्त्वना धर्म तथा
देव गुरु धर्मनी श्रद्धा ते. सुष्ठु पद युक्त ॥

१ देव श्री अखिंदत अठार दोष रहित संपूर्ण ज्ञान
संपूर्ण दर्शनना धणी मुक्ति मारगना देखादनार ते देव बी
ना बीजा देवने देव बुद्धि न आदरुं.

१ गुरु सुसाधु पंच महाव्रतधारी निर्ग्रंथ मोक्ष
मार्ग साधवा उद्यमी ते वीना वीजा नामधारी पाखंडी
गुरु बुद्धीए न आदरुं.

२ सुधर्म श्री जिनेश्वर श्री वितराग देवे ज्ञांख्यो ते,
आज्ञा सहित दयामूल दुर्गती परुता प्राणीजने आलंबन
ते वीना वीजा नामधर्म गुण विना धर्म बुद्धिए न आदरुं.

ए त्रण तत्व सुधा सदहुं ते पूजुं वांड सेवुं. तेथी विप
रीत न पुजुं न वांडं न सेवुं. रायाजीवगादि आगारे ज
यणा, नियम जंग न थाय. ॥

१ दिनप्रते देव जूहारुं जोग न वने तो १ नवकार
वाली प्रमुख गणावुं.

२ दिनप्रते गुरु वांड जोग न वने तो सीमंधरादी प्र
भु दीसी धारिने वांड, जुले नवकारवाली १ गुणुं.

३ धर्म प्रज्ञाते नवकारसी आदे संध्याये उविहार
आदे करुं, न करुं तो नवकरवाली गुणुं. वरस प्रते देवपूजामां
रू०॥ गुरु इव्यमां रू०॥ धर्मकार्य सात खेत्रे रू०॥ वावरुं.
आशातना टालवा खप करुं. ॥

१ प्रथम थूल प्राणातिपात वेरमण अणुव्रते थूल जीव
संकटपी निरअपराधे हणवानी बुद्धिए न हणुं, हणाववा अनु
मोदवामां पण थाय ते जतना उपयोग राखुं, ए प्रथम व्रते.

२ बीजे थूल मृषावाद वीरमणव्रते पांच प्रकारे जूठ
न बोलवुं तेनां नाम, कन्या गो जुमी थापणमोसो कुडीसाख
ए पांच प्रकारे जूठ न बोलवुं, सुद्धम जयणा, ए २ व्रते.

३ बीजे थूल अदत्तादान विरमणव्रते मोटकी चो

री न करुं तालुं तोळुं नही गांव ठोळवी नही मारग पारु
वो नही चोरीनो माल लेवो नही जावत् अणदीधुं लेवुं न
ही राजदंभादि उपजे ते चोरी तजुं

४ चोथे स्वदारा सतोप परदार विरमण व्रते विध
वा वेश्या कुलांगना प्रमुख देव मनुष्य तिर्यंच समंधी सोय
दोराने आकारे सेववी नही जावत् कुवचन तथा सराग वि
कार बुद्धि ए सामुं पण जोवुं नहि तेम नारीने पुरुष जाणवो.

५ पांचमे परीग्रह परीमाण वि० इच्छा परीमाण व्रते
१ धन्य २ धान ३ क्षेत्र ४ वास्तु ५ रूप्य ६ सुवर्ण ७ कुपद ८ द्वि
पद ९ चतुष्पद १० ए नव प्रकारना परिग्रहनुं परीमाण वा
ईच्छा परिमाण करे, उपरांत संवंधे वने तो तीरथे वावरे.

६ षष्ठे दिसी परिमाण ते पूरवादि दिशाये जवानो
नियम शक्ति अनुसारे करे, जावजीव सुधि.

७ सातमे जोगोपजोगव्रत तेमा जोग ते जोगवी वस्तु
फरिते काम नावे ते, अन्न पान खादिम स्वादिम प्रमुख,
तथा उपजोग ते घर घरेणुं वस्त्र नारी प्रमुख जोगवेला प
दारथ वारंवार जोगवे ते, उपजोग तेनो नियम, बावीस अन्न
क्षेत्रीस अनंतकाय ४ महावीर्य तजवी १ ४ नियम धारवा.

८ आठमे अनर्थदंभ विना अर्थ पापकर्मे आरत रुद्र
विषय कपाय हास्यादिक करी सज्जन प्रमुख शरीर पूजा व्र
तादि कारण विना जे घर घरेणां कोश कोदाला उखल मुस
लादि हल गाडां शस्त्र सज करी पाप काममां जे परवरतावे ते.

९ नवमे सामायक व्रते ते दिन पक्ष मास वरसमां
सामायक करवा तेनी संख्या, वे घनि सुधी समजावे वर

તવું તે સામાયક.

૧૦ દશમે દેસાવગાસીક વ્રત તે જાવજીવ દિસી પ રિમાણ કરેલું તેમાંથી દિન પ્રતે જવા આવવાના નિયમ ઘર શેરી પ્રમુખમાં રહેવું, તે બે ઘમ્મિથી માંમિ જાવજીવ સુધી નીમે સ્થેત્રે રહેવું, સામાયક આદિ ધર્મ સેવવો તથા ચતુદ નિયમ ધારે, તે પ્રથમ કહ્યું છે.

૧૧ અગ્નીઆરમે પોપધ ઉપવાસ વ્રતે તે ચ્યાર પરવી વા પાંચ પરવી પોસહ માસે વરસે કરવો તે, શક્તિ જોગ ચાર પ્રકારના પોસાના નાંગા ૮૦ એક દ્વીક ત્રીક ચતુર્સ જોગી મલી થાય છે. સર્વથી ચોવીહાર, દેશથી આંવિલ, ની વિ એકાસણ આઠ વા ચાર પોહોર, રાત્રી દિન, વા રાત વા દીન, આતમાને ચારીત્ર પુષ્ટ કરવા પ્રવર્તવું તે.

૧૨ અતીથીસંવિનાગ વ્રત તે પ્રથમ કહ્યા તેવા ગુરુ ને પોસહ પારણાદિકે પહિલાત્રી જે દાન દીધું તે જોજના દિક વધેલું રહે તે પોતે વાવરે. જોગ ન વને તો ધર્મમીત્ર ને જોજન કરાવે અથવા પોતાના ધર્માચારજ જે દિસે વિચરે તે દિસે વાંદી નિમંત્રણા કરીને વાવરે.

એ સમકિત મૂલ વારવ્રત દેશથી લખ્યાં છે તેમાં જેદ તો વિશેષ છે તે સુવિહીત ગુરુવાદીકને પૂઠીને આદરવા, જીવિત-જન્મ જાણ્યાનું ફલ એજ છે.

अथ श्री जिननुवननी ८४ आशातना लखी वे,

- | | |
|---------------------------|-------------------------|
| १ वलखो नांखे. | ३४ गंमस्थलनो मेल नांखे. |
| २ द्युतादि क्रिमा. | ३५ नाकनो मेल नांखे ते. |
| ३ कलह प्रमुख. | ३६ माथानो मेल नांखे. |
| ४ धनुरकलादि. | ३७ काननो मेल नांखे. |
| ५ पाणीना कोगला. | ३८ शरीरनो मेल नांखे. |
| ६ तंबोलादि खाय. | ३९ मंत्रथी झूत काढवुं अ |
| ७ तंबोल थुंकवुं. | थवा राजादिक कार्यनी |
| ८ गालो ठे ते. | मसलत करवी. |
| ९ मूत्र विष्टानुं नाखवुं. | ४० समुदायने मले ते. |
| १० शरीर घोवुं ते. | ४१ नामुं लखे ते. |
| ११ बाल समारवा ते. | ४२ धन वेचे ते. |
| १२ नख समारवा ते. | ४३ थापण मुके ते. |
| १३ लोही नांखे ते. | ४४ माठे आसने वेसे ते. |
| १४ सुखमीयादि खाय ते. | ४५ ठाणां थापे ते. |
| १५ चाममी नाखे ते | ४६ कपमा सुकवे ते. |
| १६ पित्त करे ते. | ४७ धान सुकवे ते. |
| १७ वमन करे ते. | ४८ पापम नांखे ते. |
| १८ दांत नांखे समारे ते. | ४९ वमिष्ठ करे ते. |
| १९ विस्त्रामण करे ते. | ४० राजजयादिके पेसे ते. |
| २० गायदि वांधे ते. | ४१ रुदन करे ते. |
| २१ दाननो मेल नांखे ते. | ४२ विकथा करे ते. |
| २२ आख्यनो मेल नांखे ते. | ४३ शस्त्र धरे ते. |
| २३ नखनो मेल नांखे ते. | ४४ श्रीजंच वांधे ते. |

४५ तापणी करे ते.

४६ रांधे ते.

४७ नाणुं परखे ते.

४८ नीसहि जांगे ते.

४९ ठत्र धरावे ते.

५० खासमां मुके ते.

५१ शस्त्र मुके ते.

५२ चामर धरावे ते.

५३ मन एकाग्र न करे ते.

५४ तेल्लादि चोले ते.

५५ सचित्त जोग न तजे ते.

५६ अजोग अचेत न तजे ते.

५७ जिन दिठे हाथ न जोडे ते.

५८ एकसामिनुत्रासण न करे.

५९ मुगट धरे ते.

६० पाधमिनो अविवेक करे ते

६१ तोरादि घाले ते

६२ होम करे ते

६३ गेम्दिदमे रमवुं ते

६४ ऊवार सलाम करे ते

६५ ज्ञानचेष्टा करे ते

६६ टुंकार रेकार करे ते

६७ धरणे बेसे ते

६८ युद्ध करवुं ते

६९ चोटलादि समारवुं

७० पग बांधीने बेसवुं ते

७१ पावमि चाखमि पहेरे ते

७२ लांबे पगे बेसे ते

७३ पुडपुडि वगाडवी

७४ कादव करे ते

७५ पगनी रज नडाडे ते

७६ मैथुन सेवे ते

७७ माकण जू वेणे

७८ नोजन करे ते

७९ गुह्य नघाडवुं अथवा

मल्लयुद्ध करे ते

८० वैद्यकर्म करे ते

८१ वेपार करे ते

८२ सय्या पाथरे ते

८३ पीवा मोटे पाणीराखवुं ते

८४ स्नान करे ते

ए चोराशी आशातना पुजा कार्य विना शरीर श्रुषुषा
दि काम अर्थे करे ते, आशातना तजी आणारुची थवुं ॥

अथ श्री गुरुप्रत्ये तेत्रीस आशातना त्यजवी.

॥ तत्र गाथा ॥ पुरउ पस्कासने, गंता चिठेण निसि
अणा यमणे ॥ आलोयण पडिसुणणे, पुवालवणे य आलो
ए ॥१॥ तहउवदंसण निमंतण, खढायअणे तहाय पडिसु
णणे ॥ खढत्तिय तन्नगए, किंतुम तज्जाय नोसुमणे ॥२॥ नो
सुरसि कहंठिता, परिसंजिता अणुठिआइ कहे ॥ संथार
पाय घट्टण, चिहुच्च समासणेवागी ॥३॥ इति ॥ आ गाथाउ
जाण्यमांथी काढी ठे.

- १ (पुरोगंता के०) आगल चाले ते
- २ (पुरोचिठण के०) आगल उन्नो रहे ते
- ३ (पुरोनिसीयण के०) आगल बेसे ते
- ४ (पस्कागंता के०) पाठल चाले ते
- ५ (पस्काचिठण के०) पाठल उन्नो रहे ते
- ६ (पस्कानीसीयण के०) पाठल बेसे ते
- ७ (आसनगंता के०) नजिक चाले ते
- ८ (आसनचीठण के०) नजिक उन्नो रहे ते
- ९ (आसननिसीयण के०) नजिक बेसे ते
- १० (मणे के०) एक पात्रे पाणी वावरे ते
- ११ गुरु पहेलां आलोयण करे ते
- १२ गुरु पुठे ठते जागते उत्तर न ठे ते
- १३ गुरु पहेलां आवकादीकने बोलावे ते
- १४ गुरु ठते बीजा पासे आलोवे ते
- १५ आहारादि बीजाने देखामी गुरुने देखाडे ते
- १६ गुरु पहेला बीजाने नीमंत्रे ते

- १७ गुरु पहेला पोते आहारादि वावरे ते
 १८ रूढो आहार पोते वावरे ते
 १९ गुरु बोलावे ठते जाणीने न बोले ते
 २० गुरुने बठर वचने बोले ते
 २१ गुरु बोलावे ठामे बेठा उत्तर दे ते
 २२ गुरु बोलावे शुं कहोळो कहे ते
 २३ गुरुने टुंकारो करे ते
 २४ गुरुने कुवचने तर्जना करे ते
 २५ श्रोताने कहे गुरु शुं जाणे ठे
 २६ गुरुने कहे तमे जुलो गो, हुं कहुं ते
 २७ गुरु वात करतां वच्चे बोले ते
 २८ गुरु देशना देतां बीजाने पोते समजावे ते
 २९ गुरु कथा कही रहे पढी पोते वलि कहे ते
 ३० गुरुने संथारे नपगरणे पग अडामे ते
 ३१ गुरुने आसने संथारे पोते बेसे ते
 ३२ गुरुथी उंचे आसने बेसे ते
 ३३ गुरुने तूळ्य आसने बेसे ते

॥ इति श्री गुरुप्रते ३३ आशातना न लगावे ते उत्त
मशिष्य गुणवंत थाय.

अथ सामायकना ३९ दोष लिख्यते,

॥ अथ मनना १० दोष ॥

| | |
|---------------------|-----------------|
| १ अविवेक चिंता करे | २ अर्थ न चिंतवे |
| ३ वैरी देखी रीस करे | |

- ४ मनमां उद्देग धरे
- ५ जसनी बांठा करे
- ६ विनय न करे
- ७ ज्ञय चिंतवे
- ८ वेपार चिंतवे
- ९ फलनो संदेह
- १० नियाणुं करे
- ॥ अथ वचनना १० दोष ॥
- १ कुवचन बोले
- २ टुंकारा करे
- ३ पाप आदेश दे
- ४ लवारो करे
- ५ कलह करे
- ६ आवो जावो कहे
- ७ गाल बोले
- ८ बालक रमाते

- ९ विकथा करे
- १० हासी करे
- ॥ अथ कायाना १९ दोष ॥
- १ आसन चपल
- २ चारे दिशिये जोवे
- ३ सावद्य काम करे
- ४ आलस मोमे
- ५ अविनये बोले
- ६ जुहुं लेई वेसे
- ७ मेल उत्तरे
- ८ खरज खणे
- ९ पग उपर पग चढावे
- १० अंग उघाडुं मुके
- ११ अंग ढांके
- १२ उंघे

इति श्री सामायकमां वत्रीस दोष अजतनाये लागे ठे ते वारवा खप करवी.

अथ पोसामां १८ दोष लागे तेनां नाम लिख्यते,

- १ विण पोसाती लावे ते आहार ले ते
- २ पोसा निमीत्ते सरस आहार ले ते
- ३ उत्तरवारणे जोजननो जोग मेलवे ते

- ૪ શરીરની વિચ્છુવા કરે તે
 ૫ પોસાને અર્થે વસ્ત્ર ધોવરાવે તે
 ૬ પોસાને અર્થે ઘરેણાં ઘડાવે તે
 ૭ પોસાને અર્થે વસ્ત્ર રંગાવે તે
 ૮ શરીરનો મેલ હતારે તે
 ૯ પોસામાં અકાલે હંધે તે
 ૧૦ સ્ત્રી સારી માઠી કહે તે
 ૧૧ પોસામાં આહાર જતો હુંડો કહે તે
 ૧૨ જાલી હુંડી રાજવિકથા કરે તે
 ૧૩ જાલિ હુંડી વિકથા કરે તે
 ૧૪ માત્રાદિ પ્રઠવણ હુમી રુડી શોધે નહી તે
 ૧૫ કોઈની નિંદા કરે તે
 ૧૬ વિના પોસાતીથી આલાપ સંલાપ કરે તે
 ૧૭ ચોરની વિકથા કરે તે
 ૧૮ સ્ત્રી સાથે વાત વિકથા કરે તે

इति श्री पोसहमां दोष लागे ते वरजीने पोसह करे तेने
 धन्य ठे.

અર્થે પત્તર કર્મ્માદાન સાતમા વ્રતમાં તેજવાં
 કહ્યાં છે, તેનો વિચાર લખિયે ઠીયે.

૧ ડંગાલકર્મ્મ ચુલા ચારિ અંગિઠા શઘડિ તાપણી ફેટ
 વાડા નિખાસા જાઠી રાંધવા રંગવાં સોનાર લવાર, નાડાહુંજા
 પ્રમુખથી જો આરંઘે આજીવિકા કરવી તે.

१ वल्लकर्म वाडि वाग खेती जाड वाववां कापवादिक कर्म करे ते

२ सामीकर्म गाय नेंस दास दासी लेवा वेचवां साटां करवा आजीविका जोगथी अधिक ते.

४ नाडिकर्म गाडां वहेल घोडा डंट वेल पोठी पाडा रास नाडिक नाडां करवादी कर्म ते

५ फोडिकर्म वाव्य कूप सरोवर कुंड झ माटी पथरा दिकनी खाणो टांका जुंयरादिक खोदवामा कर्म ते

६ दतवाणिज्य दांत मोती चरम प्रमुख वेपार कर्म ते

७ लखवाणिज्य लाख मेण धावनि गली प्रमुख वेपार कर्म ते

८ रसवाणिज्य मध मदिरा माखण धी तेल प्रमुख लेवा देवाना वेपार कर्म ते

९ विसवाणिज्य जाला तरवार कटारी शस्त्रनी जातिना अफीण सोमल वडनागाडि वेपार कर्म ते

१० केशवाणिज्य चमर वन प्रमुख तेना वेपारनुं कर्म ते.

११ जंत्रपीक्षणकर्म तिल सरसव अलसी एरंमी धाणी कोल जंत्र प्रमुख कर्म ते

१२ निलेष्ठनकर्म गाय नेंस बलद बकरी घोडा डंट प्रमुखना कान नाक ठेदावे वेधाव्यादिक क्रिडा अर्थे करवुं ते कर्म

१३ दवग्गीदावणकर्म दव दिधा, चुला चारी प्रमुख अगनी अरंज कर्म ते

१४ सर दह सोसणकर्म सरोवर झ वाव्य प्रमुख सोसवां पाणी रहीत कस्यां कराव्यां ते कर्म

१५ असति पोषणकर्म कुतरा विलाडां सुना मेना हंसारी

જનાવર ક્રીડા નિમીત્તે જે પોષણ કર્મ તે.

॥ ઇતિ શ્રી ૧૫ કરમાદાન જાણીને તજવા નયમ કરવો. ॥

અથ ૪૭ એષણાના દોષની ગાથા લિખ્યતે,

સોલસ ૧૬ ઝગમદોસા, સોલસ ૧૬ ઝપ્પાયણાય જો દો
સા ॥ દસ ૧૦ એસણાય દોસા ૫, સેસા ૫૯ મિલિત્ર સગયાલા ॥ ૧ ॥

૧૬ અથ સોલ ઝગમ દોષ તે દેનારથી લાગે છે,

૧ (અહાકમ્મં કેળ) સાધુ અર્થે કરે તે.

૨ (ઝદેસિય કેળ) સાધુનું સંબંધે સંકેતે કરે તે.

૩ (પૂર્ણ કેળ) શુદ્ધ અશુદ્ધ મેલવિ દે તે.

૪ (મીસજાયે ય કેળ) પોતાને-સાધુને અર્થે કરી દે તે.

૫ (ઠવણા કેળ) સાધુને દેવા આપી રાખે તે.

૬ (પાહુડિઆય કેળ) નાત વરાદિકનું બીજાને ત્યાં મુકી
અપાવે તે.

૭ (પાનઝર કેળ) અંધારેથી ઝડોત કરી લાવી દે તે.

૮ (કીય કેળ) વેચારી લાવી દે તે.

૯ (પામીઝે કેળ) ઝધારે લાવી આપે તે.

૧૦ (પરિયટ્ટી કેળ) બદલો કરી લાવી દે તે.

૧૧ (અન્નિહમુ કેળ) આપવા સામો લેઈ જાય તે.

૧૨ (નિન્ને કેળ) કમાડ પેટી ઠાંડા મુઝા ઝઘાડિ દે તે.

૧૩ (માલોહમે કેળ) મેડે ડાગલે ઠીકેથી દે તે.

૧૪ (અભિજે કેળ) કોઈનું બલાત્કારે લેઈ દે તે.

૧૫ (અણિસિઠે કેળ) ઘણાંનો રજા વિના એક દે તે.

૧૬ (અઘોયર કેળ) સાધુ અર્થે વધારે રાંધે તે.

१६ अथ सोल उपायण दोष लेनारथी लागे ते.

- १ (घाई के०) बालकोने रमाडि बोलावी ले ते
- २ (डई के०) संदेशा प्रीति अन्योअन्य कही ले ते.
- ३ (निमित्त के०) ज्योतीष निमीत कहि ले ते.
- ४ (आजिव के०) जाति कुल बल रूप देखामि ले ते.
- ५ (वणिमग के०) पोतानुं गीलानपणुं जणावि ले ते.
- ६ (तिगीञ्चय के०) वैदक जोग करी ले ते
- ७ (कोहे के०) क्रोधे करि सराप देई ले ते
- ८ (माणे के०) मान गरवे करी ले ते.
- ९ (माया के०) कपटथी ज्ञापा रूप फेरवी ले ते.
- १० (लोने के०) लोन्ने करी ले ते
- ११ (पुव्वपञ्चासथव के०) देनारनी स्तवना करे ते.
- १२ (विज्ञा के०) देव आराधनादिक करि ले ते.
- १३ (मंतेय के०) कामण मोहन टुमण करी ले ते
- १४ (चुन्ने के०) चुरण गोलि अंजन करि ले ते.
- १५ (जोये के०) डव्य लेपादिक करी ले ते.
- १६ (मूलकम्भेयं के०) गरजपातन थंजनादी करि ले ते
- १७ अथ संयोजन दोष वन्नेथी लागे ते.

- १ (संकीय के०) लेता देता संका उपजे ते
- २ (मस्कीय के०) शुद्धने अशुद्ध फरसतो दे ले ते
- ३ (निस्कीत के०) सुख सचिते फरसेलो दे ले ते.
- ४ (पिडिय के०) शुद्ध फलादिकथी ठांय्यो दे ले ते.
- ५ (साहरीय के०) शुद्धने सवित पाणी लेपादि वासण दे ले ते.

- ६ (दायगु के०) वृद्ध रोगी गर्जणी बाल धवरावती दलतां
खांडतां वंधीवान प्रमुख जठी दे ले ते.
७ (मिसे के०) सेकेल धान्य अप्रणीत दे ले ते.
८ (अप्रणीत के०) अपक्व दुप्पकादि दे ले ते.
९ (विसे के०) अजोग पात्र हाथ लेप सहित दे ले ते.
१० (ठदिय के०) विगयादि गांठा प्रमुख पडते दे ले ते.

अथ मंडलना पांच दोष साधुने लागे ते.

- १ (संजोजन के०) स्वाद माटे जेगुं करी वावरे ते.
२ (पमाण के०) संजमने बाधा थते वावरे ते.
३ (इगाल के०) मनोइ देनारने वखाणे ते.
४ (धुमे के०) अमनोइ देनारने निंदे ते.
५ (कारणेय के०) मुनि ठ कारणविना आहार न ले ते.

॥ इति श्री सुडतालीस दोष संपूर्ण. ॥

६ अथ ठ कारणे ले ते नामथी सूत्र अर्थ.

- १ (वेयण के०) कुधादि वेदना समावा अर्थे.
२ (वेयावच्च के०) दश जेदे वैयावच्च करवा अर्थे.
३ (इरियठाए के०) इरजासुमती सुखे पालवा अर्थे.
४ (संजमठाए के०) पमिलेहणादी संजम अर्थे.
५ (पाणवत्तियाए के०) प्राण धरवा अर्थे.
६ (धम्मचिंताए के०) खंतादि धर्म पालवाने अर्थे.

६ अथ ठ कारणे ना ले ते नाम. सूत्र अर्थ.

- १ (आयंके के०) रोगादि उपड्व आवे.
२ (उवसग्गे के०) उपसर्ग आवे.

- ३ (तितीखाए के०) ब्रह्मचर्य न पढ्याथी.
- ४ (पाणदयाए के०) घणा जीवाकुल उपजेथी.
- ५ (तवहेउ के०) तप उपवासादि अर्थे
- ६ (सरीरवोसणवाए के०) शरीर क्षीण जाणी अणसण अर्थादि ॥ इति श्री आहारादि सूधि अर्थे ॥

ए ४७ टोप १२ कारणे लेशथी जणाव्या ठे, विशेषे आगमथी सुगुरु समीपे धारज्यो

अथ २४ जिननां १२० कल्याणक लिख्यते,

॥ कल्याणक शब्दार्थ जाप.

- १ (चवन के०) अपरगतिथी आवुं. परमेष्टी नमः
- २ (जन्म के०) मातानी कुखथी जन्मे ते. अर्हते नमः
- ३ (दिक्षा के०) मुनिपणुं धारण करवुं. नाथाय नमः
- ४ (केवल के०) संपूर्ण ज्ञान थवुं. सर्वज्ञाय नमः
- ५ (मोक्ष के०) कर्मथी मुकावुं. पारंगताय नमः

॥ अथ कल्याणक मास तिथीयो. ॥

जिन तिथी कल्याणक.

कार्तिक वदि शुदि पक्ष. ७

३ वदि ५ केवलज्ञान

२२ वदि १२ चवन.

६ वदि १२ जनम्या

६ वदि १३ दिक्षा लिधी,

२४ वदि ०) मोक्ष पाम्या,

ए शुदि ३ केवलज्ञान,

१० शुदि १२ केवलज्ञान,

मागशर वदि शुदि. १३

ए वदि ५ जनम्या,

ए वदि ६ दिक्षा लिधी,

२४ वदि १० दिक्षा लिधी,

६ वदि ११ मोक्ष पाम्या,

१८ शुदि १० जनम्या,
 १८ शुदि १० मोक्ष पाम्या,
 १८ शुदि ११ दिक्षा लिधी.
 १ए शुदि ११ जनम्या,
 १ए शुदि ११ दिक्षा लिधी,
 १ए शुदि ११ केवलज्ञान,
 २१ शुदि ११ केवलज्ञान,
 ३ शुदि १४ जनम्या,
 ३ शुदि १५ दिक्षा लिधी,
 पोस वदि शुदि पक्ष. १०
 २३ वदि १० जनम्या,
 २३ वदि ११ दिक्षा लिधी,
 ८ वदि १२ जनम्या,
 ८ वदि १३ दिक्षा लिधी,
 १० वदि १४ केवलज्ञान,
 १३ शुदि ६ केवलज्ञान.
 १६ शुदि ९ केवलज्ञान,
 २ शुदि ११ केवलज्ञान,
 ४ शुदि १४ केवलज्ञान,
 १५ शुदि १५ केवलज्ञान.
 माहा वदि शुदि पक्ष. १४
 ६ वदि ६ चवन,
 १० वदि १२ जनम्या,

१० वदि १२ दिक्षा लिधी,
 १ वदि १३ मोक्ष पाम्या,
 ११ वदि ०)) केवलज्ञान,
 ४ शुदि २ जनम्या,
 १२ शुदि २ केवलज्ञान,
 १५ शुदि ३ जनम्या,
 १३ शुदि ३ जनम्या,
 १३ शुदि ४ दिक्षा लिधी,
 २ शुदि ८ जनम्या,
 २ शुदि ९ दिक्षा लिधी,
 ४ शुदि १२ दिक्षा लिधी,
 १५ शुदि १३ दिक्षा लिधी,
 फागण वदि शुदि पक्ष. १५
 ७ वदि ६ केवलज्ञान,
 ७ वदि ७ मोक्ष पाम्या,
 ८ वदि ७ केवलज्ञान,
 ९ वदि ९ चवन,
 १ वदि ११ केवलज्ञान,
 २० वदि १२ केवलज्ञान,
 ११ वदि १२ जनम्या.
 ११ वदि १३ दिक्षा लिधी,
 १२ वदि १४ जनम्या,
 १२ वदि ०)) दिक्षा लिधी,

१८ शुदि २ चवन,
 १९ शुदि ४ चवन,
 ३ शुदि ८ चवन,
 २० शुदि १२ दिक्षा लिधी,
 १९ शुदि १२ मोक्ष पाम्या,
 चैत्र वदि शुदि पक्ष. १३
 २३ वदि ४ चवन,
 २३ वदि ४ केवलज्ञान,
 ८ वदि ५ चवन,
 १ वदि ८ जनम्या,
 १ वदि ८ दिक्षा लिधी,
 १४ शुदि ३ केवलज्ञान,
 १४ शुदि ५ मोक्ष पाम्या,
 २ शुदि ५ मोक्ष पाम्या,
 ३ शुदि ५ मोक्ष पाम्या,
 ५ शुदि ९ मोक्ष पाम्या,
 ५ शुदि ११ केवलज्ञान,
 २४ शुदि १३ जनम्या,
 ६ शुदि १५ केवलज्ञान,
 वेशाख वदि शुदि पक्ष. १७
 १७ वदि १ मोक्ष पाम्या.
 १० वदि २ मोक्ष पाम्या,
 १७ वदि ५ दिक्षा लिधी,
 १० वदि ६ चवन,

२१ वदि १० मोक्ष पाम्या,
 १४ वदि १३ जनम्या,
 १४ वदि १४ दिक्षा लिधी,
 १४ वदि १४ केवलज्ञान,
 १७ वदि १४ जनम्या,
 ४ शुदि ४ चवन,
 १५ शुदि ४ चवन,
 ४ शुदि ८ मोक्ष पाम्या,
 ५ शुदि ८ जनम्या,
 ५ शुदि ९ दिक्षा लिधी,
 २४ शुदि १० केवलज्ञान,
 १३ शुदि १२ चवन;
 २ शुदि १३ चवन,
 जेष्ठ वदि शुदि पक्ष. २०
 ११ वदि ६ चवन,
 २० वदि ८ जनम्या,
 २० वदि ९ मोक्ष पाम्या,
 १६ वदि १३ जनम्या.
 १६ वदि १३ मोक्ष पाम्या,
 १६ वदि १४ दिक्षा लिधी,
 १५ शुदि ५ मोक्ष पाम्या,
 १२ शुदि ९ चवन,
 ४ शुदि १२ जनम्या,
 ४ शुदि १३ दिक्षा

आषाढ वदि शुदि पक्ष. ६

१ वदि ४ चवन,
 १३ वदि ७ मोक्ष पाम्या,
 २१ वदि ९ दिक्षा लिधी,
 २४ शुदि ६ चवन,
 २२ शुदि ७ मोक्ष पाम्या.
 १२ शुदि १४ मोक्ष पाम्या,
 श्रावण वदि शुदि पक्ष ९
 ११ वदि ३ मोक्ष पाम्या,
 १४ वदि ७ चवन,
 २१ वदि ७ जनम्या,
 १७ वदि ९ चवन;
 ५ शुदि २ चवन;

२२ शुदि ५ जनम्या;
 २२ शुदि ६ दिक्षा लिधी;
 २३ शुदि ७ मोक्ष पाम्या;
 २० शुदि १५ चवन;
 भाद्रवा वदि शुदि पक्ष. ४
 १६ वदि ७ चवन;
 ७ वदि ७ मोक्ष पाम्या;
 ७ वदि ७ चवन;
 ९ शुदि ९ मोक्ष पाम्या;
 आसो वदि शुदि पक्ष. ९
 २२ वदि ७)) केवलज्ञान;
 २१ शुदि १५ चवन;

॥ इति श्री एकशोवीस कट्याणक मास १२ नुं गणणुं संपूर्ण ॥

अथ देवसी प्रतिक्रमण विधि लिख्यते.

प्रथम सामायक लिजे पठे पाणी वावखुं होय तो, मुहपति पमिलहेवी ॥ आहार वावखो होय तो, वांदणां वे देवां ॥ बिजा वांदणांमां आवसीआए न केहेवुं, पञ्चस्काण करवुं ॥ चैत्यवंदन वेडराए अथवा पोते कहि, नमुत्तुणं ॥ १ ॥ नवकारनो काजसंग पारी, नमोऽर्हतूण कहिने थोय केहेवी ॥ लोगस्स केहेवो, सबलोए अरिहंत चेईयाणं कही १ नवकारनो काजसंग करी ते पारीने थोय केहेवी, पठे पुस्करवरदी कही १ नवका

रनो काउसग्न करी पारीने थोय कहेवी ॥ पठे सिद्धाणं बुद्धा
 णं कहि, १ नवकारनो काउसग्न करी पारी पठे नमोऽर्हत्तु
 कहि, थोय कहेवी ॥ पठे नमुत्तुणं कहिने जगवान् आचार्य
 उपाध्याय सर्व साधुहं ए प्रमाणे चार खमासण देई इच्छकार
 समस्त श्रावक वांडु कही पठे देवसि प्रतिक्रमण ठाणं कही
 करेमिजंते इच्छामिठामि काउसग्नं जो मे देवसिउ तस्सउ
 उत्तरी कही ८ गाथानो काउसग्न करवो ॥ न आवने तो ८
 नवकारनो करवो, ते पारी लोगस्स कहेवो ॥ त्रीजा श्राव
 ड्यकनी मुहपति पडिलेहीने वादणां वे देवां ॥ पठे देव
 सिअं आलोएमि जो मे देवसिउ कही पठे सातलाख कहे
 वा ॥ अठार पापस्थानक आलोइ सबस्सवि देवसिअं कही
 १ नवकार करेमिजंते इच्छामि पडिक्कमिउं कही ॥ पठे वंदि
 तु कहेवुं पठी वांदणां वे देवां ॥ पठे अप्पुठिउहं अप्रितर देवसिअ
 खाभुं कही खामी वादणां वे देवां, आयरीअ उवप्पाए कहि करे
 मिजंते इच्छामिठामि काउसग्नं जो मे देवसिउ कही तस्स
 उत्तरी १ लोगस्सनो काउसग्न, न आवडे तो ८ नवकारनो.
 पठे लोगस्स कहेवो. सबलोए अरीहंत चेईयाणं कहि १ लो
 गस्सनो काउसग्न, न आवडे तो ४ नोकारनो. पुक्करवरदी क
 हि १ लोगस्सनो काउसग्न न आवडे तो ४ नोकारनो ॥ सिद्धाणं
 बुद्धाणं कही सुअदेवयाए करेमि काउसग्नं कही १ नोकार
 नो काउसग्न करी नमोऽर्हत्तु कही पुरुषे सुअदेवयानी प
 डेली थोय कहेवी. स्त्री होय तो कमलदलनी पडेली थोय
 कहेवी, पठे क्षेत्रदेवयाए करेमि काउसग्नं कही १ नव
 कारनो काउसग्न करी नमोऽर्हत्तु कही वीजी थोय कहेवी.

पठे प्रगट १ नवकार गणीने ठठा आवश्यकनी मुहपति प
डिलेही पठे वांदणां वे देवां. सामायक चउविसठो ॥ आदे
ठ आवश्यक संनारवा. इठामो अणुसठिं नमो खमासम
ण कही नमोऽर्हत ॥ पुरुष नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे. स्त्री
संसारदावानी गाथा ३ कहे. पठे नमुत्रुणं कहि स्तवन
कहेवुं. पठे वरकनक कही जगवान् आदे वांदवा. पठे
अद्वाइजेसु कहेवुं. जमणा हाथनी मुठी वालीने पठे देवसी
अ पायवित्तनो ४ लोगस्सनो काउसग्ग न आवडे तो १६
नवकारनो करवो. पारी प्रगट लोगस्स कहेवो. पठे नव
कार १ गणीने सप्राय कहेवी पठे १ नवकार गणवो. पठे
उरकखत्तं कम्मखत्तनो काउसग्ग ४ लोगस्सनो संपूर्ण, न
आवडे तो १६ नवकारनो करवो. पारी नमोऽर्हत कही लघु
शांति कहेवी पठे लोगस्स कहेवो. पठे इरियावहिआए कही
तस्सउत्तरी १ लोगस्सनो, न आवडे तो ४ नवकारनो काउ
स्सग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. पठे चउक्कसाय कही नमु
त्रुणं जावंति चेईआणं इठामि खमाण जावंत केवीसाहू क
ही उवसग्ग हरं ॥ जयविअराय कही पठे मुहपति पडिलेह
वी. १ नवकार गणी सामाइअ वयजुत्तो कहेवो. इति ॥

अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते,

प्रथम सामायक लिजे पठे कुसुमिण डुसुमिणनो ४ लो
गस्सनो, न आवडे तो १६ नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लो
गस्स कहेवो. पठे जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय
सूधी कहेवुं पठे जगवान् आदे वांदवा वांदीने इठकार समस्त

आवक बांडं पठे १ नवकार गणीने जरहेसरनी सझाय कही
 १ नवकार गणवो. पठे इञ्जकार सुहराई सुख तप शरीर नि
 राबाध सुख संयम यात्रा नीरवहो ठो जी? स्वामी शाता ठे
 जी? पठे राई प्रतिक्रमणे ठाई नमुहुणं करेमीजंते ईञ्जामिठामि
 कानुस्सग तस्तनुत्तरी कहीने १ लोगस्सनो ने लोगस्स न
 आवडे तेणे ४ नवकारनो कानुस्सग करी प्रगट लोगस्स क
 ही सबलोए अरिहंत चेईयाणं कही १ लोगस्स न० आ० ४
 नवकारनो कानुसग करी पुस्करवरटी कही अतीचारनी
 ८ गाथा न० आ० ८ नवकारनो कानुसग करी सीक्षाणं बु
 क्षाणं कही त्रीजा आवश्यकनी मुहपती पमिलेही तिहां
 थी ते अमुद्धिनु खामी वादणां वे देवां तिहां सुधी देवसीनी
 रीते, पण जे ठेकाणे देवसी आवे ठे ते ठेकाणे राईयं कहेवुं
 पठे आयरिअ उवप्राए करेमीजंते ईञ्जामिठामि कानुसगं
 तस्तनुत्तरी कही तप चिंतवणीनो कानुस्सग करवो, न
 आवडे तो ४ लोगस्सनो ते न० आ० १६ नवकारनो
 कानुस्सग करी प्रगट लोगस्स कहेवो पठे ठठा आवश्यकनी
 मुहपति पमीलेही बांदणां वे देवां ॥ पठे तीरथवंदन करवुं
 पठे पञ्चस्काण करवुं पठे ईञ्जाकारेण संदिसह जगवन् सा
 मायक चउविसठो वंदण पम्किमणुं कानुस्सग पञ्चस्काण
 कखुं ठे जी पञ्चस्काण कखुं होय तो कखुं ठे जी एम कहेवुं
 पञ्चस्काण धाखुं होय तो धाखुं ठे जी एम कहेवुं पठे विज्ञा
 ललोचन कही नमोहुणं कही अरिहंत चेईयाणं कही १ न
 वकारनो कानुसग करीने थोय रुहेवी. जावत् सिक्षाणं बु
 क्षाणं कही ४ थी थोय कहीए ठीए तिहा सुधि कहेवुं. पठे नमु

बुणं कही जगवान् आदे वांदवा. पढे अद्वाइजेसु कहेवुं. पढे श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन थोय कहीए तिहां सुधि क रवुं ॥ पढे श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन थोय कहीए तिहां सुधि करवुं. पढे इरियावहिआए तस्सउत्तरी कही १ लोगस्स, न आवडे तो ४ नवकारनो काउस्सग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. पढी मुहपति पडिलेहवी १ नवकार गणी सामाईय वयजुत्तो कहेवो. ॥ इति राइ प्रतिक्रमण विधि समाप्तम्.

अथ परकी प्रतिक्रमणनी विधि लिख्यते,

देवसि प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहीए तिहां सुधि क हेवुं, पण चैत्यवंदन सकलाऽर्हतनुं कहेवुं ने थोयो स्नातस्या नी कहेवी. पढे खमासमण देइने इच्छाकारेण संदिसह जग वन् देवसिअ आलोइअ पक्किंता इच्छाकाण परकी मुहपति पडिलेहुं एम कही मुहपति पडिलेहिये पढे वांदणां बे दी जे पढे इच्छाकाण अप्पुठ्ठिहं संबुद्धाखामणेणं अप्पिंत्तर प र्खिअं खामेउं ईहं खामेमि पक्खियं पन्नरस दिवसाणं पन्नर स राईआणां जंकिंचि अपत्तिअं इच्छाकाण पक्खिअं आलोए मि इहं आलोएमि जो मे पक्खिअं अइआरो कउ कहेवुं. इ च्छाका० पक्खि अतिचार आलोउं ॥ एम कहीने अतीचार कहीए पढे एवंकारे श्री श्रावकतणे धम्मं समकित मूल वार व्रत एकसो चोवीस अतीचार मांहि जे कोई अतिचार पक्क दिवस मांहि सुद्धम बादर जाणतां अजाणतां हुन होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करीने मिहामिडक्कमं. सबस्स वि पक्खिअं उच्चिंतिअं दुप्पासीअं उच्चिठ्ठिअं इच्छाकारेण संदि

सह जगवन् इत्थं तस्स मिच्छामिडक्कमं. इच्चकारी जगवन्
 पसान् करी पस्सि तप प्रसाद करो जी ॥ एम कहिने
 कहिए. चउत्तेणं एक उपवास, वे आविल, त्रण निवि, चार
 एकासणां, आठ वियासणा, वे हजार सप्राय, यथाश
 क्ति तप करी प्रवेश कखो होय तो पईठी कहिए, करवो
 होय तो तहत्ति कहिए, न करवो होय तो अणवेळ्या रहीए.
 पठे वे वादणां दीजे पठे इच्छाकाण अणुविनुहं पत्तेय खामणे
 णं अप्रितर पस्सिअं खामेत्तं इत्थं खामेमि पस्सिअं पन्नरस
 दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं पठे वादणां
 वे दीजे पठे देवसिअ आलोईअ पडिक्कंता इच्छाकारेण सदि
 सह जगवन् पस्सिअ पडिक्कमुं समं पडिक्कमामि इत्थं एम क
 ही करेमिज्जंते सामाइयं इच्छामि पडिक्कमिज्जं जो मे पस्सिज्जं
 कहा पठे खमासमण देई इच्छाकाण पस्को सूत्र कहुं एम क
 ही ३ नवकार गणी साधु होय तो पस्सिसूत्र कहे, साधु न
 होय तो ३ नवकार गणीने श्रावक वंदितु कहे. पठे सुअदेव
 यानी थोय कहेवी पठे हेठा वेसीने जमणो ठिंचण उज्जो
 करवो १ नवकार करेमिज्जंते इच्छामि पस्सिज्जंते कही वं
 दितु कहेवुं पठे करेमिज्जंते इच्छामिगामि काउसगं जो मे प
 स्सिज्जं तसउत्तरी अन्नउत्तं कहिने १२ लोगस्सनो काउस्स
 ग चंदेसु निम्मल्लयरा सुधि करवो. लोगस्स न आवडे तो
 ४० नवकारनो काउसगग करीने पारवो. पारीने प्रगट
 लोगस्स कहेवो पठे मुहपति पडीजेहीए वादणां वे दिजे
 पठे इच्छाकाण समास खामणेणं अणुविनुहं अप्रितर पस्सिअं
 खामेत्तं इत्थं खामेमि पस्सिअं एक पस्काणं पन्नरस दिवसाणं

પન્નરસ રાઈઆણં જાંકિંચિ અપત્તિઅં ૦ પઠે ચમાસમણ દેઈને
 ઇન્ઢાકા ૦ પાણિ ચામણાં ચામું એમ કહીને ચામણાં ચ્યાર
 ચામવાં પઠે દેવસિ પ્રતિક્રમણમાં વંદિતુ કહ્યા પઠે વાંદણાં
 બે દેઈને તિહાંથી તે સામાયક પારીએ તિહાં સુધી દેવસિની
 પેઠે, પણ સુઅદેવયાની ઓયોને ઠેકાણે જ્ઞાનાદિની ઓયો ક
 હેવી. સ્તવન અજીતશાંતિનુ કહેવું, સપ્રાયને ઠેકાણે ઝવસગ્ગ
 હરં ને સંસારદાવાની ઓયો ધ કહેવી. લઘુશાંતિને ઠેકાણે
 મોટી શાંતિ કહેવી. ॥ ઇતિ પસ્કી પ્રતિક્રમણ વિધિ સમાપ્તમ્.

અથ ચતુમાસી પ્રતિક્રમણની વિધિ લિખ્યતે,

ઝપર લખેલી પસ્કિની વિધિ પ્રમાણે, પણ ૧૨ લોગસ્સ
 ના કાઝસગ્ગને ઠેકાણે ૨૦ લોગસ્સનો કરવો, ને લોગસ્સ
 ન આવડે તેણે ૮૦ નવકારનો કાઝસગ્ગ કરવો, ને પસ્કિના
 આગારને ઠેકાણે ચૌમાસીના આગાર કહેવા ને તપને ઠેકાણે
 ઘઢેણં વે ઝપવાસ, ચ્યાર આંબિલ, ઠ નિવી, આઠ એકાસણાં,
 સોલ વિઆસણાં, ચ્યાર હજાર સપ્રાય. એ રીતે કહેવું. ॥ ઇતિ.

અથ સંવહરી પ્રતિક્રમણની વિધિ લિખ્યતે,

ઝપર લખેલી પસ્કિની વિધિ પ્રમાણે, પણ ૧૨ લોગસ્સ
 ના કાઝસગ્ગને ઠેકાણે ૪૦ લોગસ્સનો કરવો ને લોગસ્સ ન
 આવડે તેણે ૧૬૧ નવકારનો કાઝસગ્ગ કરવો, ને તપને ઠે
 કાણે અઢમેણં ત્રણ ઝપવાસ, ઠ આંબીલ, નવ નિવી, બાર એ
 કાસણાં, ચત્તવિસ વિઆસણાં, ઠ હજાર સપ્રાય. એ રીતે કહેવું
 પસ્કિના આગારને ઠેકાણે સંવહરીના આગાર કહેવા. ॥ ઇતિ.

अथ पमिलेहणनी विधि लिख्यते,

नवकार पंचिंदिअ कही इरियावहियाए थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवा. पठे तस्सउत्तरी कही १ लो गस्स ॥ न आ० ४ नवकारनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोग स्स कही मुहपति चवखो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कं दोरो आदे पमिलेहण करवुं काजो काढी जीव कलेवर स चित आदे जोवुं पठे इरियावहि पमिक्कमि अणुजाणह ज स्सग्गो कहेवुं. पठे काजो परठवीने ३ वार वोसिरे कहेवुं.

अथ देव वांदवानी विधि लिख्यते,

प्रथम इरियावहिआए पमिक्कमवा. लोगस्स कह्या पठे उत्तरासण नाखीने चैत्यवंदन नमुत्तुण कही जयवीअराय आनवमखंमा सूधि अरधा कहेवा पठे चैत्यवंदन कही नमुत्तुणं कही जावत् सिद्धाण बुद्धाणं कही चोथी थोय कहीए तिहा सुधी. वलि नमुत्तुणं कही जावत् चोथी थोय कहीए तिहा सुधि कहेवुं. पठे नमुत्तुणं जावंति चेइआइ जावंत केविसाहु उवसग्ग० अथवा स्तवन कही अरधा जयवीअराय कहेवा. पठे चैत्यवंदन नमुत्तुणं कही आखा जयवीअराय कहेवा. प्रज्ञातकाले मन्हजिणाएनी सप्पाय कहेवी. वे काले सप्पाय कहेवी नहीं. ॥ इति ॥

अथ पच्चखाण पारवानी विधी लिख्यते.

प्रथम इरियावहियाए पमिक्कमीए पठे जगचिंताम एीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधि करवुं पठे मन्हजिणा

एंनी सप्राय कही मुहपत्ति पम्बिलेहवी पञ्चस्काण पारुं य
थाशक्ति पञ्चस्काण पाखुं तहत्ति एम कही जमणो हाथ
कटासणा अथवा चवला उपर थापी १ नवकार गणी पञ्च
स्काण केहेवुं ते लखिए ठीए. उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं पो
रिसिं साढपोरिसिं गंठसहिअं मुठसहिअं पञ्चस्काण कखुं
चनविहार आंबिल्ल एकासणुं कखुं तिविहार पञ्चस्काण फा
सिअं पालिअं सोहिअं तीरिअं किट्ठिअं आराहिअं जं च न
आराहिअं तस्समिच्चामिडक्कमं ॥ इति. ॥

अथ उपवासादि पञ्चखाण पारवानी विधी.

सूरेउग्गए अजत्तठं कख्यो तिविहार पाणहार पोरिसि सा
ढपोरिसि सूरेउग्गए पुरिमद्ध मुठसहिअं पञ्चस्काण कखुं पाण
हार पञ्चस्काण फासिअं पालिअं सोहिअं तीरिअं किट्ठिअं
आराहिअं जं च न आराहियं तस्समिच्चामिडक्कमं ॥ इति. ॥

अथ पोसह लेवानी तथा पारवानी विधी लिख्यते.

प्रथम इरियावहियाए पम्बिल्लमि इच्चामि खमासमणो
देइ इच्चाकारेण संदिसह जगवन् पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं
एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी पठे इच्चामिण इच्चाकाण पोस
ह संदिसाहु वलि इच्चाण इच्चाकाण पोसह गाउं पठे हाथ जो
मि १ नवकार गणीने पोसहनुं पञ्चस्काण करवुं पठे इच्चामिण
इच्चाकाण सामायक मुहपत्ति पम्बिलेहुं कहि मुहपत्ति पडि
लेहविने सामायक उचरवुं. पण खण देइ बेण संण खण बेण
गाउं. खण सण संण तिहांथो ते सप्राय करुं एम कही ३ नव

कार गणी ए ठी ए तिहां सुधी कहेवुं. पठे इच्छामि० इच्छाका० बहु
 वेल संदिसाहु इच्छामि० बहुवेल करीशुं इच्छामि० पडिलेहण करुं
 एम कही मुहपति पडिलेहवी इच्छामि० इच्छाकारी जगवन्
 पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावो जी इच्छामि० इच्छाका०
 उपधि मुहपति पडिलेहुं एम कही मुहपति पडिलेहवी इच्छामि०
 इच्छाका० उपधि संदिसाहु इच्छामि० इच्छाका० उपधि पडिलेहवुं
 इच्छामि० इच्छाका० सप्राय करुं एम कही १ नवकार गणी म
 न्हजिणाणंती सप्राय कहेवी अवसरे पोरसीनी इरियाव
 हि पम्किमी इच्छामि० इच्छाका० पम्किलेहण करुं एम कही
 मुहपति पम्किलेहवी फरी सह समक पोसह उचरे तेनी
 विधी उपर जख्या प्रमाणे सरवे कहेवुं, पण सप्राय कहे
 वी नही. पठे राई मुहपति पडिलेहवी वादणां वे देवां पठे
 राईयं आलोउ एम कही जो मे राईनुं कही सबस्सवि राई
 य पन्यास होय तो वांदणां वे देवां अप्पुठ्ठिं खामवो पठे
 वांदणां वे देवां पच्चस्काण करवुं पठे कालना देव वांदवा, पा
 ठलि वखते पडिलेहण करे ते इरीयावही पडिक्कमी पठे ग
 मणागमण आलोउं एम कही इर्यासमिति चापासमिति ए
 पणासमिति आदानजंमनिस्खेवणा समिति पारिष्टानिका समि
 ति मनगुप्ती वचनगुप्ती कायगुप्ती ए पांच समिति त्रण गुप्ती
 आठ प्रवचन माता श्रावकतणे धर्मे पोसह सामायक जिधे खं
 रुन विराधना दुइ होय ते सबे मने वचने कायाए करी मीच्छामि
 डक्कमं इच्छामि० इच्छाका० पडिलेहण करुं इच्छामि० इच्छाका०
 पोसहसाल प्रमार्जु? एम कही मुहपति कटासणुं चवलो
 पलेववां अने खाधुं होय तो थेपाहुं तथा कंदोरो मली पांच

वानां पलेववां पठे इच्छामि० इच्छाकारी जगवन् पसाय करी
 पडिलेहणा पडिलेहावो जी, इच्छामि० इच्छाका० उपधि मुहपति
 पडिलेहुं एम कही मुहपति पडिलेहवी इच्छामि० इच्छाका० सञ्चा
 य करुं एम कही ? नवकार गणी मन्हजिणाणंनी सञ्चाय क
 हेवी, पठे खाधुं होय तो वांदणां बे देइ पच्चस्काण करे खाधुं
 न होय तो खमासमण देइ पच्चख्खाण करे, पठे इच्छामि०
 इच्छाका० उपधि संदिसाहुं इच्छामि० इच्छाका० उपधि पडिलेहुं
 एम कही जेटलां वस्त्र वाकी रद्यां होय तेटलां पलेववां पठे
 देव वांदवा पठे प्रतिक्रमण करवुं पोसह पारवो नवकार
 गणी सागरचंदो कहेवो. ॥ इति. ॥

अथ प्रज्ञातनो पोसो लीधेलाने सांजे रात
 पोसो लेवानी विधी लिख्यते.

प्रज्ञातनो पोसो लेवानी विधी ठे ते रीते खमासमण
 देइ इरीयावहीथी जावत् बहुवेल करसुं तिहां सुधी, पण
 पोसाना पच्चस्काणमां फेर ठे ते लखीए ठीए. सेस दिवसं रत्तं
 पद कहेवुं पठे खमासमण देइ इरीयावही पम्किमी इच्छा
 मि० इच्छाका० थंमिल पडिलेहुं एम कही मांडलां ३४ करे.

अथ सांजे नवो पोसो लेवानी विधी.

उपवासादी जघन्य एकासण कस्युं होय तेने लेवाय.
 खमासमण देइ इरियावही पम्किमी पडिलेहण करे खमा
 समण देइ इरियावहीथी जावत् बहुवेल करसुं तिहां सुधी
 पठे इच्छामि० इच्छाका० पडिलेहण करुं कही इच्छामि० इच्छाका०

पोसहशाल परमारजुं कही मुहपति पडिलेही इच्छामि० इच्छ
कारी नगवन् पसाय करी पमिलेहणा पमिलेहांवो कही इ
च्छामि० इच्छाका० उपधी मुहपती पमिलेहुं कही मुहपति पमि
लेहवी पठे इच्छामि० इच्छाका० सझाय करुं कही सझाय करे
खाधुं होय तो वांदणां वे देइ पचस्काण करे खाधुं न होय तो
खमासमण देइ पचस्काण करे, पठे इच्छामि० इच्छाका० उपधी
संदिसाहुं इच्छामि० इच्छाका० उपधी पमिलेहुं कही पठे देव वांदी
मांरुलां करे पमिकमणुं करे पठे एक पोहोर रात्री आशरे
जाय तीहां सुधी नीझ लेवी नही पठे खमासमण देइ इच्छा
का० बहुपमिपुत्रा पोरसी कही खमासमण देइ इरियावही
पमिकमी जावत् लोगस कही इच्छामि० इच्छाका० बहुपमि
पुत्रा पोरसी राइ संधारे ठासुं कही पठे इच्छामि० इच्छाका०
चैत्यवंदन करुं कही चउक्कसायनुं चैत्यवंदन जावत् जयवीय
राय सुधी करे. पठे इच्छामि० इच्छाका० संधारा विधी नणावा
मुहपति पमिलेहुं कही मुहपति पमिलेहवी पठे संधारापोरसी
नणाववी. जागे तिहां सुधी सझाय ध्यान करे. ॥ इति. ॥

पोसामां एकासणादि कखुं होय तो अवसरे पचस्काण
पारी पोसहशालार्थी आवस्सही कही निज गृहे इर्या शाघ
तो खमासमण देइ इरियावही पडिक्कमी खमा० गमणा
गमण आलोइ काजो पूजी यथा संज्ञवे अतिथीसंविनाग
व्रत फरसी निश्चल आसने बेसी हाथ मुख पग पात्र पडिले
ही नोकार संज्ञारी प्राशुक आदार जमे अथवा पोसहशा
लाए पूर्व प्रेरित निज पुत्रादिके आण्यो आदार जोगेवे पण

साधुनि परे गोचरी नही. तथा कारण विना मोदक स्वाड ल
विंगादि तंवोळ न लेवो. पठी निसीही कही पोसहशालाए
आवी खमाण इरियाण पम्किमी चैत्यवंदन करवुं ॥ इति. ॥

अथ श्री श्रावकना ५१ गुण लिख्यते.

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| १ अखुदो-तुहता नहि. | १३ सकह-जलीकथाकहेनारो |
| २ रूववंत-रूडा रूप सहीत. | १४ सुपखजुत्तो-रूडा संजोग |
| ३ पगईसोमो-प्रकृतीशांत. | वंत. |
| ४ जोगपीठ-लोकने प्रीती | १५ सुदीहदंसी-जलोदीर्घदर्शि |
| वंत. | १६ वीसेसन्नु-वीशेष जाण. |
| ५ अकूरो-कूर आकृती नहि. | १७ बुद्धाणुगो-जला वृक्षनी प |
| ६ जरीरू-पापघ्नी वीहीतो. | रंपराए चालनार. |
| ७ असठो-मूरख नहि. | १८ विणीठ-गुणनो वीनई. |
| ८ सुदस्किनो-रुहुं दाक्षिण | १९ कयन्नु-कस्यागुणानो जाण |
| पाले. | २० परहियत्तकरी-परने हीत |
| ९ लज्जालु-जली लज्यावंत. | अर्थनो करनार. |
| १० दयालु-चीत्तमां दयावंत. | २१ लधलस्को-जला कार्य उ |
| ११ मक्ष्णो-जले वुरे समपणुं | पर दृष्टिवान. |
| १२ गुणरागी-गुणनोज रागी. | |

॥ इति श्री श्रावकना एकवीश गुण संपूर्ण. ॥

॥ अथ अजीव अरूपी रूपीना जेद ५६० ॥

३० अरूपी अजीवना, ५३० रूपी अजीवना.

॥ अथ अरूपी अजीवना जेद ३० नो यंत्र. ॥

| संख्या नाम. | १ खंघ | २ देश | ३ प्रदेश | ४ ज्य | ५ खेत्र | ६ काल | ७ जाव | ८ गुण |
|---------------|----------|----------|-------------|----------|------------|----------|----------|----------|
| ८ धर्मास्ति० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८ अधर्मास्ति० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८ आकाशास्ति | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| ६ काल | ० | ० | समय १ | १ | १ | १ | १ | १ |

३० ॥ अथ रूपी अजीवना जेद ५३० ॥

मूल जेद २५ नां नाम स्वामी साथे.

५ वर्ण, चक्षु ग्राह्य.

१ कृष्ण नमरादी

२ नील शुक पीठादी.

३ रक्त मजीठादी.

४ पीत हलदरादी.

५ श्वेत शंखादी.

५ गंध, नासीका ग्राह्य.

१ सुरज्जी कोष्ट पुटादी.

२ छरज्जी मृतकलेवरादी.

३ रस, जीव्हा ग्राह्य.

१ तिखो लोवादी.

२ कटुक सुंठ आदी.

३ कपायलो कोठादी.

४ खाटो भांजली आदे.

५ मधुरो खांडादी.

८ फरस, शरीर ग्राह्य.

१ नारे हाडकां आदी.

२ हलवो बाल आदी.

३ सुंआलो तालुवादी.

४ वरसड पगना तलादी.


५ टाढो काननी बुट आदी.


६ उन्हो वगल आदी.


७ चीकणो आंख्यादी.


८ लूखो जीजादी.

५ संस्थान, आकार.

१ चोरस 

२ त्रिखुण 

३ वाटलु 

४ परीमंजल 

५ लांबु 

એ રીતે મુલ જેદ ૨૫ થયા, તેના ઉત્તર જેદ ૫૩૦ કરવા
ની રીતી નીચે લખીએ ઢીએ.

૧૦૦ વર્ણ પાંચેના, પ્રત્યેક વર્ણના વીશ ગણતાં ૧૦૦ થાય.

૨૦ કૃશ્નના, ૨ વે ગંધે, ૫ પાંચ રસે, ૮ આઠ ફરસે,
૫ પાંચ સંસ્થાને.

૮૦ નીલાદી ચ્યારે સાથે એમજ ગણતાં થાય.

૪૬ ગંધ વેના પ્રત્યેક ગંધના ત્રેવીસ ગણતાં.

૨૩ સુરજીના ૫ વરણે, ૫ રસે, ૮ ફરસે, ૫ સંસ્થાને.

૨૩ હરજીના તેમજ ગણતાં થાય.

૧૦૦ રસ પાંચેના પ્રત્યેક રસના વીસ ગણતાં.

૨૦ તીચ્છો, ૫ વરણે, ૨ ગંધે, ૮ ફરસે, ૫ સંસ્થાને.

૮૦ કટુકાદી ચ્યારે સાથે એમજ ગણતાં થાય.

૧૮૪ ફરસ આઠેના પ્રત્યેક ફરસના ત્રેવીસ ગણતાં.

૨૩ જારેના, ૫ વરણે, ૨ ગંધે, ૫ રસે, ૮ ફરસે. ફરસ
આઠ ઠે તેમાંથી જારે સાથે ગણવા માટે તે તથા
તેનો પક્ષી હલવો એવે વીના ઠ લેવા ૫ સંસ્થાને.

૧૬૧ હલવાદી સાતે સાથે એમજ ગણતાં થાય.

૧૦૦ સંસ્થાન પાંચના પ્રત્યેક સંસ્થાનના વીસ ગણતાં.

૨૦ ચોરસ, ૫ વરણે, ૨ ગંધે, ૫ રસે, ૮ ફરસે.

૮૦ ત્રીચુણાદી ચ્યારે સાથે એમજ ગણતાં થાય.

એ રીતે અજીવ રૂપીના જેદ ૫૩૦ થયા.

પ્રથમ અરૂપીના જેદ ૩૦ મેલવતાં ૫૬૦ જાણવા.

अथ जीवना ५६३ जेद च्यारे गतीना.

देवतांना. मनुष्येना. तीर्थेचना. नारकीना.

अथ देवताना जेद १९८ केम ते लखीए ठीए.

१० जवनपतीनी जाती.

१५ परमाधामीनी जाती.

१६ व्यंतरनी जाती.

१० तीर्थगृज्जंगनी जाती.

१० ज्योतिषीनी जाती.

११ देवलोकनी जाती.

३ कीलविषनी जाती.

९ लोकांतीकनी जाती.

९ ग्रैवेयकनी जाती.

५ अनुत्तरनी जाती.

६१

३८

एवं एए पर्यासा,

एए अपर्यासा मखी १९८.

अथ मनुष्यना ३०३ जेद केम ते लखीए ठीए.

१५ कर्मजुमीना ते ५ जरत, ५ ऐरवत ५ महावीदेहना.

३० अकर्मजुमीना ते ५ हीमवंत क्षेत्र, ५ इरणवत, ५ हरी
वर्ष, ५ रम्यक, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरुना.

५६ अंतरद्वीपना जवण समुद्र अंतरे ठे माटे.

१०१ गरजज पर्यासा.

१०१ गरजज अपर्यासा.

१०१ समूर्धिम चउद स्थानकिया.

एवं मनुष्यना त्रण्यसेने त्रण्य जेद जाणवा.

अथ तीर्थेचना जेद ४८ केम ते कह्यीए ठीए.

पांच स्थावरना ११ जेद.

- ४ पृथ्वीकायना सूक्ष्म बादर १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.
- ४ अपकायना सूक्ष्म बादर १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.
- ४ तेजकायना सूक्ष्म बादर १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.
- ४ वाजकायना सूक्ष्म बादर १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.

अथ वनस्पतीकायना जेद कहीए ठीए.

- ४ साधारणना सूक्ष्म बादर १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.
- १ प्रत्येकना १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता.

६ विगलेंडीना १ बेरेंडी १ तेरेंडी १ चौरिंडी पर्याप्ता अपर्याप्ता.

७० अथ तिर्यंच पंचेंडीना ७० जेद.

- ४ जलचर १ गगनज १ समूर्द्धिम पर्याप्ता अपर्याप्ता.
- ४ थलचर १ गगनज १ समूर्द्धिम पर्याप्ता अपर्याप्ता.
- ४ खेचर १ गगनज १ समूर्द्धिम पर्याप्ता अपर्याप्ता.
- ४ उरपरी १ गगनज १ समूर्द्धिम पर्याप्ता अपर्याप्ता.
- ४ जुजपरी १ गगनज १ समूर्द्धिम पर्याप्ता अपर्याप्ता.

एवं तीर्यचना जेद अमृतालीस जाणवा.

१४ अथ नरकगतीना जेद १४ लखीए ठीए,

७ सात नरकना पर्याप्ता. ७ सातना अपर्याप्ता.

ए रीते समग्र मेलवतां जीवना ५६३ जेद थया.

॥ इति श्री जीवना जेद संपूर्ण. ॥

अथ श्री दीवालीपर्व श्री रीते करवुं तेनो निर्णय.

श्री रत्नशेखरसूरि कृत श्री श्राद्धविधि ग्रंथमां तिथि निर्णयना अधिकारमां कह्युं ठे के, उमास्वातिवचः प्रद्योषा श्रेवंश्रूयतेः—क्षये पूर्वातिथिः कार्या, वृक्षैकार्या तथोत्तरा ॥

श्रीवीरज्ञाननिवारिणी, कार्यं लोकानुगैरिह ॥१॥ तथा श्री हीर
प्रश्न ग्रंथमां पण कहुं ठे के, तथा महावीरस्य निर्वाण समये
अमावास्या तिथिः स्वातिनद्धत्रं चाञ्जूतां । दीपालिका संवंधि गु
णन समये च कस्मिंश्चिद्वर्षे ते जवतः कस्मिंश्चिच्चेनेति एतडपरि
केचनेहं कथयंति यद्यदा स्वात्यमावास्ये जवतस्तदा गुणनीयं ।
अन्ये च यस्मिन् दिने मेरयां इति लोकप्रसिद्धिः क्रियाविशे
षस्तस्मिन् दिने गुणनीयमिति । तत्र मेरइया करणे जेदो
जवति । एतद्देश मध्ये ए गूर्जर लोकास्संति तैः पक्षिका दि
ने तानिकृतानि । एतद्देशीयैस्तु द्वितीय वासरे ततः किं स्व
स्व देशानुसारेण मेरइया करण दिने गुणनीयं ? उत गूर्जर
देशानुसारेणेति ? अत्र दीपालिका गुणनमाश्रित्य स्वस्व दे
शीय लोका यस्मिन् दिने दीपालिकां कुर्वति तस्मिन् दिने
गुणनीयमिति. ॥ ३ ॥

अथ श्री आत्मारामजी महाराजनो पत्र लिख्यते.

ननु सवीसश्राएमासेवश्कंते पज्जोसवंतीति श्रीकळपसू
त्रवचनात् जावज्जद्वयसुद्धपंचमीए अजपरेणंनवद्विअश्कमे
उं आसाढपुसिमान् आढत्तंमगंताणं जावज्जद्वजोएइसपंच
मीए इति श्रीपर्युपणाचूर्णिवचनाच्च ज्ञाड्सुदिपंचम्यामेव
श्रीपर्युपणापर्वकरणमुचितं अन्यगच्छेपु अपिकेपु चित सां
प्रतं ज्ञाड्सुदि पंचम्यामेव पर्युपणापर्वक्रियमाणं दृश्यते प
रमात्मीयगच्छे ज्ञाड्सुदि चतुर्थ्यां तक्रियते तत्कथमिति उ
च्यते सत्यं ? ओ. शिष्य ! पूर्वमेवमेवासीत् परं श्रीवीरात्

त्रिनवत्यधिकेषु नवशतवर्षेषु एए३ गतेषु सत्सु श्रीशालिवाह
 नराजाग्रहात् श्रीकालिकाचार्यैः अंतराविअसेकप्पइ इति
 श्रीकट्टपसूत्रात्तरदर्शनबलेन पंचमीतश्चतुर्थ्यां श्रीपर्युषणा
 पर्वप्रवर्त्तितं तद्दशेन च चतुर्मासिकमपि चतुर्दश्यां जातं अ
 न्यथा आगमोक्तं पंचदश्यामासीत् तदानीं तन समस्तसंघे
 नापि प्रमाणीकृतं यदुक्तं श्रोतीर्थोज्जालिप्रकीर्णके तथाहि ते
 एउअनवसएहिं एए३ समइक्कंतेहिंवइमाणान् पज्जोसवण
 चउढीकालगसूरीहिंतोविविआ १ वीसहिंदिणेहिंकप्पो १ पं
 चगहाणीईकप्पठवणाय २ नवसयतेएउएहिं बुद्धिन्नासंघआ
 एए ३ सालाहणेणरत्तासंघाएसेणकारीन् नयवंपज्जोसवण
 चउढीचाउम्मासंचचउदिसिए ३ चाउम्मासयं पडिक्कमाणं
 पक्खियदिवसंमिचउविहोसंघो नवसयतेएउएहिं आयरणं
 तंपमाणंति ॥ ४ ॥ पुनः ॥ ठाणाग्रंथवृत्तौ पर्युषणाचूर्णाव
 पि एवमेवबोध्यं पुनरेवं निशीथचूर्णिदशमोद्देशकेपि सी
 सोपुत्तइ इयाणिकहंचउढीएअ पवेपज्जोसविज्जति आयरिउन्न
 एइ कारणिआचउढी अज्जकालगायरिएहिं पवत्तिआइति न
 च वाच्यं तस्मिन्नेव वर्षे शालिवाहनजीवनावधि वा तत्पर्यु
 षणापर्वचतुर्थ्यां कृतं पश्चात्पुनरपि पंचम्यामेव जातं नवि
 ष्यतीति तदनंतरमपि चतुर्थ्यामेव क्रियमाणमासीत् ॥
 ॥ यदुक्तं ॥ श्रीनिशीथचूर्णिदशमोद्देशके तथाहि इआणिक
 हंअपवेचउढीएपज्जोसविज्जइ इति शिष्यपृष्ठायां गुरुवचना
 वसरे एवं च जुगप्पहाणेहिंचउढीकारणेपवत्तिआसाचेवअ
 णुमयासाहुणं इति ततः श्रीकालिकाचार्यानंतरं पश्चात्क्रिय
 त्कालज्ञावि निशीथचूर्णिकारोक्तवचनप्रामाण्यात् ज्ञायते

श्रीकालिकाचार्यात्पश्चादपि श्रीपर्युपणापर्वनाम्पदचतुर्थ्यामे
व क्रियमाणमासीत् ततस्तत्परंपरायातेरस्मान्निरपि चतुर्थ्या
मेव श्री पर्युपणापर्व विधीयते इति न कोपि दोषः ननु य
दि एवं च कारणेण अङ्गकालगेहिंचवृत्तीएषज्जोसवणपवन्ति
अंसमत्तसंघेणय अनुमन्निअमितिगणवृत्तौ ज्ञितं तदा
समस्तसंघेन चतुर्थ्या तस्यागीकरणात् सांप्रतं केपुचिज्जे
पु पंचम्यां तत्करणं कुतः उच्यते श्रीकालिकाचार्यपरंपरा न
ते मन्वते इति संज्ञाव्यते इति श्रीसमयसुदरोपाध्याय विरचिते
समाचारीशतके तथा श्रीकुलमंमनसूरिकृतविचारामृतसंग्रहेपि
प्राय एवमेव विशेष स्त्वयंसंदेह विपौपध्या तथा मूलसूत्रेपि च
श्रीवीरनिर्वाणात् त्रिनवत्यधिकनवशतवर्षानंतरं पर्युपणाक
ल्पस्य चतुर्थ्या प्रवृत्तिरुक्ता तथाहि समणस्सज्जगवन् महा
वीरस्स जावत्तवड्ढरक्कप्पहीणस्स नववाससयाइंविइक्कताए द
समस्सयवाससयस्सअयंअसीइमेसवत्तरेकालेगच्छइ वायणंत
रेपुणअयंतिणउएसंवत्तरकालेगच्छइ इति दीसइ । पर्युप सूत्रे ।
अत्रचेयंवृत्तिः नववाससयाइंति श्रीवीरनिवृत्तेर्नवसु वर्ष
शतेष्वशीत्यधिकेषुव्यतीतेष्विव वाचना जातेत्यर्थे व्याख्या
यमानेन तथा विचारचातुरीचंचूनां चेतसि प्रतीतिरस्य सू
त्रस्य श्रीवर्द्धमान निर्वाणानंतरं सत्यत्यधिक वर्षशतेनोत्पन्ने
न श्रीजइवाहुस्वामिना प्रणीतत्वान् तस्मादियति काले ग
ते ह्यं वाचना पुस्तकेपु न्यस्तेतिसंज्ञाव्यते श्रीदेवर्द्धिक्कमा
श्रमणैहिं श्रीवीरनिर्वाणान्नवसुवर्षेशतेष्वशीत्युत्तरेष्वतीतेपु
ग्रंथान् व्यवञ्चियमानान् दृष्ट्वा सर्वग्रंथानामादिमे नंद्य
ध्ययने स्थिरावलीलक्षणं नमस्कारं विधाय ग्रंथाः पुस्तकेपु

लिखिताः इत्यतएवात्र ग्रंथे वक्ष्यमाणस्थविरावलीप्रांते देव
 दिक्षमाश्रमणस्य नमस्कारं वक्ष्यतिपूर्वं तु गुरुशिष्याणां श्रु
 ताध्ययनाध्यापनव्यवहारः पुस्तक निरपक्व एवासीत् के
 चित्त्विदमाहुर्यदियत्कालातिक्रमे ध्रुवसेनस्य पुत्रमरणा
 त्तस्य समाधिमाधातुमानंदपुरे सन्नासमहमयं ग्रंथो वा
 चयितुमारब्ध इति बहुश्रुता वा यथावद्विदंति त्रिनवतियुत
 वर्षेनवशतपक्षेति यता कालेन पंचम्याश्चतुर्थ्यां पर्युषणाप
 र्वप्रवृत्ते ॥

पुनरपितत्रैव—यच्चोक्तं कालिकाचार्यं प्रवर्तितत्वा चतु
 र्थ्या न प्रामाण्यं तदयुक्तं यतस्तथाविधाचार्याणामाज्ञा
 न जिनाज्ञा पृथग् चूता किंतु जिनाज्ञैव यदुक्तं आणत्तिपं
 चविहायारायरणसीलस्सगुरुणोहिज्ज उवएसवयणंआणातम
 न्नहाआयरंतेणगणिपिंमगंविराहियंजवति नंदिचूर्णौ चतुर्थ्या
 श्वा प्रामाणीकरणे दशविधसामाचारीसमाराधितानस्यात्
 कप्पाकप्पेपरिनिष्ठियस्स ठाणेषुपंचसुठियस्ससंजमतवट्ठगस्स
 उअविगप्पेणं तहक्कारोआवश्यके तथाआयरियपरंपरए आग
 यंजोउह्वेयबुद्धीए कोविह्वेयवाईजमालिणासंसनासहिति सू
 त्रकृतांगनियुक्तौ श्रीकालिकाचार्याणां निशीथचूर्णिकारादि
 जि युगप्रधानत्वादिगुणविशेषितत्वात्पंचविधाचाराचरणशी
 लत्वमविचलमेवेत्यतोनिनिवेशं मुक्ता सम्यग् विचार्यमिति
 विचारामृतसंग्रहे ॥

तथान्येष्वपि श्राद्धविधि कौमुदी धर्मसंग्रह उपदेशप्रासा
 दप्रभृतिष्वनेकग्रंथेष्वेवमेवास्ति ॥ शुनं लेखकः ॥ इति ॥

॥ काव्यम्. ॥

प्रायुष्कं यदि सागरोपममितं व्याधि व्यथा वर्जितं,
पांशित्यं च समस्त वस्तु विषया प्रावीण्यलब्धास्पदं ॥
जिह्वा कोटिमिता च पाटवयुता स्थाने धरित्री तले,
नो शक्नोमि तथापि वर्णितुमलं तीर्थस्य पूजा फलं ॥ १ ॥

॥ गाथा. ॥

अस्कर मत्ता हीणं, जं मे पट्टिअं अयाणमाणेवि ॥
तं खमह मग्न सामिणि, जिणंद मुह निग्गया वाणी ॥ १ ॥

॥ श्लोकः ॥

नम्र एष्टि कटि ग्रीवा, बद्धष्टिरघोमुखैः ॥
कष्टेन लिखितो लेखः, यत्नेन परिपालयेत् ॥ १ ॥

इति श्री पंचप्रतिक्रमणसूत्रार्थ
समाप्तम्.

अस्य ग्रंथस्य शुद्धाशुद्धि पत्रम्.

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उल्लि | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उल्लि |
|------------|------------|-------------|------------|-------------|-------------|
| वांतीत | वांति | १ १० | चउव्वीसंपि | चउव्विसंपि | ३५ ७ |
| क्रीमा | क्रिडा | ३ १ | सांमिजयउ | साभिजयउ | २६ २२ |
| पामा | पीडा | ६ १० | सांमि | सामि | ३६ ३३ |
| संचालोहिं | संचालोहिं | ११ १० | सेतुंजि | सेतुंजि | ३७ ३ |
| डुऊमे | हुऊ मे | १२ ११ | नेमि | नेमि | ३७ ५ |
| अपाणं | अप्पाणं | १३ ३ | रात्रादिके | रात्रिआदिके | ३१ ३१ |
| करते | करे ते | १३ १७ | चरकु | चखु | ३२ ४ |
| लोगगस्त | लोगस्त | १४ १३ | चरकु | चखु | ३२ ५ |
| चोवोसथो | चोवोसथो | १४ ११ | चक्कवटीणं | चक्कवटीणं | ३३ ८ |
| चउव्वीसं | चउवीसं | १५ ३ | विअट्ट | विअट्ट | ३३ १८ |
| वद्धमाणं च | वद्धमाणं च | १० ० | सव्वेसि | सव्वेसिं | ३६ १७ |
| अज्झिअ | अज्झिअ | १० १५ | सव्वेसि | सव्वेसिं | ३६ १८ |
| चउव्वीसंपि | चउवीसंपि | १० २३ | कम्म | कम्म | ३७ १० |
| कित्तिअ | कित्तीअ | १९ ४ | विसहर० त | विसहर० ते | ३७ १८ |
| कित्तिअ | कित्तिअ | १९ ७ | कंठे | कंठे | ३७ २२ |
| आरुग | आरुग | १९ १२ | चिठउ | चिठउ | ३८ ५ |
| आरुगं | आरुग | १९ १५ | चिठउ | चिठउ | ३८ ७ |
| दिंतु | दिंतु | १९ १० | डरक | डख | ३८ १५ |
| सिद्धिमम | सिद्धि मम | २० १० | समत्ते | सम्मत्ते | ३८ १७ |
| दिसंतु | दिसंतु | २० १० | होय | होउ | ४० ६ |
| वेधडी | वे धडि | २१ ० | पुआ | पूआ | ४० १९ |
| पडिकमामि | पडिकमामि | २१ २१ | शुज्ज | शुज्ज | ४० २० |
| होई | होइ | २२ ११ | नियांणं | नियाण | ४१ ६ |
| ठिन्नई | ठिन्नइ | २२ १४ | डुऊ | हुऊ | ४१ १० |
| हवईजम्मा | हवइजम्हा | २२ २२ | डखखउ | डखखखउ | ४१ १६ |
| संठियस्स | संठियस्स | २३ १० | कम्म खउ | कम्मखखउ | ४१ १६ |
| जाई | जाइ | २३ १९ | सर्व | सर्व | ४२ ५ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उल्लि |
|--------------|-------------|-------------|
| पुत्राण | पूत्राण | ४३ ४ |
| सक्षाए | सक्षाए | ४३ १९ |
| सक्षाए | सक्षाए | ४३ २० |
| अणुप्येहाए | अणुप्येहाए | ४४ ८ |
| बद्धमाणीए | बद्धमाणोए | ४४ ११ |
| सक्षा | सक्षा | ४४ २० |
| पश्चिम | पश्चिम | ४५ १५ |
| वक्ष | वक्ष | ४५ २३ |
| विचसणस्त | विचसणस्त | ४६ ३ |
| विचसणस्त | विचसणस्त | ४६ ६ |
| सिद्ध | सिद्धे | ४७ ९ |
| भुवनपति | भुवनपति | ४७ ११ |
| पयतिष्ठ | पयतिष्ठ | ४७ २० |
| धम्मोवट्टु | धम्मोवट्टु | ४७ २२ |
| धम्मावट्टु | धम्मोवट्टु | ४८ ३ |
| ज्ञानतत्त्व | ज्ञाततत्त्व | ४८ १७ |
| सिलानउपरे | सिद्धशिलाने | |
| | उपरे | ४९ १ |
| वक्षमाणस्त | वक्षमाणस्त | ४९ २१ |
| चक्रवर्द्धि | चक्रवर्द्धि | ५० ११ |
| चक्रवीस्त | चक्रवोस्त | ५० १९ |
| सम्म चिठि | सम्महिठि | ५१ ९ |
| धुली | धूली | ५१ २१ |
| जलनिधि | जलनिधि | ५३ ७ |
| भ्रम चक्षुषा | भ्रमचक्षुषा | ५४ १५ |
| देवागनाना | देवागनाना | ५५ ६ |
| अर्ह चक्र | अर्हचक्र | ५६ १ |
| छादशाग | छादशाग | ५६ २ |
| धारित | धारित | ५६ ७ |
| धारभूत | धारभूत | ५६ ११ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उल्लि |
|------------|-------------|-------------|
| नील | नील | ५६ २१ |
| दष्ट | दष्ट | ५६ २२ |
| निसीही | निस्सीही | ५८ ३ |
| परकोवइक्तो | परुखोवइक्तो | ५८ १९ |
| सवत्तरो | सवत्तरो | ५९ २ |
| नदामि | निदामि | ६१ १ |
| इत्ता | इत्ता | ६१ ७ |
| इत्त | इत्त | ६१ ७ |
| उत्तासिअ | उत्तासिय | ६१ १२ |
| जणीउ | जणिउ | ६२ २ |
| उपाव्यान | उपधान | ६२ ६ |
| उलखो | उलखो | ६२ ६ |
| उववुह | उववुह | ६३ ३ |
| हितकुरुवु | हित करवुं | ६३ ४ |
| वत्तल | वत्तल | ६३ ६ |
| समितिइ | समितिए | ६३ ९ |
| समिर्हि | समिर्हि | ६३ १० |
| तीहि | तिहि | ६३ १० |
| गुत्तीहि | गुत्तिहि | ६३ १० |
| आतपना | आतापना | ६४ १२ |
| पायवित्त | पायवित्त | ६४ २० |
| आजितरउ | आजितरउ | ६५ ९ |
| होइ | होइ | ६५ ९ |
| वीरिउ | विरिउ | ६५ १२ |
| माउत्तो | माउत्तो | ६५ १५ |
| इत्त | इत्त | ६६ ७ |
| उन्नमार्गे | उन्नमार्गे | ६६ १५ |
| उज्याउ | उज्याउ | ६६ २३ |
| उज्जिचितिउ | उज्जिचितिउ | ६६ २३ |
| पाउगो | पाउगो | ६७ ५ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि |
|-------------|--------------|-------|-------|----------------|---------------|-------|-------|
| नाणे | नाणे | ६७ | ८ | चउठं | चउठं | ७७ | २० |
| तिन्हे | तिन्हं | ६७ | ११ | इठ | इठ | ७६ | ८ |
| मणु वयाणं | मणुव्वयाणं | ६७ | १६ | स्वित्त वन्नु | स्वित्त वन्नु | ७६ | १२ |
| मिठामि | मिठामि | ६८ | ५ | चउप्पयमी | चउप्पयंमि | ७६ | १९ |
| वंदितु | वंदितु | ६८ | ए | उटं | उटं | ७७ | ४ |
| अढिधिपमां | अढीघोपमां | ६८ | ११ | हुटिस्सइ | हुटि सइ | ७७ | ७ |
| सव्वसाहुअ | सव्वसाहु अ | ६८ | १३ | वेहेला | पहेला | ७७ | ८ |
| साद्धं | साखे | ६९ | ५ | जरखकणया | जरखणया | ७८ | १० |
| आश्चित्तरूप | आप्पित्तरूप | ६९ | ८ | वन | वण | ७८ | १९ |
| परिग्गहंमी | परिग्गहंमि | ६९ | ए | वाणिजं | वाणिज्जं | ७९ | २ |
| सावज्ये | सावज्जे | ६९ | १२ | मुज्जंतपील्लणं | मुजंतपिल्लण | ७९ | ९ |
| मिदिण्हि | मिदिण्हि | ६९ | १९ | तणे कठं | तण कठे | ८० | ३ |
| चउहि | चउहि | ६९ | २२ | मल | मून | ८० | ३ |
| अप्पसठेहि | अप्पसठेहि | ६९ | २२ | वन्नगत | वन्नग ते | ८० | ९ |
| अरहा | अरहा | ७० | ए | विख | विपे | ८० | १० |
| देशीअं | देमिअं | ७० | १५ | वडा सण | वडासण | ८० | १८ |
| जुहुहशते | जूहुं हशे ते | ७० | १६ | अइ रते | अइरत्ते | ८१ | ५ |
| विगीडा | विगिडा | ७० | २० | फामअ | फामुअ | ८३ | २३ |
| कुलिगीसु | कुलिगीसु | ७० | २३ | अइआरो | अइआरो अ | ८५ | ६ |
| पमिकमे | पडिकमे | ७१ | ६ | हणति मंतेहि | हणंति मंतेहि | ८६ | ४ |
| देसीअं | देसिअं | ७१ | ६ | मुणगुण | मूलगुण | ८७ | १० |
| ठकायस | ठकाय | ७१ | ए | अप्पन्निउमि | अप्पुन्निउमि | ८७ | १६ |
| मारत्ते | समारभे | ७१ | ए | तठ | तठ | ८७ | २३ |
| परठा | परठा | ७१ | १५ | विनर्ग | विनिर्गत | ८८ | ८ |
| इठ प्पमाय | इठ पमाय | ७२ | १४ | मरिहंत | मरिहंता | ८८ | १३ |
| इठ पमाय | इठ पमाय | ७३ | ११ | वेरं मप्प | वेरं मप्पं | ८९ | १० |
| प्पसंगंणे | प्पसंगेण | ७३ | ११ | जकिच | जं किंचि | ९० | १७ |
| इठ प्पमाय | इठ पमाय | ७४ | १२ | तस्समिठामि | तस्समिठामि | ९० | २० |
| मप्पसठे | मप्पसठे | ७५ | ८ | उकमं | उकहं | ९० | २० |
| इठ प्पमाय | इठ पमाय | ७५ | १० | राशिस्स | रासिस्स | ९१ | १६ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि |
|-----------------|----------------|-------|-------|
| सुत | शुत | ९१ | २३ |
| नक्त वे तेहनु | नक्ति वे जेनी | ९१ | ३ |
| तेसि | तेसि | ९२ | २ |
| खेत्रनेविषे | खेत्रने विषे | ९२ | ३ |
| हरज डरीयाइ | हरजडरियाइ | ९२ | ९ |
| श्रीसुतदेवता | श्रीश्रुतदेवता | ९३ | ९ |
| श्रुतदेवता | श्रुतदेवता | ९३ | ३२ |
| राज्या | राज्या | ९३ | ७० |
| दधानु | दधानु | ९४ | १३ |
| विद्भुम | विद्भुम | ९४ | १८ |
| विगय | विगत | ९४ | १८ |
| जिनाना | जिनाना | ९४ | २२ |
| अद्याइ | अद्याइ | ९५ | ७ |
| भुमीसु | भूमीसु | ९५ | २ |
| गुडो | गुडो | ९५ | ३ |
| अठारम | अठारम | ९५ | ८ |
| केशर | केसर | ९५ | १८ |
| मुख | मुख | ९५ | २० |
| सुरेंद्रा | सुरेंद्राः | ९६ | २ |
| गणयति | गणयति | ९६ | ५ |
| निर्भुक्त | निर्भुक्त | ९६ | १२ |
| बुद्धैः नमस्कृत | उद्धैः नमस्कृत | ९६ | १८ |
| गामोउ | गामिउ | ९७ | ६ |
| लिच्छउ | लिच्छउ | ९७ | १४ |
| जलहर | जलहर | ९७ | १८ |
| लंठोउ | लठिउ | ९७ | १८ |
| पयउउ | पयउउ | ९७ | २० |
| वठिउ | वठिउ | ९७ | २० |
| मिउ | मिउ | ९८ | ८ |
| जम्मा | जम्हा | ९८ | ८ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि |
|--------------|--------------|-------|-------|
| कुजा | कुजा | ९८ | १० |
| सामयक | सामायक | ९८ | ११ |
| तस्य | तस्म | ९८ | १३ |
| बोधवो | बोधव्वो | ९८ | २० |
| ठामो | ठामो | ९९ | ९ |
| पञ्जुवा सामि | पञ्जुवासामि | ९९ | ३२ |
| चदवडसो | चदवडसो | १०० | ३ |
| मरणात | मरणात | १०० | ४ |
| जेसि | जेसि | १०० | ७ |
| सुलसा | सुलसा | १०० | १० |
| पससई | पससई | १०० | १३ |
| ददवयतो | ददवयतो | १०० | १३ |
| माहावीरो | महावीरो | १०० | १३ |
| पारयो | पारयो | १०० | १४ |
| सविह | सविह | १०० | १६ |
| मिठामि | मिठामि | १०० | १७ |
| समत्त | सम्पत्त | १०० | २० |
| उजुत्तो | उजुत्तो | १०१ | ३ |
| पइ | पइ | १०१ | ३ |
| थुइ साहमि | थुइ साहमि | | |
| याण वडल | याण वडल | १०१ | १६ |
| सुमी | सुमी | १०१ | २१ |
| तिठ जताय | तिठ जताय | १०१ | २१ |
| समइय | समई अ | १०२ | ३ |
| उजिव | उजीव | १०२ | ३ |
| दम्पो | दम्पो | १०२ | ८ |
| सदाण | सदाण | १०२ | १४ |
| सुगुरुवण्मेण | सुगुरुवण्मेण | १०२ | १४ |
| अनियाउतो | अणियाउतो | १०२ | २० |
| जस्मजदो | जमजदो | १०३ | १२ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उक्ति |
|-----------------|-----------------|-------|-------|
| अजरखिअ | अजरखिअ | १०३ | २२ |
| कालयसुरी | कालयसुरी | १०४ | २ |
| पज्युन्नो | पज्युन्नो | १०४ | २ |
| प्रज्ञावास्वामि | प्रज्ञावास्वामी | १०४ | ३ |
| दढपहारी | दढपहारीअ | १०४ | ५ |
| सिद्धंस | सिद्धंस | | |
| कुरगडु | कुरगडु अ | १०४ | ८ |
| सिजंनव | सिजंनव | १०४ | ८ |
| मदनरेखा | मदनरेखा | १०४ | १५ |
| भ्रांमि शुद्ध | ब्राह्मी सुद्ध | | |
| रिजी | रीजो | १०५ | ४ |
| कुतिजो | कुंतिजो | १०५ | ४ |
| शिवा | मिवा | १०५ | ७ |
| पद्माजी | पद्मावतीजी | १०५ | ११ |
| पञ्मावइ | पञ्मावई | | |
| गौरी | य गौरी | १०५ | १३ |
| लखवणा | लखवमणा | १०५ | १३ |
| जंबुवइ | जंबुवइ | १०५ | १७ |
| रुपिणी | रुपिणि | १०५ | १७ |
| महीसोउ | महिसोउ | १०५ | १७ |
| धूलिन्नद्र | स्थूलिन्नद्र | | |
| जीनी | जीनी | १०५ | २२ |
| धूलिन्नद्रस्त | स्थूलिन्नद्रस्त | १०५ | २३ |
| संतिउ | सतीउ | १०६ | १ |
| अजवि | अज्जवि | | |
| वज्जइ | वज्जइ | १०६ | ६ |
| शांति | शांति | १०६ | १८ |
| शांति | शांति | १०६ | १८ |
| संपति | संपत्ति | १०७ | १४ |
| पुजिताय | पूजिता य | १०७ | १७ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उक्ति |
|-----------------|-----------------|-------|-------|
| समह | समृह | १०७ | २२ |
| डरितोय | डरितौय | १०८ | ७ |
| सर्वस्यापिच | सर्वस्यापिच | १०९ | १६ |
| तुष्टि पुष्टि | सुनुष्टि पुष्टि | १०९ | २१ |
| जीया | जीयाः | १०९ | २१ |
| निवृत्ति | निवृत्ति | ११० | ५ |
| सत्त्वनां | सत्त्वानां | ११० | ५ |
| जंतुनां | जंतूनां | ११० | १६ |
| सम्यग्दृष्टिनां | सम्यग्दृष्टिनां | ११० | २१ |
| जयदेवी | जयदेवि | १११ | ७ |
| तुष्टि | तुष्टि | ११२ | ३ |
| पुष्टि | पुष्टि | ११२ | ३ |
| उँ | उँ | ११२ | १२ |
| हँ | हँ | ११२ | १२ |
| शांति | शांति | ११२ | २३ |
| शांताये | शांतये | ११२ | २३ |
| पूर्वसूरि | पूर्वसूरि | ११३ | ४ |
| विद्विजित | विद्विजितः | ११३ | ४ |
| स्तव शांते | स्तवः शांतेः | ११३ | ४ |
| मत्तां | मतां | ११३ | ९ |
| शृणोति | शृणोति | ११३ | १४ |
| सूरी | सूरि | ११३ | १९ |
| उपसर्गा | उपसर्गाः | ११३ | २२ |
| मागल्यं | मांगल्यं | ११४ | ५ |
| वेरेछि | वैद्विय | ११५ | २ |
| तेरेछि | तैद्विय | ११५ | २ |
| चउरिछि | चउरिद्विय | ११५ | ५ |
| उक्कडं | उक्कडं | ११६ | १० |
| नेमिजीणं | नेमिजिणं | ११७ | २ |
| सुगणिकवाणं | सुगुणिकवाणं | ११७ | ५ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि |
|-------------|-------------|-------|-------|
| नतिअ | नत्तीअ | ११७ | ७ |
| अप्पार | अपार | ११७ | १० |
| शिवं | सिवं | ११७ | १३ |
| विशाल | विमाल | ११७ | १८ |
| कुदेंड | कुदिंड | ११८ | ए |
| जिठिजा | जिठिक्का | | |
| ठिजा | ठिक्का | ११९ | ८ |
| परमगुरु | परमगुरु | ११९ | ८ |
| गुणरयणेहि | गुणरयणेहि | ११९ | ११ |
| राइ | राइ अ | ११९ | १४ |
| ठामि | ठामि | ११९ | १४ |
| वाहुवाहणेण | वाहुवहाणेण | ११९ | १८ |
| वामपासेण | वामपासेण | ११९ | १८ |
| अतरत पमज | अतरत पम | | |
| ए भूमि | ऊए भूमि | ११९ | २३ |
| उवहने | उवहने | ११० | ३ |
| हुज | हुक्का | ११० | ए |
| चोरीक मेहुण | चोरिक मेहुण | | |
| दरिणमुठ | दरिणमुठ | १२१ | १८ |
| माया | माय | १२१ | २१ |
| पिज | पिक्का | १२१ | २१ |
| अप्पनसाण | अप्पनसाणं | १२१ | ३ |
| परपरिवाय | परपरिवाय | | |
| माया | माया | १२२ | ७ |
| मिञ्चत्त | मिञ्चत्त | | |
| सल्लच | सल्ल च | १२२ | ७ |
| सासण | सासई | १२२ | १८ |
| नाण दसण | नाण दमण | | |
| सज्जुत्त | सज्जुत्त | १२२ | २१ |
| जाव जीव | जावजीव | १२३ | १० |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उल्लि |
|---------------|---------------|-------|-------|
| जिएपनततत | जिएपन्नततत्त | १२३ | १४ |
| सम्मत | सम्मत | १२३ | १४ |
| तमे | ते मे | १२३ | १९ |
| वाधे | यध | १२३ | २८ |
| तरस | तस्स | १२३ | २१ |
| सकलार्ह त्म | सकलार्ह | | |
| तिष्ठान | त्पतिष्ठान | १२४ | ४ |
| मणिष्ठान | मधिष्ठान | १२४ | ४ |
| स्वः स्वयीशान | म्यस्वयीशान | १२४ | ४ |
| नर्हतः | नर्हतः | १२४ | २० |
| वृपज स्वा | ऊपजस्वा- | | |
| मिन | मिन | १२५ | ४ |
| विश्व | विश्व | १२५ | १६ |
| जयति | जयतु | १२५ | १६ |
| मानद | मानद | १२६ | ५ |
| चेजिताग्नि | चेजिताग्नि | १२६ | ए |
| मुमति म्यामि | मुमति म्यामी | १२६ | १२ |
| स्पाद्यादामृत | म्याद्यादामृत | | |
| निस्पदी | निस्यदी | १२८ | ४ |
| नरे | नरे. | १२८ | १९ |
| पयउतु | प्रयउतु | १२९ | ए |
| दिग्मुखः | दिद्मुख | १२९ | २० |
| नरा थीश | नरायीश | १३० | २१ |
| कर्मछन्मुजने | कर्मछन्मृजने | १३१ | २ |
| मज्झिपूमः | मज्झिपूमः | १३१ | २ |
| प्रतूप | प्रतूप | १३१ | ५ |
| वचन | वचन | १३१ | ८ |
| कारण | कारण | १३१ | १२ |
| भूयादवो | भूयाद्वा | १३१ | २२ |
| प्पणासणो | प्पणासणो | १३४ | १६ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उत्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | उत्ति |
|---------------|---------------|-------|-------|---------------|-------------|-------|-------|
| सन्वेसि | सन्वेसि | १३४ | १६ | पन्नासं | पन्नास | १४१ | १६ |
| वहइ | हवइ | १३४ | १७ | समहो | समूहो | १४१ | १६ |
| उवसग्ग | उवसग्ग | १३४ | २० | नासउ सयल | नासेउसयल | | |
| डरे | दूरे | १३५ | ४ | डरिअ | डरिअं | १४१ | १७ |
| कप्पपायव | कप्पपायव | | | में सारिं | मे सरीरं | १४२ | २३ |
| प्न हिण | प्नहिण | १३५ | ६ | उँ | उँ | १४३ | ५ |
| अविग्घेणं | अविग्घेणं | १३५ | ७ | गस्सं | गप्पं | १४३ | ७ |
| संयुज | संयुज | १३५ | ७ | उँ रोहिणी | उँ रोहिणि | | |
| वोहि | वोहिं | १३५ | ७ | पन्नती | पन्नत्ति | १४३ | १० |
| जयसिरी | जयसिरिइ | १३५ | २० | श्रृंखला | सिंखला | १४३ | १२ |
| पिमगा | पिडगा | १३७ | १ | चक्केसरी | चक्केसरि | | |
| जिणन्नते | जिणन्नत्ते | १३७ | ४ | नरदत्ता | नरदत्ता | १४३ | १४ |
| वज्जसिख | वज्जासिख | | | गंधारि महा | गंधारी मह | | |
| लाय | लाय | १३७ | ७ | महाज्वाला | महाजाला | १४३ | १७ |
| अवुत्ता | अवुत्ता | १३७ | १७ | वइरुट्ठ | वइरुट्ठ | १४३ | २० |
| जरुखेसु | जरुखेस | १३८ | २ | अलुता | अवुत्ता | १४३ | २० |
| उमुह पायाल | उम्मुहपयाल | १३८ | ७ | विद्यादेवीउ | विज्जादेवीउ | १४४ | १ |
| कुवर वरुणो | कूवर वरुणो | | | भुमीसु उपन्नं | भूमिसु उपप | | |
| जिउंमी | जिउंढी | १३८ | १२ | सित्तरि | नं सत्तरिं | १४४ | ५ |
| चुक्केसरि | चक्केसरि | १३८ | १७ | विसोहिअ | वसोहिअं | | |
| श्री वशादेवी | श्रीवत्सादेवी | १३८ | २२ | हरउ | हरउ | १४४ | ७ |
| सिरिवड्डा | सिरिवड्डा | १३७ | १ | जूआ | जुआ | १४४ | १३ |
| वइरुट्ठ | वइरुट्ठ | १३९ | ७ | उँ | उँ | १४४ | २१ |
| सति | संति | १३९ | २३ | विहुम | विहुम | १४४ | २१ |
| सम्म | सम्म | १४० | ९ | उँ | उँ | १४५ | ९ |
| गड्ड | गड्ड | १४० | १५ | सतरिसयं | सत्तरिसयं | १४५ | २३ |
| तीजयापहुत | तिजयपहुत्त | १४१ | १ | विजयज्जंतं | विजयवंतं | | |
| अठ महापा | अठ महापा | | | निप्पतंतं | निप्पतंतं | १४६ | ४ |
| डिहेरजूत्ताणं | डिहेरजूत्ताणं | १४१ | ४ | सेअं वुड्ढि | सेय वुड्ढि | १४७ | ७ |
| खित्तांठियाणं | खित्तांठियाणं | १४१ | १२ | लड्ढि | लड्ढि | १४७ | १० |

| अथुञ्च | शुञ्च | पृष्ठ उल्लि |
|-------------|-------------|-------------|
| जाणवुत्ता | जाणवत्ता | १४७ २१ |
| पवणधुञ्च | पवणधुञ्च | १४८ ६ |
| वहु | वहु | १४८ १३ |
| सञ्चह | सञ्चहं | १४९ ६ |
| गञ्चया | गुरुञ्चा | १४९ १३ |
| सञ्चल | सङ्गल | १४९ १६ |
| बुन | बुन | १४९ १९ |
| सन्नपित्ते | सन्नपित्ते | १५१ १० |
| नविगणति | नवि गणति | १५१ १० |
| मुणिवह तुग | मुणिवह तुग | १५१ १६ |
| जिञ्चाय | जिञ्चाय | |
| पविञ्चं | पविञ्च | १५१ १९ |
| निञ्चिय | निञ्चिय | १५२ १ |
| चौरा रि | चौरारि | १५२ ११ |
| मकित्तणेणं | सकित्तणेण | १५२ १५ |
| पसमेञ्च | पसमेञ्च | १५३ १३ |
| सुरमि | सुरम्मि | १५३ १८ |
| जयञ्च | जयञ्च | १५४ १ |
| निचिञ्चं | निचिञ्च | १५६ २० |
| निवुञ्च | निवुञ्च | १५७ ४ |
| गुरुञ्च | गुरुञ्च | १५७ १९ |
| मुवणमं | मुवण मे | १५८ ५ |
| मञ्चय | मञ्चय | १५८ ३१ |
| विञ्चिञ्च | विञ्चिञ्च | १५८ २२ |
| हञ्च वाहुः | हञ्च वाहुं | १५९ ४ |
| पसमेञ्च | पसमेञ्च | १६० १ |
| महप्पञ्चावो | महप्पञ्चावो | १६० ५ |
| आसजो | आसिज्जो | १६० १९ |
| मंति | संति | १६१ १ |
| इरकाग | इरुवाग | १६१ ५ |

| अथुञ्च | शुञ्च | पृष्ठ उल्लि |
|----------------|---------------|-------------|
| विञ्चज | विञ्चल | १६१ १३ |
| जिञ्च | जिञ्च | १६१ २१ |
| सत्ति | सत्ति | १६२ ५ |
| तेञ्च | तेञ्च | १६२ १५ |
| मारीरेंञ्च | सारीरे ञ्च | १६३ ३ |
| जिञ्च | जिञ्च | १६३ ६ |
| तिञ्च वर | तिञ्चवर | १६३ २१ |
| समहिञ्च | समुञ्च | १६४ २० |
| किसलमाला | किसलयमाला | १६४ २१ |
| सथुञ्च | सथुञ्च | १६५ ३ |
| मौलिमाला | मञ्जलिमाला | १६५ २२ |
| सुठ | सुठ | १६६ ७ |
| तव | तव | १६७ १८ |
| हस वहु | हसवहु | १६७ १४ |
| शट्ठ | सट्ठ | १७० ११ |
| मीशएकएञ्च | मीसएकएञ्च | १७० १२ |
| पगारेहिं | पगारएहिं | १७० १७ |
| मुविकम | मुविकमा | १७० १८ |
| सव्वसत | सव्व सत्त | १७० २३ |
| जुय | जुय | १७१ ४ |
| गुणेंहिंजिञ्च | गुणेहिं जिञ्च | १७१ १७ |
| अष्ट | अष्ट | १७१ १८ |
| पुठा | पुठा | १७१ १९ |
| रसीहिंजुञ्च | रिसीहिं जुञ्च | १७१ २२ |
| पायया | पावया | १७२ ६ |
| गह | गह | १७२ १८ |
| कुणञ्च | कुणञ्च | १७३ ३ |
| दिसञ्च | दिसञ्च | १७३ १२ |
| चाञ्चम्मासिञ्च | चाञ्चम्मासे | १७३ १५ |
| सञ्चवरिण | सञ्चवरिण | १७३ १५ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उक्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ उक्ति |
|--------------|--------------|-------------|---------------|-----------------|-------------|
| सर्व्वेहि वि | सर्व्वेहिं | १७३ ३० | मापतनं | मापतनं | १९० १७ |
| किञ्चि | किञ्चित् | १७४ ६ | कंठ निजं | कंठनीजं | १९१ १३ |
| तेलुकुद्धरणं | तेलुकुद्धरणे | १७४ १० | हृदयस्य | हृदियस्य | १९१ २३ |
| वाङ्मय | वाङ्मय | १७५ ५ | माज्जौ | माजौ | १९२ ४ |
| रुदारै | रुदारैः | १७५ ११ | पंकजवन | पंकजवना | १९२ २० |
| बुद्ध्या | बुद्ध्या | १७५ १७ | पाठीन पोठ | पाठीन पोठ | १९३ २ |
| इति | इति | १७६ ३ | दिग्बदेहा | दिग्बदेहा | १९३ १६ |
| कोकिल | कोकिलः | १७७ १७ | कंठ | कंठ | १९३ ३३ |
| हरिष्यति | हरिष्यति | १७८ ६ | पुष्पम् | पुष्पाम् | १९४ २२ |
| ननूदविड | ननूद विड | १७८ ८ | मर्पो | मर्पो | १९७ १८ |
| डूरे | दूरे | १७८ १४ | रौर्धैरुपध्व | रौर्धैरुपध्वश | |
| इत्तेन् | इत्तेन् | १७९ १३ | शतस्त्वयित्री | नैस्त्वयिवोक्ति | |
| यै | यैः | १७९ १६ | क्षिनेपि | तेपि | २०१ १२ |
| क | क | १८० ३ | डर्जर | डर्जर | २०३ ११ |
| जगत | जगत् | १८० ५ | नीलमाट्टुणि | नीलदुमाणि | २०४ ३१ |
| यद् वासरे | यद्वासरे | १८० ११ | जिन | जिन | २०६ १२ |
| संपुर्ण | संपूर्ण | १८० १४ | यदिग्रहं | यद्विग्रहं | २०७ १ |
| (मुनीध) | (मुनीध) | १८१ ८ | तेतरुप्य | तेतरुप्य | २०८ ३३ |
| शशांकविवम् | शशांकविवम् | १८१ २० | विधुरंयति | विधुरयंति | २२१ १७ |
| स्त्रिणां | स्त्रीणां | १८४ १२ | दैवैध्वंघ | दैवैध्वंघ | २२४ ७ |
| युख | यूख | १८७ ५ | मुकुटाभ्याचि | मुकुटाभ्याचि | |
| सहस्ररश्मेः | सहस्ररश्मेः | १८८ १ | ताहये | तांहये | २२७ ५ |
| वपुः | वपुः | १८८ ६ | | | |

पुस्तक मलवानां ठेकाणां.

विज्ञापुर

मुंवाइ

सुरत

कीमत.

जेनारतुं नाम तथा ठेकाणुं.

विद्याशालामां.

गोडोजीना देरासरमां.

विद्याशालामां.

नंवर.

इति
श्री पंचप्रतिक्रमणसूत्र
समाप्तम्.